मैंने भी अपना गिलास उठाया और भूमि पर एक बूंद मदिरा डालकर कहा, "अम्मन के नाम पर ! उसकी नाव अनन्त काल तक चूती रहे, पुजारियों के पेट फट जाएँ और जीवन-गृह के अज्ञानी और मूर्ख अध्यापकों को सड़-सडकर मरना पडे ।" परन्तु मैंने यह सब धीरे से कहा और कहकर चारों ओर मुडकर देखा कि कोई सुन तो नही रहा था ।

"डरो मत" टोथिमीज बोला, "इस तदूरखाने मे अम्मनों की इतनी पिटाई की गई है कि यहाँ छिपकर आने का अब उनका साहस नही होता···" फिर कुछ रुककर कहा, "यदि अमीरों के बच्चो के लिए चित्र बनाने की युक्ति मुझे न सूझती तो निश्चय ही मैं भूखो मर जाता ।"

उसने मुझे लिपटी हुई तस्वीरें दिखाईं जिन्हे देखकर मुझे हँसी आ गई। एक किले के द्वार पर एक बहुत बडी भयभीत बिल्ली खडी उसकी रक्षा कर रही थी और सामने अगणित चूहे मिलकर उसे डरा रहे थे। एक वृक्ष की ऊपरी टहनी पर एक दरियाई घोडा बैठा गाना गा रहा था और एक कबूतर बडी कठिनाई के साथ सीढ़ी लगाकर पेड पर चढने का उपक्रम कर रहा था। उसने कागज और खोलकर दिखाया। अगले चित्र मे एक छोटा-सा पुजारी एक बडे से फराओ को रस्सी पर चलाकर ले जा रहा था जैसे कि वह कोई बलिपशु हो। एक चित्र मे एक छोटा-सा फराओ अम्मन की एक दीर्घ प्रतिमा के सामने झुका खडा था। मैंने आश्चर्य से टोथिमीज की ओर देखा तो उसने गम्भीरतापूर्वक कहा : "मैंने देखा ? यह सब अनहोनी बातें हैं और इसीलिए समझदार लोग इन्हे देखकर खुश होते हैं और जब तक वह इन्हे देखकर खुश होते रहेगे, मेरी रोटी मुझे मिलती रहेगी तब तक जब तक कि किसी दिन पुजारी लोग मुझे बाजार मे मुगदरो से पिटवा-पिटवाकर न मरवा डाले···ऐसा यहाँ हो चुका है ।"

"पियो मित्र !" मैंने उसका ध्यान बँटाया फिर थोडी देर बाद मैंने पूछा, "क्यो का प्रश्न उठाना क्या गलत है ?" मेरा मन अब भी उदास था।

"निश्चय ही गलत है", वह बोला : "क्योंकि इसके पूछने वाले का कैम के देश मे कही ठिकाना नही है, सब कुछ वैसा ही होना चाहिए जैसे होता आया है।···" वह चुप हो गया। गहरी उदासी छाई रही। हम मदिरा

पीते रहे। फिर हठात् वह बोला, "जब कला-मदिर मे छैनी-हथौडी पकडना सीखने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मै पत्थर पर अपना हृदय अकित करूँ तो वहाँ के नियम के अनुसार मुझसे कहा गया कि मिट्टी सानकर औरो को दो।'''नियम, जो ऐसा ही था, भला कैसे तोडा जा सकता था? सब चित्रो के रूप पहले से ही निर्धारित है'''खडा हुआ आदमी किस मुद्रा मे बनाया जाएगा'''बैठे हुए की मुद्रा क्या होगी, घोडा अपना पैर कैसे उठाएगा। बैल कैसे बैठेगा'''यह सब पहले मे ही निश्चित है। जो इसे नही मानेगा उसे मन्दिर से बाहर मारकर निकाल दिया जाएगा और हथौडी-छैनी पर उसका कोई अधिकार नही रह पाएगा।'''ओ सिन्यूहे!" वह साँस खीचकर बोला, "मैने भी 'क्यो' बहुत बार की थी'''और मेरे माथे पर गुम्मड बन गए!" उसने अपना गुम्मड छूकर बताया।

मेरा हृदय मानो पिघल गया जैसे फोडा फूट गया हो'''उसका सपूर्ण मवाद वह निकला हो।'''मन हल्का हो गया। और तब हम मदिरा का आनन्द लेने लगे।

"सिन्यूहे! हम विचित्र परिवर्तन काल मे पैदा हुए है। सब चीजें बदल रही हैं, दुनिया बदल रही है। रीति-रिवाज़, पोशाके, बोली सब बदल रही है—लोग अब देवताओ को नही मानते, अब वह केवल भय के कारण उन्हे मानते है। शायद हम दुनिया का अन्त देखने के लिए ही पैदा हुए हैं; क्योकि यह दुनिया बहुत ही पुरानी हो गयी है। पिरामिड बने हुए बारह सौ साल बीत चुके है! ओफ! जब मै यह सोच लेता हूँ तो बच्चो की भाँति हथेली मे मुँह छिपाकर रोने की इच्छा प्रबल हो उठती है", परतु वह रोया नही।

टोथिमीज के कहने से जब हम वहाँ से उठे तो रगशालाओ की ओर चले। अधकार फैल चुका था। परन्तु थीबीज प्रकाश से चमक रहा था। चारों ओर असख्य मशाले जल रही थी, भीड से उठा हुआ शोर आकाश तक काँप रहा था। दासो के बाद दास धनिको की पालकियाँ उठाए यहाँ-वहाँ भागे जा रहे थे। रगशालाओ मे से सगीत-लहरियाँ निकलकर मनुष्यो के उस प्रवाह पर मानो मोहिनी फैला रही थी।

मैं आज तक कभी रगशालाओ मे नही गया था। 'बिल्ली और अगूर'

नामक वेश्यागृह मे हम गए, जहाँ कई युवतियाँ सुनहरे दीपो को जलाये वैठी थी। जब हम नर्म गद्दो पर वैठ गए तो युवतियाँ हमारे सामने आ गयी। उन्होने मुझसे मदिरा पीने को माँगी, क्योकि उन्होने कहा कि उनके कठ चटक रहे थे। फिर दो नगी युवतियो ने हमारे सम्मुख नृत्य किया। उनके हाव-भाव और अगचालन इत्यादि सचमुच ही अद्भुत और कठिन थे। मैंने वैद्य होने के नाते पहले भी कई वार नग्न स्त्रियाँ देख रखी थी, परन्तु ऐसा हाव-भाव, स्तनो और जघाओ का हिलाना और पीन नितम्बो का मटकाना कभी नही देखा था। मुझे वह सब बहुत अच्छा लगा। परन्तु संगीत सुनकर मैं फिर उदास हो उठा, एक सुन्दरी युवती ने आकर मेरा हाथ पकड लिया और अपनी बगल मेरी बगल मे दवाने लगी और मुझसे कहा कि मेरे नेत्र सुन्दर और वुद्धिमानो जैसे लगते थे। मैने उसके नेत्रो मे झाँककर देखा··· वह ग्रीष्म ऋतु मे नील के जल की भाँति हरे नही थे, मैने उसके नग्न स्तन देखे पर उन पर राजसी झीने वस्त्र नही थे।···मेरा मन उचाट हो गया और मैंने फिर उसकी ओर नही देखा। न उससे 'मेरी वहन' कहने की ही मेरी इच्छा हुई।···फिर मुझे इतनी याद है कि एक भीमकाय हब्शी मुझे लात देकर वहाँ से निकाल रहा था, मै सीढियो से नीचे गिर गया था। मेरा सूजा हुआ सिर दुख रहा था। टोथिमीज अपने वलिष्ठ कधो का सहारा देकर मुझे नील के किनारे ले गया जहाँ मैंने जी भरकर पानी पिया और सिर धोया, पैर धोये और हाथ धोये, मुझे कीपा के वोल याद आ रहे थे। उसने कहा था, "नाली मे पड़ा रहता है···पास मे एक ताँवे का टुकड़ा भी नही रहता!"

भोर मे जव मैं जीवनगृह गया तो मैंने शीघ्र ही मैले कपड़े उतारकर शुभ्र श्वेत वस्त्र पहने और गूँगो-वहरो के लिए वने हुए चिकित्सागृह मे काम करने चला गया। मेरे सिर पर गुम्मड़ उछर रहे थे, आँखे खूनी लाल हो रही थी, मार्ग मे मुझे प्रधान वैद्य मिला। देखते ही वोला :

"तुम्हारा क्या होगा यदि रात्रि के समय तुम प्यालो का हिसाव न रखते हुए पीते चले जाओगे? तुम्हारा क्या होगा यदि तुम अपना धन नर्तकियो के यहाँ नष्ट करोगे और नशे मे चूर होकर मदिरा के पात्रो को तोडोगे और भले नागरिको को भयभीत करोगे? तुम्हारा क्या होगा यदि

तुम रक्तपात करोगे और चौकीदार से भागोगे ?" यह ताडना के वही शब्द थे जो ऐसे समय उच्चारण करने के लिए पुस्तक मे लिखे थे और जिन्हे मै जानता था—जो मुझे याद थे। परन्तु कह चुकने के बाद वह मुस्कराया और मुझे अपने कमरे मे ले जाकर उसने पेट साफ करने के लिए औषधि दी। मैंने अनुभव किया कि जीवनगृह मे मदिरा और रगशालाएँ भी मान्य थी यदि कोई 'क्यो' का प्रश्न न उठाए।

और थीबीज का बुखार मुझ पर भी चढ बैठा। राते दिन से अच्छी लगती और मशालो का प्रकाश सूर्य से अच्छा लगता। रोगियो की कराह से सीरिया का सगीत मधुरतर लगता और पुराने ग्रथो की खोला-बाँधी से युवतियों की फुसफुसाहट अच्छी लगती। परन्तु जब तक जीवन-गृह मे काम करना होता, अपने परीक्षको को खुश रखता और अपना हाथ साधे रखता। इन सब बातो के बारे मे मुझसे पूछने वाला कोई पैदा भी नही हुआ था। परन्तु फिर भी अभी मै किसी स्त्री के सपर्क मे नही आया था, हालाँकि अब मै जान गया था कि उनके शरीर की जलन अग्नि से तेज नही थी।

उन दिनो थीबीज मे गहरी अशाति फैली हुई थी क्योकि फराओं बीमार था। मिस्र के तमाम वैद्य उसका इलाज करते हुए हार गए थे। हालाँकि एमनहोटप तृतीय ने अपने समय का सबसे बडा मन्दिर अम्मन के लिए बनवाया था, फिर भी अम्मन ने उसे अच्छा करने की चिन्ता नही की थी। लोग कहते थे कि मिस्र के देवताओ से क्रुद्ध होकर फराओ ने अपने ससुर के पास मितन्नी की राजधानी नाहरा मे वायुगति से दूत भेजे थे कि वहाँ से वह निनिवह की इश्तर को भेज दे जो आकर अपनी कृपा से उसे अच्छा कर सके। परन्तु अम्मन के पुजारियों को बडा सन्तोष हुआ, जब उन्हे पता चला कि उसकी वह कोशिश भी बेकार हो रही। कोई परदेशी देवता भी उसे ठीक नही कर सका। और जब नदी चढने लगी तो राज-वैद्य, जो फ़राओं के घराने के सिरों को खोलता था, महल मे बुलाया गया।

जीवन-गृह मे इस पूरे समय मे मैंने ताहौर को आते हुए कभी नही देखा था। वैसे भी सिर कम ही खोले जाते थे और जो कभी-कभी खुलते भी तो वहाँ उन विशेषज्ञो के पास मुझे कभी नही जाने दिया जाता था। ताहौर

पालकी पर बैठकर जीवन-गृह मे आया। वह वैसा ही गजा था। बुढ़ापे ने उस पर अपनी छाप लगा दी थी और उसके दोनो गालों पर झुरियाँ पड गई थी और वह लटक गए थे। मैं उसे मार्ग पर ही मिल गया। मुझे देखकर वह खुश हुआ और मुझे पहचानते हुए बोला, "आह ! सैन्मट के बेटे ! तुम यहाँ तक आ पहुँचे ?" और उसने मेरे हाथ मे अपना काले आवनूस की लकड़ी का बना हुआ एक बक्स पकडा दिया जिसमे उसके औज़ार इत्यादि थे और उसने मुझे अपने साथ आने को कहा। यह एक ऐसा सम्मान था जो मुझे अचानक मिला और जिसे देखकर राजवैद्य भी ईर्ष्या कर सकता था। मैंने तुरत बक्स लेकर उनका अनुसरण किया।

"मुझे अपने हाथ की सफाई देखनी है," ताहोर बोला।

"यहाँ एक-दो सिर खोलकर देख लूँ कि कहीं मेरा हाथ तो नही कांपता···और देखना है कि काम कैसा होता है !"

उसके नेत्रो मे पानी भरा हुआ था और हाथ कुछ-कुछ कांप रहे थे। जिस कक्ष मे असाध्य और लाइलाज रोगी लेटे हुए थे वहाँ जाकर उसने दो व्यक्ति छाँटे और उन पर उसने हाथ आजमाना तय किया।

जब मैंने पहले रोगी का सिर उस्तरे से सावधानी से मूँड़ दिया और उसे साफ कर दिया तो पवित्र अग्नि मे पवित्र किए हुए औज़ारों को लेकर ताहोर उसके पास आया और उसने उस सिर पर सुन्न करने का एक विशेष मरहम लगाया फिर चाकू से उसकी खोपडी मे एक छेद किया और बगलो की हड्डियो को दबाया। रक्त बुरी तरह बहने लगा पर उसने कोई चिंता नही की। फिर एक गोल नली को ठोककर उसने एक छेद बनाया और तब रोगी कराहने लगा। ताहोर तब बोला .

"इस रोगी के सिर मे मै कोई विशेषता नही देखता," और उसने वही गोल हड्डी वहाँ फिर से बैठाकर उसका सिर सी दिया। पर इतने मे वह आदमी मर गया।

"मेरे हाथ कुछ काँपते से मालूम होते हैं," ताहोर बोला। फिर युवक विद्यार्थियो की ओर देखकर उसने कहा, "मुझे यदि थोडी मदिरा मिल जाए तो ठीक रहेगा।"

देखने वालों मे जीवन-गृह के अध्यापकगण तथा नये विद्यार्थी भी थे,

उन्होने शीघ्र उसे मदिरा लाकर पिला दी।

दूसरा रोगी एक बलिष्ठ हब्शी था जो डीलडौल मे भी बहुत बड़ा था। ताहौर उसे देखकर बोला, "इसे कई आदमी मिलकर इतनी ज़ोर से बाँध दो कि इसका सिर कोई दानव भी न हिला सके।" जीवन-गृह मे रक्त रोकने वाला एक मनुष्य भी अक्सर रहा करता था। उसमे कुछ दैवी शक्ति होती थी कि उसके सामने रहने से रक्त रुक जाता था। उस विशेष गुण का कारण वह स्वय भी नही जानता था फिर भी वह उस गुण से रोगियो के लिए बहुत काम का होता। जब ताहौर ने उस हब्शी के सिर मे छेद किया तो जो रक्त के फव्वारे छूटे। उन्हे खास मरहम लगाकर रोका गया लेकिन न रुका। उसे उस रक्त रोकने वाले ने आकर केवल अपनी उपस्थिति से ही रोक दिया।

शीघ्र ही हब्शी के सिर मे से हथेली के बराबर की एक हड्डी निकाल दी गई। अदर रक्त जमा हुआ मिला और एक हड्डी का टुकड़ा भेजे की सफेदी मे टेढा होकर फँसा हुआ मिला। अत्यत सावधानी से ताहौर ने वह रक्त पोछा और उस हड्डी के टुकड़े को खीच लिया। सारे विद्यार्थी उत्सुक होकर उस कमाल के काम को देख रहे थे। जब सफाई हो चुकी तो ताहौर ने उस छेद पर एक चाँदी का उतना ही बडा टुकडा उसी सावधानी से जमाया और फिर उसका सिर दक्ष हाथो से सी दिया। फिर उसने हाथ धोते हुए कहा, "अब इसे जगाओ।"

दास खोल दिया गया। उसके कठ मे मदिरा डाली गई और तेज़ दवाएँ उसे सुँघाई गयी। थोडी ही देर बाद वह उठ बैठा। उसने उठते ही गालियो की बौछारे बिखेर दी। यह कमाल था क्योकि पहले यह दास हब्शी गूँगा था। ताहौर ने बताया कि उस जले हुए रक्त और उस हड्डी के टुकड़े ने उसे गूँगा बना रखा था। उसने कहा, "यदि यह तीन दिन और बच गया तो समझो कि बच गया और दो सप्ताह मे ही इतना तगडा हो जाएगा कि जिसने इसे पत्थर से मारकर यहाँ जीवन-गृह मे भेजा था, उसे यह मार डालेगा···मेरा विचार है यह मरेगा नही।"

उसने फिर सभी लोगो को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया और मुझसे कहा, "बक्स लेकर मेरे साथ चलो।" मै इस आश्चर्यजनक सम्मान, जो मुझे

मिला था, उसके लिए हृदय से आभारी हो रहा था। वह बोला, "सिन्यूहे ! क्या तुम तैयार हो ? अब हम आराम से राज-मस्तक को खोलने लायक हो गए हैं।"

मैं उसके साथ अपनी श्वेत पोशाक पहने उसकी पालकी मे उसके साथ बैठ गया। रक्त रोकने वाला पालकी के एक हत्थे पर बैठ गया। फराओं के दास तेज़ कदमो मे हमे ले चले। नदी पर पहुँचने के बाद फराओं के जहाज़ मे हम चढ गए, जो इतनी तेजी से चला कि ऐसा लगा जैसे वह तैरने के बजाय उड रहा था। उस तीर से फिर दास हमे पालकी पर ले चले। अब स्वर्ण-गृह पास ही था। थीबीज़ मे हलचल मच रही थी। नगर-द्वार बन्द कर दिये गए थे और व्यापारीगण अपने सामानों को कोठो मे मज़बूती से बन्द कर रहे थे। दुकानें एक के बाद एक बन्द हो रही थी। सब जानते थे कि फराओ मरने वाला था।

३

सुवर्ण-गृह के परकोटे के बाहर लोगों की भीड जमा थी। लोग उन स्थानो और नदी-किनारो मे भी ठठाकर समा गए थे, जहाँ उनको जाने या खडे रहने की आज्ञा नही थी। जल मे भी भीड़ नावो पर खड़ी थी, धनी लोग अपनी काठ की नौकाओ मे, तो निर्धन बाँस के बजरो पर। जब उन्होने हमे देखा तो सनसनी दौड़ गई कि राजवैद्य—सिर खोलने वाला—आ रहा है। तब लोगो ने दुःख मे अपने हाथ ऊपर उठाये और फिर जब हम आगे बढे तो पीछे से रोने-चीखने की आवाज़ें आने लगी। सभी जानते थे कि सिर खुलने के बाद कोई फ़राओ तीन दिन से अधिक जीवित नही रहता था।

'कमल द्वार' से हम अन्दर ले जाये गए। दरबारी लोग हमारे सामने घुटनो की सीध मे हाथ फैलाकर झुक गए क्योंकि हम मृत्यु को अपने साथ लाए थे। फ़राओ के वैद्य से कुछ बातचीत करने के बाद ताहोर ने

आकाश की ओर हाथ उठाया और फिर औज़ारो को पवित्र अग्नि मे शुद्ध करने लगा। फिर कई अद्भुत रूप से सजे हुए बडे-बडे कमरों मे होकर हम फ़राओ के शयनकक्ष की ओर चले।

महान् फराओं एक सुनहरी गिलाफ के नीचे एक विशाल पलँग पर पडा था। पलँग के पाँवो की जगह सुवर्ण के सिंह बने हुए थे। उसका सूजा हुआ शरीर नग्न था—उस समय उसके शरीर पर एक भी राजसी चिह्न नही था। वह बेहोश था और वृद्धत्व से पीडित उसका सिर एक ओर लुढका हुआ था। वह रुक-रुककर गहरे श्वास ले रहा था और उसके मुँह के कोनो से थूक बह रहा था। उस समय की उसकी दयनीय अवस्था को देखकर उसे जीवन-गृह मे उसी अवस्था मे पडे हुए किसी सामान्य रोगी से भिन्न भला कौन कह सकता था? परन्तु दीवारो पर उसे तगडे घोडो के रथ को सँभालते सिंहों का शिकार खेलते हुए दिखाया गया था। घोडो के सिरो पर बहुमूल्य पर लगे हुए थे और उसकी बलिष्ठ भुजाओं मे धनुष पूरा खिंचा हुआ था। सिंह उसके चरणों पर उसके तीरो से छिदे पडे थे।

हम दोनो ने उसके सामने लेटकर उसका अभिवादन किया। सभी जानते थे कि ताहौर की चिकित्सा उसके लिए व्यर्थ थी, परतु सनातन काल से यही रीति चली आई थी कि यदि प्राकृतिक रूप से मृत्यु नही आती थी तो सिर खोलकर उसका आवाहन किया जाता था। मैने बक्स मे से चाकू, चिमटी, नली इत्यादि निकालकर एक बार फिर उन्हे अग्नि मे शुद्ध किया। राज-वैद्य ने मरते हुए सम्राट् का सिर उस्तरे से पहले ही साफ कर दिया था। ताहौर ने रक्त रोकने वाले को आज्ञा दी कि वह पलँग पर आकर बैठ जाए और फ़राओ के सिर को अपने हाथो मे ले ले।

और तब मैने देखा कि साम्राज्ञी ताया आगे आई और उसने उसे ऐसा करने से रोक दिया। अब तक वह दीवार के सहारे हाथ उठाए दु:खपूर्ण मुद्रा मे खडी थी। उसके पीछे युवराज एमनहोटप खडा था और उसकी बगल मे उसकी बहन बैकेटेमोन खडी थी; परन्तु मैने उनकी ओर आँख उठाकर देखने का साहस नही किया। युवराज मेरी आयु का युवक था परन्तु वह मुझसे ऊँचा था। राजकुमारी बैकेटेमोन बडे नेत्रो वाली सुन्दरी युवती थी। परन्तु उनसे भी अधिक रोबीली साम्राज्ञी ताया लगती थी। यद्यपि वह

तनिक ठिगनी और स्थूल थी। वह विलकुल गहरे रग की थी और उसके गालो की हड्डियाँ उठी हुई थी। लोग कहते थे कि वह किसी दास हब्शी की पुत्री थी। उसकी आँखो मे चमक और निर्भीकता मानो कूट-कूटकर भरी हुई थी। जब उसने हाथ उठाकर रक्त रोकने वाले को रोका तो वह उसके वडे और भूरे पैर के नीचे धूल की तरह अदना प्रतीत हुआ। मै ताया के मन के विचार समझ गया कि वह जन्म से नीच वैलगाड़ी चलाने वाले उस व्यक्ति के हाथों मे अपने उस महान् पति के शरीर को नही देना चाहती थी। वह न तो लिख-पढ ही सकता था और न अपने गुण का कारण ही बता सकता था कि क्यो उसकी केवल उपस्थिति से ही रक्त का बहना वद हो जाता था। वह मुँह खोले, सिर झुकाए और हाथ लटकाए घबराया-सा खड़ा था।

"मै इसे आज्ञा नही देती कि यह एक देवता के शरीर को छुए," साम्राज्ञी ने अधिकार के स्वर मे कहा, "यदि आवश्यकता हुई तो मै स्वयं ही देवता का सिर पकड़ूँगी।"

ताहीर ने एतराज किया कि यह काम अच्छा नही था और इसमे खून बहेगा इत्यादि। फिर भी वह न मानी और वह शैया के किनारे वैठ गई और उसने अपने मरते हुए पति के सिर को धीरे से उठाकर अपनी गोदी मे रख लिया और इस बात की तनिक भी चिन्ता नही की कि उसके मुँह से थूक उसकी गोद मे गिरने लगा था।

"यह मेरा है", उसने कहा, "इसे और कोई नही छूएगा, यह मेरे ही हाथो मे होकर मृत्यु के साम्राज्य मे जायेगा।"

"यह अपने पिता सूर्य के जहाज मे चढकर जायेगे" ताहीर ने जोड़ा और चाकू से सिर मे छेद किया और कहता गया, "सूर्य ने ही इन्हे उत्पन्न किया था और सूर्य मे ही यह लौट जाएँगे और सब लोग शाश्वत काल तक उनका नाम याद करते वापस हो लेगे—सैट आदि तमाम शैतानो के नाम पर यह रक्त वन्द करने वाला कहाँ चला गया ?" वह कुशल वैद्य की भाँति काम भी करता जाता था और सात्वना के तथा प्रशसा के शब्द भी कहता जाता था। जब सिर मे छेद कर लिया गया और रक्त बुरी तरह बहने लगा तो उसने रक्त बन्द करने वाले की याद की।

अब तक साम्राज्ञी ताया की गोद रक्त से लाल हो चुकी थी। जमा हुआ खून अदर से निकलकर गिर गया था। सुनते ही वह व्यक्ति आगे बढा और उसने फराओ के मुख को देखकर हाथ आगे कर दिये, खून एकदम बन्द हो गया। मैने आश्चर्य से उस सिर को साफ कर दिया।

"क्षमा करे देवि!" ताहौर कहता गया और उसने नली मेरे हाथ से ले ली। "वह सीधे···हाँ सीधे सूर्य के सुवर्णमय जहाज मे ··हाँ·· जहाज मे जायेगे·· अम्मन की कृपा इनके साथ हो," और उसने सिर मे हड्डी के बीच वह नली उतार दी, वह विद्युत्-गति से दक्ष हाथो से काम कर रहा था। युवराज ने तद्रा से जागकर आगे कदम रखा और वह बोला, "उन्हे अम्मन नही बल्कि 'रा-हैरावटे' एटौन के रूप मे आशीर्वाद देगा···उनकी मगल कामना करेगा।" उसका मुँह बोलते समय काँप रहा था।

"ओह! हाँ, एटौन!···ताहौर ने झट बात बदलकर कहा, "हाँ, एटौन···ज़रा मुँह से गलती से निकल गया।" ओह! उसने आबनूस की मूँठ वाले हथौडे से सिर मे हल्के-हल्के हाथो से छैनी ठोकी. फिर कहा, "मुझे याद है अपने दैवी ज्ञान से इन्होने एटौन का एक मन्दिर भी बनवाया था। वह निश्चय ही तब बना था जब युवराज पैदा हो गए थे···ठीक हे ठीक है···है न देवि ताया ?···अभी ··" और उसने रुककर युवराज की ओर देखकर कहा, "मदिरा की एक घूँट मेरे हाथो मे स्थिरता उत्पन्न कर देगी और इससे युवराज का कुछ बिगडेगा भी नही "

मैंने उसे चिमटी दे दी और उसने भेजे मे से एक हड्डी का टुकडा खर्र-खर्र खीचते हुए निकाल दिया। फिर वह उस तीव्र प्रकाश मे, जो वहाँ मशालो से हो रहा था, फराओ के भूरे-नीले भेजे को ध्यान से देखने लगा जो हिल रहा था। ताहौर बोला, "अब जो हो गया सो हो गया। अब उसका एटौन उसको शक्ति प्रदान करेगा क्योकि यह तो मामला ही देवताओ का है, इसमे हम मानव भला करें भी तो क्या ?"

फिर उसने हल्के हाथ से, अत्यन्त सावधानी से ऊपर की हड्डी वही बैठा दी और घाव के किनारो को दबाकर ऊपर से पट्टी बाँध दी। साम्राज्ञी ने उसका सिर एक अमूल्य लकडी के बने हुए तकिये के सहारे रख दिया और ताहौर की ओर देखा। उसके ऊपर रक्त सूख गया था पर जैसे उसे उसकी

परवाह नहीं थी। ताहौर ने उसकी आँखों मे विना डरे, विना झुके देखा और धीमे से कहा, "इनके देवता चाहेंगे तो यह भोर तक जीवित रहेंगे।" और उसने हमदर्दी मे हाथ ऊपर उठा दिये।

"तुम्हे वहुत इनाम मिलेगा," साम्राज्ञी ने कहा और फिर जाने को कह दिया।

एक और कक्ष मे हमारे लिए भोजन तैयार किया गया था, जहाँ नाना प्रकार के माँस रखे थे और अनेक प्रकार की मदिरा वडे-वडे पात्रों में रखी थी, जिसे देखते ही ताहौर की वाँछें खिल उठी। वह उनमें मे छाँटने लगा। एक दास ने हमारे हाथो पर पानी डाला।

जव हम अकेले रह गए और ताहौर ने मदिरा के गिलास पर गिलास पी लिये तो कहने लगा :

"कहते हैं कि सिंहासन का अधिकारी एटौन का दैवी पुत्र है। स्वप्न मे साम्राज्ञी ने 'रा-हैंगक्टे' के मन्दिर को देखा था और उसके वाद ही उसके गर्भ मे यह पुत्र आया था। वहाँ एक उच्चाभिलाषी पुजारी, जिसका नाम 'आई' था, साथ ले लिया था। आई की स्त्री अपने ही स्तनों से इस पुत्र और अपनी पुत्री नेफर तीती को दूध पिलाती थी। नेफरतीती और राजकुमार हिल-मिल गए और भाई-वहन की भाँति महल मे खेलते रहे। अव तुम्ही सोचो इसका क्या नतीजा होने वाला है?" और वह देर तक पीता रहा और वकता रहा। मैंने कहा :

"ताहौर ! जव थीवीज का प्रकाश रात्रि मे आकाश की ओर उठता है तो मेरे हृदय में प्यार की हूक-सी उठने लगती है।"

सुनकर वह तनिक हँसा, फिर वोला : "प्यार-व्यार कुछ नहीं होता। आदमी विना औरत के उदास रहता है। और औरत एक वार मिल गई तो उसे और पाने के लिए और ज्यादा उदास रहता है। ऐसा ही होता आया है, ऐसा ही होगा···प्यार की वातें मुझसे व्यर्थ मत करो वरना कहीं मुझे तुम्हारा सिर न खोलना पड जाये। हाँ···हाँ तुम्हारा सिर मैं विना कुछ लिये खोल दूंगा।"

जव वह वहुत वहकने लगा तो मैने उसे शैया पर सुला दिया। थीवीज मे रातें ठंडी होती हैं। मैंने उसे नर्म खालें उढा दी।

मैं खुली छत पर निकलकर बाहर उद्यान मे फूलो के बीच निकल गया। नीचे नील बह रही थी। मुझे ग्रीष्म ऋतु मे नील के जल की भाँति दो आँखे याद हो आयी और मैं विह्वल हो उठा।

तभी मेरे पास कोई आया। उसने अधिकार के स्वर मे पूछा "क्या यह एकाकी है?" मैने पहचाना। वह सिंहासन का अधिकारी, होने वाला फराओ था। मै उसके सामने लेट गया और बोलने का मेरा साहस नही हुआ।

"खड़ा हो मूर्ख!" वह बोला : "यहाँ हमे देखने वाला कोई नही है फिर व्यर्थ क्यो झुकता है? यह सब मेरे पिता एटौन के लिए सुरक्षित रख, क्योंकि असली देवता वही है, और मै उसका पुत्र हूँ। बाकी सब झूठे है··· अम्मन भी झूठा देवता है!"

मैने विरोध करने की-सी मुद्रा बनाई और कहा, "ओह!" जैसे मै अम्मन के विरुद्ध कहे शब्दों से भयभीत हो गया था।

"ताहौर तो बुड्ढा बदर है···यदि तुम्हे महल से बाहर जाने से पहले मरना ही होगा तो तुम्हारा भी नया नाम रखा जाएगा···एकाकी···!

ताहौर ने कहा था कि यदि फराओ मर गया तो हम तीनो—वह, मै और उस रक्त रोकने वाले को मरना होगा। अब यह भी कह रहा था। मेरा रोम-रोम भय से खडा हो गया। उफ! मै मरना नही चाहता था। क्यो लाया ताहौर—वह बुड्ढा बंदर—मुझे अपने साथ!

युवराज हाँफ रहा था, वह कहने लगा : "बेचैनी···हाँ बेचैनी बनी रहेगी···मुझे कही दूसरी जगह जाना होगा—मेरा देवता प्रत्यक्ष आ रहा है···मेरे साथ रहो एकाकी। देखो वह मेरे शरीर को दबा रहा है—मेरी जिह्वा कैसी भिंच गई है···"

मै भय से कांप रहा था। मैने उसे बेहोशी मे बोलते हुए समझा, परतु वह हुक्म देता हुआ बोला : "चलो!" और मैं उसके पीछे हो लिया। वह उद्यान से निकलकर फराओ की झील के पास पहुँच गया। दीवारो के बाहर हमदर्दों की आहे सुनाई पड रही थी। मुझे बहुत भय लगा। ताहौर ने कहा था कि जब तक सम्राट् न मर जाये हमे महल से बाहर नही जाना था, परतु युवराज की आज्ञा का उल्लघन भला मै कैसे कर सकता था?

नदी किनारे पहुँचकर उसने वहाँ वंधी एक नौका खोल दी। अव हम उसे खेते हुए आगे वढने लगे। किसी ने हमे नही टोका। रात निस्तब्ध थी। दूर थीवीज का लाल प्रकाश चमचमा रहा था। दूसरी पार जाकर वह नाव से नीचे कूद पडा। वहाँ और भी वहुत से लोग थे क्योकि थीवीज मे यह वात सभी जानते थे कि उस रात सम्राट मरने वाला था। परन्तु किसी ने हमें नही टोका।

आकाश मे तारे चल रहे थे। रात गहरी और सर्द थी। वह तेजी से चला जा रहा था। उसके पीछे मै भाग रहा था और स्वेद मेरी पीठ पर वह रहा था। वह पहाडियो की घाटियों मे चला जा रहा था। थीवीज पीछे रह गया। पूर्व की तीनो पहाडियाँ, जो नगर के प्रहरियो की जगह मानी जाती थी, अव हमारे सामने आकाश की पृष्ठभूमि मे काली दीर्घाकाय वनकर खडी थी।

युवराज रेत मे चलते-चलते हाँफने लग गया और फिर गिर गया। वह धीमे शव्दो मे वोला : "सिन्यूहे ! मेरे हाथो को थाम लो, क्योकि यह काँपते है···मेरा हृदय मेरी पसलियो से टकरा रहा है···दुनिया वीरान हो गई है··· हम दोनो अकेले है, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम मेरे साथ चल नही सकते— और मै अकेला रहना नही चाहता !"

मैंने उसकी कलाइयाँ पकड ली। वह स्वेद से भीग गया था। संसार वास्तव मे वीरान लग रहा था। दूर गीदड चिल्ला रहे थे, मानो मृत्यु का संदेश दे रहे हो। तारो की चमक धीरे-धीरे मद्धिम होती गई। और वह उठकर मेरे हाथ झटककर खडा हो गया। मेघ फटने लगे थे और ललाई फैलकर अलौकिक सौंदर्य विखेरने लगी थी। वह पूर्व मे पर्वत की ओर, मुँह करके खड़ा हो गया और उसने धीरे से कहा :

"वह देखो, देवता आ रहा है···देवता आ रहा है !" उसका मुख भय और चिंता से पीला पड़ रहा था।

पवन उन्मुक्त होकर वहने लगा, सामने की पहाडियाँ सुवर्णमय हो गयी और उनके पीछे से सूर्य आकाश मे चढ आया। युवराज ने और भी धीरे फुसफुसाया, "देवता आ रहा है···" और वह पृथ्वी पर गिरकर मूर्च्छित हो गया। परन्तु अव मैं नही डरा। जीवन-गृह मे अनेको वार मैंने ऐसे मरीज

देखे थे। उसके दाँतो के बीच देने के लिए लकडी के अभाव मे मैने अपना उत्तरीय फाडकर उसकी गोली बनायी और वह उसके मुँह मे दाँतो के बीच दे दी और तब उसके हाथ-पैर मलने लगा। मैने मुडकर देखा कि कही से मदद मिल सके पर थीबीज तो वहाँ से बहुत दूर था। पास मे गरीब से गरीब आदमी की भी कुटिया नही थी।

और तभी हमारे ऊपर से बाज चीखता हुआ उडा। वह जैसे सूर्य की किरणो मे से उत्पन्न हो गया था। उसने एक गोल चक्कर लगाया फिर वह नीचे आया मानो युवराज के सिर पर बैठ जाना चाहता हो और फिर ऊपर उड गया। फिर जब वह चक्कर देकर नीचे आने लगा तो मैने भय से आँखे भीचकर अम्मन को याद किया और हाथ से उसके पवित्र इशारे किये। शायद युवराज ने मूर्च्छित होने से पहले सूर्यपुत्र होरस को ही याद किया था। जब मैंने आँखें खोली तो सामने एक आदमी खडा था। शायद वह बाज़ ही अब आदमी के रूप मे बदल गया था। वह देवता की भाँति हृष्ट-पुष्ट और जवान था, सूर्य की किरणो की भाँति सुन्दर था। वह गरीब की भाँति एक मोटा कपडा ओढे हुए था और उसके हाथ मे एक भाला था। हालाँकि मै देवताओ मे विश्वास नही करता था फिर भी समय देखकर सुरक्षा के विचार से मैंने उसको दडवत कर दी।

"यह क्या है?" उसने उत्तरी साम्राज्य की भाषा मे पूछा: "क्या यह लडका बीमार है?"

अपनी हरकत हर लजाते हुए और अपने-आपको अत्यन्त मूर्ख समझते हुए मै उठ खडा हुआ। फिर मैंने साधारण रूप से उसका अभिवादन करते हुए कहा: "यदि तुम डाकू हो तो हमारे पास से तुम्हे कुछ भी नही मिलेगा। यहाँ एक युवक बीमार है और यदि तुम सहायता करोगे तो देवता तुम्हारा भला करेगे।"

वह बाज़ की भाँति तीखी आवाज़ मे चिल्लाया और आकाश से वह पक्षी उतरकर उसके कधे पर आ बैठा। वह गर्व मे बोला·

"मै बाज़ का बेटा हौरेमहेब हूँ" रुककर गभीर स्वर से वह फिर कहने लगा: "मेरे माता-पिता साधारण मिठाई बनाने वाले हैं परन्तु मेरे जन्म पर ज्योतिषियो ने कहा था कि मैं बहुतो पर हुकूमत करूँगा। बाज़ मेरे आगे-

आगे उडा और मैंने उसका अनुसरण किया। रात्रि में मुझे नगर में कोई स्थान रुकने को नही मिला क्योंकि थीवीज़ अधकार होने पर भालो से डरता है। परन्तु मै फराओं के यहाँ सैनिक बनना चाहता हूँ। लोग कहते है कि वह वीमार है। अतएव उसे निश्चय ही अपना साम्राज्य कायम रखने के लिए बलिष्ठ भुजाओ की आवश्यकता पडेगी।"

मैंने युवराज के मुँह से वह कपड़ा निकाल दिया और मै चाहता था कि यदि जल मिल जाता तो मै उसे होश मे ला सकता; इतने मे वह कराहा।

"क्या यह मर रहा है?" हौरेमहेब ने पूछा।

"नही, इस पर पवित्र रोग चढ गया है···दैवी शक्ति का प्रकोप है।"

हौरेमहेव ने अपना भाला मजबूती से पकड़कर मुझसे कहा :

"मुझसे घृणा करने की आवश्यकता नही है, केवल इसलिए कि मै नगे पैर हूँ और गरीव हूँ। मै वैसे कामचलाऊ तौर पर लिख-पढ भी सकता हूँ। मै अनेकों पर हुकूमत करने के योग्य हूँ।···किस देवता का असर है इस पर?"

लोग समझते थे कि देवता मनुष्य के शरीर मे वैठकर वोलते थे। मैंने कहा · "इसका अपना अलग देवता है···मेरा विचार है कि इसके दिमाग मे कुछ विचित्रता है।"

"यह ठंडा पड रहा है," कहते हुए उसने अपना उत्तरीय उतारकर युवराज को उढा दिया। फिर वोला : "थीवीज की भोर ठडी होती है··· और फिर यह तो गोरा है···अवश्य ही किसी धनी का पुत्र है। वह नाजुक है। मै तो होरस का पुत्र हूँ। मेरा रक्त गर्म है। मैं तो कठिनाई और ठड सब झेल सकता हूँ।···और तुम कौन हो?"

"वैद्य, थीवीज़ मे अम्मन के मदिर का प्रथम श्रेणी का पुजारी।" मैंने कहा। तभी युवराज उठ वैठा। घवराकर उसने चारो ओर देखा फिर कराहकर बोलने लगा। उसके दाँत वज रहे थे : "मैने उसे देख लिया। वह अपने सहस्रो हाथो से मेरी रक्षा करने लगा था···क्या अव भी मै उस पर अविश्वास करूँ?" फिर हौरेमहेव को देखकर उसका मुख सुन्दर और उद्दीप्त हो उठा। उसने पूछा · "क्या तुम्ही को एटौन ने भेजा है?"

"वाज उडा और मैने उसका पीछा किया और मै यहाँ आ गया। इससे

अधिक और मै कुछ भी नही जानता।"

युवराज ने उसके भाले को देखकर भौ सिकोडकर डाँटते हुए कहा :

"तुम भाला लेकर चलते हो ?"

हौरेमहेब ने उसे आगे कर दिया और उत्तर दिया :

"बेहतरीन लकडी का इसका डडा है···इसका ताम्रफल फराओ के शत्रुओ के रक्त का प्यासा है। यह प्यासा है और इसका नाम 'कंठ विदीर्णक' है।"

"नही-नही" युवराज ने जोर देकर कहा : "एटोन के साम्राज्य मे खून बहाना सबसे बडा अपराध है···रक्तपात घृणित कार्य है।"

"रक्त मनुष्यो को शुद्ध करता है और उन्हे शक्ति प्रदान करता है। इससे देवता मोटे होते है। जब तक युद्ध होते रहेगे तब तक यह होगा।"

"युद्ध अब कभी न होगे।" युवराज ने आज्ञा दी और हौरेमहेब सुनकर हँसा।

बोला "लड़का पागल है ! युद्ध सदा से होते आये है और सदा ही होगे; क्योकि यदि साम्राज्यो को जीवित रहना है तो शक्ति की परख करनी होगी ही।"

"सब लोग उसी की सन्तान है—काले-गोरे सब—तमाम भाषाएँ, काली भूमि और लाल भूमि सब उसी की है" युवराज सीधा सूर्य की ओर देख रहा था। मैं हर देश मे उसके सम्मान मे उसका एक मदिर बनवाऊँगा और वहाँ के शासको के पास नये जीवन का एक चिह्न भेजूंगा। ··क्योकि मैंने उसे देख लिया है···उसी मे से मै पैदा हुआ हूँ और उसी के पास मै लौट जाऊँगा।"

"यह पागल लगता है", "हौरेमहेब ने मुझसे कहा· "इसे वैद्य की आवश्यकता है।"

देर तक युवराज सूर्य को देखता रहा। आखिरकार हम उसे नगर की ओर लाने लगे। खेतो के आगे हमने देखा कि एक मोटा-ताजा सुन्दर मुख वाला और घुटे सिर वाला पुजारी सैनिको और दासो सहित वहाँ प्रतीक्षा कर रहा था। वह आर्द्र था। जब उसने घुटनो के सामने हाथ फैलाकर युवराज का अभिवादन किया तो बात साफ हो गई कि एमेनहोटेप तृतीय

मर चुका था और वह नये फ़राओ का अभिवादन कर रहा था। शीघ्र ही नये फ़राओं को शुद्ध किया गया और उसके अंग मे सुगंधित तेल मला गया फिर राजसी महीन वस्त्र पहनाये गए और सिर पर राजमुकुट रख दिया गया। नये फराओ को राजसी पालकी पर विठाये अगणित दास उठाये सुवर्ण-गृह की ओर चल दिये।

राजमहल मे ताहोर आरक्त नेत्रों मे चिड़चिड़ा होकर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे देखते ही वह वरस पडा : "तुम फराओ की मृत्यु के समय न जाने कहाँ चले गए थे और इधर मैं भी उसकी शैया के पास नही रह सका। फराओ की आत्मा चिडिया का रूप लेकर उसकी नाक मे से निकली और सीधी सूर्य की ओर उड़कर उसमे समा गई।"

मैंने उसे सारी वातें वतायी। सुनकर वह आश्चर्यचकित होकर बोला : "अम्मन रक्षा करे ! तव तो नया फ़राओ पागल है !"

और वह मदिरा पीने लगा।

थोडी देर वाद हमे सैनिक एक घेरे मे ले गए जहाँ हमे मरना था। राजमुहर रखने वाले उच्चाधिकारी ने चर्म-पत्र खोलकर राजाज्ञा ताहोर को दिखाई जिसे देखकर वह मुस्करा दिया। मैं भय-मिश्रित आश्चर्य मे डूवा हुआ था।

"सवसे पहले खून रोकने वाले को जाने दो !" ताहोर ने कहा।

वधिक ने खड्ग उठाया, हवा मे घुमाया और घुटनों के वल वैठे हुए उस व्यक्ति की गर्दन तक खड्ग को लाकर रोक दिया। वहुत ही हल्का स्पर्श हुआ। वह व्यक्ति लुढककर गिर गया। दूसरी वारी मेरी थी। ताहोर ने खड़े-खडे ही मरना स्वीकार कर लिया। और हम विधि और नियमों के अनुसार मर गए थे। फिर हमे नये नाम मिल गए। अव हम अपने पुराने नाम काम मे नही ला सकते थे। हमे भारी सोने की अँगूठियो पर अपने नये नाम खुदे मिले। ताहोर की अँगूठी मे खुदा था "वह जो वदर जैसा है" मेरी मे लिखा था "वह जो एकाकी है।" हमे सुवर्ण तौलकर इनाम मे दिया गया और नये राजसी वस्त्र पहनाये गए। मैंने अपने जीवन में पहली वार कलफ़ किये हुए राजसी वस्त्र पहने थे जिनमे गले के चारो ओर के पट्टे मे चाँदी

मढ़ी थी और जिसमे मूल्यवान पत्थर जडे हुए थे। जब नौकरो ने उस रक्त रोकने वाले को उठाया तो देखा कि वह मुर्दा हो गया था। शायद घबराकर ही वह मर गया था।

दरबार मे अब मेरा नाम "सिन्यूहे जो एकाकी है" हो गया था।

जब मैं उन वस्त्रो को और आभूषणो को पहनकर जीवन-गृह गया तो मेरे अध्यापको ने झुककर मेरा अभिवादन किया। फिर भी मै छात्र ही माना गया और फराओं की मृत्यु का पूरा विवरण मुझे ही लिखना पडा, जिसके अन्त मे उसके प्राणो को मैंने ताहौर के कहे अनुसार चिड़िया बनाकर नाक से निकालकर सूर्य की ओर उडा दिया था। यह वृत्तात पूरे सत्तर दिनो तक, जब तक कि उसका शरीर मसाले लगाकर अमरता के लिए तैयार किया जाता रहा, प्रजा के बीच पढ़कर सुनाया गया और इस पूरे समय थीबीज के बाज़ार बद रहे, इस बीच मदिरा प्राप्त करने तथा वेश्याओ के पास जाने के लिए पिछले द्वार चुपचाप खुले रहते थे।

थीबीज़-ज्वर मुझ पर जोरो से चढा हुआ था। मैं धन और यश प्राप्त करना चाहता था। मैंने उस सोने से एक मकान और एक काणा दास खरीदा। मकान नये अच्छे मकानो वाली सडक पर था और उसे मैंने भरसक सजाया। काणे दास का नाम कप्ताह था। उसका कहना था कि उसकी काणी आँख मेरी बहुत मदद करेगी। वह लोगो से कहेगा कि पहले वह बिल्कुल अधा था और यह कि मैंने इलाज के द्वारा उसे एक आँख दे दी थी। स्वागत-कक्ष की भीतो पर मैंने अपने मित्र टोथमीज़ से चित्र बनवाये थे हालाँकि वह ताह के मदिर की किताब मे लिखे कलाकारो मे से नही था। एक चित्र मे बुद्धिमान इम्होटप—जो वैद्यो का देवता था—मुझे सीख दे रहा था। उसका चित्र बडा था और मेरा उससे बहुत छोटा जैसा कि उन दिनो चित्रकारी का नियम था। चित्र के नीचे लिखा था :

"तुम्हारे शिष्यो मे से सबसे अधिक बुद्धिमान और चतुर सिन्यूहे है। सैन्मट का बेटा, वह जो एकाकी है।"

एक और चित्र मे मैं अम्मन के सम्मुख बलि दे रहा था। इसे देखकर

मेरे रोगी लोगो का विश्वास मुझमे बढता था। तीसरे चित्र मे फ़राओं महान स्वर्ग से मुझे चिडिया बनकर देख रहा था और उसके अनुचर लोग मुझे सुवर्ण तौलकर दे रहे थे तथा मुझे राजसी वस्त्रो से सजा रहे थे।

उसी शाम हम दोनो मित्र एक मदिरालय मे बैठे मदिरा पीकर आनद ले रहे थे और नाचती हुई युवतियों के यौवन को देख रहे थे। अभी तक मेरे पास फराओ का दिया हुआ सोना बच रहा था।

राजा की मुहर रखने वाले वृद्ध ने जैसा कहा था ठीक वैसा ही हुआ। जब फराओ का शरीर सम्राटो की घाटी मे रख दिया गया और कब्र के द्वार पर मुहर लगा दी गयी तो राजमाता सिहासन पर बैठी और उसने अपने हाथो मे राजदंड और बाज ले लिया। उसकी ठोडी पर राज्य की दाढी बँधी रहती और कमर मे सिह की दुम बँधी लटका करती थी। युवराज अभी सिहासन पर नही बैठा था। उसका कहना था कि उसे अभी अपने-आपको पवित्र करना है। राजमाता ने सिहासन पर बैठने के बाद ही राजमुहर रखने वाले वृद्ध को हटा दिया और उसके स्थान पर 'आब' को नियुक्त कर दिया जो पहले एक साधारण पुजारी था और अब सपूर्ण कैम के देश मे सबसे बडा पदाधिकारी बन गया। अम्मन के मंदिर मे असन्तोष की लहर दौड गई। अब वह मक्खियो की-सी एक निरतर भनभनाहट से गूंज उठा और तब राज-बलियो मे और स्वप्नो मे पुजारियो को अपशकुन दिखाई पडने लगे। कभी नगर के बाहर के तालाबो का जल रक्तमय हो जाता तो कभी अकाल वर्षा होती।

परन्तु सैन्य-कक्षों में कैम के लोग, सीरिया के लोग, हब्शी और सरदारान खुश थे क्योकि साम्राज्ञी ने उन्हे बहुमूल्य उपहार व इनाम बँटवाए थे। कैम के देश की शक्ति अद्वितीय थी। सीरिया मे—मिस्री सेना ने धाक जमा रखी थी। और बेबीलौन, स्मर्ना, सिडौन और गाज़ा के शासक लोगो ने, जो छुटपन मे फ़राओ के चरणो से सुवर्णगृह मे ही पले थे, मातम मनाया जैसे फराओ उनका अपना ही पिता था और साम्राज्ञी को उन्होने पत्र लिखे जिनमे यह ऐलान किया कि वे उसके (रानी के) चरणो की धूलि के बराबर भी नही थे।

मितन्नी के शासक ने महारानी से अपनी पुत्री ताद्दू खीपा को बहुमूल्य

रत्नाभूषणो तथा अनेकानेक दासो के साथ नये फराओ की सेवा मे भेज दिया कि वह उसे विवाह मे स्वीकार करे। वह उस समय केवल छः साल की बच्ची थी। युवराज ने उससे विवाह कर लिया क्योकि सीरिया और उत्तरी साम्राज्य के बीच मितन्नी का राज्य एक भीत की भाँति था जहाँ से होकर कारवाँ समुद्र तट तक पहुँच पाते थे।

अम्मन की दैवी पुत्री सैखमट के मदिर मे उत्सव बद हो गये थे। उसके मदिर के विशाल द्वारो की चूलों पर ज़ग चढ गया था।

टोथिमीज़ और मै बैठे-बैठे इन्ही सब विषयो पर, बाते कर रहे थे और मदिरापान करते जाते थे। नित्य भोर मे मेरा काणा दास मुझे नमक लगी मछली खाने को देता और गिलास भरकर हल्की मदिरा पिलाता—फिर मुंह-हाथ धोकर मैं मरीजों की बाट जोहता।

बाढ का समय था। नदी का जल ऊपर उठकर मंदिर के प्राकार से जा लगा था। एक दिन हठात् मेरे पास हौरेमहैब आया। वह राजसी महीन वस्त्र पहने था और उसके गले मे सोने की जजीर लटक रही थी। अब वह फराओ के यहाँ एक पदाधिकारी हो गया था। उसके हाथ मे उसके पद का प्रतीक—एक चाबुक थी। अब वह भाला नही रखता था। सौदर्य मे वह देवतुल्य लग रहा था।

उसने मुझे बातो ही बातो मे बतलाया कि वह पदाधिकारी बन जाने पर भी दुःखी था। उसने कहा : "थीबीज़ मे पौरुष का कोई मूल्य नही है। मेरे साथ के पदाधिकारी केवल दस-दस साल के लडके हैं। केवल वह उच्च वंश और बडे सामतो के पुत्र है। दरबार की स्त्रियाँ अब उन पुरुषो को पसद करती है जो उन्ही की भाँति कोमल और भीरु होते है। वह चाँदी-सोने की छोटी-छोटी-सी तलवारो को खिलौने की भाँति पकडते है। सैनिको में अनुशासन नही है। वह मदिरा पीकर राजघराने की दासियो के साथ पडे रहते है। शत्रु के रक्त की प्यास तो जैसे किसी मे है ही नही।···सोने की ज़जीरे इनाम मे मिलती है। क्या मजा है इन्हे पहनने मे जब तक यह शत्रु को मारकर न प्राप्त की जाये। साम्राज्ञी मुँह पर दाढी बाँधकर राज चलाती है। परन्तु एक योद्धा भला किस प्रकार एक स्त्री को अपना नायक मान सकता है···"

वह कहता रहा : "बाप की कसम ! सैनिक तो युद्ध-भूमि मे बनता है और कही नही···मेरे पौरुष को देखो। मैं दो जवानो को भींचकर मार सकता हूं···परन्तु स्त्रियां मुझसे दूर रहती है। उन्हे छाती पर बिना बालों वाले युवक पसंद है जो मुंह, होंठ और गाल स्त्रियो की भांति ही रंगते हैं। ···सिन्यूहे ! तुम एकाकी हो, मैं भी एकाकी ही हूं। यह मैं जानता हूं कि मैं शासन करने के लिए पैदा हुआ हूं और दोनो साम्राज्यो को एक दिन मेरी आवश्यकता पड़ेगी, फिर भी मेरी यहां रुकने की अब इच्छा नही होती···थीबीज से मुझे घृणा है·· यहां की मक्खियां मुझे परेशान करती है।"

फिर उसने बहुत घुमा-फिराकर यह बतलाया कि वह सुवर्णगृह में एक स्त्री से प्रेम करने लगा था, परन्तु वह थी कि उसकी ओर कभी देखती भी नही थी।

"कौन है वह ?" मैंने साधारणतया पूछा।

वह धीरे से बोला, "वह एक पवित्र कुमारी है···रासजी वस्त्रो से आच्छादित बहुमूल्य रत्नजडित आभूषणों को पहनने वाली···फ़राओ की बहिन बैकेटामोन !"

सुनते ही मेरे पैरो के नीचे की धरती सरक गई। मुझे होरेमहेब का सिर उसके धड से अलग प्रतीत होने लगा, फिर मैंने कहा, "मित्र होरेमहेब! थीबीज़ छोड़ जाओ, तुम्हारे लिए यही भला है। कोई भी मानव उस देवी को छूने का साहस भी नही कर सकता। आग से मत खेलो···उसे भूल जाओ; वह तुम्हारी पकड़ मे बहुत आगे है। सावधान ! यदि वह कभी विवाह करेगी भी तो अपने भाई फ़राओ से ही करेगी क्योंकि उसके अतिरिक्त उसके योग्य वर और है ही कहां ?

सायंकाल को उसने मुझे रंगशाला चलने को मजबूर किया। कप्ताह हमारे लिए एक पालकी ले आया। वास्त के मंदिर के पास जब हम उतरकर मशालो से उद्दीप्त एक घर मे घुसने लगे तो पालकीवालो ने अधिक किराया पाने के लिए झगडा शुरू किया। परन्तु जब होरेमहेब ने उन पर चाबुक फटकारा तो सब भाग गए।

जब हम अदर घुसे तो जो स्त्री हमारा स्वागत करने को आगे आयी,

उस पर मेरी निगाहे ठहरी की ठहरी रह गयी। वह राजसी झीने वस्त्र पहने हुई थी, जिनमे से उसकी बाँहे किसी देवी की भुजाओ की भाँति दमक रही थी। उसके सिर पर नीली कृत्रिम केश-राशि थी और वह बहुत-से मानिक जडे स्वर्णाभूषण पहने हुई थी। उसकी आँखो के नीचे हरा रग लगा था परन्तु सब हरे रगो से भी गहरी हरी उसकी आँखे थी जैसे ग्रीष्म ऋतु मे नील का जल हो जाता है। मेरा हृदय उसी मे खो गया क्योकि वह मेरी वही नेफर नेफर नेफर थी जो मुझे एक बार अम्मन के विशाल मदिर के एक प्राकार मे मिली थी। उसने मुझे नही पहचाना। वह हौरेमहेब को देखकर मुस्कराई, जिसने अपने पद का चाबुक उठाकर उसे उत्तर दिया। वहाँ क्रीट का कफ्ता भी मिल गया जो दौडकर हौरेमहेव से लिपट गया और उसने उसे मित्र कहकर सम्बोधित किया।

किसी ने भी मेरी परवाह नही की और मै आराम से अपनी बहन को देखा किया। वह पहले से बड़ी हो गई थी। उसके नेत्रो मे वह चमक नही थी। नेत्र मानो दो हरे पत्थर के टुकडे थे, वह हौरेमहेव के गले की जजीर पर टिके हुए थे। इसके होठ मुस्करा रहे थे।

मीरिया का तेज सगीत जारी था। वाद्य इतनी जोर से बजाये जा रहे थे कि वहाँ सभाषण करना भी कठिन हो रहा था। साथ ही वहाँ हल्ला-गुल्ला, अट्टहास, मदिरा के पात्र उँडेलना, फूक फेकना इत्यादि बुरी तरह चल रहा था। यह स्पष्ट था कि वहाँ लोग देर से मदिरा पी रहे थे क्योकि एक स्त्री ने वहाँ कै कर दी थी। दास ने उसे पात्र बहुत देर मे दिया था और उसने अपने वस्त्र बिगाड लिये थे। लोग हँस रहे थे।

क्रीट के कफ़्का ने मेरा आलिगन कर लिया और मेरे मुँह पर अपना रग लगा दिया और फिर वह मुझे मित्र कहने लगा।

नेफर नेफर नेफ़र ने मेरी ओर देखकर कहा, "सिन्यूहे! हाँ···मै किसी समय एक सिन्यूहे को जानती थी···वह भी वैद्य होने वाला था··· उन दिनो पढ़ रहा था।"

"मै वही सिन्यूहे हूँ" मैने उसकी आँखो मे दृष्टि गडाकर काँपते हुए कहा।

"नही···नही, तुम वह सिन्यूहे नही हो।" वह सिर हिलाकर बोली,

"वह सिन्यूहे तो हिरनी की-सी आंखो वाला लडका था और तुम तो अन्य पुरुषो की भांति ही एक हो। तुम्हारी भौहों के बीच दो खडे बाल है—उस सिन्यूहे के समान तुम्हारा मुख स्निग्ध भी नही है।"

मैंने जब उसे उसकी दी हुई अँगूठी दिखाकर विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया तो वह सिर हिलाकर तनिक परेशानी की-सी मुद्रा बनाती हुई बोली, "तब तो मैं किसी डाकू का स्वागत कर रही हूँ जिसने मेरे उस प्यारे सिन्यूहे की हत्या करके उसकी अँगूठी और उसका नाम भी चुरा लिया है।" उसने हाथ उठा दिये जैसे वह दुखित हो गई थी। मैंने उसकी अँगूठी उतारकर उसकी ओर बढा दी और कातर स्वर से कहा, "तो तुम अपनी अँगूठी वापस ले लो···मैं चला जाऊंगा और तुम्हे फिर कभी परेशान नही करूँगा।"

परन्तु उसने अपना हाथ मेरी बांह पर हल्के से रखकर कहा, "जाओ मत···जाओ मत !"

और मैं रुक गया। दास मदिरा पिलाने लगे। मुझे उस समय जो रुचि मदिरा मे लगी, कभी न लगी थी।

जो स्त्री कै से बिगड गई थी उसने मदिरा से कुल्ला किया और मदिरा पी, फिर उसने अपने तमाम बिगड़े हुए कपडे उतार फेंके। अब वह पूर्णतया नग्न हो गई। अपने हाथो से उसने स्तनो को बगलों से भींचकर मिला लिया और दासो से कहा कि उनके बीच मे वे मदिरा डाले। फिर उसने हर किसी को उस स्तनों के गड्ढे मे से मदिरा पीने की छुट्टी दे दी। फिर वह नंगी ही उस कक्ष मे ज़ोर-ज़ोर से हँसती हुई लुढकने लगी। यौवन, सौंदर्य और मदहोशी बिखेरती हुई उस स्त्री ने स्तनों के बीच मदिरा भरकर हौरेमहेब के मुँह के पास स्तनो का वह कटोरा लगा दिया। उसने सिर झुकाया और उस मदिरा को पी लिया। फिर उसने उन्मत्त होकर उस नग्न स्त्री को भुजाओ मे लिपटा लिया। सब हँसने लगे और वह स्त्री स्वयं भी हँसने लगी। सीरिया के वाद्य तीखी ध्वनि फैलाते हुए बज रहे थे।

"क्या यह तुम्हारा घर है ?" मैने अपने पास बैठी हुई नेफ़र नेफ़र नेफ़र से पूछा।

"हाँ···और यह सब मेरे अतिथि है। रोज़ शाम मेरे पास अतिथि आते हैं क्योकि मै अकेली रहना पसंद नही करती।"

"और मितूफर ?" मैंने पूछा।

उसने जैसे स्मृति को दौडाया फिर बोली, "हाँ···मितूफर ! वह तो मर गया···वह फराओं का धन चुराकर भागा···इसलिए मारा गया··· उसका पिता भी अब राजा का कारीगर नही रहा है।"

"तब तो उसे अम्मन ने पूरा दड दिया।" मैंने हँसकर कहा और फिर उसे वह सारी कथा कह सुनाई जब मितूफ़र और उस पुजारी ने अम्मन की प्रतिमा पर वह थूक रगडकर उसका सुगधित पवित्र तेल अपने सिरो पर उँडेल लिया था। वह मुस्कराई पर उसकी आँखो मे एक कठोर और जैसे बहुत दूर किसी वस्तु को देखने वाली दृष्टि थी। हठात् वह मुडकर मुझसे बोली, "तब जब मैंने तुम्हे बुलाया था तुम क्यो नही आये थे सिन्यूहे ? अगर तब तुम मुझे ढूँढते तो अवश्य पाते। तुमने मेरे पास न आकर और मेरी अँगूठी पहनकर अन्य स्त्रियो के पास जाकर अच्छा नही किया।"

"तब मैं लडका ही तो था और तुमसे डरता था—परन्तु मेरे स्वप्नो मे तुम मेरी बहन थी। नेफर नेफर नेफर, और चाहे तुम मुझ पर हँस लो परतु अभी तक मै किसी स्त्री के सपर्क मे नही आया हूँ। मैं तो तुम्हे ही पाने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

वह सुनकर खूब हँसी। फिर अविश्वास से सिर हिलाते हुए बोली, "तुम निश्चय ही झूठ बोल रहे हो। तुम्हारी निगाहो मे मै बुड्ढी और कुरूप लग रही हूँ तभी मेरा उपहास कर रहे हो।" उसकी आँखो मे अब वही चमक आ गई थी जो पहले उस दिन मदिर मे थी और अब वह अपनी आयु से इतनी छोटी लग रही थी कि मेरा हृदय उसे देखकर फूल उठा और दर्द करने लगा।

"यह तो सत्य है कि मैंने आज तक किसी स्त्री को नही छुआ," मैने कहा, "और यह झूठ हो सकता है कि मैने तुम्हारी प्रतीक्षा की है। मेरे समक्ष हर तरह की अनेकानेक युवतियाँ और तरुणियाँ आई है। मैंने उन्हे नग्नावस्था मे भी देखा है परतु उन्हे देखकर कभी मेरे मन मे हूक नही उठी क्योकि वह रोगिणी होती थी और मैं वैद्य। आज मेरा हृदय अत्यत प्रसन्न

है···मै कह नही सकता कि ऐसा क्यो है।"

"सुनकर हँसी आती है।" वह सहज स्वर से बोली फिर मुँह बनाकर बोली, "वह शायद इसलिए कि तुम छुटपन मे किसी गाडी से सिर के बल गिर गये होगे।" और वह हँस दी और उसने मुझे अपनी कोमल उँगलियों से छू दिया। मेरे शरीर मे सनसनी दौड गई क्योकि मुझे अभी तक किसी ने इस तरह छुआ ही नही था। फिर उसके कहने पर हम मदिरा पीने लगे। देर तक हम पीते रहे। दासो ने अब नशे मे चूर उन अतिथियो को उठा-उठाकर उनकी पालकियो पर रख दिया जहाँ से पालकी वाले दास उन्हे उठाकर ले गए। हौरेमहेब ने उस युवती के गले मे हाथ डाल दिये और उसे अपनी सोने की जजीर पहनानी चाही, तो वह बनावटी क्रोध दिखाकर बोली, "मै एक शरीफ़ औरत हूँ कोई वेश्या थोड़े ही हूँ?" और वह उठकर जैसे उसका अपमान हो गया हो, द्वार की ओर चली, जिधर और कक्ष थे। परंतु द्वार पर पहुँचकर उसने मुडकर हौरेमहेब को इशारे से बुलाया और वह उठकर उसके पीछे चला गया।

बाकी के लोग जो अब भी पी रहे थे, दोनो हाथों से सुवर्ण बिखेर रहे थे। वह कभी एक-दूसरे को मित्र कहते तो कभी लड़ते और चिल्लाने लगते थे। नशा मुझ पर भी पूरा चढ चुका था। मदिरा का कम और नेफ़र नेफर नेफ़र की निकटता का अधिक। मैं उसे चिपटा लेना चाहता था। परन्तु उसने कहा, "अभी नही, अभी नौकर-चाकर सब देख रहे है···मैं अकेली रहती अवश्य हूँ परन्तु घृणा के योग्य नही हूँ।"

वह मुझे अपने उद्यान मे ले गई जहाँ कुड मे स्वच्छ जल भरा था। फूल खिले हुए थे और कमल जल मे लहरा रहे थे। दासो ने हमारे हाथ धुलाये और हमारे लिए भुनी हुई बतख और शहद मे डूबे फल काटकर लाये।

रात्रि के अवसान मे जब मेरी उत्तेजना बहुत बढ गई तो उसने अपने सम्पूर्ण वस्त्र उतारकर मुझे अपने पास अपनी आबनूस और हाथीदांत की बनी शय्या पर घसीट लिया। जब मै वहाँ से घर लौटा तो मेरे रोम-रोम मे नेफ़र नेफर नेफर समाई हुई थी। उसने मुझसे अपने यौवन का कुछ भी मूल्य नही माँगा था।

दूसरे दिन सुबह ही मैंने कप्ताह से कहा कि वह तमाम मरीजो को भगा दे। नाई बुलाकर मैंने हजामत कराई फिर नहाकर सुगधित तेलो से मालिश कराई और वस्त्र पहनकर एक पालकी मँगाई। कप्ताह चिंतित होकर मेरी ओर देखने लगा क्योकि कभी दोपहर के पहले और काम छोडकर मै घर के बाहर नही निकलता था। और मुझे जल्दी पड रही थी कि मेरे वस्त्र और पैर धूल मे न हो जाएँ और मै, स्वच्छ, उसी हालत मे, नेफर नेफर नेफर के पास पहुँच जाना चाहता था।

जब मुझे एक दास उस सुन्दरी के पास ले गया तो उस समय वह दर्पण के सम्मुख बैठकर शृगार कर रही थी। उसने मेरी ओर कडी और विमुख दृष्टि से देखकर पूछा :

"तुम क्या चाहते हो सिन्यूहे ? तुम तो मुझे परेशान करते हो।"

"तुम तो जानती ही हो मै क्या चाहता हूँ।" मैंने कहा और उसे भुजाओं मे लपेट लेना चाहा, परन्तु उसने मुझे रुखाई से रोक दिया। वह गम्भीर स्वर से बोली, "यह क्या मूर्खता है कि इस समय आये हो ! सिडौन से एक व्यापारी आया है। उसके पास एक मणि है, जो कभी किसी रानी की थी। माथे पर लटकाने की है वह, और कब्र मे से निकाली गई है। मैंने हमेशा से चाहा है कि मुझे एक ऐसा रत्न मिले, जैसा किसी और के पास न हो। अतएव मै शृ गार कर रही हूँ कि मै अधिक-से-अधिक सुन्दर लगूँ। और मेरे अनुचर मेरे अंग-अग मे सुगधित तेल लगाएँगे।"

उसका आशय था कि मै चला जाऊँ परन्तु जब मै नही उठा तो उसने बिना किसी हिचकिचाहट या लज्जा के अपने सारे वस्त्र उतार दिये और वह नग्न होकर शय्या पर सीधी लेट गई। एक दासी युवती उसके हाथ-पैरो मे तेल लगाने लगी। उसे देखकर मेरा हृदय मेरे कठ मे आ गया और उस नग्न सौदर्य को देखकर मेरे हाथ पसीज उठे।

मुझ पर मदहोशी-सी छाने लगी और मै उस पर लपका पर उसने डाँटकर मुझे ऐसे रोक दिया कि मै खड़ा-का-खड़ा रह गया, और मूक खड़ा हुआ आँसू बहाने लगा। मेरी हूक बढती जा रही थी। अन्त मे मैंने कहा : "अगर मैं तुम्हारे लिए वह रत्न खरीद सकता तो अवश्य खरीद देता···तुम यह बात जानती हो···परन्तु तुम्हारे शरीर को कोई और मेरे रहते नही छू

सकता···अन्यथा मैं मर जाऊँगा।'

"ओह!" वह आधे नेत्र मूंदे बोली, "तो तुम किसी को मेरा शरीर छूने की आज्ञा नहीं दे सकते? और अगर आज का दिन मैं तुम्ही को दे दूं, अर्थात् तुम्हारे ही साथ खाऊँ-पिऊँ, खेलूं और आनन्द भोगूं, क्योंकि कल की भला कौन जाने क्या होगा। तो तुम मुझे क्या दोगे?"

उसने अपना नग्न शरीर शय्या पर फैला दिया जिससे उसके पेट मे गड्ढा पड गया और स्तन उभर उठे। उसके सम्पूर्ण शरीर और सिर पर एक भी बाल नही था। मैंने अपलक नेत्रो से उसे देखते हुए कहा :

"तुम्हे देने के लिए सचमुच ही मेरे पास कुछ नही है", फिर मैं भूमि की ओर देखने लगा। फर्श धारीदार सगमरमर का बना हुआ था जिसमे स्थान-स्थान पर रत्न जडे थे और कई सोने के प्याले इधर-उधर रखे थे। मैंने फिर कहा : "मेरे पास तुम्हे देने के लिए निश्चय ही कुछ नही है।" और मैं घूमकर बाहर जाने को मुडा परन्तु तभी उसने मुझे रोककर नम्र स्वर मे कहा : "सिन्यूहे! मुझे तुम्हारे लिए दुःख है।" यह कहकर उसने अपना शरीर फिर फैला दिया; फिर कहा : "तुम्हारे पास जो कुछ देने योग्य था वह तुम मुझे पहले ही दे चुके हो···वैसे मेरे विचार से उसका इतना मूल्य नही है जितना तुमने उसे समझ रखा हो। लेकिन तुम बिल्कुल ही गरीब तो नही हो! तुम्हारे पास मकान है, कपड़े हैं और वैद्यो के लिए जरूरी तमाम आयुध हैं!"

सिर से पैर तक कांपकर मैंने उत्तर दिया : "वह सब तुम्हारा है नेफर नेफ़र नेफ़र! यदि तुम चाहो। मकान वैसे कम कीमत का अवश्य है पर जीवन-गृह से निकले हुए किसी भी वैद्य के लिए वह सब तरह से पूर्ण है यदि वह उसे खरीद सके तो।"

"अच्छा!" उसने कहा और वह उल्टी हो गई और दर्पण मे अपने सौंदर्य को देखकर अपनी लंबी उँगलियों को अपनी भौंहो पर फेरने लगी। फिर बोली : "अच्छा तो तुम इस जायदाद को मेरे नाम कर दो। प्रमाण-पत्र किसी लेखक से लिखवाकर ले आओ। मैं अकेली रहती अवश्य हूँ परन्तु घृणा की पात्रा नही हूँ। मुझे भविष्य के उस समय के लिए अभी से प्रबन्ध कर लेना है जब तुम, सिन्यूहे मुझे बुढिया समझकर दुत्कार दोगे।"

मैने उसके नग्न सौदर्य को देखा। मेरे मुँह मे मेरी जिह्वा जैसे छोटी हो गई थी और हृदय इतनी जोर से धडकने लगा कि मै शीघ्र मुडकर बाहर चला आया। मैंने एक विधि के ज्ञाता लेखक से कागजात तैयार कराये और उन पर राजसी मुहर लगवाकर जब मैं कागज लेकर लौटा तो नेफर नेफर नेफ़र वस्त्रादिक पहनकर तैयार हो गई थी। वह अग पर राजसी झीने वस्त्र पहने थी और सिर पर उसने सुनहरी लाल कृत्रिम केशराशि पहनी थी। ग्रीवा, कलाइयाँ, टखने इत्यादि बहुमूल्य रत्नाभूषणो से सजे थे। द्वार पर एक सुन्दर नक्काशी वाली पालकी शायद उसी की प्रतीक्षा मे खडी थी।

उसे वह कागज़ देकर मैंने कहा . "जो कुछ मेरा था अब तुम्हारा हो गया है नेफर नेफर नेफर। अब आओ हम आनन्द भोगे, खाएँ-पीएँ, खेले··· क्योकि कल की किसने जानी है!"

उसने वह कागज लापरवाही के साथ लेकर एक आबनूस की संदूकची मे डाल दिया और कहा: "मुझे खेद है सिन्यूहे, पर आज अभी थोड़ी देर पहले मुझे मासिक धर्म शुरू हो गया है, अतएव इस समय मै कुछ नही कर सकती। जब मै शुद्ध हो जाऊँगी तब समय निश्चित करेगे···किसी और दिन आना और तब तुम्हारी इच्छा पूरी की जाएगी।"

मैने मृत्यु की विभीषिका सीने मे दबाये उसे देखा और बोल न सका। उसने जल्दी मे पैर पटकते हुए कहा: "अब जाओ···मुझे जल्दी है।"

जब मैने उसे छूना चाहा तो वह तिनककर मुँह बिगाड़कर बोली: "मेरे मुख के रगो को खराब मत करो!"

मै घर चला आया। आज मै सब कुछ हार चुका था, फिर भी उस नागिन की ओर खिचा चला जा रहा था। मैने अपने सामानो को ठीक करके रखा कि वह सब नये मालिक के काम आ सके। मेरा काणा दास मुँह बाये यह सब देख रहा था। मैने उससे कहा: "मेरे पीछे-पीछे मत घूमो ···अब अपने नये मालिक की सेवा करना क्योकि यह मकान, यह सामान और तुम्हे मै किसी को बेच चुका हूँ। और हाँ—उसके यहाँ चोरी मत करना जैसी मेरे यहाँ करते रहे हो क्योकि शायद उसका डडा मेरे डडे से ज्यादा मजबूत हो।

सुनकर वह पृथ्वी पर औधा लेट गया और घिघियाकर कहने लगा कि

मै उसे न छोड़ूँ अन्यथा वह मर जायेगा और कि अब तक वह सभी स्थानों पर कहता रहा है कि मैं बहुत ही अच्छा वैद्य था, इत्यादि।

वह कहने लगा : "आज का दिन खराब है···आह! अब न जाने मुझे नया मालिक कितने दुख देगा···तुम जैसा उदार स्वामी तो मुझे निश्चय ही नही मिल सकेगा। तुम जवान हो फिर भी कमाल के वैद्य हो।" फिर सोचकर उसने कहा : "क्यो न हम दोनो इस देश से भाग जाएं। सब कीमती सामान मैं एकत्रित किये लेता हूँ। हम लाल भूमि वाले देश को भाग चलेंगे जहाँ तुम्हे कोई नही जानता या फिर किसी समुद्र के द्वीप मे चले चलेंगे जहाँ मदिरा और युवतियो के बीच तुम आनन्द कर सकोगे ·· मितन्नी और बेबीलोन मे भी मिस्री वैद्यो की बडी पूछ है और वहाँ तुम अत्यन्त धनी बन सकोगे। अतएव मेरे मालिक! जल्दी करो जिससे हम अँधेरा होने से पहले ही भाग निकलें।"

"कप्ताह! कप्ताह! इन व्यर्थ की बातो से मेरा दिमाग मत खाओ। थीबीज मैं कभी न छोड सकूँगा···यहाँ तो जैसे मैं लोहे की जजीरो से बँधा हुआ हूँ।" फिर जब उसने बहुत रोने-धोने के बाद पूछा कि नया मालिक कौन था तो मैंने कहा : "वह एक स्त्री है।"

सुनकर वह सिर धुनने लगा। वह बोला : "तब तो वह कोई अत्यन्त क्रूर स्त्री होगी, जो उसने तुम्हारे साथ ऐसा छल किया है", सारी रात वह बकता रहा और उसकी बडबडाहट मेरे लिए मक्खियो की भिनभिनाहट से कोई ज्यादा मूल्य की नही लग रही थी।

४

भोर मे मैं नेफ़र नेफर नेफर के यहाँ गया। वह सो रही थी। जब मैंने नौकरो को जगाया तो वह गालियाँ देने लगे और उन्होंने मुझ पर कूडा फेंका। अतएव द्वार पर भिखारी की भाँति बैठे रहने के सिवाय मेरे

पास और कोई चारा नही था। जब घर मे चहल-पहल शुरू हुई तो मैं फिर उठा।

नेफ़र नेफ़र नेफ़र अस्त-व्यस्त शय्या पर पडी थी। उसका मुख छोटा और सफेद लग रहा था और उसकी हरी आँखो से ऐसा लगता था जैसे उसने रात काफी मदिरा पी थी। मुझे देखकर वह उकताहट के स्वर मे बोली :

"तुम मुझे परेशान करते हो—क्या चाहते हो तुम ?"

"तुम्हारे साथ खा-पीकर मौज करना···जैसा कि तुमने वचन दिया था।" मैने भारी स्वर से कहा।

वह सुनकर मुस्कराकर बोली · "लेकिन वह तो कल की बात थी, आज तो नया दिन है !"

एक दासी ने आकर उसके वस्त्र उतारकर उसकी देह मे तेल मलना शुरू कर दिया। नेफर ने अपने-आपको दर्पण मे देखा फिर लेटे-ही-लेटे उसने सुवर्ण मे मोतियो और नाना प्रकार के रत्नो से जडे हुए एक अमूल्य आभूषण को तकिया के नीचे से उठाकर अपने माथे पर लटकाया और कहा :

"है न सुन्दर ?···इसकी कीमत देने मे मै रात-भर थक जरूर गयी क्योकि उसने तो सचमुच ही मुझे झँझोड़ डाला···पर चीज वैसे है बडी सुन्दर !"

"तो तुम कल शाम मुझसे झूठ बोली थी कि तुम्हे मासिक धर्म हो गया था···" मैने कहा।

"मेरा खयाल था कि ऐसा हो गया है क्योकि समय हो गया था···" और फिर वह ताना मारती हुई दृढतापूर्वक हँसी और बोली : "असल मे तुमने गड़बड कर दी है मेरे साथ सिन्यूहे ! तुम्हारे पाश मे मै ढीली पडी थी और तुम थे कि अपना प्रबल पौरुष दिखा रहे थे···मुझे डर है क्योकि मै गर्भवती हो गई हूँ शायद !"

वह मेरा उपहास कर रही थी और अत्यन्त निर्लज्जतापूर्वक, परन्तु मै अधा हो रहा था। फिर भी मैने कहा :

"तुम्हारे रत्न तो किसी कब्र मे से आ रहे थे न ? यही तो शायद तुमने

कल मुझसे कहा था ?"

उसने मेरी बात का कोई उत्तर नही दिया फिर कहा : "सूअर की तरह मोटा था कमबख्त वह सीरिया का व्यापारी। उसमे से प्याज की बदबू आ रही थी···पर इससे तुम परेशान क्यों होते हो !"

और उसने तमाम आभूषण ओढनी इत्यादि नीचे सरका दिये। अब वह फिर पूर्णतया नग्न होकर शय्या पर पडी थी। फिर वह हथेली बाँधकर, उसका तकिया लगाकर साँस भरकर मचलती हुई आँख चलाकर कहने लगी : "सिन्यूहे ! मै तो थक गई हूँ और तुम हो कि मुझे घूरे जा रहे हो और खासकर तब जब मैं तुम्हे रोक नही पाऊँगी। तुम तो जानते हो कि मैं अकेली रहती हूँ फिर भी घृणा की पात्रा तो नही हूँ।"

"तुम तो जानती ही हो कि अब तुम्हे देने के लिए मेरे पास कुछ भी नही है", मैंने भारी मन लिये कहा।

उसने अपना सारा शरीर हिलाया और जंघाएँ फैलाकर हँसते हुए कहा : "पुरुष कितने छलिया होते है। सिन्यूहे, तुम भी मुझसे झूठ बोलते हो और मेरा यह हाल है कि तुम्हे जब देखती हूँ दुर्बल हो जाती हूँ।"

मैने बढकर उसे बाहुपाश मे समेट लेना चाहा, तो उसने मुझे हटा दिया और कहने लगी : "दुर्बल और अकेली मैं अवश्य हूँ, परन्तु धोखेबाजो से वास्ता नही रख सकती। तुमने मुझसे कभी नही कहा कि तुम्हारे पिता सैमन्ट का गरीबो की बस्ती मे एक मकान है। मकान ज़रूर छोटा है पर जिस भूमि पर वह खडा है वह अवश्य कुछ रकम दे सकती है क्योकि वह नदी तट पर स्थित है। उसे मुझे दे दो, तो मैं तुम्हारे साथ आज···"

"परन्तु मेरे पिता की जायदाद मेरी तो नही है", मैं बीच ही मे बोल उठा।

अपनी हरी आँखे मुझ पर घुमाकर उसने कहा : "क्यो नही है ? तुम्ही तो अपने पिता के न्याययुक्त उत्तराधिकारी हो !"

मैं सुनकर चुप हो गया क्योकि यह ध्रुव सत्य था। मेरा हृदय आतंकित हो उठा। भला मैं अपने माता-पिता से छल कैसे कर सकता था ? उफ ! उन्होने मुझ पर कितना अटूट विश्वास करके मुझे पाला-पोसा, लिखाया-पढाया और अब मुझे हाल ही मे अपना उत्तराधिकारी बनाया था ! तभी

वह बोली · "मेरे सिर को अपनी हथेलियों के बीच लेकर मेरे स्तनों पर अपने होठ धरो। तुम्हारे मामले मे इतनी कमज़ोर हो जाती हूँ कि अपना फायदा भी भूल जाती हूँ। यदि तुमने अपने पिता की जायदाद मेरे नाम कर दी तो···"

मैने उसका सिर हाथो मे ले लिया और उसके स्तनो का चुम्बन लिया। मुझ पर उसकी वासना बुरी तरह फिर चढ गई और मैंने कहा :

"ऐसा ही हो···"

परन्तु जब मैं उसकी ओर बढा तो मुझे रोकते हुए वह बोली : "पुरुष वचन के कच्चे होते है। पहले जायदाद मेरे नाम कर दो।"

और फिर पहले की भाँति जब मैं प्रमाण-पत्र पर राज्य की मुहर लगवाकर उसके पास पहुँचा तो वह सो रही थी। मुझे सायकाल तक प्रतीक्षा करनी पडी। आखिरकार वह जागी और मुझे देखकर बोली :

"तुम तो सिन्यूहे बडे जिद्दी आदमी हो पर मैं···मैं वचन की पक्की हूँ ···आओ।"

और वह शय्या पर लेट गई और उसने मेरे लिए आलिगन खोल दिया। परन्तु उसने कोई रुचि नही ली। उसने अपना सिर बगल की तरफ फेर लिया और दर्पण मे मुख देखती रही और हाथ लगाकर जम्हाइयाँ लेती रही। मेरा सारा उत्साह और आनन्द खाक बन गया।

जब मै उठा तो उसने मुझसे कहा : "तुम सचमुच बहुत परेशान करते हो। अब जाओ और फिर कभी आना। अब तो तुम्हारे मन की हो गयी न ?"

अडे के छिलके की तरह अस्तित्वहीन होकर मै घर लौटा। मैं जी भरकर रोना चाह रहा था कि घर के वराडे मे ही मुझे एक अजनबी वैठा मिला जो सीरिया के लोगो की वहुरगी पोशाक पहने था और वैसा ही कपडा सिर पर ओढे था। उसने मेरी ओर देखकर गर्व से अभिवादन किया और कहा कि वह मुझसे पैर की सूजन का इलाज कराने आया था।

"मैं अव यहाँ इलाज नही करता", मैंने कहा, "क्योकि यह मकान अव मेरा नही रहा है।"

पर वह न माना। बोला : "तुम्हारे दास कप्ताह के कहने से मैं आया

हूँ जिसके पैर तुमने ठीक कर दिये थे। मेरे पैरों का दर्द मुझसे सहा नही जाता···इन्हे तो तुम्हे देखना ही पड़ेगा···कृपया···" उसकी वोली सीरियन जैसी थी।

आखिरकार उसे मुझे देखना ही पडा। मै उसे कमरे के अन्दर ले गया और मैने कप्ताह को आवाज दी कि वह गर्म पानी लाकर मेरे हाथ धुलवाये। कोई उत्तर नही आया। मुझे असलियत का तव तक पता ही न चला जब तक कि मैने उस व्यक्ति के पैर देखकर उसे नही पहचाना क्योकि वह स्वय कप्ताह ही था जिसने सीरियन का भेष वना रखा था। मेरा क्रोध दिमाग मे चढ गया। मैं चिल्लाया . "यह क्या तमाशा है ?"

मेरा दास सुनते ही ठठाकर हँसा और उसने अपने सिर पर से वस्त्र खीच लिया।

मैं आपा खो वैठा। लकडी लेकर उस पर टूट पडा। उसे मैंने इतना मारा कि उसकी हँसी चिल्लाहट मे परिवर्तित हो गई। आखिर मैंने लकडी फेंक दी। तव वह थोडी देर वाद वोला, "अव क्योकि मै तुम्हारा दास नही रहा हूँ और किसी अन्य व्यक्ति का दास हूँ अतएव मैने भागने का निश्चय पक्का कर लिया है। मै इस भेष मे कैसा वदला हुआ लगता हूँ यह मै देखना चाहता था···"

दूसरे दिन सुवह ही जव मैं नेफ़र के यहाँ गया तो वह उद्यान में वैठी थी। मुझे देखते ही बोली, "ओह सिन्यूहे! तुम लौट आये। इसका अर्थ है कि मैं अभी जवान हूँ · वोलो क्या चाहते हो ?"

मैने उसकी ओर उन्ही ललचाई निगाहों से देखा तो वोली, "फिर ?··· मैं अकेली अवश्य रहती हूँ पर घृणा के योग्य तो नही हूँ।"

फिर उसने तमाम वस्त्र उतार डाले और नग्न होकर कुण्ड मे कूद पड़ी। जल मे उस नग्न नारी को देखकर मैं मदहोश हो गया और मेरा कठ सूख गया। उसने मुझे भी जल मे इशारे से मुस्कराकर बुलाया और मै वस्त्र उतारकर उसके साथ जल में केलि करने के लिए जव बढ़ा तो उसने मुझ पर जल उछालदिया और झट से मेरी पकड से वाहर निकल गई। फिर वह जल पर चित्त होकर तैरने लगी और उसके उन्नत युगल स्तन जल पर खिले हुए

कमल के फूलो से भी सुन्दर लग रहे थे ।

आज उसने मुझसे मेरे माता-पिता की कब्र भी ले ली जो उन्होने 'मृतकों के नगर' मे अम्मन के पुजारियो से मोल ली थी कि उन्हे मृत्यु के उपरान्त पश्चिमी देशो की यात्रा मे कोई बाधा न पडे ।

और जब मै प्रमाण-पत्र लेकर पहुँचा तो वह सोती मिली । उसने उठकर वह कागज लेकर रख लिया और बिना मेरी ओर देखे अपना शृंगार किया। वह स्वत. कहती रही :

"आज उत्तरी साम्राज्य से जो महान् व्यक्ति मेरे पास आने वाला है उसके पास सौ दवन के तौल का सुवर्ण का एक प्याला है। वह वृद्ध है और आज रात उसकी हड्डियाँ, क्योकि वह बहुत ही दुबला बतलाया जाता है, मेरे शरीर मे चुभेगी अवश्य, पर कल भोर मे वह प्याला मेरे घर की शोभा बढायेगा···मैं अकेली अवश्य रहती हूँ पर घणा के योग्य तो नही हूँ !"

जब मैने उससे कहा, "अब तो मैने तुम्हे अपने माता-पिता की कब्रे भी दे दी है···अब तो आओ !" और उसे आलिगन मे लेना चाहा तो वह मुझे रोककर बोली, "पहले मदिरा तो पी लो, पीछे तुमसे मै 'भाई' कहूँगी । और उसने मुझे प्याले पर प्याले डालकर पिलाये । फिर वह बोली, "अब जाओ ···फिर आना ।"

"क्यों ?' मैंने विरोध किया ।

सुनकर वह हँसी फिर बोली, "मुझे बाहर जाना है और तुम जाकर अपने लिए गहरे से गहरा कुआँ या बिना पैदे का गड्ढा ढूँढ लो···यह तो तुम्हारा ही काम है ।"

मै उसे लिपटाने को जब बढा तो वह बल खाकर मेरी पकड से निकल गई और तेज़ आवाज मे हँसकर उसने अपने अनुचरो को बुलाकर कहा, "यह भिखमगा मेरे मकान मे कैसे आ गया ? इसे बाहर निकाल दो और फिर कभी अन्दर मेरे पास मत आने दो । अगर यह न माने तो इसे अच्छी तरह मारो ।"

और उन अनुचरो ने मुझे डडो से मार-मारकर बाहर निकाल दिया । जब मैंने गरजकर उनका विरोध किया तो उन्होंने मुझे और मारा···इतना मारा कि मै मूर्च्छित होकर धूल मे गिर गया । जहाँ लोगो ने मुझ पर थूका

और कुत्तो ने मुझ पर पेशाव किया।

सारी रात मैं वही पड़ा रहा। पापी अन्धकार में ही चैन पाता है, क्योंकि प्रकाश मे वह मुँह दिखाने के योग्य नही होता। भोर मे उठकर लुटा-पिटा मै शहर के बाहर वांस के जगल मे छिप गया जहां मैं तीन दिन, तीन रात भूखा-प्यासा पड़ा रहा। शायद मै चिल्ला उठता—अपनी करनी के भय से ही मर जाता, यदि वहां कोई मुझसे मेरा कुशलक्षेम न पूछ वैठता।

तीसरे दिन मैंने अपने हाथ-पैर धोये और वस्त्रो से जमा हुआ रक्त छुड़ाकर मैं सीधे अपने घर गया। परन्तु वह घर अव मेरा नही था क्योंकि उसमे कोई अन्य वैद्य आ गया था। मैंने जव कप्ताह को आवाज़ दी तो वह भागकर आया और उसने अपने हाथ घुटनों की सीध मे फैलाकर मेरा अभिवादन किया। वह मुझे अव भी चाहता था। उसने कहा, "वैसे तुम मेरे स्वामी नही रहे हो परन्तु तुम्हारे लिए तो मेरे हृदय मे अपार श्रद्धा है। मेरा नया स्वामी अपने-आपको वड़ा योग्य वैद्य समझता है पर जानता खाक भी नही है। उसके साथ उसकी मां है जो वहुत ही बुरी स्त्री है और मेरे पैरों पर गर्म पानी फेंका करती है···पर अच्छा हुआ तुम आ गए वरना मुझे कहाँ मिलते। दिन सचमुच वहुत ही बुरा है···तुम्हारे माता-पिता मर चुके हैं।" सुनकर मुझे चक्कर आ गया और मैं पृथ्वी पर वैठ गया।

उसी ने मुझे वतलाया कि जव न्यायालय के अधिकारियो ने उनके घर पर जाकर दरवाज़ा तोड़ा तो उन्हे अंदर मरा पाया। वह लोग वहाँ मकान गिराने और हर चीज़ पर मुहर लगाने गये थे।

"क्या वह जान गए कि ऐसा क्यो हुआ?" मैंने पूछा। मुझ में उस दास से आँखें मिलाने की भी हिम्मत नही रही थी।

वह वोला, "तुम्हारे अंधे पिता सैन्मट का हाथ पकड़कर तुम्हारी माता कीपा यहाँ लाई थी। वह वुड्ढे और दुर्वल हो रहे थे और चलने मे लडखड़ाते थे। उन्ही लोगो ने मुझे राज्य-कर्मचारियों द्वारा की गई वातें वतलायी। उसने कुर्क अमीनो से जव उस सवका कारण पूछा तो उन्होंने हँसकर उससे कहा कि 'तुम्हारे लड़के ने यह सव वेचकर एक वदमाश औरत को दिया है,' तुम्हारे पिता ने वड़ी देर हिचकने के वाद मुझसे एक ताँवे का टुकड़ा भी माँगा था कि वह तुम्हें एक पत्र लिखा सके और मैं निश्चय ही अपने

पास से लाकर उसे देता पर इस मकान की मालिकन ने तभी मुझे बुलाकर रसोईघर मे बद कर दिया जहाँ मै रात-भर बद रहा। उसका कहना था कि मै भिखारियो के साथ समय नष्ट कर रहा था।"

"मेरे पिता ने कुछ कहा था मुझसे कहने के लिए ?"

"नही।"

मेरे सीने पर पत्थर रखा था फिर भी मेरा दिमाग दुरुस्त था। मैने कप्ताह से कहा, "अपना सब चाँदी और ताँबा मुझे दे दो कप्ताह! शायद जीवन मे कभी न लौटा सकूँ, पर तुम्हे देवता इस भलाई का बहुत बडा फल देगे··"

और उस पवित्रात्मा ने दास होकर भी जो कुछ उसने पृथ्वी मे गाड रखा था, पूरा का पूरा दे दिया। देते समय अपने जीवन-भर की बचत के वियोग मे उसके नेत्र भर आये, परन्तु उसने मुझे अपना सब कुछ उसी समय दे दिया। अतएव वह शाश्वत काल तक महान् बना रहेगा।

पिता और माता उस घर मे घुटकर मरे पाये गये, पडोसियों ने मुझे देख कर घृणा से मुँह फेर लिए। उन्हे एक गधे पर लादकर मै मृतक-गृह मे गया, परतु वहाँ उन लोगों ने उन्हे लेने से इकार कर दिया क्योकि मेरे पास उन्हे देने के लिए पर्याप्त चाँदी नही थी। वह सस्ते से सस्ती विधि से भी उन्हे मसाले लगाकर अमर बनाने को राजी नही हुए। और तब मैने लाश धोने वालों से दया की भीख माँगते हुए कहा : "मै सैन्मट का पुत्र सिन्यूहे हूँ और मेरा नाम जीवन-गृह की पुस्तक मे लिखा है। मेरे भाग्य के बुरे फेर मे इस समय मेरे पास पर्याप्त धन नही है, अतएव मै, अम्मन के नाम पर और कैम देश मे माने जाने वाले तमाम देवताओ के नाम पर तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरे माता-पिता के शरीरो पर मसाला लगा दो इसके बदले मे मै तुम्हारी भरसक सेवा करूँगा—पूरे उस समय तक जब तक कि इनके शरीर तैयार न हो जाएँगे।"

सुनकर उन्होंने गालियाँ दी, मुंह बनाए, मुकर गए, परतु जब मैं अडा ही रहा तो अत मे एक बिगड़े चेहरे वाला, जिसका चेहरा चेचक से विकृत हो गया था, आगे आया और उसने मेरे पिता और माता की ठोड़ियो मे काँटा फँसाकर उन्हे बहुत बडे हौज मे फेक दिया। वहाँ ऐसे तीस हौज थे।

बड़ी लूट अम्मन की होती जो जीवितों से अधिक मृतको को लूटता। ममाले लगाने की अलग-अलग कीमत होती और वहां के लोग झूठ बोलते कि रईस मर्दों के शरीर मे उन्होंने सुवासित तेल और इत्र लगाये, कीमती मरहम लगाये इत्यादि, परन्तु वास्तव मे सभी को वही शीशम का तेल लगाया जाता था। अत्यंत धनिकों के शरीर खास परवाह से बनाये जाते, बाकी सबके शरीरो मे कड ुवा तेल भरा जाता जो अदर ही अदर मांस व चर्बी को घोल देता। फिर अदर बांस लगाकर कपड़े से लपेट दिये जाते। गरीबों के लिए यह भी नही किया जाता था। उन्हे तीसवें दिन नमक के घोल से निकालकर सुखा दिया जाता और उनके संबधियो को दे दिया जाता था।

मृतक-गृह का निरीक्षण अम्मन के पुजारी करते थे। फिर भी लाश धोने वाले बेहद चोरी करते। देवताओं द्वारा निष्कासित तथा बड़े अपराधी ही यहाँ काम करने के लिए भेजे जाते थे। उनकी वह खास नमक की बदबू दूर से बता देती थी कि वह लाश धोने वाले लोग हैं। लोग उनसे घृणा करते थे। उनकी बेईमानी और धोखेबाजी की हद नही थी। अगर कोई पश्चिमी देश है जहां मृतको को यात्रा करनी होती है, तो निश्चय ही कई धनी मुर्दे आश्चर्य करते होगे कि क्या इतना धन देकर भी उनके शरीरो मे से अंग के अग गायब हो जाते थे। लाश धोने वाले मृतको के अग-अंग तक काटकर जादूगरनियो को बेच देते थे।

परंतु मृतक-गृह मे सबसे अधिक खुशी तब मनाई जाती थी जब वहां किसी जवान औरत की लाश पहुँचाई जाती। चाहे वह सुन्दरी हो या न हो फिर भी वह उनके लिए अपार सतोष का विषय बन जाती थी। उसे हौज मे फौरन नही डाला जाता था। बल्कि एक रात वह उसे लेकर सोते थे। उसे साथ सुलाने के लिए वह आपस मे लड़ते और फिर गोलियां डालते थे। सारी रात वह लाश कइयो के पास से होकर निकाली जाती। यह लोग इतने घृणित माने जाते थे कि नीची से नीची वेश्या भी उन्हे अपने पास नही आने देती थी, यहां तक कि बदसूरत हब्शिन भी उनसे दूर भागती थी, चाहे वह उसे सोना देने को तैयार रहते।

एक बार जब कोई वहां काम करने आ जाता तो फिर शायद ही वह

बाहर जाता था क्योंकि फिर वह इतना गिरा हुआ माना जाता था कि कोई उससे मिलने को तैयार नही होता था।

शुरू-शुरू मे तो मै उन्हे केवल गाली बकने वाले और चोर ही समझता रहा, परतु बाद मे पता चला कि उनमे हुनर वाले लोग भी थे। हरएक ने विविध विषयो मे दक्षता प्राप्त की थी। जैसे जीवन-गृह मे अलग-अलग विषय थे, यहाँ भी सिर, पेट, हृदय, फेफडे, हाथ-पैर इत्यादि को मसाले लगाकर अलग-अलग विधियो से बनाने के कायदे थे। यही लोग शरीर को अनत काल तक रखे रहने योग्य बना देते थे।

एक उनमे प्रौढ़ व्यक्ति था—रैमोज—जिसका काम सबसे कठिन था। वह नाक के रास्ते चिमटियो से सिर मे से भेजा बाहर निकालता और फिर सिर मे शुद्ध करने वाला तेल भरता। उसने मेरे हाथो की सफाई जो देखी तो दग रह गया और फिर मुझे वह अपना काम सिखाने लगा। पद्रह दिनो के अदर ही मैं उसका सहायक बन गया और अब उस बदबूदार जीवन मे भी मुझे जीने का सहारा मिल गया। यह बाकी सारे कामो से शुद्ध था और मृतक-गृह मे सबसे बडा काम माना जाता था। उसका सहायक बनने से अन्य लोगो ने मेरा उपहास करना, मुझको गाली देना, सडे मास इत्यादि मुझ पर फेकना बंद कर दिया। ऐसा था उसका प्रभाव हालाँकि वह कभी ज़ोर से बोलता भी नही सुना गया था।

जब मैंने देखा कि यहाँ चोरी करना आवश्यक था कि अमुक शरीर अच्छी तरह से पकाया जा सके तो मैने भी अच्छे-अच्छे मसाले इत्यादि अपने पिता-माता के लिए चुराने प्रारम्भ कर दिये। क्योकि जो पाप मै उनके प्रति उनके जीवन मे कर चुका था उससे तो इसे कम ही समझता था। यदि मृत्यु के बाद भी पश्चिम के देशो मे मनुष्य को जाना पड़ता था तो मैं चाहता था कि वह वहाँ पूर्ण अग लेकर जाएँ। मुझे यही सतोष था कि मैं किसी भी प्रकार क्यों न सही पर उन्हे अमरता प्राप्त कराने मे सफल हो रहा था। मैंने रैमोज की सहायता से उन्हे अच्छी से अच्छी तरह मसाले लगाकर सुखाया और उनकी लाशे तैयार की। मुझे इस चोरी करने की खातिर, कि बढिया औषधियाँ, सुवासित तेल, मरहम उनके लिए मिल जाएँ, वहाँ दस दिन और रुकना पडा।

जब लाशें तैयार हो गईं तो मेरे सामने आपत्ति आई कि मेरे पास उनके लिए कब्र नहीं थी···यहाँ तक कि एक लकड़ी का बक्स भी न था। मैंने उन्हें एक साथ एक बैल की सूखी खाल में रखकर सी दिया।

जब मैं उन्हें लेकर चला तो मृतक-गृह के लोग मुझे गालियाँ देने लगे, इसलिए नहीं कि वह मुझसे नाखुश थे बल्कि इसलिए कि गाली देना उनकी आदत थी।

रात के अँधेरे में मैंने एक बाँस की नाव चुराई और उस पर उन शरीरों को लेकर मैं मृतकों के नगर की ओर चल दिया। दिन के उजाले में किसी नाव वाले ने मुझे पार लगाने से इंकार कर दिया था।

मृतकों के नगर में दिन और रात कड़ा पहरा रहता और मुझे एक भी कब्र ऐसी नहीं मिल सकी जिसमें मैं अपने माता-पिता को गाड़कर निश्चिन्त हो जाता, कि जो भेंट धनिकों की कब्रों पर चढ़ाई जाती उन्हें वह भी माँग लेते। अतएव मैं उन्हें लेकर उस रात्रि के अवसान में मरुभूमि की ओर बढ़ा। सारी रात मैं चलता रहा और मेरे पैरों के पास साँप-विषधर-साँप फुँफकारते रहे पर मैं रुका नहीं। अंत में मैं पहाड़ की जड़ में जा पहुँचा। यहाँ केवल डाकू लोग ही निर्भय होकर जा सकते थे—जो मनुष्य मात्र के जाने के लिए वर्जित थी,—क्योंकि वह सिर्फ़ फराओ लोगों की ही अपनी कब्रें थीं।

गर्म पत्थरों पर बिच्छू चल रहे थे और दूर-दूर तक गीदड़ रो रहे थे। मुझे भय नहीं लगा क्योंकि मेरा हृदय पत्थर का हो चुका था। उस समय यदि मृत्यु साकार बनकर मेरे पास आती तो मैं सहर्ष उससे लिपट जाता। जीवन में मेरे लिए शर्म के अतिरिक्त बचा ही क्या था? परंतु तब मुझे मालूम नहीं था कि मृत्यु भी उनके पास नहीं जाती जो उसे बुलाते हैं। साँप मेरे रास्ते से हट गए, बिच्छुओं ने मुझे नहीं काटा, रेगिस्तान की गर्मी में मैं नहीं झुलसा। पहरेदारों ने मुझे नहीं देखा, अन्यथा वह मुझे वहीं मार डालते।

और मैं चलता चला गया। पहाड़ के पत्थर मेरे पाँवों के नीचे से लुढ़कते रहे। मैंने एक स्थान पर नये फ़राओ की कब्र के पास एक गड्ढा

खोदा और उसमे अपने माता-पिता को गाड दिया। शायद उसे अभी अम्मन अपनी नौका मे चढाकर पश्चिमी देश को नही ले गया था क्योकि उसकी विशाल कब्र पर अब भी ताजा सामग्री रखी थी जो शायद वहाँ नित्य चढाई जाती थी। मुझे विश्वास हो गया कि गो उनका नाम पुजारियो की मृतको की सूची मे नही लिखा था, फिर भी अब उन्हे ओसिरिस की तराजू पर नही चढना पडेगा और जब फराओ को अम्मन नाव पर चढायेगा तो वह भी उस पर चढकर यात्रा कर सकेगे और इस बीच फराओ की भेटो मे मे अपना भाग लेते रहेगे।

मुझे उस समय कितना सतोष हुआ यह मै कैसे लिखूँ! कब्र खोदते मे मुझे एक लाल पत्थर का टुकडा मिला। चद्रमा के प्रकाश मे मैने देखा कि वह एक पवित्र पत्थर था जिस पर धार्मिक चिह्न अकित थे और उसमे गहने रत्नो के नेत्र बने हुए थे। मेरे नेत्रो से आँसू बहने लगे क्योकि तब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे माता-पिता तृप्त हो गये थे। मैने यही विश्वास कर लिया क्योंकि इसी मे मुझे शाति मिली। वैसे मै जानता था कि वह फराओ की कब्र मे से एक वस्तु थी जो भूल-चूक मे इधर-उधर सरककर गिर गई थी और फिर रेत मे दब गई थी। मैने अतिम बार अपने माता-पिता को सिर झुकाया और प्रार्थना की, "इनके शरीर शाश्वत काल तक बने रहे—और पश्चिमी देश की यात्रा मे यह प्रसन्न रहे।" उन्ही की खातिर मैंने पश्चिमी देश की कल्पना को भी स्वीकार कर लिया। वैसे मुझे अब उस सबमे विश्वास नही रहा था।

और मैं नील के तट पर लौट आया। नील का जल मैंने जी भरकर पिया और मैं बाँस के झुरमुट मे छिपकर लेट गया। मेरे हाथ-पैर कई जगह कट गए थे, उनमे से रक्त बह रहा था। रेगिस्तान ने मेरे नेत्र धुंधले कर दिये थे, मेरे शरीर पर छाले पड गये थे। मै झुलस गया था। मुझे नही पता मैं कब सो गया।

भोर मे बत्तखे बोलने लगी और मै जाग उठा। अम्मन आकाश के समुद्र मे अपने सुवर्ण के जहाज मे तैरकर ऊपर उठ आया था। दूर थीबीज नगर की मर्मर सुनाई पड रही थी। नदी मे नौकाएँ चल रही थी और घाटो पर

धोबिनें कपडे धो रही थी ।

तभी मेरे पास मे एक सरसराहट हुई और मैंने तुरंत जान लिया कि मैं वहाँ अकेला नही था । मैंने मुड़कर जो देखा तो हैरान हो गया क्योकि जो कुछ दिख रहा था वह मनुष्य-सा नही लग रहा था । नाक की जगह उसके एक वडा गड्ढा था और कान कटे थे । उसका सारा शरीर बुरी तरह विकृत हो रहा था । परन्तु उसके हाथ बडे और शरीर गठित था । उसने मुझे देखकर पूछा :

"तुम्हारे हाथ मे क्या है जो तुम इतनी मजबूती से पकड रहे हो ?" मैंने मुट्ठी खोलकर फराओ का वह अभिमन्त्रित पत्थर दिखा दिया ।

"यह मुझे दे दो क्योकि शायद यह मेरा भाग्य जगा दे—मैं एक गरीब आदमी हूँ ।" वह बोला ।

"मैं भी तो बेहद गरीब हूँ ।" मैंने विरोध किया ।

"चाहे मै कितना ही गरीब क्यो न होऊँ पर तुम्हे इसके बदले मे चाँदी का एक सिक्का दूँगा ।" और उसने अपनी कमर मे से सचमुच ही एक सिक्का निकालकर मेरी ओर बढाया । परन्तु जब मैंने फिर भी उस पत्थर को नही दिया तो वह गुस्सा होकर बोला :

"मैं सोते मे ही तुम्हे मार डालता तो ठीक रहता ।···मुझे क्या मालूम था कि तुम इतने नीच हो !"

"तुमने मुझे मार डाला होता तो अवश्य मैं तुम्हारा आभारी होता क्योकि जीवन मे मेरे लिए अब कोई रस नही रहा है । वैसे मैं यह समझ गया हूँ कि तुम पत्थर की खानो से भागे हुए गुलाम हो । तुम्हारे कटे नाक-कान बता रहे हैं कि तुम अपराधी थे ।" मैंने बैठे-ही-बैठे उत्तर दिया । फिर कहा, "अच्छा होगा अगर तुम यहाँ से भाग जाओ, अन्यथा कही सैनिकों के हाथ लग गए तो उलटे लटका दिये जाओगे, या फिर पकड़कर वही भेज दिये जाओगे जहाँ से भागकर आये हो ।"

सुनकर वह बुरा मानते हुए बोला, "तुम शायद थीबीज़ के लिए अज-नबी हो जो राजाज्ञा से भी अनभिज्ञ हो । क्या तुम्हे नही मालूम कि नये फराओ की आज्ञानुसार तमाम दास और अपराधी मुक्त कर दिये गए

हैं ? अब जो खानो मे काम करते है वह स्वतन्त्र नागरिक है और उन्हे मज-दूरी मिलती है ?"

मुझे तब पता चल गया कि युवराज सिंहासनारूढ हो गया था। वह फिर हँसा और कहने लगा

"अब कई तगडे-तगडे अपराधी ठाठ से सडको पर घूमते है। उन्हे रोकने वाला कोई नही है। मृतको के नगर मे कब्रो मे से नित्य मदिरा, सामग्री और धन चुराते है और मौज उड़ाते है। वह देवताओ की भी पर-वाह नही करते।···और फराओ का नया देवता भी खूब है जिसने उसे पागल बना दिया है। अब खाने खाली पडी रहती है क्योकि अपनी इच्छा से भला कौन वहाँ मरने जाएगा ? मै अवश्य भोला था और मुझ पर अपराध जबरदस्ती लादा गया था परन्तु मेरे साथ न जाने कितने चोर-बदमाश भी छूट गए। हुआ तो यह ठीक नही है परन्तु इससे भला मेरा क्या सबध ? यह तो फराओ का काम है कि रोये क्योकि जब खाने ठंडी पडी है तो उसी का सोना तो कम हो गया है।"

फिर उसने स्नेहवश मेरे हाथ-पैरो मे तेल लगाया। न जाने वह कहाँ से तेल ले आया था। मैने उससे उसकी कथा पूछी तो उसने कहा :

"कभी मेरे पास भी थोडी-सी भूमि थी और एक झोपडी थी और मै स्वतन्त्र नागरिक था। मेरे पडोस मे अनूकिस नाम का एक धनी-मानी व्यक्ति रहता था। उसके पास अगणित मवेशी थे, इतने जितने रेगिस्तान मे रेत के कण होते है, और जब वह रँभाते तो ऐसा लगता कि समुद्र गरज रहा है। फिर भी उसकी निगाहे मेरी भूमि पर लगी रहती। हर बार जब बाढ उतरती तो वह सीमा का पत्थर सरकवा देता और मेरी थोडी-थोडी भूमि दबा लेता। मेरी कोई सुनवाई नही होती क्योकि सरकारी लोग उसकी सुनते, मेरी नही सुनते थे। वह उन्हे सुन्दर उपहार देता था।

फिर भी गुजर हो ही रही थी परन्तु अन्त में मेरी ही सन्तान मुझे ले बैठी। मेरे पाँच पुत्र और तीन पुत्रियाँ थी। एक पुत्र को छुटपन मे एक सीरियन व्यापारी ने चुरा लिया था। उसका मुझे बडा दु:ख था। मेरी सबसे छोटी लडकी अत्यन्त रूपवती थी और उस पर मुझे बडा गर्व था। मुझे क्या मालूम था कि अनूकिस की बुरी निगाहे उस पर पड चुकी थी। उसने मुझसे

एक दिन उसे माँगा परन्तु मैंने इंकार कर दिया क्योंकि मेरी कन्या छोटी थी और वह प्रौढत्व को पार कर चुका था। मैं अपनी बेटी को किसी योग्य युवक को देना चाहता था जो वृद्धावस्था मे मेरी सेवा भी कर सकता'''

और एक दिन मुझ पर अनूकिस के नौकर टूट पड़े। अगणित थे वे। मेरे पास केवल एक डडा था। मैंने जो घुमाकर मारा तो उनमे से एक के सिर मे वह बैठ गया और वह तुरन्त मर गया।

फिर मैं न्यायालय मे लाया गया जहाँ मेरी नाक और मेरे कान काट-कर मुझे दास बनाकर खानो मे काम करने भेज दिया गया। मेरी स्त्री और बच्चे दास बनाकर बेच डाले गए। केवल वह कन्या रख ली गई जिसे अनू-किस ने रख लिया। दस साल तक मैं रेगिस्तान मे काम करता रहा। जब सम्राट् की आज्ञा से मैं छूटकर आया तो मुझे मेरी झोंपडी नही मिली। मेरी पुत्री को अनूकिस ने भोगकर बाद मे नौकरो को दे दिया था। उसने अब मुझे देखकर मुझ पर गर्म पानी फेंका और भगा दिया। अब वह सुन्दरी भी नही रही है। वैसे वह बहुत ही पतित है और उसके इर्द-गिर्द नौकरो और नीच लोगो की कमी नही रहती। मुझे वही पता चला कि अनूकिस मर चुका था और मृतको के नगर मे उसकी भव्य कब्र बनाई गई है। अतएव मैं उसकी कब्र पर क्या लिखा है यह जानने के लिए थीबीज आया हूँ। और हालाँकि पूछ-पाछकर मैंने उसकी कब्र का तो पता चला लिया है परन्तु चूँकि मैं पढा-लिखा नही हूँ उसके लेख को पढ नही सका हूँ।"

"तुम चाहो मैं उसे पढ दूँगा।" मैंने सांत्वना दी।

सुनकर उसने दोनो हाथ उठा दिये और कहा, "देवता तुम्हारे शरीर को सदा बनाये रखे'''मरने के पहले मैं उस लेख को एक बार सुनना अवश्य चाहता हूँ।"

हम मृतको के नगर मे पहुँचे। किसी ने हमे नही रोका। कब्रो के बीच होकर हम जाने लगे। अन्त मे हम एक बडी कब्र पर रुक गये। यही वह कब्र थी। उसके सम्मुख मास, मिठाइयाँ, फल और फूल रखे थे और डाट-बन्द एक मदिरा का पात्र भी रखा था, जो उस पर शायद नित्य उसके सम्बन्धियों द्वारा चढाया जाता था। नकटे ने वह सब खा लिया और मुझे

भी उसमे से कुछ दिया फिर बोला, "पढो !" मैने पढा तो उस पर लिखा था·

"मै अनूकिस हूँ—मैने बीज बोये, फल के पेड लगाए और मेरी फसलें बहुत ही अच्छी फूली क्योंकि मैने सदा देवताओ को श्रद्धापूर्वक बलियाँ दी, और अपनी पैदावार का पाँचवाँ भाग मदिर मे चढाया । नील की मुझ पर असीम कृपा रही और मेरी भूमि मे होकर कोई भूखा नही गया । न मेरा कोई पडोसी भूखा रहा क्योकि मैने उनके खेतो मे पानी दिया और अकाल मे उन्हे अपना धान्य खाने को दिया । बिना माँ-बाप के बच्चो के मैने आँसू पोछे और बेवाओ के कर्ज माफ कर दिए । सपूर्ण भूमि पर लोग मेरी इज्जत करते थे और मेरा यश उज्ज्वल था । जिसका बैल बीच फसल मे मर जाता उसे मै, अनूकिस, नया बैल देता था । कभी मैने सीमा के पत्थर नही हटवाए और कभी पडोसी के खेतो मे जाते हुए पानी को नही रोका । मेरे सत्कर्मो से प्रसन्न होकर देवता मेरी पश्चिमी देश की यात्रा को सुलभ बनाएँ यही मेरी प्रार्थना है ।"

नकटे ने सब सिर झुकाकर सुना फिर आँसू बहाते हुए वह कहने लगा, "किसी को कभी सत्य का पता ही न चलेगा । जो लिखा है उसे ही भविष्य मे लोग पढेगे और अनूकिस सदा ही अच्छा आदमी कहलाएगा···यह ससार ···ओह ! यह सब झूठ है ?" और उसने अपना सिर पीट लिया । फिर उसने एकदम मदिरा-पात्र का डाट तोड दिया और मुँह लगाकर पीने लगा ।

उसी रात जब हम दोनो डटकर मदिरा पी चुके तो हमने मिलकर अनूकिस की कब्र खोली और उसमे से सुवर्ण के प्याले, रत्नादिक जो हमसे चले, उन्हे लेकर हम भाग आए । उसी रात फराओ के सैनिक नावो मे बैठकर क्रुद्ध होकर मृतको के नगर मे आये और उन्होने कब्रे खूब लूटी क्योकि रीति के अनुसार सिहासनारूढ होने पर नये फराओ ने उन्हे इनाम नही बाँटे थे ।

भोर मे सीरियन व्यापारीगण पहले से लूट का माल सस्ते दामो पर खरीदने नदी तट पर खडे मिले, हमने अपने सामान दो सौ सोने के दबन के बेचे और फिर आधी-आधी रकम बाँट ली ।

"इससे अच्छा काम कोई भी नही है", नकटा बोला, "इसमे बोझ नही

ढोना पडता, मेहनत नही करनी पडती।" और फिर वह चला गया।

उस पूरे दिन मृतकों के नगर से सींग बजते हुए और अस्त्र-शस्त्रों की आवाजे सुनाई देती रही। फराओं की नयी सेना लुटेरों का ध्वंस कर रही थी। कब्रों के बीच रथों के पहिये गर्जन कर रहे थे। और भाले फिंक रहे थे, मृत्यु चीख रही थी। सायंकाल नगर की दीवार से अगणित विद्रोही उलटे लटका दिये गए। सर्वत्र शान्ति एक बार फिर स्थापित हो गई थी।

नगर मे जाकर मैने कपडे खरीदे, खाना खाया और मदिरा पी। उस रात मै एक सराय मे सोया। दूसरी सुबह जाकर मैं कप्ताह मे मिला। मुझसे मिलकर वह रो पडा। बोला, "मेरे स्वामी! तुम लौट आये! मैं तो समझा था कि तुम मर गए थे! क्योंकि जब तुम लौटकर फिर कुछ माँगने नही आये तो मैंने समझा तुम मर गए होगे। वैसे मैंने उस नये मालिक के पास से तुम्हें देने के लिए चाँदी चुरा रखी थी। यह देखो कल ही उसने मुझे मारा है—और उसकी माँ, वह बुड्ढी मगरनी, वह सडकर मर जाए—कहती है कि वह मुझे बेच डालेगी। मुझे अब यहाँ बहुत भय लगता है···मैं अब यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ···चलो स्वामी हम दोनो भाग चले।"

मैंने कुछ हिचकिचाहट दिखाई तो उसने मुझे गलत समझते हुए कहा, "मैंने काफी चाँदी चुरा रखी है, चिन्ता मत करो। हम यात्रा कर सकेंगे। फिर इसके बीत जाने पर मै मेहनत करके तुम्हारा पालन करूँगा···सिर्फ मुझे यहाँ से ले चलो।"

"मैं तो तुम्हारा ऋण चुकाने आया था कप्ताह!" मैंने कहा और उसके हाथ मे उसके दिए धन से कई गुना धन सोने-चाँदी मे रख दिया फिर कहा, "तुम चाहो तो मै तुम्हे मुक्त करा सकता हूँ···मै तुम्हारे मालिक को अभी तुम्हारा मूल्य चुका सकता हूँ।"

"और अगर मैं स्वतन्त्र हो भी गया तो जाऊँगा कहाँ? सारा जीवन मैने दासत्व किया है। तुम्हारे बिना मैं अंधी बिल्ली की भाँति हो जाऊँगा··· और फिर मेरे पीछे इतना सोना लुटाना ठीक भी नही है—क्योकि जो वैसे ही अतृप्त है उसे खरीदने की क्या आवश्यकता है?" उसने अपनी एक ही

आँख मिचकाई और फिर कहा, "एक बड़ा जहाज स्मर्ना जा रहा है···देव-ताओ को बलि देकर हम चल पड़ें तो बडा अच्छा हो। मुझे खेद है कि मुझे अम्मन के अतिरिक्त, जिसे मैने छोड दिया है, अभी तक कोई शक्तिशाली देवता मिला ही नही है जिस पर श्रद्धा रख सकूँ···"

मुझे वह अभिमन्त्रित पत्थर याद हो आया। वह मैने कप्ताह को देकर कहा, "यह लो···यह छोटा-सा देवता है, पर है बडा प्रभावशाली। इसी की कृपा से मेरा बटुआ आज सोने से भरा है। यह निश्चय ही हमारे लिए भाग्योदय का कारण होगा···अपने-आपको सीरियन की भाँति सजा लो; पर देखो यदि तुम पकडे जाओ तो मुझे दोष न देना···मै तो अब थीबीज मे मुँह दिखाने योग्य नही रहा हूँ अतएव मेरा तो यहाँ लौटने का प्रश्न ही नही उठता···जल्दी करो।"

"शपथ न लो।" वह बोला, "क्योकि कल की कोई नही जानता। जिस किसी ने एक बार नील का जल पिया है उसकी प्यास कही नही बुझ पाती। पुरुप का दोष झील मे पत्थर से उत्पन्न हुए लहर के समान होता है जो क्षणिक होता है। मनुष्य की याद भी बहते पानी की भाँति होती है·· वक्त गुजर जाने के बाद घाव भर जाता है···अतएव क्यो व्यर्थ शपथ लेते हो!"

और तभी उसकी मालकिन ने उसे तीखी आवाज मे पुकारा। मै सडक के मोड पर जाकर खडा हो गया। थोडी देर मे वह एक डलिया मे कुछ ताँबे के सिक्के उछालता हुआ आया और बोला, "मगरमच्छो की माँ ने मुझे बाजार सामान लाने भेजा है···चलो यह सिक्के भी यात्रा के काम आएंगे ···स्मर्ना तो यहाँ से बहुत दूर है!"

नदी तट पर जाकर जब वह लौटा तो बिल्कुल सीरियन बनकर आया। मैंने उसके लिए एक डडा मोल ले दिया—ऐसा जैसा बड़े घरो के नौकर लेकर चलते थे।

जहाज़ का कप्तान सीरियन था और यह जानकर कि मै वैद्य था वह बहुत खुश हुआ और उसने हमसे किराया भी नही लिया। कप्ताह ने उसी क्षण से उस पत्थर पर अपनी श्रद्धा जमा ली। तब से वह नित्य उस पर तेल मलता और उसे महीन वस्त्र मे लपेटकर रखने लगा।

जहाज़ का लगर उठ गया और दास झुक-झुककर पूरी शक्ति

लगाकर डांड चलाने लगे। अठारह दिन वाद हम दोनों साम्राज्यो के संगम पर जा पहुँचे। दो दिन वाद हम समुद्र मे आ गए जिसका कोई छोर दिखाई नहीं देता था।

मार्ग मे कप्ताह वीमार पड़ गया। उसने कै कर दी और उसे एक विचित्र व्याधि ने आ घेरा। वह उल्टा पड़ा हुआ कराहा करता। स्वयं मुझे मिचली आने लगी थी। कप्ताह ने भोजन करना छोड़ दिया था। वह समझ वैठा था कि समुद्र के वीच ही मर जायेगा।

इसी तरह दिन पर दिन निकलते चले गए। वहुत से यात्री कप्ताह की भांति ही वीमार थे और मैं सभी का इलाज कर रहा था। सभी मृतप्राय पड़े थे परंतु मरता कोई भी नही था। कप्ताह उसी पत्थर की पूजा किया करता था।

आखिरकार स्मर्ना दिखाई देने लगा। कप्तान ने देवताओ को यथेष्ट वलि दी। दूसरे दिन जव जहाज़ हल्के पानी में तैरने लगा तो सभी की जान में जान आ गई। कप्ताह ने खड़े होकर उस पत्थर की सौगन्ध खाई कि अब कभी किसी जहाज़ पर कदम नहीं रखेगा।

५

सीरिया और उन नगरो की, जहाँ मैं घूमा, भूमि लाल है। वहाँ मिस्र से सभी चीज़ें भिन्न हैं। नील के स्थान पर आकाश से जल वरसता है। घाटियों मे आवादी है और हर घाटी में एक शासक है जो मिस्र के फ़राओं को कर भेजता है। यहाँ लोग रंग-विरगे उत्तम वुने हुए ऊनी कपड़े पहनते हैं क्योंकि यहाँ मिस्र से ठंड अधिक पड़ती है। वैसे भी यह लोग अगों के प्रदर्शन को निर्लज्जता मानते हैं। शौच वे अवश्य खुले में जाते हैं जो मिस्र में वुरी वात मानी जाती है। इन लोगों के सिर पर लम्वे वाल होते है और यह मिस्री लोगो की भाँति सिर नही मुँड़ाते। दाढ़ियाँ भी लम्वी होती हैं और अपने

देवताओं के सम्मुख मनुष्यो की बलि देते है। हर नगर मे भिन्न-भिन्न देवता है। यहाँ रहने वाले मिस्री जो, फ़राओ की ओर से उच्च पदो पर नियुक्त किये गए है और कर इत्यादि वसूल करते है, सारे सुख रहने पर भी दु:खी रहते हैं। वह लोग व्यापारियो की कर बचाने की अनेकानेक चालो और झूठो से परेशान रहते है।

मै स्मर्ना मे दो साल रहा और इस बीच मैने बेवीलोन की भाषा, लिखना-पढना सीख ली क्योंकि इस भाषा का जानने वाला सारे ससार के सभ्य लोगो द्वारा समझा जा सकता था—लोग ऐसा कहते थे। बादशाहो के आपस के पत्र कागज की बजाय मिट्टी की तख्तियो पर गुदे हुए अक्षरों मे लिखे जाते थे। यह शायद इसलिए कि शासक लोग आपस की सधियो को शीघ्र न भूल सकें।

सीरिया मे एक और भिन्न बात यह है कि वहाँ वैद्य के यहाँ जाकर रोगी इलाज नही कराते, बल्कि देवताओ की कृपा के भरोसे घर ही बैठे रहते है कि वैद्य जाकर उन्हे वही देखे और उनका इलाज करे। एक और बात यह कि वैद्य की भेट इलाज से पहले ही कर देते है। इससे वैद्य को बडा फायदा होता है क्योकि रोगी अच्छा होने पर अक्सर वैद्य को भूल जाया करते है।

वैसे मेरा विचार यह था कि हर काम वहाँ मामूली तरीके से करूँ परन्तु कप्ताह के विचार कुछ और ही थे। उसने मुझसे कहा कि हर समय घर से बाहर निकलते समय मै राजसी वस्त्र धारण करूँ और हरकारो द्वारा यह कहलाना शुरू कर दिया कि मैं ज़बर्दस्त वैद्य था और कि मै स्वय किसी रोगी को देखने उसके घर जाने का आदी नही था। जिस किसी को आवश्यकता हो वह मुझसे मेरे घर आकर मिले और साथ कम-से-कम एक सुवर्ण का सिक्का लेता आये। मैने कप्ताह से मना भी किया कि यह काली भूमि का देश नही था जहाँ की रीतियाँ यहाँ भी लागू की जा सके, परन्तु वह तो गधे की भाँति हठ पकड गया था।

उसने मुझे वहाँ के प्रसिद्ध वैद्यो के पास भेजकर कहलाया :

"मै, सिन्यूहे, मिस्र देश का माना हुआ वैद्य हूँ जिसे फराओ ने 'एकाकी' की उपाधि दी है। मै मुर्दे को ज़िन्दा कर देता हूं और अन्धे को आँखे देता

हूँ। मेरे पास एक छोटा-सा, पर जबर्दस्त देवता है और उसी ने मुझे यह अद्‌भुत शक्ति प्रदान की है। हर नगर मे रोग भी भिन्न होते है अतएव मै यहाँ नया ज्ञान प्राप्त करने आया हूँ।

"मेरा विचार आप लोगो की आमदनी मे घाटा लाने का नही है क्योंकि भला आप लोगो के बीच मे बोलने वाला मै होता ही कौन हूँ ? अतएव मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि जिस रोगी पर आपके देवतागण क्रुद्ध हो जाएँ और आप उनका इलाज न कर सके, उन्हे आप मेरे पास भेज दें। शायद मेरे देवता उस पर कृपा कर सके। यदि ऐसे रोगी ठीक हो गए तो उससे प्राप्त हुई रकम मे से आधा मै आप लोगो को दे दूँगा और अगर वह ठीक न हुआ तो उसके दिये हुए पूरे धन के साथ मै उसे आपके पास वापस भेज दूँगा।"

वैद्यों से, जो बाजार तथा अन्य स्थानों में अपने मरीजो को देखने जाते होते, जब मै यह कहता तो वह अपने लबादे फटकारकर दाढ़ी खुजलाते हुए कहते :

"तुम जवान तो हो, पर बुद्धिमान मालूम होते हो। सुवर्ण और उपहारो की बाबत भी तुम ठीक कहते हो क्योंकि हम जानते है कि तुम्हे अपने चाकू पर विश्वास है। हम लोग चीरा-फाडी नही करते। हम तुमसे इस विषय मे कम जानते है। पर एक बात कहते है वह सुनो—तुम कभी जादू-टोना न करने लगना क्योकि हमारे देश मे यह बहुत अधिक प्रचलित है। इसमे तुम हमसे नही जीत सकोगे।"

और यह सच था कि सड़को पर बहुत से विना पढ़े-लिखे लोग जादू-टोने द्वारा लोगो को बहकाते फिरते थे।

और स्मर्ना मे मेरी दुकान चल निकली। मैने बहुतो की आँखे ठीक कर दी, और कइयों के सिर खोलकर उन्हे स्वस्थ कर दिया। गो बाद मे उनमे से कइयो की दृष्टि फिर जाती रही और सिर खुले बाद मे कई लोग मर भी गए फिर भी मेरा उसमे कोई दोष नही माना गया क्योकि अक्सर ऐसा कई दिनो बाद होता।

स्मर्ना के धनी व्यापारीगण यों ही पडे रहते और ऐश का जीवन व्यतीत करते थे। वह मिस्त्रियो से कही अधिक मोटे थे और उन्हे हाँफने और पेट

की शिकायत रहती थी। उन पर मैंने चाकू आजमाया और उनके शरीरो में से ऐसे रक्त निकलता जैसे मोटे सूअर के शरीर मे से निकलता है।

कप्ताह भिखारियो और कहानी कहने वालो को खाना दिया करता और वह दूर-दूर तक मेरा यश गान करते थे।

और मेरे पास काफी सोना इकट्ठा हो गया। मैने उसमे से काफी धन को वहाँ के व्यापारियो के द्वारा व्यापार मे लगा दिया। वहाँ यह प्रथा थी कि जव जहाज सामान से भरकर दूर देश जाने को होता तो उसमे लोग हिस्से खरीद लेते और लागत लगा देते थे। जहाज सुदूर मिस्र, हाती इत्यादि स्थानो से जव लौटता तो अटूट धन समेटकर लाता और तव वह लागत के अनुसार बाँट लिया जाता। वहाँ कई गरीब भी मिलकर एक हजारवाँ या पाँच-सौवाँ भाग खरीद लेते और यह व्यापार करते थे। कभी-कभी चौगुना, अठगुना धन वापस आ गया तो कभी जहाज़ लौटकर ही नही आता था। परन्तु अधिकतर लाभ ही होता था। धन भी घर नही लाना होता था। मिट्टी की तख्तियों पर व्यापारमंडल की मुहर लगवा ली जाती कि इतना धन अमुक व्यक्ति का वहाँ जमा है। मैं जव कभी दूसरे नगरो को इलाज करने जाता तो इन्ही तख्तियो को ले जाता जिन्हे दिखाकर वहाँ भी धन प्राप्त किया जा सकता था। बेबिलौन, सिडौन इत्यादि सभी जगहो मे यही रीति काम मे लाई जाती थी। अपने घर सोना रखकर चोर-डाकुओ से धोखा खाने की कोई आवश्यकता नही होती थी।

सब ठीक चल रहा था—मै धनवान बन गया था और कप्ताह मोटा हो गया था। वह सुगन्धित तेल की मालिश करता और बहुमूल्य वस्त्र पहनता था। बदतमीज तो वह बहुत हो गया था और कभी-कभी मजबूर होकर मुझे उसकी ठुकाई भी करनी होती थी।

फिर भी मेरा जीवन एकाकी ही बना रहा। मुझे मदिरा मे भी आनंद नही मिलता था क्योकि उसे पीने के बाद मै और अधिक उदास हो उठता था। अतएव मैं अधिक-से-अधिक अपने काम मे लगा रहता और अपना ज्ञान वढाया करता था।

मैने जव यहाँ के देवताओ की जानकारी हासिल की तो उन्हे मिस्र के

देवताओ से भिन्न पाया। इनका सबसे बडा देवता 'बाल' था जो मनुष्य-बलि लेता था। उसके पुजारी हिजड़े बना दिये जाते थे। उसके यहाँ बच्चो की भी बलि दी जाती थी।

व्यापारियो को, जब वह जहाज़ समुद्र मे भेजते तो, 'बाल' को बलि देनी होती थी क्योकि वह अपने माल का क्षेम चाहते थे। अतएव जहाँ भी उन्हे लँगडा-लूला, काना या ऐसा ही सस्ता दास दिखाई देता, वह उसे झट मोल ले आते और उसकी बलि चढा देते थे। इसी भाँति यदि कोई गरीब मछली चुराता पकड़ा जाता तो उसे बलि चढा दिया जाता। नगर मडल की ओर से भी इसी प्रकार सस्ती बलि दी जाती थी। मोटे-मोटे व्यापारीगण अक्सर छाती बजा-बजाकर हँसा करते कि किस प्रकार चालाकी से वह अपने देवता 'बाल' को धोखा दिया करते थे।

अतएव हाट मे, एक भी सस्ता दास दिखाई नही पड़ता था। वैसे स्वस्थ सुन्दर दासो की भी कमी नही थी। दासियाँ मनपसद मिल जाती थी क्योकि जहाज़ प्राय. हर रोज़ बाहर से नया माल लाया करते थे। गोरी, लाल, काली, मोटी, माँसल, दुबली हर प्रकार की दासियाँ मिलती थी।

उनकी देवी एस्टार्टे थी जिसे इश्तर भी कहा जाता था। निनवेह की इश्तर की भाँति इसके भी कई स्तन होते थे और उसे नित्य नये झीने वस्त्रो और जवाहरातो से सजाया जाता था। वहाँ पुजारिने होती जो कुमारियाँ कहलाती थी, गो वह वास्तव मे ऐसी न होती। उल्टे, दर्शक उनसे सभोग करते थे। यही वहाँ की रीति थी जिसे उनकी देवी चाहती थी। वह स्त्रियाँ सभोग की अद्भुत विधियाँ जानती थी और जितना अधिक आनद दर्शक को मिलता उतना ही अधिक सोना-चाँदी वह मदिर मे चढ़ाता था।

मैं भी बाल के मन्दिर मे गया; परन्तु मनुष्य-बलि के स्थान पर मैंने भेट मे सोना चढाया। कभी-कभी मै एस्टार्टे के मदिर मे भी चला जाता था जो सायंकाल के समय खुलता था। वहाँ वह स्त्रियाँ नग्न होकर कामोत्तेजक नृत्य करती और उसके पश्चात् भक्तो को आलिंगनो मे भरकर अपने-अपने कक्षो मे ले जाती थी, मै भी कई बार उन स्त्रियो के साथ रहा परन्तु मुझे उन सबमे कोई आनन्द नही आया।

एक दिन कप्तान मेरे लिए हाट से एक दासी खरीद लाया क्योंकि

मेरा सारा धन उसी के पास रहता और घर का भी प्रबन्ध सारा वही करता था। वह अपनी पसन्द के अनुसार उसे लाया था। उसने उसे नहला-धुलाकर तेल लगाकर स्वच्छ वस्त्र पहनाकर एक रात मेरी शय्या पर मुझे भेट किया।

वह किसी समुद्री टापू से लाई गई थी और मासल, गोरी और सुन्दर थी। उसके दाँत मोती जैसे सजे थे और उसकी आँखे बड़ी और हिरनी की आँखो जैसी काली और भोली-भाली थी। कप्ताह ने उसके रूप की इतनी प्रशसा की कि उसे प्रसन्न करने के लिए मैने उसे स्वीकार कर लिया। फिर भी, न जाने क्यो मै उससे 'बहिन' न कह सका।

उस पर दया दिखाकर मैंने गलती की क्योकि थोडे ही दिनो मे वह ढीठ हो गई और मुझे नित्य नये वस्त्रो और जवाहरातों, आभूषणो इत्यादि के लिए तग करने लग गई। सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसे मेरी चाह हमेशा लगी रहती। मै दूर-दूर के नगरो को चला जाता, समुद्र-तट पर घूमता रहता कि लौटने पर वह सोती मिले, परन्तु वह आँखो मे आँसू भरे शय्या पर बैठी मिलती और वही चाह उसकी बनी रहती। मैने उसे मारा-पीटा भी, परन्तु इससे उसकी वासना और अधिक भडक उठती थी। और मैं परेशान हो गया।

परन्तु उस अभिमन्त्रित पत्थर ने फिर मुझे बचा लिया। एक दिन मेरे पास अम्मुरू के एक भीतरी सूबे का राजा अजीरू आया। मैने उसका एक दाँत हाथीदाँत का बनाया जो युद्ध मे वार टूट गया था और बाकी जो बिगड गए थे उन्हे सोने से मढ दिया। जब तक कि वह नगर मे शासकीय कार्यालयो मे उच्चाधिकारियो से मिलता रहा, वह नित्य मेरे पास भी आता रहा। उसने इसी बीच मेरी इस दासी को, जिसका नाम मैने कीफ्तू रख दिया था, देखा और वह उस पर आसक्त हो गया। अज़ीरू गोरा और साँड की तरह तगडा था। उसकी दाढी नीली और चमकदार थी और उसकी आँखों मे बहादुरी और हिम्मत जैसे कूट-कूट कर भरी हुई थी। कीफ्तू उसे ललचाई दृष्टि से देखा करती थी क्योकि स्त्रियाँ तो नई वस्तु की ओर सर्वप्रथम आकर्षित होती हैं। अज़ीरू उसके माँसल शरीर पर मर मिटा और फिर वह कमबख्त वस्त्र भी यूनानी तौर पर इतने कम पहनती थी कि

उसका यौवन फटा पड़ता था। अज़ीरू के देश मे सिर से पैर तक स्त्रियाँ ढंकी होती और ऐसा नग्न प्रदर्शन उसे अत्यधिक उत्तेजित करने लगा।

आख़िरकार एक दिन अपने को रोकने में असमर्थ होकर उसने गहरा श्वास लेकर मुझसे कहा: "सिन्यूहे—मिस्री! तुम वास्तव मे मेरे मित्र हो और तुमने मेरे मुंह मे चमचमाता हुआ सोना लगाकर मुझे जँचा दिया है। इससे निश्चय ही मेरे देश मे मेरा सम्मान बढ जायेगा। मै तुम्हे इसके बदले मे ऐसे उपहार दूंगा कि आश्चर्य से तुम्हारे दोनों हाथ ऊपर उठ जायेंगे। फिर भी आज मैं तुम्हे एक कष्ट देना चाहता हूँ।"

मैं चुप रहा। तो वह फिर बोला:

"तुम्हारे घर मे रहने वाली इस स्त्री को मैंने जब से देखा है मैं बेहाल हो गया हूँ। इसकी चाह मुझमे इतनी अधिक हो गई है जैसे कोई बिल्ली मुझमें घुसकर मुझे कुरेद रही हो। ऐसी सुन्दरी आज तक मैंने कही नही देखी है और मैं समझ सकता हूँ कि तुम इसे कितना अधिक चाहते होगे···

"फिर भी मैं चाहता हूँ कि तुम इसे मुझे दे दो···मैं इसे अपनी रानी बनाऊँगा। तुम समझदार आदमी हो और मैं तुमसे इसे माँगता हूँ और मैं इसका मूल्य तुम्हे दे दूंगा···परन्तु यदि तुम राजी से नही दोगे तो मैं एक दिन इसे बलपूर्वक उठा ले जाऊँगा।"

सुनकर खुशी से मैंने दोनो हाथ उठाये ही थे कि कप्ताह ने अपने बाल नोच डाले और बडबड़ाने लगा: "आज का दिन कितना खराब है कि मेरे मालिक की चहेती स्त्री को तुम ले जाना चाहते हो···इसे देकर तो इसका रिक्त स्थान अतुल धन से भी पूरा नही किया जा सकता···इसका पेट कितना सुन्दर है! उसे तो देखकर ही तुम्हे पता चलेगा कि यह कितनी सुन्दर है।"

और वह बडबडाता रहा। स्मर्ना आकर उसे व्यापार की सब चालें पता चल गई थी। वह उसका अधिक-से-अधिक मूल्य वसूल करना चाहता था।

कीफ्तू ने उसे रोते देखा तो स्वय भी रोने लगी और कहने लगी, "नही मैं कही नही जाऊँगी," लेकिन आँखों पर हाथ लगाकर उँगलियो के बीच से अज़ीरू को ललचाई दृष्टि से देखती भी जाती थी।

मैने हाथ उठाकर दोनो को चुप किया फिर गंभीर मुद्रा मे बोला :

"अम्मुरू के राजा अजीरू ! तुम मेरे मित्र हो। यह सच है कि यह स्त्री मुझे वहुत प्यारी है और मै इससे 'बहिन' कहता हूँ। परन्तु तुम्हारी मित्रता का मूल्य मेरी निगाहो मे सबसे ऊँचा है। इस मित्रता के नाते मै यह स्त्री तुम्हे विना मूल्य लिये ही उपहार मे दूंगा। तुम इसे ले जाओ। मैं अपने-आपको धोखा नही देना चाहता क्योंकि इसकी निगाहो से भी मै जान गया हूँ कि यह तुम्हे चाहने लगी है। यदि तुम्हारे शरीर मे एक जगली बिल्ली है तो निश्चय ही जानना कि इसके शरीर मे जाने कितनी जगली बिल्लियाँ उछला करती है। तुम इसके साथ जैसा चाहे करो—यह आज से तुम्हारी है।"

अजीरू सुनकर खुशी से चिल्ला उठा। वह बोला : "सिन्यूहे ! तुम मिस्री अवश्य हो और यह भी सच है कि सारी बुराइयाँ मिस्र मे ही ससार में फैलती है; परन्तु तुम उदार हृदय वाले अच्छे आदमी हो। आज से तुम मेरे भाई हो। अम्मुरू के सारे देश मे तुम्हारा नाम यश को प्राप्त होगा। मेरे बगल मे मेरे सिंहासन पर तुम मेरे अतिथि बनकर बैठोगे···तुम मेरे लिए अन्य राजाओ से भी वढकर रहोगे···यह मैं शपथपूर्वक कहता हूँ।"

उसने हँसकर कीफ्तू की ओर देखा। वह उस समय गहरे रगीन झीने वस्त्र पहने हुई थी जिनमे से उसका गोरा शरीर दमक रहा था। उसकी ग्रीवा ढँकी हुई थी, पर स्तन नग्न थे। अजीरू ने गहरा श्वास छोडा और उसका हाथ पकडकर खीचा और तब उसके स्तन डोल उठे। उसने एक ही झटके मे उसे ऐसे उठा लिया जैसे उसमे कोई बोझ ही नही था और वह उसे लेकर बाहर अपनी पालकी मे बिठाकर ले गया।

तीन दिन तीन रात स्मर्ना मे उसे किसी ने बाहर नही देखा। वह मेरे पास भी नही आया। उसने अपने-आपको अपने घर मे कीफ्तू के साथ बद कर लिया था।

कप्ताह और मैंने उससे पीछा छूटने पर खुशी मनाई।

परन्तु उसने मुझसे कीफ्तू का मूल्य न लेने के सिलसिले मे काफी कहा-सुनी की।

परन्तु मैने उत्तर दिया : "उसे यह युवती भेट मे देकर मैंने उससे

मित्रता बढा ली हे। आखिर तो वह राजा ही है हालांकि उसका मौजूदा राज मवेशियो के लिए छोडे हुए चारागाह से बडा नही है। फिर भी कल की कौन कह सकता है कि क्या होगा ? राजा की दोस्ती भी लाभदायक हो सकती है···शायद यह कभी सोने से ज्यादा काम आये।"

अपने देश लौटने से पूर्व अजीरू फिर मेरे पास एक बार आया और बोला "जो कुछ तुमने मुझे दिया है उसका मूल्य तो मै निश्चय ही नही दे सकता, सिन्यूहे, क्योकि भला उसकी बराबरी कौन-सा उपहार कर सकेगा ? यह लडकी तो इतने गजब की है कि इतना तो मै अदाज भी नही लगा सका था। उसकी आँखे बिना पेंदे के कुएँ की भाँति गहरी है···और हालांकि उसने मुझमे से मेरा पौरुष, जैतून के बीच मे से तेल की भाँति निचोड लिया हे फिर भी मैं किन शब्दो मे वर्णन करूँ कि उसे मैं कितना चाहने लगा हूँ। आज तो मै गरीब हूँ क्योकि मेरा राज्य छोटा-सा है, पर किसी दिन मैं तुम्हें निहाल कर दूंगा। तुम जब कभी किसी प्रकार की सहायता के लिए कहोगे, वही होगा। अगर तुम्हारा कोई अपमान करे अथवा हानि पहुंचाये तो मुझसे कहना और मेरे आदमी उस व्यक्ति का वध कर देंगे चाहे वह कही क्यो न छिप जाये और तुम्हारा नाम भी बीच में नही आयेगा।"

उसने मेरी गर्दन मे अपने गले से सोने की जजीर उतारकर पहना दी। पर ऐसा करते समय उसके मुंह से आह-सी निकल गई। मैने तुरन्त अपने गले से उतनी ही मोटी सोने की जजीर उतारकर उसके गले मे डाल कर मित्रता का दावा भर दिया। वह प्रसन्न हो गया और उसकी निगाहों मे मैं बेहद चढ गया। मुझसे गले मिलकर फिर वह चला गया।

हर साल के मुताबिक अब की बार फिर खबीरी लोगो ने सीरिया की सीमाओं पर हमला कर दिया। मै अब जब उस औरत से छुटकारा पा गया था तो स्मर्ना से बाहर जाने की इच्छा मुझे होने लगी। वैसे भी स्मर्ना में आजकल और सालो से अधिक हलचल मची हुई थी, क्योकि अब की बार खबीरी लोगो ने कटना नगर मे मिस्री सैनिको को तथा वहाँ के शासक को मार डाला था। वह लोग इस बार बेदर्दी से औरत-बच्चे सब को मार रहे थे और लूट मे कसर नही छोड रहे थे। परन्तु फराओ की सेनाएँ भी उन्हे

दवाने सेनाइ के रेगिस्तान मे होकर टैनिस आ गई थी ।

सीरिया मे युद्ध छिड गया था और मैंने कभी युद्ध देखा नही था। मै भी उसका अनुभव करना चाहता था और खासकर जब मैंने सुना कि मिस्री सेना का नायक बनकर हौरेमहेब आ रहा था तो मेरी उससे मिलने की लालसा उग्र हो उठी। अपने एकाकी जीवन मे पुराने मित्र से मिल लेने को मै बेचैन हो उठा और मै चल दिया। समुद्र तट के सहारे-सहारे हम एक माल लादने वाले जहाज मे चले। हम एक कोटखिचे नगर मे पहुँचे, जिसका नाम जेरूसलम था और जो पहाडो के ऊपर वसा हुआ था। यहाँ मिस्री सेना तैनात थी और हौरेमहेब ने यही पडाव डाला था।

जब मै उससे मिला तो उसने मुझे मेरी शीरियन पोशाक मे नही पहचाना। वह बोला, "मै एक मिन्यूहे को जानता था जो अच्छा वैद्य था। वह मेरा मित्र था।"

परन्तु जब उसने मुझे पहचान लिया तो मेरा हृदय से स्वागत किया। उसने मुझे युद्ध मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित भी किया। उसने कहा, "अम्मन की कसम ! तुम सिन्यूहे ! मेरे मित्र मुझे यहाँ इस गन्दे शहर मे खूब मिले !" और फिर सब लोगो को भगाकर मेरे लिए मदिरा मँगाई। पीते-पीते हम पुरानी बाते करते रहे। फिर वह बोला :

"तब जब मै पहले पहल तुमसे मिला था, मै मूर्ख था पर तुम बुद्धिमान थे और तुमने मुझे नेक सलाह दी थी। परन्तु अब देखो मैंने यह सुवर्ण की चाबुक अपनी बुद्धिमत्ता से ही पाई है।

"जब खबीरी लोगो ने हमला किया तो मैंने फराओ के सम्मुख प्रार्थना की कि इन्हे दवाने वह मुझे यहाँ भेजे। कोई मेरा इस मामले मे प्रतिद्वन्द्वी नही वना क्योकि युद्ध मे उन लोगों को आराम कहाँ मिल पाता ? इसके अतिरिक्त खबीरियो के पास पैने भाले है और उनकी जो चिल्लाहट और जो चीख-पुकार युद्ध मे होती है—वह वहुत ही भयानक लगती है—यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

"परन्तु फराओ जेरूसलम मे अपने देवता का मदिर वनाना चाहता है और वाकी वातो से जैसे उसका कोई वास्ता ही नही है। वह चाहता है कि विना खून-खरावा हुए खबीरी दवा दिये जाएँ !"

और वह ठहाका लगाकर हँसा। फिर कहने लगा :

"सिन्यूहे! असली बात यह है कि फराओ के इस विचित्र देवता ने तो मुझे परेशान कर दिया है। उसका रूप थाली की तरह है और वह अपने हजार-हजार हाथो से जीवन बाँटा करता है! फराओ का कहना है कि सभी बराबर है—मालिक-दास सभी। क्या दिमाग है फराओ का? मेरे विचार से वह पागल है...भला कभी हो सकता है कि ख़बीरी बिना खून-खराबा के भगा दिये जाएँ—हुँअ!"

वह फिर मदिरा पीने लगा। फिर बोला :

"मेरा अपना देवता तो होरेस है और वैसे मैं अम्मन के विरुद्ध भी नही हूँ। परन्तु अम्मन के पुजारियो की शक्ति इतनी अधिक बढ गई है कि उन्हे रोकने के लिए फराओ के नये देवता—इस एटौन की भी आवश्यकता है। यहाँ तक तो सब ठीक है और एटौन के मदिर इत्यादि के निर्माण भी सब ठीक है परन्तु इससे आगे सचाई को ढूंढने का प्रयास भयानक है क्योकि सत्य तो उस तेज कटार के समान है जो किसी बच्चे के हाथ मे हो। कटार को तो म्यान मे रखना चाहिए और तभी काम मे लाना चाहिए जब उसकी आवश्यकता हो। अतएव शासक के लिए सत्य बहुत ही हानिकारक है।"

उसने फिर घूंट लिया और कहा :

"मेरे बाज़ की कसम! थीबीज छोडकर आने पर मुझे बड़ी खुशी हुई क्योकि वहां देवताओ की लडाई हो रही है। अम्मन के पुजारियो ने फ़राओ के बारे मे अनेक कहानियाँ गढकर प्रचलित कर दी है कि उसकी पैदाइश सच्ची नही है इत्यादि। और फिर वह जो मितन्नी की लड़की थी न! वह जो साम्राज्ञी बनाई गई थी, इतने मे मर गई। और अब आई की पुत्री नेफरतीती साम्राज्ञी बन गई है। है तो यह भी सुन्दर पर है वह अपने बाप की असली बेटी—बडी चालाक—बडी मक्कार!"

मेरी आँखो के सामने मितन्नी की उस बच्ची राजकुमारी का मासूम चेहरा घूम गया—वह जो खिलौनो से खेला करती थी।

"वह बच्ची कैसे मर गई?" मैंने पूछा।

"वैद्य कहते है कि मिस्र की आबोहवा उसे माफिक न आई थी, पर यह सब झूठ है क्योकि मिस्र के बराबर अच्छी जगह कोई और है ही नही। बेहतर

यही है कि हम न बोले। पर यदि मै अपराधी को ढूँढने निकलूं तो अपना रथ 'आई' के घर के सामने रोक दूं।"

रात मे हम सो गए। भोर मे जब उठे तो बाहर सेना मे खलबली हो रही थी। शीघ्र ही सीग फूंके जाने लगे और सैनिक पक्तिबद्ध होकर सजकर खडे होने लगे। उनके नायक भाग-भागकर ठीक खडे होने की आज्ञा देते और गलती करने वालो पर चाबुक फटकारते थे। जब सब ठीक हो गया और सेना सन्नद्ध हो गई तो हौरेमहेब मिट्टी के बने अपने गन्दे डेरे से बाहर निकला। उसके हाथ मे उसकी सोने की चाबुक थी और एक दास उस पर छाता लगा रहा था तो एक ओर से दूसरा उस पर से मक्खियाँ उडा रहा था। वह चिल्लाकर बोला .

"मिस्र देश के सैनिको! आज मै तुम्हे युद्ध मे लेकर जाऊंगा, क्योंकि जासूसों ने अभी सूचना दी है कि पहाड के दूसरी तरफ ख़बीरी आ गए है। वह कितने है यह पता नही चला है क्योकि जासूस डरकर भाग आए थे। परन्तु मेरे विचार से इतने तो होंगे ही कि तुम सबको खत्म कर सके और तब मुझे तुम्हारी यह मनहूस सूरत देखनी नही पडेगी। और तब मै मिस्र लौट आऊँगा और फिर असली वीरो की एक सेना लेकर लौटूंगा।"

उसने खतरनाक निगाहो से सैनिको को घूरा। किसी का साहस नही हुआ कि बोल सके। वह फिर बोला :

"मै तुम्हे युद्ध मे ले जाऊँगा—मैं सबसे आगे जाऊँगा और चाहे तुम मेरे पीछे न भी आओ तो भी मै तो बाज का पुत्र हूँ। मै अकेला ही खबीरियो का नाश कर दूंगा...फिर भी कान खोलकर सुन लो...जो मेरे पीछे नही आया उसे मैं चुन-चुनकर चाबुक से छील दूंगा। मेरी चाबुक से खून बहेगा। खबीरियो के भालो से मेरी चाबुक ज्यादा खतरनाक है। खबीरियो मे कुछ भी भयानक बात नही है। केवल उनकी चिल्लाहट ही भयानक होती है। यदि उससे भय लगे तो अपने कानो मे मिट्टी भर लो पर बुढियो की भाँति वहाँ डरते हुए न जाओ...जीतकर तुम उनके मवेशी बाँट लेना—उनकी स्त्रियाँ सुन्दरी है और वह वीरो को बहुत पसन्द करती है...वह सब तुम्हारी होगी।"

सैनिको ने एक साथ हल्ला किया और अपने भालो से ढाले बजाई।

हौरेमहेव ने चाबुक फटकारी और मुस्कराकर फिर कहा :

"तुम्हारा जोश देखकर मैं खुश हूँ" परन्तु पहले हमे फ़राओं के मदिर मे जाकर एटौन को सिर नवाना है।"

और तव सेना अलग-अलग इकाइयों मे तरह-तरह के झंडे लिये अत्यंत वेकायदे से चलती हुई नगर से वाहर निकली, पीछे-पीछे उच्च पदाधिकारी और सवके पीछे अपने अगरक्षको के साथ हौरेमहेव चला। मुझे उसने अपने ही साथ रखा। नगर के वाहर लकडी का वना हुआ एटौन का मंदिर खड़ा था। अन्य मदिरो से वह भिन्न था क्योकि वीच मे यह खुला हुआ था जहाँ वेदी वनी हुई थी। वहाँ किसी देवता की मूर्ति नही थी जिसे न पाकर सैनिक परेशान हो गए। हौरेमहेव ने कहा .

"देवता थाली के रूप का है अतएव आकाश मे तपते हुए सूर्य को देखो "देखो जव तक तुम उस पर दृष्टि लगा सको, वह अपने हज़ार-हज़ार हाथो से आशीर्वाद देता है" परन्तु आज युद्धभूमि मे शायद वह तुम्हारी पीठ पर लाल सुईयो की भाँति चुभे।"

सैनिक वडवडाये कि फराओ का देवता वहुत दूर था—इतना दूर कि वह उसके सामने लेटकर अभिवादन भी नही कर सकते थे।

मदिर मे पुजारी ने, जो एक युवक था, प्रार्थना की। उसके सिर पर केश थे और कधे पर श्वेत वस्त्र था। देर तक वह सूर्य और एटौन की स्तुति करता रहा और सैनिक परेशान होकर रेत में पैर मसलते रहे। जव प्रार्थना समाप्त हुई तो उन्होने चैन की साँस ली और फराओ का जय-जयकार किया।

सैनिक चल दिये। उनके पीछे वैलगाड़ियो मे और गधो पर सामान चला। हौरेमहेव सवसे आगे अपने रथ को भगाता हुआ चला और वाकी के ऊँचे पदाधिकारी अपनी पालकियो पर वैठकर गर्मी की शिकायत करते हुए चले। रसद इत्यादि के अधिकारी के साथ मैं गधे पर वैठकर चला। मेरे साथ दवादारू का वक्स था।

सेना सायकाल तक चलती रही। वीच मे वे खाना खाने के लिए थोड़ी-सी देर के लिए रुके। लोग चलते-चलते गिर जाते थे, कइयो के पैरो मे

छाले पड गए थे। नायको की चाबुक खाकर भी गिरे हुए उठकर खडे न हो पाते थे। जब कभी बगल के पहाडो मे से कोई तीर चला देता, जो किसी सैनिक के शरीर मे चुभ जाता, और वह कराह कर गिर पडता था।

हल्के रथो के आगे का मार्ग साफ कर दिया था। रास्ते के सहारे कई खबीरी चिथडो मे लिपटे हुए मरे पडे थे।

और हम पहाडी पार कर गए। आगे एक बहुत बडा खुला मैदान था जहाँ ख़बीरी लोगो का पडाव था। हौरेमहेब ने सीगी फूँकने की आज्ञा दी और सेना को आक्रमण करने के लिए सन्नद्ध किया। सामने बेशुमार खबीरी पडे हुए थे और उनकी चिल्लाहट से आकाश गूँज रहा था। हौरेमहेब ने पुकारकर कहा :

"नीच मेंढको! घुटने मजबूत कर लो। लडने वाले शत्रु बहुत थोडे है, बाकी यह भीड़ सब भेड है।...मवेशी, औरते और बच्चे! ज़ोर लगा दो और यह सब तुम्हारे हो जाएँगे।"

खबीरी चढे आ रहे थे। वह हमसे बहुत ज्यादा थे। उनके भाले चमचमा रहे थे। उन्हे देखकर हमारे सैनिको का धैर्य छूट रहा था परन्तु वह भागने लायक भी नही रह गए थे। नायक चाबुक फटकार रहे थे और सैनिक सन्नद्ध हो गए। तीरन्दाज़ो ने घुटने गाड़कर धनुष खीचे और एक साथ हज़ारो तीर 'बज्ट' 'बज्ट' करके छूट गए। और युद्ध छिड गया। भयानक कोलाहल फैल गया। खबीरियों की चिल्लाहट और उनके नारे विकराल थे इसमे तनिक भी सन्देह नही था। उन्हे सुनकर रोम-रोम भय से खडा हो जाता था।

हौरेमहेब चिल्लाया : "बढे चलो! गदे कुत्तो!"

और भारी रथ वेग से भागे। धूल से आकाश भर गया। कुछ भी दिखाई नही देता था। हौरेमहेब के शिरस्त्राण मे लगा हुआ पर फरफरा रहा था। खबीरी बहादुरी से लड रहे थे। उन्होंने अनेक मिस्री सैनिको को मौत के घाट उतार दिया। पृथ्वी खून से भीग गई। सभी ओर भयानक कोलाहल हो रहा था, अस्त्र-शस्त्र खडखडा रहे थे। तीर छूट रहे थे, गालियाँ सुनाई दे रही थी और सबके ऊपर मरते सैनिको का दारुण चीत्कार फैल जाता था। मेरा गधा बहुत रोकने पर भी मुझे युद्ध के मध्य मे ले गया। वह न रुका।

आकाश मे गिद्ध चक्कर लगाने लगे।

तभी हौरेमहेब के सैनिको ने खबीरियो के पडाव के पिछले हिस्से पर प्रहार किया जहाँ उनकी स्त्रियाँ थी और वहाँ आग लगा दी। खबीरियों ने घबराकर उधर देखा। अपनी स्त्रियो को खतरे मे देखकर वह उधर लौटे और हमारे सैनिको का उत्साह दूना हो गया। वह समझे कि शत्रु भाग रहा था। बस फिर क्या था। वह टूट पडे। दारुण हत्या प्रारभ हो गई। पृथ्वी खबीरियो की लाशो से पाट दी गई। इस आकस्मिक आक्रमण से खबीरी घबरा गए और भागने लगे। परन्तु वह घेर लिये गए थे। उन्होने हथियार डाल दिये और वे घुटनो के बल बैठ गए। परतु वह समय दया करने का नही था। बच्चे बूढे सबके भेजे मुगदरो से खोल दिये गए। हौरेमहेब की आज्ञा से सीगे फिर फूंक दिये गए। पूर्ण विजय प्राप्त हो चुकी थी।

परन्तु मेरा गधा फिर भी युद्ध के मैदान में उछल रहा था। वह रोके नही रुकता था। मै उस पर लाश की तरह लदा हुआ था। सैनिक उस स्थिति मे मुझे देखकर हँसे। आखिरकार एक सैनिक ने उसकी नाक पर डडा मारा, तब कही वह रुका। और तब मे सैनिकों ने मेरा नाम 'जगली गधे का बेटा' रख दिया।

अब कैदियो को घेरा गया। उनके मवेशी अगणित थे। हौरेमहेब ने जब गर्व से सेना के बीच शेर के सिर वाली देवी सैखमट की मूर्ति पेटी खोलकर स्थापित की तो सैनिको ने चिल्लाकर उसका जय-जयकार किया और उस पर खून छिडका। वह पीन स्तनो को उन्नत किये हुए अत्यन्त प्रसन्न प्रतीत हो रही थी।

सारी रात सैनिक खबीरियो की स्त्रियो से बलात्कार करते रहे और मै मरीजो की मरहमपट्टी करता रहा। खबीरी वास्तव मे अत्यन्त निर्धन लोग थे जो मवेशियो को चराकर बडी कठिनाई से अपना और अपनी स्त्रियो और बच्चो का पालन करते थे। वैसे वह मानी भी थे। मैने उनमे से भी कइयो के घाव सी दिये थे परन्तु जब उन्होने अपनी स्त्रियो की चिल्लाहट सुनी तो अपने टाँके फाडे और खून बहाकर मर गए।

मेरे हृदय मे यह जीत, जीत की तरह नही जम पाई गो हौरेमहेब ने मेरे साहस की अत्यन्त सराहना की। जब मैने उससे पूछा कि सबसे आगे

रहने पर भी उसके कोई चोट या घाव क्यो नही लगा तो वह कहने लगा ·

"मै बाज़ का पुत्र हूँ और ससार मे बडे कार्य करने के लिए उत्पन्न हुआ हूँ। फराओ के पास मुझे मेरा बाज़ ही लाया था। यह सच है कि जब मैं फराओ के महल मे आ गया तो उसे वह स्थान रुचिकर नही लगा और वह उड गया और फिर कभी नही लौटा। लेकिन जब मै सेना के साथ सेनाई के रेगिस्तान को पार कर रहा था तो बडी कठिनाइयो का मुझे सामना करना पडा। भूख और प्यास से मेरा बुरा हाल हो गया था। और तभी एक दिन जब मै रेगिस्तान मे शिकार के लिए गया तो मैंने देखी एक अग्नि देवी जो कुछ दूर पर जल रही थी···वह ऐसी थी जो कभी नही बुझती थी···निरन्तर जलती रहती थी···इससे मेरी हिम्मत बढी। किसी और को वह दिखाई नही दी थी। उसे केवल मैंने और मेरे रथवान ने देखा था···तुम उसे बुलाकर पूछ सकते हो। तभी से मुझे विश्वास हो गया कि मेरे निश्चित समय से पहले कोई अस्त्र मेरे शरीर को नही छुएगा।"

तीसरे दिन हौरेमहेब ने अपनी सेना को तीन भागो मे बाँटा। कुछ के साथ उसने लूट का माल जैरूसलेम भेजा कि वह वहाँ उसे बेच आवे क्योकि उस रेगिस्तान मे कोई सौदागर उन्हे मोल लेने नही आया जैसे कि और स्थानों मे लोग आ जाया करते थे। एक और जत्था, मवेशियो को चराने चल दिया और कुछ को लेकर वह स्वय ख़बीरियो के पीछे चला क्योकि उसने सुन लिया था कि वह लोग छिपकर अपने देवता को उठाकर ले जाने के प्रयास मे थे।

मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध हौरेमहेब अपने रथ मे बैठाकर ले गया। उसने कहा · "तुम्हे युद्ध का आनन्द दिखाऊँगा···चलो!" और मैं उसकी कमर पकडे हुए उस रथ मे खडा हो गया। रथ को वह पागलो की भाँति भगाये ले जा रहा था। बड़े-बडे पत्थरों पर से, वह भडाभड करता हुआ वायु-वेग से जा रहा था। मैं हर क्षण मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा था कि मोड पर अब रथ लौटा, अब लौटा। शरीर झँझोड डाला था उस रथ ने, और मैं शिथिल हो चुका था।

और फिर रथ ख़बीरियो पर तूफान की तरह बरसा। फिर सैकडो रथ भागने लगे और उनके नीचे खबीरियो के बच्चे, बुड्ढे और स्त्रियाँ कुचल

दी गई। पुरुषो के शरीरो मे भाले छेद दिये गए। उनके डेरो मे आग लगा दी गई। मैंने देखा···वह युद्ध नही था···ख़बीरी लड़ नहीं रहे थे···वह हत्या थी—निर्मम हत्या !

परतु ख़बीरी लोग इससे सीख गये कि उनके लिए रेगिस्तान मे भूखो मर जाना अच्छा था, बनिस्बत सीरिया पर हमला करने के। उन्होंने यह बात समझ ली थी कि चोरी के अनाज मे पेट भरने और सीरिया के तेलो मे अपनी फटी त्वचा को मलने के बजाय रेगिस्तान मे तड़प-तड़पकर मर जाना ही उत्तम है।

और मैंने युद्ध का आनंद देख लिया था। हौरेमहेब ने एक बार फिर सीमा के पत्थरो को गडवा दिया जो खबीरियों ने उखाड़ दिये थे। ख़बीरियो के देवता के टुकडे-टुकडे करने के उपरात उसे सैखमट की मूर्ति के सम्मुख जला दिया गया। इस देवता का नाम 'जहवैह' था। बचे हुए खबीरी घने जगलो मे भाग गए। अब वह खजूर के पत्ते हिला-हिलाकर गाना गाना भूल गये थे।

हौरेमहेब ने जैरुसलेम लौटकर सीमाप्रात के लुटे हुए नागरिको को उन्ही का अनाज और उन्ही के पात्र बेच दिये। उन्होंने क्रुद्ध होकर अपने वस्त्र फाड डाले और वह चिल्लाये : "अरे यह लुटेरे तो ख़बीरियो से भी बदतर है," परंतु उनके पास धन की कमी नही थी क्योकि उन्होने अपने मदिर, व्यापारीगण और कर-वसूल करने वालो से ऋण लिये थे। और हौरेमहेब ने इस भाँति तमाम लूट के सामान को सुवर्ण और चाँदी मे परिणत कर लिया और सैनिकों मे उसे बाँट दिया। अब मेरी समझ मे आया कि घायल इतनी तादाद मे कैसे मर गये थे, जबकि मैंने उनके घाव साफ करके सी दिये थे और औषधियाँ भी लगा दी थी। अधिक लोगों के बीच लूट का सामान बँटने से हिस्सा कम मिलता, अतएव घायलो को रात मे औरो ने मार डाला था।

सायकाल के समय उस कच्ची झोपडी में, जहाँ हौरेमहेब ठहरा हुआ था, मैं और वह बाते करते हुए मदिरा पी रहे थे। मैंने कहा :

"मिस्र की शक्ति महान् है। कोई अब उसका सामना करने की हिम्मत

नही करेगा। खन्नीरी भी समाप्त हो चुके है। फिर अब तुम अपनी सेना को छुट्टी क्यो नही दे देते‥ उनके डेरो से बदबू आती है और वह बात-बात मे हिंसा पर उतर आते है।"

"तुम नही जानते कि तुम क्या कह रहे हो," वह काँख खुजाते हुए बोला, क्योकि सेनापति के डेरे मे जूं की कमी नही थी। वह कहने लगा : "मिस्र की यह धारणा ही गलत है कि उसके सामने खडे होने का साहस किसी मे नही हे। दुनिया बहुत बड़ी है और छिपे हुए स्थानो मे वह बीज बोये जा रहे है जिनमे से विनाशकारी अग्नि चारो ओर फूट निकलेगी। उदाहरणार्थ अम्मुरू के शासक को ले लो, जो दिनोदिन घोडे और रथ एकत्र कर रहा है। उसकी दावतो मे उच्चपदाधिकारी उनसे कहने लगे है कि उसके पूर्वज ही पहले सारे ससार के शासक थे, और है भी यह बात सच; क्योकि 'हाईक्सैस' के अतिम वशधर आजकल वही रहते हैं।"

"अम्मुरू का राजा अज़ीरू तो मेरा मित्र है।" मैंने कहा. "मैने उसके दाँत बनाये थे। उसके पास एक स्त्री भी है जो उसकी रानो मे से उसकी शक्ति खीचा करती है।"

"तुम बहुत-सी बाते जानते हो।" मुझे गौर से देखते हुए उसने कहा, "तुम स्वतत्र मनुष्य हो और मन चाहे जहाँ जा सकते हो। तुम्हे अनेकानेक भेद मालूम हो सकते है जो हर किसी के लिए दुर्लभ है। अगर मै तुम्हारी तरह स्वतत्र होता तो मै स्थान-स्थान पर जाकर वहाँ की बातें सीखता। मै मितन्नी और बेबीलोन जाता और इस बात की जानकारी प्राप्त करता कि हितैती लोग आजकल कैसे रथ काम मे लाते है और किस भाँति उनकी सेनाएँ वरजिश करती है। समुद्री टापुओ मे जाकर यह जानने की कोशिश करता कि उनके जहाज कैसे होते है जिनकी आजकल बडी चर्चा है। परन्तु, हौरेमहेब यह काम अब चाहूँ तो भी सीरिया मे नही कर सकता। परन्तु तुम सिन्यूहे! तुम तो सीरियन वस्त्र पहने हुए सीरियन भाषा बोलते हुए उन्ही मे मिल-जुल सकते हो। और फिर तुम ठहरे वैद्य जिसका सभी से सपर्क रहता है और तुम यदि ऐसी जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा भी करो भी तो किसी को तुम पर शक नही होगा। इन बातो के अतिरिक्त तुम्हारा सभाषण सादा और दृष्टि स्नेह भरी है और लोग समझते है कि तुम बडे सीधे

व्यक्ति हो। फिर भी मैं जानता हूँ कि तुम्हारा हृदय बन्द है जिसमे तुम गहरे भेद और गहरी बातें छिपाये डोलते हो। है न यही बात ?"

"शायद ! पर तुम चाहते क्या हो ?"

"यदि मैं तुम्हे काफ़ी सोना देकर इन देशों को भेजूँ कि वहाँ जाकर तुम मिस्री हिकमत और अपना नाम रोशन करो तो कैसा रहेगा ? माल-दार और बा-असर लोग यहाँ तक कि राजा लोग भी तुम्हे बुलाएँगे कि तुम उनका इलाज करो और जब तुम मेरी आँखों मे उन्हे देखकर, और मेरे कानो से उनकी बातें सुनकर मिस्र लौटो, तो मुझे वह सारे भेद बतला देना जो वैसे अप्राप्य हैं। क्यों ?"

"मेरा मिस्र लौटकर जाने का कोई विचार नही है। और फिर इस काम मे खतरे बहुत अधिक हैं। मैं उलटा लटकाया जाना पसद नही करता" मैंने बेरुखी से उत्तर दिया।

सुनकर उसने कहा : "कल की कौन जानता है सिन्यूहे ! कि क्या होगा परन्तु मेरा खयाल है कि तुम मिस्र अवश्य लौटोगे क्योकि जिस किसी ने नील का पानी एक बार भी पिया है उसकी प्यास संसार भर में कही नही बुझ पाती। यहाँ तक कि पक्षी या सारस भी वहाँ जाडों मे लौट आते हैं। मेरे लिए सोना धूल के समान है। काश, इससे मैं ज्ञान प्राप्त कर सकता, जहाँ तक तुम उलटे लटकने वाली जो यह बात कहते हो यह बात तो मैं कान पर मक्खियो की भनभनाहट के समान ही समझता हूँ। मैंने तुमसे उन देशो की रीतियाँ तोडने या किसी के साथ कोई बुराई करने के लिए नही कहा है। बडे-बडे नगरो में, मदिरो मे राहगीरो को क्या-क्या करके नही लुभाया जाता ? सोने की कहाँ क़द्र नही है ? फिर तुम्हारा हुनर तो तुम्हे हर जगह पहुँचा सकता है और खासकर उन मुल्को मे तो बहुत ही ज्यादा जहाँ लोग अपने वृद्धो को कुल्हाडी से मार डालते हैं और रोगियो को मरुभूमि मे मरने के लिए छोड आते हैं। बादशाह लोग अपनी शक्ति-प्रदर्शन करने के लिए अपनी सेनाओ को सजाकर बाहर निकालते हैं। बस वही यदि तुम उनकी विशेषताओ को, उनके अस्त्र-शस्त्रों को ध्यान से देख लो और उनके नाना प्रकार के रथो का और सैनिको का अदाजन गिन लो तो भला किसी को तुम पर शक क्यो होने लगा ? कहते हैं हित्ती लोगो ने किसी ऐसी धातु का

आविष्कार कर लिया है जो बहुत मजबूत है और हमारे ताम्र फलकों को काट डालती है। सच-झूठ की तो पता नही, पर यदि यह बात सच है तो सूचना भयानक अवश्य है। फिर यह भी जाँच करो कि वहाँ के सैनिक तेल लगे, खाये-पिये, तगड़े है अथवा मेरे इन चूहो जैसे ही है।···इन सबसे बढ-कर मुझे एक जानकारी और चाहिए—वह यह कि इन सभी शासकों के हृदय मे क्या है···मेरी ओर देखो।"

मैने उसकी ओर देखा और मुझे लगा वह सुन्दर देवता के समान बलिष्ठ व्यक्ति शरीर मे बढ रहा था। उसके नेत्रों मे से अग्नि की लपटे निकल रही थी। उसे देखकर मेरा दिल दहल उठा। मैने उसके सामने सिर झुका दिया और कहा :

"तुम महान हो!"

"तुम अब विश्वास करते हो कि मै अधिकार करने के लिए ही उत्पन्न हुआ हूँ?" उसने सहज स्वर से पूछा।

"मेरा हृदय मुझसे कहता है कि तुम मुझे आज्ञा दे सकते हो परन्तु ऐसा क्यों होता है, मैं कह नही सकता।" मैने उत्तर दिया। मेरे मुँह मे मेरी जुबान मोटी हो गई थी। फिर भी मैने कहा · "तुम निश्चय ही शासक बनोगे · और जो काम तुमने मेरे लिए निर्धारित किया है वह पूर्ण रूप से सपन्न किया जायेगा। मेरी आँखे और कान तुम्हारे होगे। यह मै नही कह सकता कि जो सूचना मै तुम्हे दूँ या जो बातें तुम्हे बतलाऊँ उनमे से कितनी तुम्हारे मतलब की निकले; क्योकि मैं इस सबध मे मूर्ख ही हूँ। फिर भी जो कुछ जानूंगा वह अक्षरश. तुम्हे बतलाऊँगा···तुम्हारे सोने के लिए नही, बल्कि तुम्हारी मित्रता के लिए···और इसलिए कि देवताओ की शायद ऐसी ही इच्छा है, अगर सचमुच ही देवता होते हैं तो।"

"मेरे खयाल से तुम्हे पछताना नही पडेगा कि तुमने मित्रता की। तुम्हे मैं अतुलित सुवर्ण दूँगा···यह जानकारी मेरे लिए जरूरी है क्योकि प्राचीन फराओ लोग इसी भाँति स्थान-स्थान से बातो की जानकारी रखा करते थे।" उसने कहा। फिर जब हम बिछुडने लगे तो उसने अपनी मर्यादा की परवाह न करते हुए मेरे गाल छुए और मेरे कन्धों को अपने चेहरे से छुआ और कहा : "तुम्हारे जाने से सिन्यूहे! मेरा मन उदास हे···तुम

अकेले हो, तो मैं भी तो अकेला हूँ। मेरे हृदय के रहस्य को भला कौन जानता है?"

शायद वह उस समय राजकुमारी बैकेटमोन की अद्भुत और मोहिनी मुस्कान को याद कर रहा था।

उसने मुझे अतुलनीय सुवर्ण दिया—इतना अधिक कि मैं सोच ही नही सकता था कि वह मुझे देगा और समुद्र तट तक मेरे साथ सैनिक भी भेजे कि मार्ग मे डाकू मेरा धन न लूट लें। यहाँ आकर मैंने सारा धन व्यापारियो के पास जमा करके मिट्टी की तख्तियो पर उनकी मुहरे लगवा ली। अब मुझे डाकुओ का कोई डर नही रहा और मैं स्मर्ना की ओर जहाज मे बैठकर चल दिया।

६

जिस समय मैंने अपनी यात्राएँ की थी दुनिया चालीस-चालीस सालो से युद्ध का नाम ही भूल गई थी। व्यापारी निर्विघ्न रूप से व्यापार करते और फराओं के सैनिक जहाजो की रक्षा करते थे। सीमाएँ सब खुली हुई थी और सभी नगरो मे सुवर्ण का स्वागत था। लोगो मे आपस मे तनातनी या खिचाव नही था और जब देश-देश के व्यापारी लोग आपस मे मिलते तो एक-दूसरे का अभिवादन किया करते थे।

खेतो मे फसले लदी खडी रहती और चरवाहे भालो के स्थान पर बाँसुरी बजाकर मवेशी चराने जाते थे। अगूर की बेले फूल रही होती और पेड फलो के भार से झुके-झुके हो जाते थे। मदिरो मे पुजारी लोग तेल से चिकने और खाये-पिये मोटे-ताजे पडे रहते और अगणित बलियो का धुँआ मदिरों मे सदा छाया रहता था। देवता भी मोटे हो रहे थे और उनकी कृपा से धनिक और अधिक धन बटोरते और गरीब और गरीब हो जाते थे। शायद उन दिनो सूर्य भी और अधिक चमकदार होकर चमकता था और

हवाएँ हल्के-हल्के चलती थी। आजकल के बुरे जमाने से वह दिन सचमुच कितने अच्छे थे यह मैं कैसे कहूँ।

जब मै स्मर्ना लौटकर अपने घर पहुँचा तो कप्ताह ने खुशी से चिल्लाते हुए मेरा स्वागत किया और नेत्रों मे आँसू भरकर मेरे पैरो पर गिर पडा। वह कहने लगा :

"धन्य है यह दिन जो मेरे स्वामी घर लौट आये है ! मैने तो समझा था कि युद्ध मे तुम मार डाले गए होगे। मेरी हालत भला तुम मानते ही कब थे··· पर वह तो कहो कि हमारा देवता (वह छोटा-सा पत्थर) बडा शक्तिशाली है जिसने तुम्हे बचा लिया। आज तुम्हे देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न है और प्रसन्नता मेरे नेत्रो से होकर आँसुओ के रूप मे बह रही है···हालांकि तुम्हारे न आने से मैने अपने-आपको ही तुम्हारा वारिस समझा था—और तुम्हारा सारा सोना स्मर्ना के व्यापारी लोगो से मै ले लेता—फिर भी इस हाथ से निकली हुई दौलत के लिए मुझे तनिक भी अफ़सोस नही है क्योकि तुम्हारे बिना मै माँ से बिछुडे हुए मेमने की तरह हूँ और मुझे दिन मे भी अँधेरा ही अँधेरा लगता है···" वह बहुत देर तक बकबक करता रहा। और जब वह रुका ही नही, बोलता ही चला गया तो आखिर ऊबकर मुझे उसे चुप करना पडा। फिर मैने कहा "अब शीघ्र यात्रा की तैयारी करो क्योकि वह यात्रा वर्षों की होगी। हम मितन्नी और बेबीलौन की ओर जायेंगे।"

कप्ताह सुनकर फिर रोने-झीकने लगा। इसी बीच वह काफी गुस्ताख हो गया था और जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाता था, उसने ऐसी बाते कहनी शुरू कर दी थी जैसे 'हमारा घर', 'हमारा देवता' और 'हमारा सोना' इत्यादि। मैने उससे कहा :

"मुझे विश्वास है कि किसी दिन तुम अपनी बदतमीजी के लिए उल्टे लटकाये जाओगे···" वह चुप हो गया और तैयारी करने लगा।

और हम यात्रा पर चल दिये। क्योकि कप्ताह ने कसम खाई थी कि वह जहाज़ पर कभी कदम नही रखेगा अतएव हमने कारवाँ के साथ सफर करने का निश्चय किया। मार्ग मे कोई विशेष घटना नही घटी। लैबनॉन की सैडार की लकडी मैने देखी जो मिस्र के महलो मे लगाई जाती थी और

जिससे अम्मन की नाव बनाई जाती थी। रेगिस्तान मे सूखी हवाएँ चली और बदन फट गए; बहुत तेल शरीर पर मलना पडा। सरायो मे खूब खाने-पीने को मिला और कही भी डाकू इत्यादि से धोखा नही खाया। यहाँ-वहाँ सरायो मे मैने रोगियो को भी औषधियाँ दी। सिडार के जगलो मे पेड़ इतने ऊँचे थे कि यदि मैं उनकी ऊँचाई के बारे मे किसी मिस्री से कहता तो कभी विश्वास नही करता। मार्ग मे इन जगलों मे चश्मे स्वच्छ थे। यहाँ के जगलो मे गज़ब की खुशबू थी। मैने समझा कि यहाँ रहने वाले कभी दुःखी नही हो सकते थे परन्तु जब दासो को लकडी काटकर समुद्र तट तक उसे ढोते देखा तो दिल काँप उठा। उनका दु.ख अपार था। उनके हाथ और पैर सब पेड की छालो और उनके औज़ारो से कटे हुए थे और पीठो पर चाबुक से बने घावो को मक्खियो ने सडा दिया था।

आखिर हम कादेश नगर मे पहुँच गए। यहाँ एक बड़ा किला था पर उसमे कोई पहरा नही था। मिस्री हाकिम और सिपाही सब नगर मे अपने कुटुम्बियो के साथ रहते थे। उन्हे शायद याद भी नही रहा था कि वह सैनिक थे। मुझे यहाँ कप्ताह की पीठ मे पडे छालो के पुर जाने तक ठहरना पडा। इस बीच मैंने यहाँ बहुतो का इलाज भी किया। यहाँ के मिस्री वैद्य बिल्कुल नालायक थे—इतने अयोग्य कि यदि कभी उनका नाम जीवन-गृह की पुस्तक मे लिखा गया था तो उसे अब अवश्य मिटा देना चाहिए था।

यही मैंने अपने नाम और उपाधियो की एक मुहर एक कीमती पत्थर पर खुदवाकर बनवाई। यहाँ मिस्र की भाँति मुहरे अँगूठियो मे नही पहनते है बल्कि लबी गोलाकार बनवाकर गले मे पहन लेते है ताकि जब उसे मिट्टी की तख्ती रखकर दबा दिया जाय तो उसका अक्स उतर आये।

यहाँ से फिर हम चल दिये और सीमा पार करके नाहरानी पहुँचे। अब हम यात्री-कर देकर मितन्नी लोगो की भूमि मे आ गए थे। यहाँ लोगो ने हमारा स्वागत किया। उन्होने कहा, "तुम मिस्री हो इसलिए हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। तुम्हे देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है परन्तु हम उदास भी हैं क्योकि तुम्हारे फराओ ने हमारी रक्षा के लिए सैनिक, हथियार और सोना नही भेजा है। अफवाह यह है कि कोई देवता हमारे राजा के पास

वहाँ भेजा गया है हालाँकि यहाँ हमारी रक्षा के लिए निनवैह की देवी पहले से ही इश्तर मौजूद है।"

उन्होने मुझे और कप्ताह को घरो पर बुलाकर भोजन कराया, मदिरा पिलाई इत्यादि। कप्ताह ने मुझसे कहा :

"मलिक यही हम रहे तो बहुत ही अच्छा हो क्योकि यहाँ के लोग भोले है और हम उन्हे खूब वेवकूफ बनाकर उनसे धन ऐठ सकेगे।"

मितन्नी का राजा अपने दरवारियो सहित उन दिनों गर्मियो की वजह से पहाडों पर चला गया था और मैंने इतनी परेशानी भुगतनी मजूर नही की कि वहाँ जाकर उससे मिलता। परन्तु हौरेमहेव के कहे अनुसार मैं वहाँ के वड़े लोगो से मिला और गरीवो से भी मिला। सभी वेचैन थे। मितन्नी किसी जमाने मे शक्तिशाली क्षेत्र था परन्तु आजकल हवा मे उडता-सा हल्का प्रतीत होता था। उसके एक ओर पूर्व मे वेवीलौन था तो उत्तर मे जगली जातियाँ थी, और पश्चिम मे हितैती लोग थे जिनका देश 'हाती' कहलाता था। मैने हितैतियो के बारे मे जितना सुना था कि वह भयानक लोग थे उतनी ही मेरी इच्छा वहाँ जाने को प्रबल हो उठी परन्तु पहले मैंने वेवीलौन जाना तय किया।

मितन्नी के बाशिंदे कद के छोटे थे, उनकी स्त्रियाँ सुन्दर थी और वच्चे खिलौनो जैसे लगते थे। हो सकता था कि वह कभी जवर्दस्त थे और उन्होने उत्तर-दक्षिण पूर्व और पश्चिम मे राज्य किया था, परन्तु यह तो एक ऐसी वात है जिसे सभी राष्ट्र अपने वारे मे कहा करते है। मुझे तो इतना मालूम था कि जब से फराओ मिस्र मे राज्य करते थे तव से यह लोग उनके आधीन थे और उन्हे कर देते थे। दो पीढियो से यह लोग अपनी लडकियाँ भी वहाँ सम्राट् की सेवा मे भेज रहे थे। मुझे उन लोगो से वात करने के वाद पता लगा कि उनके देश को सीरिया और मिस्र की ढाल की तरह वेवीलौन की महान् शक्ति और जगली जातियो के विरुद्ध काम मे लाया जाता था, और केवल इसी कारण से फराओ उनके राजा को वनाये रखता था और उन्हे हथियार, सिपाही और सुवर्ण दिया करता था। परन्तु वह लोग इस वात को समझते नही थे, और अपने देश और अपनी शक्ति का वेहद घमण्ड करते थे।

और मैने देखा कि वह ऐसा देश था जिसका भविष्य अधकारमय था। लोग इस तरफ से वेफिक्र थे और खाने-पीने, वस्त्रो और नुकीले जूते और ऊँची टोपियो मे मस्त रहते थे। वह लोग जवाहिरातो के भी कुशल पारखी थे। वहाँ के लोगो के हाथ-पाँव मिस्रियो की भाँति पतले थे और स्त्रियो की त्वचा तो इतनी अधिक गोरी, नर्म और पारदर्शी होती थी कि अन्दर से नीली नसे भी दिखाई देती थी। उनके आचरण नम्र और वोली मीठी होती और छुटपने से ही वहाँ की स्त्रियाँ और वहाँ के पुरुषो को नजाकत के साथ चलना सिखाया जाता था। वहाँ की रगशालाओ मे भी कभी झगड़े नही होते थे। मुझे उनके लिए डर लगा करता क्योकि जो युद्ध मैने देखा था और यदि जो कुछ 'हाती' राज्य की वावत मैने सुना था वह सव सच था तव तो मितन्नी डूवा ही समझना चाहिए था।

उनके वैद्य चतुर और योग्य होते थे। और उनका इलाज ऊँची श्रेणी का था। परन्तु वह सिर खोलने की विधि से अनभिज्ञ थे।

वह लोग मेरे पास इलाज कराने आये। जिस प्रकार उन्हे विदेशी वस्त्र पहनने और विदेशी मदिरा पीने का शौक था उसी प्रकार विदेशी इलाज के भी वह शौकीन थे। उनकी स्त्रियाँ मेरे पास मुस्कराती हुई आईं और उन्होने मुझसे अपने दु ख कहे और कहा कि उनके पुरुष आलमी, थके हुए और पौरुष से खाली थे। उनकी वातो का अर्थ मैं समझ गया पर मैंने उन्हे आगे न वढने देने मे होशियारी की क्योकि मैं परदेश मे उनके कायदे-कानूनो को नही तोडना चाहता था। मैंने उन्हे स्मर्ना मे सीखी हुई औषधियाँ दी कि वह उन्हे मदिरा मे घोलकर अपने पुरुषो को पिलाया करें। स्मर्ना उन दिनो इस प्रकार की औषधियो के लिए प्रसिद्ध था और वहाँ से चलते समय उनसे उक्त औषधियाँ वनाना मैं सीख आया था। मै कह नही सकता कि उन स्त्रियो ने वह औषधियाँ अपने पतियो को दी अथवा अपने मित्रो को, वैसे मुझे मित्रो की ही सम्भावना अधिक लगती है, पर यह अवश्य,है कि उनकी हविस पूरी हो गई होगी। उनमे से थोडी ही स्त्रियो के वच्चे थे जिससे मुझे उन पर छाई हुई आपत्ति और भी वड़ी प्रतीत होने लगी थी।

वास्तविकता यह थी कि इन लोगो को अपने राज्य की सीमा के वारे

मे कोई ज्ञान नही था। हितैती लोग पत्थरो को उखाडकर ले जाते और जहाँ उनके जी मे आता वही लगा देते थे। यदि कभी मितन्नी आपत्ति करते तो वह हँसकर उनसे कहते : "साहस हो तो लगा दो न तुम्ही इन्हे।" मितन्नी सुनकर चुप लगा जाते क्योकि जो कुछ उन्होने हितैतियो के बारे मे सुन रखा था उसे ध्यान मे रखते हुए उनसे विरोध पैदा करना वह समझदारी नही मानते थे। हितैतियो की क्रूरता की यहाँ तक कहानियाँ कही जाती थी कि वह मनुष्य को पीटकर उसकी चीखे सुनकर और घावो से बहते रक्त को देखकर आनन्द मनाते थे। सीमाप्रान्त पर यदि कोई मितन्नी का रहने वाला उन्हे मवेशी चराने से रोकता तो वह उसे पकडकर उसके हाथ काट डालते थे और खडी फसले उजाड देते थे। या फिर पैर काटकर आदमी से कहते कि वह दौडकर जाय और अपने राजा से उनकी शिकायत करे। सिर की खाल फाडकर आँखो पर उल्टी उतार देते और फिर कहते : "अब सही स्थानो पर पत्थर गाड दे।" उनका अत्याचार अमानुषिक था। लोग कहते थे कि वह टिड्डी दल से भी अधिक भयानक थे। टिड्डियो के चले जाने पर पृथ्वी फिर से अनाज उगाती है परन्तु जहाँ होकर एक बार हितैतियो का रथ निकल जाता वहाँ घास भी पैदा नही होती थी।

यहाँ की सभी बाते मै जान चुका था और अब मैने यहाँ अधिक रुकना व्यर्थ समझा। केवल एक बात रह गई थी और वह यह कि मितन्नी के वैद्य मेरी इस बात को नही मानते थे कि मै सिर खोल सकता हूँ। मेरे ज्ञान पर यह एक आघात था। और तभी एक दिन मेरे पास एक धनी-मानी व्यक्ति आकर बोला कि उसके सिर मे निरन्तर समुद्र के गर्जन का शोर-सा हुआ करता है जिससे न उसे दिन मे चैन है न रात को आराम। वह उससे बेहोश तक हो जाता है और उसके सिर मे इस कद्र दर्द होता है कि उससे तो वह मर जाना बेहतर समझता है। मितन्नी के वैद्यो ने उसे लाइलाज कहकर छोड दिया था।

वहाँ के वैद्यो की मौजूदगी मे मैने तीसरे दिन उसका सिर खोला और ताहोर ने जिस प्रकार उस हब्शी का भेजा साफ किया था उसी भाँति मैंने उसके भेजे मे से चिडिया के अडे के बराबर मैल, जो शायद शैतान की रूह

का अंडा था, अत्यन्त सावधानी मे साफ कर दिया। फिर चाँदी की मोटी चद्दर खोखले मे लगाकर सिर सी दिया, मरीज पूरे समय तक होश मे रहा और जब मैने उसका घाव सी दिया तो उठकर खडा हो गया था और उसने मुझे धन्यवाद देते हुए कहा : "अब मेरी तकलीफ दूर हो गई है, अब वह शोर मुझे सुनाई नही देता···जो पीडा थोडी-बहुत हुई वह उस निरंतर होने वाली पीडा के सामने तो नही के बराबर थी।"

अब मितन्नी के वैद्यो ने मेरी बातो पर हँसना बद कर दिया था। मेरा नाम दूर-दूर तक फैल गया और लोग मेरे हुनर की प्रशसा करने लगे। तीसरे दिन वह रोगी नीद मे उठकर चल दिया और ऊपर से गिरकर मर गया। परन्तु इसके लिए किसी ने मुझे दोषी नही ठहराया।

एक नाव किराये पर लेकर मैं और कप्ताह नदी के बहाव के साथ बेबीलोन के लिए चल दिये।

बेबीलोन साम्राज्य से हम चैल्डिया नाम के नगर मे पहुँचे जिसे कैसाइ-टिस-भूमि भी कहते थे क्योकि वहाँ के रहनेवाले 'साईटिस' कहलाते थे परतु मै अपने वर्णन मे इसे बेबीलोन ही लिखूंगा क्योकि यही नाम प्रसिद्ध है। यह जगह अत्यन्त उपजाऊ है और दूर-दूर तक यहाँ मैदान-ही-मैदान फैले हुए है जिनमे स्थान-स्थान पर सिचाई की नहरे खुदी हुई है। मिस्री औरते झुककर अनाज पीसती है किंतु यहाँ वह दो पत्थरों के बीच बैठकर पीसती है जो प्राय: अधिक कठिन कार्य है।

पेड यहाँ इतने कम है कि उनका काटना जुर्म माना जाता है। जो कोई नया पेड लगाता है वह देवताओ की कृपा का भागी हो जाता है। यहाँ लोग तेल से चुपडे-चिकने और खाये-पिये और मोटे-ताजे है और मोटे लोगो की भाँति खुशमिजाज है जो अधिकतर हँसा करते है। यह लोग भारी खाना खाते है और इन्ही के यहाँ मैने एक विचित्र पक्षी देखा जिसका नाम उन्होने 'मुर्गी' बतलाया। यह उड नही सकता था और मनुष्यो के बीच ही रहता था और इसकी मादा नित्य मगर के अडे के बराबर एक अंडा देती थी जिसे वह लोग बडे चाव के साथ खाते थे। हालांकि उन लोगो मे यह बढिया पदार्थ माना जाता था फिर भी मैने उसे खाने का साहस कभी नही किया।

परतु इस नगर की विशालता और संपन्नता देख मुझे आश्चर्य हुआ। इसका परकोट पर्वत के समान ऊँचा था और देवता के लिए बनाई हुई मीनार मानो आकाश के मध्य घुस गई थी। मकान यहाँ के पाँच-पाँच मजिल ऊँचे थे और लोग उनमे एक-दूसरे के ऊपर रहते थे—यहाँ की-सी दुकाने थीबीज मे नही थी।

इनका देवता मार्दूक था। इश्तर के मदिर का तोरण अम्मन के द्वार से ऊँचा था और सूर्य के प्रकाश मे उस पर लगे पत्थर चमचमा उठते थे। इस द्वार से मार्दूक की मीनार तक एक सड़क जाती थी जो आगे चलकर बल खा जाती थी। यह सड़क इतनी चौडी और साफ थी कि उस पर होकर एक साथ कई रथ निकले जा सकते थे। इस बुर्ज के ऊपर ज्योतिषी लोग रहते थे जो अच्छे-बुरे दिन तथा मनुष्य के भाग्य को उसका जन्मपत्र बनाकर बतला देते थे।

मेरे पास इतना सुवर्ण था कि मदिर के खजाने से चाहे जब गिनकर ला सकता था। मैंने वही द्वार के पास एक कई मंज़िल ऊँची सराय मे घर बनाया। यहाँ ऊपरी मजिलो पर छतो पर बाग लगाये गए थे जहाँ पेड और फल-फूल खिले रहते थे। मेहदी यहाँ बहुत मिलती थी। इस सराय मे बड़े-बड़े आदमी ही ठहरा करते थे—जैसे राजदूत अथवा ऊँचे व्यापारीगण। यहाँ कमरो मे मोटे गलीचे बिछे थे और जगली जानवरो की नर्म खालो से शय्या सजाई गई थी, दीवारो पर रग-बिरगे पत्थर काटकर चित्र बने हुए थे जो अधिकतर कामोत्तेजक थे। इसका नाम इश्तर का आनन्द-भवन था और नगर मे सभी खास वस्तुओ के साथ यह भी देवता की ही जायदाद थी।

यहाँ मैंने सारे ससार के लोग देखे और नाना भाषाएँ सुनी। यह लोग बाजारो मे ऊँचे व्यापार किया करते थे। लोग कहते थे कि बेबीलोन संसार के मध्य मे था और यहाँ का व्यापार बहुत ऊँचे दर्जे का था। व्यापार यहाँ सबसे महत्त्व का विषय था। नगर कोट तथा किले यह लोग आत्मरक्षार्थ बनाते थे, लडने के लिए नही। यहाँ व्यापारिक क्षेत्र इतना बडा था कि देवता भी आपस मे व्यापार करते थे अर्थात् एक मदिर दूसरे मदिर मे व्यापार करता था। फिर भी उन्हे अपने सजे हुए सैनिको पर गर्व था। वह सोने-चांदी

से मढे कवच और शिरस्त्राण पहनते थे।

मेरा नाम मुझसे पहले ही यहाँ आ पहुँचा था। एक दिन मेरे पास इश्तर के आनन्द भवन मे एक आदमी आया और उसने कहा कि बेबीलोन के सम्राट् ने मुझे बुलाया था। कप्ताह सुनते ही आदत के मुताबिक घबराया और उसने कहा: "मत जाओ···चलो यहाँ से भाग चले···राजाओ से मिलकर कोई लाभ नही होगा···उल्टे मारे न जाएँ," मैंने कहा, "मूर्ख! हमारे पास हमारा देवता जो है?"

सुनकर उसने हाथ मले और कहा, "देवता छोटा-सा है और काम बड़ा है। और फिर हर बेजा काम मे उसकी शक्ति की परवाह करना भी बेजा है।···पर खैर जब तुम जाओगे ही तो मैं भी साथ चलूँगा ताकि मरें तो इकट्ठे मरे। परन्तु एक बात करो। आज मत जाओ क्योंकि आज हफ़्ते का आखिरी दिन है और सारा बाजार और लोगो के घर तक बन्द है। और फिर जब जाना ही है तो क्यो न इज्जत के साथ जाओ···उससे कहो कि कल वह ले जाने के लिए पालकी लेता आये।"

मैंने देखा कि वह बात पते की कह रहा था। मैंने बादशाह के आदमी से कहा, "तुम मुझे मामूली परदेशी समझ सकते हो यह तुम्हारी मर्जी है पर मैं बादशाह के पास कल जाऊँगा आज नही, क्योंकि आज छुट्टी का दिन है और कल भी तब आऊँगा जब तुम्हारा बादशाह मेरे लिए पालकी भेजेगा क्योंकि गोबर से बिगड़े पैर लिये मैं बादशाह के सामने नही जाना चाहता।"

वह बोला, "मिस्री कीड़े! तेरे यह बोल तुझे भाले से छिदाकर कही मरवा न दें।"

पर साफ़ लगता था कि वह मेरे शब्दों से अत्यन्त प्रभावित हुआ था क्योंकि दूसरे दिन जब वह लौटा तो पालकी लेकर आया, हालांकि वह पालकी मामूली थी जैसी कि साधारण व्यापारियो को बुलाने के लिए भेजी जाती थी।

कप्ताह ने उसे देखकर गालियाँ बकी और वह चिल्लाया, "सेट और तमाम शैतान तुम्हारा नाश करें! मार्दूक तुम पर बिच्छू छोड़े! यहाँ से भाग जाओ! क्या तुम यह समझते हो कि मेरा मालिक इस टूटी पालकी पर जाएगा?"

दास फटे नेत्रो से देखने लगे। उस आदमी ने कप्ताह को अपना डडा दिखाया और दर्शक एकत्रित होकर हँसकर कहने लगे, "अपने उस मालिक को तो दिखा जिसके लिए यह पालकी ठीक नही है।"

कप्ताह ने तुरन्त उस सराय की वडी पालकी किराये पर मँगाई जो काफी रकम की थी। यह एक वहुत ही शानदार और वडी पालकी थी जिसे चालीस दास मिलकर उठाते थे और जिसमे केवल शक्तिशाली राज्यो के राजदूत इत्यादि चढा करते थे या फिर देवताओ की सवारियाँ निकाली जाती थी। और जव मै सुनहरी व रुपहली जरी से मढी हुई कामदार पोशाक पहनकर नीचे उतरा तो लोगो की हँसी थम गई। मेरे गले और वक्ष पर सुवर्ण खचित जवाहिरात सूर्य के प्रकाश मे चमचमा रहे थे। मेरे गले मे मोटी-मोटी सोने की जजीरे पडी हुई थी। सराय के दास मेरे पीछे-पीछे सिडार और आबनूस से बने हुए मेरी दवाओ के वक्सो को लेकर चले। लोगों ने मेरे सामने सिर झुका दिए। वह कहने लगे, "यह व्यक्ति तो सच-मुच ही देवताओ जैसा योग्य लगता है···चलो हम लोग भी इसके पीछे-पीछे राजमहल को चले।"

महल के दीर्घ द्वार पर सैनिको ने भीड को भालो से रोका। ढालो की दीवार-सी खिच गई जिन पर सोना और चाँदी चमकने लगा। जव मुझे भीतरी प्रागण की ओर ले जाया गया तो मैंने देखा मार्ग के दोनो ओर अगणित उडते हुए प्रस्तर के दीर्घ और विशालकाय सिह रखे थे। यही मुझे एक वृद्ध मिला जिसके गाल लटके हुए और नेत्रो मे क्रोध था। उसकी ठोड़ी मुडी हुई थी और वह वहाँ के पढे-लिखे लोगो की भाँति कानो मे सुवर्ण कुडल पहने हुए था। वह मुझे देखकर वोला :

"तुम्हारी हरकतो से मेरा जिगर जलने लगा है। तुम आये क्या हो अपने साथ नाहक भीड लगाकर लाये हो और तुमने व्यर्थ का हल्ला मचवा दिया है। दुनिया के चारो कोनो के मालिक ने मुझसे पूछा था कि यह आदमी कैसा है जो अपनी इच्छा से आता है वादशाह की मर्जी से नही आता और जव आता है तो हाथ हगामा भी लाता है।"

मैंने उसको उत्तर दिया, "तुम्हारी बकबक मुझे मक्खियो की भिन-भिनाहट-सी लगती है फिर भी मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम कौन हो जो मुझसे

यह सब पूछते हो ?"

"मैं दुनिया के चारो कोनो के मालिक का सबसे बड़ा वैद्य हूँ।" उसने कहा, "और तुम कौन ठग हो जो यहाँ हमारे मालिक को लूटने आये हो ? यदि वह तुम्हे खुश होकर सोना या चाँदी दे तो समझ लो कि उसमे से मुझे आधा देना होगा।"

"तब तो तुम मेरे विचार से मेरे नौकर से बाते करो जिसका काम बीच के बदमाशो को हटाना है। परन्तु फिर भी तुम्हारा बुढापा देखकर मै तुम्हे दोस्त बना सकता हूँ हालाँकि तुम जानते कुछ भी नही हो। मैं अपने हाथो के यह सुवर्ण के कडे तुम्हे दे दूंगा केवल यह दिखाने के लिए कि सोना मेरे लिए पैरो के नीचे की धूल से बढकर नही है···मैं तो केवल ज्ञान का भूखा हूँ।"

जब मैने उसे बाँह से उतारकर सुवर्ण-वलय दे दिया तो वह हैरत मे रह गया और इतना घबरा गया कि उसने मेरे साथ कप्ताह को भी अन्दर चला जाने दिया।

सम्राट बर्नेबुरियाश एक हवादार विशाल कक्ष मे नरम गद्दो पर गाल को हाथ से दबाये बैठा था। वह एक बिगडा हुआ उद्दण्ड लड़का था। कमरे की दीवारो पर रग-बिरगे पत्थर चमचमा रहे थे। उसके पैरो के पास एक सिह बैठा था जो हमे देखकर गुर्राया। वृद्ध उसे देखकर भूमि पर उल्टा लेट गया और होठो से पृथ्वी घिसने लगा। कप्ताह ने भी उसकी नकल की परन्तु जब उसने सिह की गुर्राहट सुनी तो झपटकर उठ बैठा जिसे देखकर बादशाह हँसते-हँसते पीछे झुक गया। वह इतना हँसा कि उसकी आँखो मे पानी आ गया। फिर अपने दर्द की याद कर वह कराहने लगा उसका एक गाल इतना सूज गया था कि उसकी उधर वाली आँख भी आधी ही खुली थी। वह उस वैद्य को देखकर गुर्राया तो वह झट से बोला, "यही वह मिस्री है जो बुलाने से कल नही आया था। केवल एक शब्द श्रीमान् कह दे और सैनिक इसका हृदय फाड़ देगे।" परन्तु बादशाह ने उसके लात देकर कहा, "यह समय व्यर्थ बातें करने का नही है···पहले मेरा इलाज करो। मेरा दर्द इतना ज्यादा है कि अगर शीघ्र ठीक न हुआ तो शायद मैं मर ही जाऊँगा। कई रात से तो मैं सो भी नही सका हूँ।"

वृद्ध पृथ्वी पर सिर पटककर कहने लगा, "हे ससार के चारो कोनो के मालिक ! जो कुछ भी कर सकते थे वह सब हमने करके देख लिया है हमने मन्दिर मे जबडे और दांत सब चढा दिये हैं कि जो भूत श्रीमान् के जबडे मे घुस गया है वह निकल जाए। इससे ज्यादा हम और क्या कर सकते है क्योकि अपने पवित्र शरीर को आप हमे छूने तो देते नही हैं और मेरा विचार है कि यह गदा मिस्री भी कोई लाभ नही पहुँचा सकेगा।"

तब मैने कहा, "मै मिस्री हूँ, सिन्यूहे—वह जो फराओ द्वारा 'एकाकी' कहा गया था—वह जिसे युद्ध के बीच सैनिको ने 'जगली गधे का वेटा' कहकर पुकारा था—श्रीमान् को देखकर मर्ज जानने की आवश्यकता मुझे नही है क्योकि आपका सूजा हुआ गाल साफ बता रहा है कि अन्दर दाढ बिगड़ गई है जिसे आपने समय के अन्दर, जैसाकि निश्चय ही आपके वैद्यो ने आपसे कहा होगा, नही उखडवाया है। ऐसे दु.ख अधिकतर बालको के हुआ करते हैं और ससार के चारों कोनों के सम्राट् को शोभा नही देते जिसके सामने स्वय सिंह भी कांपा करते हैं जैसा कि मैं प्रत्यक्ष भी देख रहा हूँ। फिर भी आपकी पीडा तीव्र है और मैं इसे ठीक कर दूंगा।"

बादशाह ने वैसे ही बैठे-बैठे कहा :

"तुम सचमुच बडे दुस्साहस से बोलते हो। अगर मै ठीक होता तो तुम्हारी जुबान कटवाकर तुम्हारा जिगर चिरवा देता—पर इस समय मैं अपना इलाज कराना चाहता हूँ। मुझे शीघ्र अच्छा कर दो और तुम्हे बड़ा इनाम मिलेगा पर अगर तुम मुझे कष्ट दोगे तो मैं तुरंत मरवा डालूंगा।"

"ऐसा ही हो।" मैने कहा। फिर अपने औज़ार बाहर निकालकर उन्हे पवित्र अग्नि मे शुद्ध करने लगा और साथ-साथ मै कहता भी गया, "मेरे पास एक छोटा-सा देवता है पर है वह अत्यन्त शक्तिशाली। कल मुझे उसने नही आने दिया तो मुझे जीवनदान दे दिया क्योंकि आपके मुँह का शैतान आज ही पका है। मैं इसे बहुत ही आसानी से और बिना दर्द किये हुए फोड़ दूंगा। वैसे देवतागण बादशाहों को भी पीड़ा से मुक्त नही करते परन्तु यह मै विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे काम के बाद आपको वेहद आराम मिलेगा।"

और मैंने मदिरा गर्म करने की आज्ञा उस वैद्य को दी। वह बड़बडाया

और उसने अपना सिर पृथ्वी पर दे मारा पर मैने उसकी कोई परवाह नही की।

बादशाह कराहता हुआ बैठा था। वह सुन्दर लडका था और मुझे वह भा गया था।

उस मदिरा मे मैने सुन्न करने की औषधि मिलाकर उसे पिलायी जिसे पीकर उसके नेत्र चमकने लगे और वह बोला :

"मेरा दर्द जाता रहा है'''अब मुझे तुम्हारे चाकू-चिमटी की कोई जरूरत नही है।"

परन्तु मेरा आत्मिक बल अधिक था। उसका सिर अपनी काँख मे मजबूती से दबाकर मैंने उसका मुँह खुलवाकर, उस फूले मसूडे मे अपना गर्म चाकू घुमाकर मवाद निकाल दिया। वह चाकू के दर्द से चिल्लाया जिसे सुनकर वह सिह उठ बैठा और उसने दहाड़ लगाई। उसके नेत्रो से अगारे बरसने लगे और उसने पूँछ खडी कर ली। परन्तु बादशाह शीघ्र ही थूकने लग गया। अब उसका दर्द जाता रहा था। मैंने उसके गाल ऊपर से तनिक दबाकर उसे और आराम दिया। अब वह दर्द जाता रहा था और थूक-थूककर उसने सारा मवाद और रक्त निकाल दिया था। वह बोला :
"मिस्री सिन्यूहे ! गो तुमने मुझे छू दिया फिर भी तुम धन्य हो !"

वृद्ध भीतर-ही-भीतर जल गया और उसने कहा, "ऐसा तो मैं भी कर सकता था यदि श्रीमान मुझे अपना शरीर छूने की आज्ञा दे देते और दाँतो वाला वैद्य तो इससे भी अधिक चातुर्य से इस काम को कर लेता।"

और जब मैंने कहा कि उसका कथन सत्य था तब तो वह आश्चर्य-चकित रह गया। "परन्तु", फिर मैंने कहा, "इन लोगो का आत्मिक बल मेरे समान प्रबल नही था जो कि वैद्य मे होना चाहिए क्योकि बादशाह की पीड़ा भी विधिवत् ही दूर की जा सकती है अन्यथा नही। यह लोग अपने प्राणों के भय से डरते थे और इलाज ठीक नही कर रहे थे। अब मैने इलाज कर दिया है और श्रीमान् के अनुचरों का स्वागत है कि वह मेरा जिगर फाड डाले।"

बादशाह ने फिर थूककर गाल दबाया जहाँ अब दर्द बिल्कुल नही था और कहा :

"आज तक मैंने तुम्हारे समान निर्भीकतापूर्वक बोलने वाला व्यक्ति नही देखा सिन्यूहे। परन्तु तुमने मेरी पीडा हरी है अतएव मै तुम्हारी उद्दण्डता को क्षमा करता हूँ—और साथ-ही-साथ तुम्हारे अनुचर के प्राण भी छोड देता हूँ जबकि उसने मुझे तुम्हारी काँख मे सिर फँसाये रोते देख लिया है। और फिर इसलिए भी उसे माफ करता हूँ कि उसने अपनी मूर्खता से मुझे हँसाकर खुश किया था।" फिर कप्ताह से कहा, "वैसा फिर करो।"

पर उसने उत्तर दिया, "यह मेरी तौहीन है।"

वर्नेबुरियाश ने मुस्कराकर उस पर सिंह को ललकार दिया। और जब सिंह उसकी ओर चला तो वह भागा और किवाड पर चढ गया। सिंह भी दीवार के सहारे पिछले दोनो पैरों पर खडा हो गया तो वह और ऊपर उठ गया और अधर-सा लटक गया। बादशाह का हँसी के मारे बुरा हाल था।

फिर उसने मुझे साथ बिठाकर मदिरा पिलाई और खाना खिलाया। कई चाँदी के थालों मे उत्तम भोजन परोसा गया जिन्हे मैंने चाव से खाया और उत्तम मदिरा पी। मैने कहा :

"आपके दर्द का असली कारण वह बिगड़ी हुई दाढ़ है और यदि वह खीचकर न निकाली गई तो आपका दर्द लौट सकता है। जब यह मौजूदा सूजन बैठ जाय तो उसे उखडवा लेना आवश्यक है।"

यह सुनकर उसका चेहरा स्याह पड गया और वह बोला, "परदेशी! तुम पागलो की भाँति बहुत बोलते हो।" फिर कुछ सोचकर कहा, "हो सकता है कि तुम ठीक कहते हो क्योकि हर जाडो मे यह दर्द बढ जाता है जब मेरे पैर ठडे हो जाते हैं। उस समय दर्द इतना बढ जाता है कि मैं मरना बेहतर समझने लगता हूँ। यदि यह दांत उखाडा ही जाना है तो इसे तुम उखाड़ोगे क्योकि उस दाँत वाले वैद्य को तो मैं पास भी नही आने दूंगा…"

मैने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया· "आपका दाँतोवाला वैद्य ही उसे उखाडेगा क्योकि इस काम मे उससे चतुर और कोई नही है—वह मुझसे भी ज्यादा होशियार है। वैसे मैं पास खडा रहूँगा और आपके हाथ पकडकर आपकी हिम्मत बढाऊँगा। मै अपनी नाना देशो से प्राप्त विद्याओ से आपका ध्यान बँटा दूंगा और इस बीच जो दो हफ्ते का समय ठीक रहेगा जिसमे

आपके मुँह की सूजन भी बैठ जाएगी, आपको कुल्ला करने के लिए एक अति उत्तम औषधि दूंगा जो वैसे तो बुरे स्वाद की होगी और मुँह मे थोड़ी-थोड़ी लगेगी भी, परन्तु इस सूजन को शीघ्र बैठा देगी और बाद मे दाँत उखाड़ते समय भी सहायक सिद्ध होगी।"

वह नाराज़ हो गया, "और अगर मैं यह सब न करूँ तो?"

"आप मुझे वचन दें कि यह सब मेरे कहे अनुसार होगा और यह मैं जानता हूँ कि ससार के चारो कोनो का शासक वचन देकर कभी नही फिर सकता। और यदि आपने मेरा कहा कर दिया तो मैं आपका दिल अपने हुनर से खुश कर दूंगा—पानी को खून बना दूंगा—और फिर आपको उसका कारण भी सिखा दूंगा कि आप अपनी रियाया को चमत्कार दिखाकर प्रभावित कर सके। परन्तु आपको वचन देना होगा कि आप उसे रहस्य ही बनाये रखेंगे क्योंकि यह अम्मन के मदिर के प्रथम श्रेणी के पुजारी होने के नाते मैंने सीखा है और यदि आप बादशाह न होते तो मैं आपको यह कभी न बता सकता था।"

और तभी कप्ताह चिल्लाया: "अरे इस दुष्ट जन्तु को शीघ्र हटाइये, मेरी कमर दुख रही है···अन्यथा मै नीचे उतरकर इसका वध कर दूंगा।"

बर्नेबुरियाश फिर जी भरकर हँसा और उसने मुझसे कहा· "इसे मुझे बेच दो···मैं तुम्हें बहुत धन दूंगा···बड़ा मसखरा आदमी है यह!"

जब हम वहाँ से लौटे तो मैंने उस वृद्ध वैद्य से कहा· "दो सप्ताह बाद फिर आपत्ति आने वाली है। अभी से बलि देकर देवताओ को सन्तुष्ट कर लिया जाय तो उत्तम रहेगा···क्यों?"

वह धर्मभीरु मनुष्य था। उसे मेरी सलाह बहुत ही भली लगी। दाँत वाले वैद्य को लेकर उसने मुझसे मिलने का वचन दिया और बाहरी प्रागण में बैठे मेरी पालकी उठाने वाले चालीसो दासो को भोजन कराया और पीने को मदिरा दी। जब मैं वापस चला तो दास गाना गा-गाकर मेरे यश को बखानते आ रहे थे। मेरा नाम उन्होंने पूरे नगर मे फैला दिया। भीड़ें मेरे पीछे चली आ रही थी परन्तु कप्ताह अपने श्वेत गधे पर चढा हुआ नाराज़ चला आ रहा था और मुझसे बोलता भी न था क्योंकि उसकी तौहीन हो गई थी।

दो सप्ताह बाद मर्डूक की बुर्ज मे मैं बादशाह के वैद्यो से मिला और हमने मिलकर एक भेड मदिर मे वलि चढ़ाई। पुजारियो ने उसका जिगर देखकर, क्योकि उस देश मे जिगर देखना एक विशेषता थी यह कहा: "वादशाह अत्यन्त क्रुद्ध होगा परन्तु कोई आदमी मारा नही जायेगा परन्तु तुम्हे पजो और भालों से सावधान रहना चाहिए।"

फिर हमने नजूमियो से कहा कि वह अपनी स्वर्ग की पुस्तक देखकर वतलाएँ कि वह दिन शुभ था अथवा अशुभ। उन्होने कहा कि दिन न तो शुभ था न अशुभ, वेहतर था कि हम कोई दूसरा दिन छाँटते। फिर पुजारियो ने हमारी प्रार्थना पर जल मे तेल डालकर भाग्य देखकर कहा कि उसमे कोई विशेषता उन्हे प्रतीत नही हुई—खासकर कोई बुरा शकुन उन्हे नही दीखा। जब हम मदिर से चले तो एक गिद्ध एक मनुष्य का सिर पजे मे पकडे हमारे ऊपर से उड गया जो उसने दीवार से उल्टे लटके हुए किसी मुर्दे के शरीर से नोच लिया था। पुजारियो ने इसे अच्छा लक्षण वताया हालाँकि मुझे वह बहुत ही उलटा प्रतीत हुआ।

इन सब भविष्यवाणियो से सचेत होकर हमने वादशाह के सैनिको और उस सिह को कक्ष के वाहर छोडकर अन्दर से द्वार वन्द कर लिये क्योकि अपने गुस्से मे मुमकिन था कि वह उन्हे हम पर छोड़ देता। मुझे उन लोगो ने वतलाया कि ऐसा होता आया था।

सम्राट् वर्नेवुरियाश मदिरा से चक होकर वहादुरी के साथ आया परन्तु जब उससे दाँत वाले वैद्य के पास कुर्सी पर वैठने को कहा गया तो भय से पीला पडते हुए वोला . "मुझे राज्य के वहुत ही आवश्यक कार्यों को करने के लिए अभी जाना है···मै पीने मे उन्हे भूल ही गया था," और मुडकर जाने लगा। उसके वैद्य पृथ्वी पर औधे पडे होठो से जमीन पोछ रहे थे। तभी मैने आगे वढकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा . "श्रीमान् धैर्य रखे, सब काम पलक मारते हो जायेगा···तनिक भी पीडा नही होगी," और मैंने वैद्यो को काम शुरू करने की आज्ञा दी। औजारो को पवित्र अग्नि मे शुद्ध किया और मै उसके मुँह मे सुन्न करने वाली औषधियाँ मलने लगा। शीघ्र ही वह बोला : "बस अव मत मलो···मेरा मुँह और जिह्वा लकडी जैसी हो गई है। फिर हमने उसे कुर्सी पर बिठाकर उसका मुँह खोलकर अन्दर

लकड़ी फँसा दी कि वह उसे बन्द न कर सके। मैंने उसके हाथ पकडकर उसे धारज वंधाया और उसके दांतों वाले वैद्य ने वेवीलोन के सम्पूर्ण देवताओं को जगाकर चिमटी से इतनी सफाई से एक ही झटके मे वह दाढ खीचकर निकाल ली कि मै देखता ही रह गया। इतनी सफाई का काम मैंने इस सवंध मे आज तक कभी नही देखा था। हालाँकि वादशाह उस समय पीडा से गैं-गैं-गैं-गैं करने लगा था और क्रुद्ध हो उठा था और जिसे सुनकर वाहर सिंह ने गरजकर द्वार मे टक्कर दी थी और द्वार को वारम्वार पंजो मे खुरचने लगा था।

जव उस वादशाह का सिर छोड दिया गया और उसके मुंह से वह लकडी निकाल ली तो वह क्षण प्रलयकारी प्रतीत हुआ; क्योकि पात्र मे उसने खून थूककर चिल्लाते हुए वकना शुरू किया। उसके नेत्रों में अश्रु भर आये थे और वह गरजकर सैनिको को आज्ञा देने लगा कि हम सवको मार डाला जाय, उसने सिंह को भी पुकारा कि वह हम सवको फाडकर खा जाय और फिर लकड़ी लेकर अपने वैद्य—उस वृद्ध को मारने लगा। दाँत वाला वैद्य समझा कि उसका अन्त समय आ गया था और पडा-पडा थर-थर काँप रहा था। तभी मैंने उससे (वादशाह से) कहा कि वह कुल्ला करे। उसने वैसा ही किया। खूव कुल्ला करने के वाद जव रक्त रुक गया और पीड़ा भी नही रही तो वह तनिक शान्त हो गया। फिर मुझसे वोला : "अपने वचनानुसार मुझे अव वह कमाल दिखाओ।" हम एक और कमरे मे गए क्योकि उस मनहूस कक्ष मे अव वह एक क्षण भी रुकना पसद नही करता था। मैंने एक पात्र मे जल डालकर उसे वादशाह और उसके वैद्यो को चखाया कि वह उसे परख ले कि वह जल ही था। फिर मैंने उसे धीरे-धीरे एक और पात्र मे छोडा और सभी आश्चर्य से देखने लगे क्योकि वह रक्त मे परिणित हो गया और सभी ने चिल्लाकर आश्चर्य प्रकट किया।

वादशाह ने प्रसन्न होकर अपने वैद्यो को तव इनाम वाँटा। दाँत वाले वैद्य को तो उसने वास्तव में मालदार वना दिया। जव सव चले गए तो मैंने उसे रक्त वनाने की वह विधि भी वतला दी जो, जैसाकि सभी जानते है, कितनी सरल है, परन्तु सभी हुनर जड मे आसान ही तो होते है। वादशाह ने मेरी वडी तारीफ की और फिर तुरन्त अपने दरवारियो को महल के वडे

तालाब के पास बुलवाकर सबके सामने उस जल को रक्त मे बदलकर जब दिखा लिया तभी चैन पाया। और तब बडे और छोटे, ज़बर्दस्त और सीधे सभी भय से उसके चरणों पर लोट गए।

बर्नेबुरियाश प्रसन्न हो उठा, वह दाँत का दर्द अब बिल्कुल भूल गया था। मुझसे वह खुश होकर कहने लगा : "मिस्री सिन्यूहे! तुमने मेरा इलाज कर दिया है, मेरी तबियत खुश की है और मुझे कमाल सिखाया है। मै तुमसे बहुत खुश हूँ। माँगो क्या चाहते हो और वही तुम्हे मिलेगा।"

मैने उत्तर दिया : "संसार के चारों कोनों के सम्राट् बर्नेबुरियाश! वैद्य होने के नाते मैने आपके सिर को अपनी कोख के नीचे दबाया है और जब आप चिल्ला रहे थे तो आपके दोनो हाथ पकडे है। मै परदेसी हूँ और जब अपने देश लौटूँगा तो बेबीलौन के प्रचड सम्राट् की ऐसी याद लेकर नही जाना चाहूँगा। अतएव अपनी ठोड़ी पर आप एक दाढी बाँधे और अपनी विशाल वाहिनी को एक बार मेरे सामने होकर निकाले कि जब मै आपकी उस प्रचड शक्ति को देख लूँ तो पृथ्वी पर औधा गिरकर आपके सामने सिर झुका दूं···अपने-आपको धूल समझने लग जाऊँ·· बस यही चाहता हूँ और मुझे कुछ नही चाहिए।"

मेरी प्रार्थना से वह प्रसन्न हो उठा। वह कहने लगा : "सचमुच मेरे सामने आज तक ऐसे कोई नही बोला सिन्यूहे! मै तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ, हालाँकि पूरे दिन मुझे सुवर्ण सिहासन पर बैठकर सलामी लेनी पड़ेगी। मेरे-नेत्र थक जायेगे और मैं जम्हाइयाँ लेने लगूँगा। परन्तु तुम्हारी खातिर मैं यह सब करूँगा।"

कवायद का दिन निश्चित हो गया और उसके सम्पूर्ण देश मे फैली हुई उसकी सेनाओ को आने की सूचना भेज दी गई।

इश्तर के मदिर के द्वार के सामने सेना का प्रदर्शन हुआ। सुवर्ण सिहासन पर सम्राट बैठा और उसके पैरो के पास सिह बैठा। आसपास उनके उच्च पदाधिकारी पूरी तरह सजकर बैठे। सम्राट उन सबके बीच ऐसा लग रहा था जैसे सोने-चाँदी के बादलो पर बैठा हो।

और तब धनुर्धरो, भाले वालो, सुसज्जित सैनिको और रथो का समुद्र उमड़ पडा। रथो के भारी पहिये बादलो की भाँति गरजने लगे और सैनिको

की पदचाप से पृथ्वी डोलने लगी, मेरी आँखें तैरने लगी और घुटने काँपने लगे।

मैने कप्ताह से कहा : "यह तो समुद्र की रेत की भाँति है जिनकी गणना भी कठिन है···फिर भी गिनो तो सही इन्हे।"

उसने विस्फारित नेत्रो से कहा : "मालिक, यह असभव है क्योंकि इतनी तो शायद गिनती ही नही है।"

परन्तु मैने फिर भी उन्हे गिनने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि सम्राट् के अगरक्षक सोने-चाँदी से मढी ढाले, कवच और शिरस्त्राण पहने हुए थे और तेल लगे चिकने चमक रहे थे, वह खाये-पिये स्वस्थ थे। वह इतने मोटे थे कि बैलो की भाँति हाँफते हुए बादशाह के सामने से चले जा रहे थे। परतु वह थोडे ही थे। जो बाहर से आये वह गदे और तपे हुए लगते थे। उनकी खाले धूप मे काली हो गई थी और उनमे से पेशाव की दुर्गन्ध आती थी। उनमे से वहुतो के पास भाले भी नही थे। उनकी आँखो पर मक्खियाँ भिनभिना रही थी। उनके रथ भी पुराने थे जिनमे से दो-चार के तो पहिये भी हिल रहे थे। और तव मैंने समझ लिया कि सैनिक हर देश मे ऐसे ही होते है।

सायकाल सम्राट ने मुझे बुलाकर गर्व से मुस्कराते हुए मुझसे पूछा, "मेरी शक्ति देखी सिन्यूहे ?"

मै उसके सन्मुख पृथ्वी पर लेट गया और मैंने धरती को चूमकर उत्तर दिया, "वास्तव मे आपके समान शक्तिशाली सम्राट् और कोई नही है और लोग आपको संसार के चारो कोने का सम्राट् व्यर्थ में ही नही कहते। मेरी आँखे थक गई हैं, मेरा सिर चकरा गया है और मेरे हाथ-पाँव भय से काँप रहे है क्योकि समुद्र की रेत के कणो की भाँति आपके पास सैनिक है··· आपकी वाहिनी दुर्दम्य है !"

वह खुश हो गया। फिर हमने मदिरा पी और भोजन किया। फिर वह मुझे अपने हरम मे ले गया जहाँ देश-देश की स्त्रियाँ उसने एकत्र कर रखी थी। वहाँ दीवारो पर यौन सवधी नग्न चित्र बने थे और अनेकानेक आसनो से स्त्री-पुरुष युग्नद्ध दिखाये गये थे। उसने मुझे वही एक रात किसी भी

स्त्री के साथ बिताने की आज्ञा दी। परन्तु जब मै चुप रहा तो वह बारम्बार कहने लगा। अत मे मैंने बहाना बनाकर कहा कि मुझे एक रोगी का सिर खोलना था जिसके लिए यह आवश्यक था कि मै स्त्री-सपर्क से उक्त समय तक दूर रहूँ अन्यथा देवताओ के क्रुद्ध होने का भय हो सकता था। वह मान गया।

मेरे लौटने से पूर्व उसने कहा, "नदियाँ उफन रही है···नया वर्ष लग गया है अतएव पुजारियो ने आज से तेरहवाँ दिन उत्सव के लिए निश्चित किया है। और उसी दिन नकली सम्राट् दिवस मनाया जायेगा। इस बार मैं तुम्हे इसमे एक आश्चर्य दिखाऊँगा···परन्तु अभी से बतलाऊँगा नही क्योकि फिर तो मेरा सारा मजा किरकिरा हो जायेगा।"

मै लौट आया।

बेबीलोन मे मैने वहाँ के वैद्यो से उनके इलाज की बहुत-सी अच्छी बाते सीखी, वहाँ के पुजारियो के ज्योतिष-ज्ञान का मुझ पर बडा प्रभाव पडा। मैने उनसे भेड के जिगर को देखकर भविष्य की बातो का ज्ञान सीखा। पानी पर तेल देखकर होने वाली बातो को सीखने मे भी मैने काफी समय व्यतीत किया।

वहाँ के पुजारियो ने एक दिन पानी पर तेल तैराकर और भेड का जिगर देखकर मुझसे कहा, "तुम्हारे जन्म के बारे मे कुछ सही बात का पता नही चलता है···ऐसा लगता है कि तुम साधारण मिस्री नही हो बल्कि ससार मे कोई विचित्र कथा लेकर उत्पन्न हुए हो···भेड का जिगर यही बतला रहा है।"

और आश्चर्यचकित होकर तब मैंने उन्हे बतलाया कि मै किस प्रकार बाँस की नाव मे बहा दिया गया था इत्यादि। सुनकर वह बोले, "यही हमने सोचा था।" फिर उन्होने अपने यहाँ के एक बादशाह सार्गन की कथा सुनाई जिसने सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने नीचे दबा लिया था पर जो स्वय भी मेरी ही भाँति बाँस की टोकरी मे बहकर आया था और उसके जन्म के बारे मे किसी को पता नही था। बाद मे उसके महान् कार्यो को देखकर ही जाना गया था कि वह देवताओ की सतान था।

सुनकर मेरा हृदय भय से काँप उठा। मैने हँसने की चेष्टा करते हुए

पूछा, "मेरे बारे मे तो कम-से-कम आप लोग नही सोचते होंगे कि मै भी किसी देवता का पुत्र हूँ ?"

परन्तु वह नही हँसे और गम्भीरतापूर्वक बोले, "हम यह बात नही जानते परन्तु स्वय सत्य को छिपाना भी एक गुण है और हम श्रीमान् के सन्मुख नतमस्तक है," और वह मेरे सामने पृथ्वी पर औंधे लेट गए। एक बार फिर जब भेड का जिगर देखा गया तो उन्होने मुझे भय से देखा और प्रणाम किया। वह बोले, "आपकी भाग्य-रेखा विचित्र है···आप देवता की सतान है···आपके शरीर मे राज-रक्त बहता है···आप ससार पर हुकूमत करने के लिए पैदा हुए है···।"

फसल मे जब नया दाना पडने लगा और रातो की कडाके की सर्दी कम हुई और थोडी गर्मी लगने लगी, तो पुजारी लोग नगर के बाहर जाकर देवताओ को उनकी कब्रो मे से निकाल ले गये और फिर चिल्लाकर कहने लगे कि वह जाग उठे है। और तब बेबीलौन के नगर मे धूम मचने लग गई। स्थान-स्थान पर लोग रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर नाचने-गाने लगे और भीड़ की भीड बाजारो मे टूट पडी। भीड ने दुकानें लूट ली और सैनिको से भी अधिक शोर मचा दिया। इश्तर के मदिर में युवतियाँ और तरुणियाँ जाकर अपने विवाह का अंश लाने लगी और जो भी उन्हे पसंद करता था जिसे भी वह पसद करती उसी के साथ सबके बीच खुले मे निर्लज्जतापूर्वक लिपट जाती थी। इस उत्सव का अतिम दिन 'नकली सम्राट् दिवस' कहलाता था।

अब तक बेबीलौन की रीतिरिवाजों से मै काफी परिचित हो गया था परन्तु उक्त दिन सूर्य निकलने से पहले ही जब इश्तर के दीर्घ तोरण पर सैनिक मदिरा पीकर चिल्लाते हुए उपद्रव करने लगे तो मैं घबरा गया और मैने समझा कि नगर मे बलवा हो गया था। तभी उन लोगों ने, भीड़ की भीड ने, द्वार तोड दिया और वह लगे चिल्लाने, "हमारा सम्राट् कहाँ छिप गया है ? सूर्य निकलने वाला है···उसे जल्दी लाओ।"

अभी अँधेरा ही था जो भीड से और गहरा हो गया। मशाल जला दी गई और सराय के दास भय से काँपने लगे। कप्ताह डर के मारे मेरे पलँग के

नीचे छिप गया। परन्तु मैने एक ऊनी चादर ओढकर द्वार खोला और उनके सामने खडे होकर रोब से कहा, "यह तुम लोगो ने क्या गडबडी मचा रखी है? होश मे आओ और मेरे सामने सँभलकर पेश आओ क्योकि मै मिस्री सिन्यूहे हूँ—जगली गधे का बेटा, जिसका नाम तुमने अवश्य ही सुना होगा।"

सुनकर वह हर्षोन्मत्त होकर चिल्लाये, "हमे सिन्यूहे की ही जरूरत थी!" और उन्होने मुझे उठा लिया और मेरी चादर खीच ली। अब मै उनसे घिरा बिलकुल नग्न खडा था। नग्न देखकर वह एक-दूसरे को कोहनी मारकर हँसते हुए कहने लगे, "यह तो सचमुच ही खतरनाक है···हमारी औरतो को इससे खतरा है क्योकि इसके खतने को देखकर वह अवश्य इसे चाहने लगेगी···स्त्रियाँ तो हर नयी वस्तु से आकर्षित हो जाती है।"

बेबीलोन मे खतने की प्रथा नही थी। मुझसे खूब उपहास करने के बाद उन्होने बताया कि वह कप्ताह की तलाश मे थे जिसे सम्राट् ने आज के लिए चुना था। वह वहाँ जाकर सम्राट् बनाया जायेगा। अपना नाम सुनकर कप्ताह पलँग के नीचे ऐसा काँपा कि पलँग भी हिलने लगा और वह शीघ्र पकड लिया गया। उसे बाहर खीचकर लोगो ने उसके सामने सिर झुकाये और उसका जी भरके उपहास किया। कप्ताह ने भय से काँपते हुए मुझ से कहा, "अब मृत्यु आ गई···मै तो गया ही पर मालिक तुम इस बुरे नगर से भाग जाओ···परन्तु इतना अवश्य करते जाना कि मेरी मृत्यु के बाद मुझे दीवार से उतार लाना और मेरे शरीर को मिस्री ढग से स्थायी बना देना। मेरे शरीर को नदी मे मत फेक देना।"

सुनकर सैनिक फिर चिल्लाये और बोले, "मार्डूक की कसम इससे अच्छा बादशाह हमे नही मिल सकता था।"

फिर यह उसे भालो की मूँठो से ठेलते हुए पकडकर ले गये।

मुझे भी बडी चिंता हुई और मै तुरत वस्त्र पहनकर महल की ओर चला। अभी सूर्य उगने मे देर थी पर सारा नगर जैसे उमड पडा था। सभी जगह से लोग मदिरोन्मत्त होकर महल की ओर जा रहे थे···भीड पर भीड़ उमड़ी पड रही थी।

महल के बाहरी प्रागण मे शोर मचा हुआ था, और मुझे विश्वास हो

उसने उत्सुक होते हुए उत्तर दिया, "आज नकली सम्राट् का दिन है"'हर साल ऐसे ही एक सम्राट् एक दिन के लिए चुना जाता है। पर यह अवश्य है कि ऐसा विदूषक अभी तक मैंने नही देखा। इसे मालूम नही है कि अंत मे इसके साथ क्या होने वाला है।"

"क्या होने वाला है?" मैंने पूछा।

"सूर्यास्त होते ही जैसे ही इसके सिर पर राजमुकुट रखा जायेगा यह मार डाला जायेगा। मैं इसे बुरी मौत मार सकता हूँ परन्तु आम तौर पर इन्हे मदिरा मे विष मिलाकर मार दिया जाता है। उसे पीकर यह सो जाते हैं और इन्हे मृत्यु का पता नही चलता।"

और तभी नाक मे रक्त टपकाता हुआ कप्ताह हरम से बाहर निकला। सभी बुरी तरह हँस रहे थे। स्वयं सम्राट् भी हँसी न रोक सका। उस कोलाहल के बीच भी कप्ताह रो-रोकर चिल्लाकर कह रहा था, "कंबख्तों ने मेरा क्या हाल किया है! मुझे बुड्ढी खूँसट हब्शिनें दे रहे थे'''और जब मैंने उस नवविकसित कली को छूना चाहा तो वह शेरनी की तरह मुझ पर झपटी और मेरी नाक पर जूता दे मारा!" फिर मुझे देखकर वह चिल्लाया, "सिन्यूहे! तुम तनिक अंदर जाकर उस शेरनी सुंदरी का सिर खोल दो और उसके अंदर से शैतान उड़ा दो'''निश्चय ही उस पर शैतान सवार है अन्यथा वह भला सम्राट के मुंह पर जूता मारती?"

वर्नेबुरियाश ने मेरे कोहनी मारकर धीरे से कहा, "सिन्यूहे! अंदर जाकर देख आओ क्या माजरा है। निश्चय ही यह कल वाली नयी स्त्री होगी जो शेरनी की भाँति बफरी होगी'''तुम तो वैद्य होने के नाते जा सकते हो'''कंबख्त मुझे शाम तक अंदर नही आने देंगे।" और वह मेरे पीछे पड गया। आखिर मुझे जाना ही पड़ गया।

अंदर जाकर मैंने देखा कि वृद्धा कुरूप हब्शिनें रंग-बिरंगे वस्त्र पहने हुए चिल्ला रही थीं, "हमारा बकरा कहाँ चला गया'''हमारा प्यारा''' उसे बुलाओ'''।"

एक बड़े डील वाली हब्शिन जिसके काले स्तन काले रसोई के पात्रों की भाँति पेट तक लटक रहे थे चिल्लाई, "अरे मेरा प्यारा मुझे दे दो'''मैं उसे अपनी छाती से लगा लूँ'''अरे मेरा हाथी मुझे दे दो जो सूँड मेरे चारों

ओर लपेट ले !"

परतु हिजड़ो ने मुझसे कहा, "इन स्त्रियो पर श्रीमान् ध्यान न दें क्योकि यह नकली सम्राट् का स्वागत करने मदिरा पीकर अपने होश खो बैठी है···वैसे एक लडकी अदर है जो सचमुच ही वीमार लगती है और उसे वैद्य की आवश्यकता है। वह बिजली की भाँति बफर रही है और उसके हाथ मे एक तेज चाकू है।"

अदर मैने देखा कि रग-बिरगे पत्थरो का वना हुआ एक विशाल कुण्ड था जिसमें जल जन्तु बने हुए थे। उनके मुखो से जल निकल रहा था। ऐसे ही एक जंतु के ऊपर चढकर एक युवती बैठी थी और उसके हाथ मे एक बडा-सा तेज छुरा चमचमा रहा था। उसके कपडे सब फट गए थे क्योकि शायद उसे हिजडो ने पकडने का उद्योग किया था और जब वह छुडाकर भागी थी तो वह फट गये थे। चारो ओर बुरी तरह शोर मचा हुआ था। और वह लडकी भी कुछ कहती-सी लग रही थी। मैंने देखा कि वह सचमुच ही सुदरी थी। मैने शोर वद करने के लिए एक-दो वार हाथ उठाया पर जब वह न रुका तो मै गुस्से से हिजडो पर टूट पडा और चिल्लाकर कहा, "निकल जाओ सब यहाँ से···यह क्या कहती है मुझे सुनने दो···और इन फव्वारो को भी वद कर दो ताकि शोर रुक जाए।"

और तब जब पूर्ण निस्तब्धता छा गई तो मैंने सुना कि वह अजीब स्वर मे विचित्र भाषा बोलती हुई गाना गा रही थी।

"वद कर यह गाना जगली बिल्ली! और वाहर निकल आ क्योकि मै देखता हूँ कि तू सचमुच ही वीमार है।"

उसका गाना थम गया और फिर वह मुझसे भी खराब बेबीलौन की भाषा मे बोली, "यहाँ आ बदर कि मै तेरा हृदय इस चाकू से फाड सकूँ··· मैं बेहद भूखी जो हूँ।"

"मै तुम्हे कोई हानि नही पहुँचाना चाहता।"

"ऐसे ही सब पुरुष कहते है और फिर सब झूठ बोलते हैं। मैं यदि पुरुष-सपर्क चाहूँ तो भी नही कर सकती क्योकि मै देवता पर चढाई जा चुकी हूँ···यह चाकू मै इसीलिए रखती हूँ कि यदि कोई आपत्ति न टल सके तो अपने को मार लूँ···और वह काणा जो अभी आया था वह तो कभी

मेरा स्पर्श न कर पाएगा।" और उसने घृणा से थूक दिया।

"मूर्ख स्त्री" मैंने कहा, "मौज उडा और यह चाकू फेंक दे क्योंकि मुझे भय है यह तेरे कही लग न जाय। हिजडो ने तुझे खरीदने में निश्चय ही सम्राट् का काफी सोना खर्च किया होगा।"

"मैं दासी नही हूँ" वह तिनककर बोली, "मुझे यह लोग चुराकर ले आये है···अगर तुम्हारी आँखे होती तो तुम इस सत्य को पहचानते···पर क्या तुम कोई और भाषा नही बोल सकते ?"

"मैं मिस्री हूँ" मैने अपनी भाषा मे उत्तर दिया, "मेरा नाम सिन्यूहे है—वह जो एकाकी है—वह जो जगली गधे का बेटा है—मेरा पेशा वैद्यक है···मुझसे तुम्हे डरने की कोई आवश्यकता नही है।"

सुनकर वह एकदम जल मे कूद पडी और तैरकर मेरे पास आ गई। वह बोली, "तुम मिस्री हो और मुझे यह ज्ञात है कि मिस्री लोग स्त्रियो मे बलात्कार नही करते। अतएव मैं तुम पर विश्वास करती हूँ परतु यह चाकू मे अपनी रक्षा के लिए रखती हूँ क्योकि संभव है कि आज ही मुझे अपने रक्त की नलियाँ काट डालनी पड़े। यदि कोई मेरे शरीर को छूकर मेरे देवता को कलुषित करना चाहेगा तो मुझे ऐसा करना ही होगा। यदि तुम देवताओ मे डरते हो और मेरा भला चाहते तो मुझे यहाँ से छुडा ले चलो ···वैसे मै तुम्हे भी प्रतिफल मे अपना शरीर कभी न दे सकूँगी क्योकि हमारे यहाँ ऐसा करना निषिद्ध है।"

"तुम्हे छुडाने का मेरा कोई विचार नही है" मैने लापरवाही से उत्तर दिया, फिर कुछ रुककर कहा, "सम्राट् मेरा मित्र है और मैं उसे दु:ख पहुँचाना नही चाहता, खासकर जब तुम्हारे पीछे सुवर्ण के पहाड खर्च कर दिये गए है। हाँ, एक बात मैं तुम्हे बतला दूँ···वह यह कि जो मोटी मशक के समान काणा आदमी तुमने देखा था, वह सम्राट् नही है। वह तो नकली बादशाह है जो केवल आज ही रहेगा। कल से असली सम्राट् फिर राज्य करेगा और वह एक सुदर लड़का है। अभी उसके दाढी भी नही उगी है पर वह तुमसे आनन्द प्राप्त करने की सोच भी रहा है। मेरे खयाल से तुम्हारा देवता यहाँ तक तुम्हारी सहायता के लिए नही आ सकेगा और तुम्हे उसके (सम्राट् के) समीप तक जाना ही पड़ेगा। इससे बेहतर यह है कि तुम उठो

और सुन्दर वस्त्र धारण करो, इन बालो की सुन्दर सज्जा करो क्योकि मैं देखता हूँ, तुम अच्छी-खासी खूबसूरत हो।"

सुनकर वह मुस्कराई। उसने अपने गीले केश छूकर गीली उँगली से होठ और भवे पोछी फिर वह बोली, "मेरा नाम मीनिया है। जब तुम मुझे इस बुरे देश से निकालकर मेरे साथ भाग चलोगे, तब मुझे इसी नाम से पुकारा करना।"

सुनते ही मैंने हताश होकर दोनो हाथ उठा दिये और मैं तेज़ कदमो से वहाँ से चल दिया पर न जाने क्यो मेरा हृदय उसकी ओर मुझे खीचने लगा और मैं लौटकर उससे बोला, "मीनिया! मै सम्राट् से तुम्हारे बारे मे बाते करूँगा। इससे अधिक और भला मैं कर भी क्या सकता हूँ। तुम उठो और शृगार करो। अगर तुम चाहो तो मै तुम्हे सभी औषधि दे दूंगा जिससे फिर तुम्हे पता नही चलेगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था, क्या हो रहा है।"

"कुछ भी करो पर मेरी सहायता करो", वह बोली, "और इसी लिए अब तुम्हे मै अपना यह चाकू दिये देती हूँ जिसने मुझे अब तक बचाया है। और एक बार जब इसे मैने तुम्हे दे दिया तो मुझे विश्वास हो जायेगा कि भविष्य मे मेरी रक्षा तुम स्वय करोगे, मुझे धोखा नही दोगे और इस बुरे मुल्क से बाहर ले चलोगे।"

मैने देखा वह अब भी मुस्करा रही थी। वह निश्चय ही मुझ से अधिक चतुर थी।

बाहर मुझे बर्नेबुरियाश मिला। उसने मुझसे उसके बारे मे पूछा। मैने कहा, "तुम्हारे हिजड़े मूर्ख है जो ऐसी लडकी ले आये है जो पुरुष को पास ही नही आने देती। वह पागल लगती है और अपने किसी देवता के लिए पहले से ही सकल्पित हो चुकी है। बेहतर होगा यदि उसे छोड दिया जाय, क्योकि वह बुद्धि से भी ठस मालूम होती है।"

लेकिन सुनकर बुर्नेबुरियाश हँस दिया। उसने कहा, "तुम तो जानते हो कि मेरी अभी दाढी भी नही उगी है। स्त्रियों के आलिगन से मै ऊब उठता हूँ। ऐसी ही स्त्रियाँ मुझे बहुत पसन्द है जो हठ करती हैं क्योकि तब मै उन्हे नगी करवाकर हिजडो से पिटवाता हूँ। डंडा ही इनका सबसे अच्छा

इलाज है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि आज ही रात उसे इतना पिटवाऊँगा कि उसकी पीठ सूज जायेगी और वह चित्त लेट भी नही सकेगी···और तब मुझे बडा आनन्द मिलेगा।"

जव वह चला गया तो मेरे हृदय मे उसके प्रति अव तक का मैत्रीभाव लोप हो गया और फिर मैंने उसका भला कभी नही सोचा। मीनिया का चाकू अभी भी मेरे हाथ मे था।

उसके बाद मेरे लिए वह सारा उत्सव फीका हो गया। हालांकि अभी वेबीलोन के पुजारियो से 'भेड के जिगर देखने की विधि' पूरी तरह से मैं नहीं सीख पाया था और बर्नेबुरियाश से मित्रता होने के कारण मुझे अटूट धन भी मिलने की आशा थी, फिर भी न जाने क्यो मुझे वह सब बुरा लगने लगा। रह-रहकर मीनिया का सुन्दर चेहरा मेरी आँखो के सामने आ जाता और कप्ताह के लिए जो सम्राट् की एक व्यर्थ की सनक के कारण आज शाम मारा जाने वाला था, मुझे बड़ा दु.ख होने लगा—वह मेरा नौकर था तो कम-से-कम बादशाह उसे ऐसी परिस्थिति मे डालने के पूर्व मुझसे पूछ तो लेता।

तीसरे पहर मैं नदी किनारे गया, और मैने एक नाव किराये पर ली और मल्लाहो से कहा :

"वैसे आज नकली सम्राट् दिवस है और मैं जानता हूँ कि तुम मदिरा पीकर आनन्द मना रहे हो; परन्तु यदि तुम मेरा काम करोगे और नाव को मेरे कहे अनुसार ले चलोगे तो मै तुम्हे दूना इनाम दूंगा। मेरा एक धनी चाचा मर गया है और मुझे उसकी लाश को अपने पुराने घर पर जो मितन्नी के किनारो पर स्थित है ले जाना है—देरी हो जाने से उसके लडके व मेरे भाई इत्यादि आकर विरासत का झगडा करने लगेंगे और तब मेरे हाथ कुछ न लग पायेगा—अतएव यदि तुम जल्दी करो तो तुम्हे भरपूर इनाम दिया जायेगा।"

सुनकर वह वडवडाने लगे परन्तु जव मैने उन्हे मदिरा के दो घडे खरीद दिये तो वे एकदम उन पर टूट पडे।

वहाँ मे मैं ीधा बुर्ज पर गया जहाँ मैने एक भेड को काटकर बलि दी।

उसके जिगर को देखकर मै कुछ विशेप अर्थ नही लगा सका क्योकि मै अपने ही विचारो मे इतना अधिक खोया हुआ था कि कुछ पता न लगा सका। फिर मैने वह तमाम रक्त एक चमडे के थैले मे भर लिया और महल की ओर चल दिया। जव मै हरम के द्वार पर पहुँचा तो मेरे मुँह के सामने से एक अबाबील उड गई और इस अच्छे शगुन से मेरा मन हल्का हो गया। हिजडो को हटाकर मीनिया से मै अकेले मे मिला और उसको वह खून भरा थैला और चाकू देकर मैने जो कुछ उसे करना था मब समझा दिया। हिजड़ो से कह दिया गया कि मीनिया को दवा दी गई है उसे कम-से-कम शाम तक कोई न छेड़े जिससे दवा अपना असर कर सके।

तत्पश्चात् मैं उठकर बाहर आ गया। जब सूर्य छिपने लगा तो मैने बर्नेबुरियाश से कहा : "मुझे विश्वास कैसे हो कि कप्ताह की मौत बिना तकलीफ हो जायेगी ?"

वह बोला : "जल्दी करो और स्वय जाकर देख लो क्योकि बूढा वैद्य उसकी मदिरा मे विष मिलाने वाला है। सूर्यास्त हो रहा है और उसका मारा जाना रीति के अनुसार आवश्यक है।"

मैने जाकर देखा कि वृद्ध विष मिलाने की तैयारी कर रहा था। जव मैने उससे कहा कि मुझे सम्राट् ने भेजा था तो उसने मेरा विश्वास कर लिया और कहा : "अब तुम स्वय ही विष मिला दो क्योंकि दिन-भर मदिरा पीने से मेरे हाथ काँप रहे है। तुम्हारा दास क्या है गजब का मूर्ख है—हँसाते-हँसाते उसने मेरा बुरा हाल कर दिया है।" और वह चला गया।

मैने वह विष फेक दिया और मदिरा मे 'पौपी-पुष्प' का रस मिला दिया—अधिक नही कि वह विष का काम करने लगे—बल्कि इतना कि अपना पूरा असर दिखा जाय। फिर उसे लेकर सबके बीच कप्ताह के पास जाकर कहा "कप्ताह, कल तो शायद तुम मुझे पहचानना भी अपनी तौहीन समझोगे क्योकि तुम तो अव सम्राट् हो गए हो। आज मेरे हाथ से मदिरा पी लो जिससे कि जब मैं मिस्र को लौटूं तो यह तो कम-से-कम कह सकूं कि ससार के चारो कोनो का मालिक मेरा मित्र था···उसने मेरे हाथ से मदिरा पी थी।

कप्ताह ने उत्तर दिया : "इस मिस्री की बातें मुझे मक्खियों की भिनभिनाहट जैसी मालूम होती हैं और हालाँकि मैंने आज मदिरा खूब पी है फिर भी आज मैं मदिरा नाम की किसी वस्तु को नहीं ठुकरा सकता, और वह उसे पी गया। तभी सूर्य डूब गया और वह भी गिर पड़ा। गिरते हुए वह बोला : "ओफ़ नींद आ रही है," और उसने मेजपोश खींचकर अपने ऊपर डाल लिया। उसके खिंचने से मेज पर रखी तमाम मदिरा की प्यालियाँ, बड़े-बड़े पात्र, खाने की सामग्री इत्यादि भूमि पर बिखर गईं।

और तभी मशालें जला दी गईं। एकदम मौत का-सा सन्नाटा छा गया। लोगों ने पृथ्वी पर गिरकर बर्नेबुरियाश का अभिवादन किया। कप्ताह के शरीर से राजसी वस्त्र उतारकर जो मदिरा में भीग रहे थे, बर्नेबर्नेबुरियाश को पहनाये गए। सिर पर राजमुकुट रखा गया और हाथों में राजदंड इत्यादि दे दिये गए। जब वह सिंहासन पर बैठ गया तो उसने कहा :

"पूरे दिन कोलाहल होता रहा है और अब हम थक गए हैं—फिर भी हमने इन थोड़े-से लोगों को देख लिया है जिन्होंने आवश्यकता से अधिक उद्दण्डता की है—शायद वह समझते थे कि हम फिर राजदण्ड नहीं संभालेंगे, खैर," फिर उसने अधिकार के स्वर में आज्ञा दी :

"इन सोने वालों को चाबुक लगाकर बाहर निकाल दो···बाहरी प्रांगण में भीड़ पर घोड़े छोड़ दो···भगा दो इन सबको···कुचल डालो ···और इस मूर्ख को यदि यह मर चुका है तो घड़े में बन्द कर दो क्योंकि मैं इससे ऊब गया हूँ।"

कप्ताह पीठ के बल पड़ा था। वैद्य ने उसे देखकर कहा : "यह गोबर की मक्खी की भाँति मर चुका है।"

नौकर तुरन्त मिट्टी का एक बड़ा घड़ा ले आये जिसमें कप्ताह बन्द कर दिया गया और उसके ढक्कन पर मिट्टी लगाकर मुहर लगा दी गई। बेबीलौन में मृतकों को गाड़ने की यही रीति थी। फिर उसे पृथ्वी के अन्दर गाड़ दिया जाता था। सम्राट् ने कहा कि इस घड़े को पहले सालों के नकली सम्राटों के साथ तहखानों में रख दिया जाय। यहाँ मैं बोल उठा : "यदि सम्राट् को आपत्ति न हो तो मैं कुछ निवेदन करूँ," और उसकी आज्ञा पाकर

मैने कहा . "यह मिस्री था और हमारे देश की प्रथा के अनुसार मुझे इसके शरीर को शाश्वत काल तक के लिए मसाले लगाकर रखना होगा कि इसकी आत्मा पश्चिमी देशो की यात्रा आसानी से कर सके···इसमे तीस से सत्तर दिन लग जाते है जैसाकि आदमी का रुतवा होता है। परन्तु यह तो केवल मेरा नौकर था। इसके शरीर को बनाने मे तो तीस ही दिन लगेंगे···यदि सम्राट् आज्ञा दे तो मैं यह कार्य करूँ···ऐसी हालत मे मै तीस दिन तक दरबार में हाजिर नही हो सकूंगा क्योकि उन दिनो मेरे इर्द-गिर्द इसमे से निकली हुई बुरी आत्माएँ भी निश्चय ही रहेगी।"

सम्राट् ने आज्ञा प्रदान कर दी और मैने वह मिट्टी का लम्बा घडा उठवाकर महल से बाहर अपनी पालकी पर रखा दिया। चुपचाप मैने उसमे दो छेद भी वना दिये कि ऊपर हवा जाती रहे।

फिर मै छिपते हुए हरम मे पहुँचा। हिजड़े मुझे देखकर खुश हुए क्योकि वह चाहते थे कि बादशाह के आने के पहले ही मीनिया ठीक हो जाय। मै सीधा मीनिया के कक्ष मे चला गया परन्तु जब मै वहाँ से तुरन्त लौटकर अपने बाल नोचकर रोने लगा तो वह घबरा गए। मैने कहा : "अव क्या करूँ ! तुम लोगो ने बड़ी गफलत की कि उसकी देखभाल नही की। वह देखो उसने चाकू से अपनी हत्या कर ली है और खून से लथपथ होकर पडी है।"

हिजडो ने जो जाकर खून देखा तो भय से काँपने लगे। उन्होने उसे छूने का भी साहस नही किया क्योकि आदतन हिजडे रक्त देखकर भयभीत हो जाते है। मैने कहा·

"तुम लोग और मै अव एक-सी परिस्थिति मे फँस गए है। यदि बादशाह ने अपनी इस चहेती को मरा हुआ देख लिया तो तुम भी मरे और मै भी मरा। जल्दी से एक चटाई मे इसे लपेट दो जिससे मै इसे वाहर ले जाकर फेक आऊँ और जमीन पर से खून जल्दी से धो डालो। अब तो केवल एक ही उपाय है। शीघ्र जाकर एक और सुन्दरी दासी खरीद लाओ जो कोई परदेशी हो और यहाँ की भाषा न वोल सकती हो, न समझ सकती हो और उसे इसके स्थान पर लाकर रख दो। उससे कुछ ऐसी बाते करने को कहो जो वह न कर सके और फिर जब बादशाह आ जाय तो उसे नगी

करके उसके सामने मारो। बादशाह प्रसन्न हो उठेगा।"

हिजडों ने मेरी बातो का तथ्य समझा और मेरी प्रशसा की; परन्तु नयी दासी के मूल्य के लिए वह झगडने लगे क्योकि मीनिया के मरने का आधा दोष मुझ पर भी तो था। आखिरकार आधी कीमत उन्हे देकर मैं उस चटाई मे लिपटी मीनिया को उठाकर बाहर चला आया। अपनी पालकी पर उसे भी रखकर मै नदी तट की ओर चल दिया।

७

नाव बढ़ी चली जा रही थी—वेबीलोन की पहुँच से हम बहुत दूर निकल आये थे। मै तख्तो के नीचे लेटकर सोने का उपक्रम कर रहा था क्योंकि मैं वेहद थक गया था। मीनिया इस बीच चटाई खोलकर निकल आई थी और अपने शरीर पर पडे हुए खून को नदी के जल से धो रही थी। उसकी गोरी पतली-पतली उँगलियो के बीच से टपकता हुआ जल चन्द्रमा के प्रकाश मे मोतियों जैसा लग रहा था। वह मुझे देखकर बडबडा रही थी: "तुम्हारी सलाह से ही मैंने अपने-आपको रक्त मे भिगोकर गन्दा किया था और मैं अपवित्र हो गई—और जब तुम मुझे चटाई मे लपेटकर लाये थे तो आवश्यकता से अधिक तुमने मुझे दवाया था जिससे मेरा दम घुटने लगा था—मै अच्छी तरह साँस भी न ले पाई थी—यह सारा दोष तुम्हारा ही है।"

एक तो मै वेहद थका हुआ था, दूसरे उसकी बाते मुझे बहुत बुरी लगी। मैने काटकर कहा:

"अपनी ज़ुबान बन्द कर बदकार औरत! जो कुछ मैंने तेरी ख़ातिर किया है उस सबको सोचता हूँ तो जी करता है कि तुझे नदी मे फेक दूं जहाँ तू जी भर के नहा सके। अगर तू न होती तो इस वक्त मैं वेबीलोन के सम्राट् के दाहिने तरफ बैठा होता और बुर्ज के तमाम पुजारी बिना कुछ

छिपाये हुए मुझे अपनी विद्या सिखाते और मैं संसार भर का योग्य वैद्य बनकर रहता। तेरे ही पीछे वह तमाम सोना भी मेरा मारा गया जो मुझे मेरे मरीजो से मिलता। अब मेरा धन भी धोखे मे आ गया है क्योकि मदिर के खजाने मे मैं अपनी मिट्टी की तख्तियाँ भय के कारण दिखा नही सकता। इस सब की जड तू है—बुरी थी वह घड़ी जब मैने तुझे देखा और अब हर साल उस दिन मुझे फटे वस्त्र पहनकर सिर पर राख डालकर अनिष्ट टालना पडेगा।"

सुनकर उसका सुन्दर मुख उदास हो गया और वह धीमे स्वर से बोली : "अगर तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो लो मै नदी मे कूदे जाती हूँ—तुम मुक्त हो जाओगे।"

वह उठकर कूदने ही को थी कि मैंने उठकर उसे पकड लिया और कहा : "अब अपनी मूर्खता न दोहराओ—वरना मेरी तमाम मेहनत बेकार चली जाएगी—देवताओ की कसम मुझे सोने दो मीनिया ! क्योकि मै बेहद थक गया हूँ !"

और मैं चटाई ओढकर लेट गया क्योंकि रात ठडी हो गई थी। और थोड़ी देर बाद मीनिया मेरे पास आकर लेट गई। कहने लगी : "मै यदि कुछ और नही कर सकती तो तुम्हे गर्मी तो पहुँचा ही सकती हूँ", वह जवान थी और उसका शरीर मेरे बगल मे अंगीठी-सा दहक रहा था। मै शीघ्र ही सो गया।

जब मै जागा, हम उल्टी धार मे बहुत दूर आ चुके थे और नाव वाले बडबडा रहे थे .

"हमारे कधे लकडी जैसे हो गये है और पीठ दुखने लगी है। क्या तुम हमे मारना चाहते हो ? कहाँ है तुम्हारा घर जो अभी तक नही आया ? क्या उसमे आग लग गई है जो हमे उसे बुझाने जाना पडेगा ?"

मैंने सख्ती से कहा : "जो ढील देगा उसी की पीठ पर मेरा डडा पडेगा ···तुम्हारा पहला पडाव आज दोपहर को होगा और तब मैं तुम्हे उत्तम मदिरा पीने को दूंगा जिसे पीकर तुम चिडियो से चहकने लग जाओगे। परन्तु यदि तुमने गड़बड़ी की तो समझ लो कि मैं तमाम शैतानो को जगा दूंगा जो तुम्हे खा जाएँगे, क्योकि मै पुजारी हूँ और जादूगर भी।"

मैंने यह उन्हें डराने के लिए कहा था परन्तु सूर्य तेज़ी से चमक रहा था और उन्होंने मेरा विश्वास नही किया। वह बोले : "हम दस हैं और यह अकेला है।" और एक ने मुझे मारने के लिए मेरी तरफ़ अपनी पतवार भी चलाई।

और उसी क्षण नौका के मुख की ओर से एक जबर्दस्त आवाज़ आई: कप्ताह मिट्टी के पात्र को अन्दर से बजा रहा था और बुरी तरह चिल्ला रहा था। नाविको के चेहरे सफेद पड़ गये और एक के बाद एक सब जल में कूद पड़े और शीघ्र ही तैरकर नजरों से ओझल हो गए। नाव जब धार के बीच बहने लगी तो मैंने लगर का पत्थर नदी में डाल दिया।

मीनिया बजरे से बाहर आई और सिर के बाल काढने लगी। वह सुन्दरी सूर्य के प्रकाश मे अद्भुत लग रही थी। बाँस के झुरमुटो मे सारस बोल रहे थे।

मैंने दौडकर उस घड़े का ढक्कन खोल दिया और कहा : "खडे हो जाओ।"

कप्ताह ने अपना बिगड़ा हुआ सिर घबराकर बाहर निकाला। मैंने आज तक वैसा डरा हुआ चेहरा कभी नही देखा था। वह कराहा : "यह सब कैसी मूर्खता है? मेरा राजमुकुट और राजदड कहाँ गया? मैं तो नगा हूँ और ठंड से सिकुड़ गया हूँ, मेरा सिर फटा जा रहा है और हाथ-पाँव सब जैसे शीशे के हो गये हैं। सिन्यूहे! मुझे ऐसा उपहास बिल्कुल पसन्द नही है, ध्यान रखो कि सम्राटो से इस प्रकार खेल करने का साहस नही करना चाहिए।"

मैं उसकी नालायकी की सजा उसे देना चाहता था इसलिए मैंने भोले बनते हुए कहा :

"तुम्हारी बाते मेरी समझ मे नही आ रही है—शायद तुम अब भी नशे मे ही हो कप्ताह। बेबीलौन से जब हम चले थे तो तुमने नाव में इतनी ज्यादा गड़बड़ की थी कि आखिरकार तुम्हे मल्लाहो ने पकडकर इस मिट्टी के पात्र मे बन्द कर दिया था। तब भी तुम सम्राटो और न्यायाधीशो की बातें कर रहे थे।"

सुनकर कप्ताह ने जोर से आँखें बन्द कर ली, और पहले दिन की बाते

याद करने की कोशिश करने लगा। फिर बोला, "मालिक ! अब मैं कभी मदिरा नही पिऊँगा। इससे तो मुझे विचित्र स्वप्न आने लगे है। मुझे याद आ रहा है कि मैं जाने कहाँ का सम्राट् बना दिया गया था और तब मैंने सिंहासन पर बैठकर इसाफ़ किया था। और जाने क्या-क्या हुआ था याद नही पड रहा है।"

और तभी उसकी दृष्टि मीनिया पर पड़ गई। झट से वह घडे के अन्दर फिर छिप गया और वहाँ से रोनी आवाज मे बोला, "मालिक ! अभी भी मेरा नशा नही गया है, या फिर मै स्वप्न देख रहा हूँ। क्योकि अभी मैने नाव की दूसरी ओर एक लडकी को देखा है—यह वही है जिसके साथ मैने कल आनन्द भोगे थे···या वैसी ही कोई लडकी मुझे दिख रही है !"

और मीनिया ने जाकर उसके बाल पकडकर उसे उठा लिया और कहा, "मेरे ही साथ तूने कल रात ऐसा किया था न ? बोल ?"

डर के मारे कप्ताह का बुरा हाल था। अपनी एकमात्र आँख बद करके वह धीरे से बोला, "मिस्र के सम्पूर्ण देवताओ ! मुझे क्षमा करो क्योकि मैंने परदेसी देवताओं को भी गलती से बलि दे दी है—लेकिन तुम तो वही हो ! क्योकि वह तो कोरा स्वप्न ही था।";

मैंने उसे बाहर निकाला और उसे एक कडवी औषधि दी कि उसका पेट साफ हो जाए और फिर उसके मना करने पर भी उसकी कमर मे एक रस्सी बाँधकर उसे पानी मे धकेल दिया जिससे उसे दिये गये विष और साथ-ही-साथ मदिरा का असर उतर जाए। फिर उससे कहा, "यही तुम्हारा दड है। जो कुछ तुमने स्वप्न मे देखा था वह सभी सत्य था परन्तु यदि मैं तुम्हारी समय से सहायता न करता तो निश्चय ही तुम अब तक मिट्टी के पात्र मे बंद पहले के नकली सम्राटो के साथ कब्र मे पहुँच गये होते।"

और जब मैंने कप्ताह को वह सारी बाते बतलाई तो वह मुँह फाडे हैरत से सुनता रहा और मुझे उसे कई बार समझाना पडा क्योकि उसकी समझ मे ही नही आ रहा था। सब सुनकर वह बोला, "तब तो मुझे मदिरा छोडने की कसम नही खानी पडेगी क्योकि जो कुछ हुआ वह सब सत्य था—मैने तो उसे स्वप्न समझकर ही मदिरा से भय किया था।" और वह आराम से एक मदिरा के ढक्कन को खोलकर फिर पीने लगा। उसने मिस्र

और तभी मेरे गालों पर तडातड कई जोर के थप्पड उसने दे मारे और वह मुझे गालियां देने लग गयी। मैं उठकर वहां से चला आया।

थोडी देर तक वह एडी से ढोलक-सी बजाती रही फिर क्रोध से फुंफकारते हुए वह उठी और उसने अपने सपूर्ण वस्त्र उतार फेंके और अपने शरीर मे तेल लगाया फिर वह इतनी फुर्ती के साथ जगली नृत्य करने लगी कि मैं फटे नेत्रो से देखता ही रह गया। उसके धमाकों से नाव डगमगाने लगी पर उसे जैसे इसका ध्यान ही नही था। उस लावण्यमयी देह को तथा उस अद्भुत नृत्य को, जिसमे वह अपने अंग-अग को नचा लेती थी और धनुष की तरह लचकीली होकर कभी हाथो पर नृत्य करने लगती तो कभी पैरो पर, देखकर मेरे मन का क्रोध गल गया और मै उत्सुक नेत्रो से उसे देखता रहा।

जब वह पसीने से भीग गयी और थककर चूर हो गयी तो उसने अपने शरीर को वस्त्रों मे ढँक लिया और बैठकर रोने लगी।

मैंने उससे कहा· "मेरे कारण न रोओ मीनिया! मैं तुमसे कुछ भी कभी नही माँगूंगा, तुम निश्चित रहो।"

उसने आँसू पोछकर नेत्र उठाये और कहा, "मैं तो अपने भाग्य पर रोती हूं जिसने मुझे मेरे देवता से इतनी दूर कर दिया है और इतना दुर्बल बना दिया है कि एक मूर्ख के नेत्रो के सम्मुख मेरे पैर डगमगा गये है।" 'मूर्ख' से अर्थ उसका मुझसे था। वह फिर कहने लगी :

"हमारे देश मे हर पूर्णिमा को एक सुन्दर युवती देवता के प्रकोष्ठ में भेज दी जाती है। जो युवती इसके लिए छँटती है वह इसे अपना भाग्य समझती है। हमारा देवता समुद्री देवता बतलाया जाता है और एक अंधकार पूर्ण विशाल घर मे रहता है। कोई भी उसके पास एक बार जाकर फिर वापस नही लौटता। कहते है कि उससे एक बार मिलने के बाद ससार मे उस युवती के लिए कोई प्रलोभन नही बच रहता। कोई कहता है कि उसका सिर बैल जैसा है और कोई उसे बैल के सिर वाला मनुष्य देह वाला अद्भुत प्राणी बतलाता है। मैंने छुटपन से ही देवता की शैया, उसके सहवास और उसके साथ अमरता प्राप्त कर लेने की बातें सोची हैं—हालांकि जब मेरा नाम उसके लिए छांट लिया गया था, उसके एक मास के अदर

ही एक शाम जब हमारी नाव नदी मे भटक गयी थी तो मुझे सौदागरो ने उडाकर सुदूर बेबीलौन मे जाकर बेच डाला था, परन्तु फिर भी मैं देवता की परिणीता तो हूँ ही। वैसे मै उस बधन से अब मुक्त हूँ परन्तु हृदय मेरा देवता मे ही लग चुका है। अब मैं केवल उसी की हो सकती हूँ अन्य किसी की नही। देवता के सम्मुख हमे वहाँ नृत्य करना होता है और इसीलिए छुटपन से ही हमे बैलो के पैने सीगो के सामने उनके वार से बचकर नृत्य करना सिखाया जाता है। यही है मेरी कहानी सिन्यूहे ! और इसीलिए मै चाहकर भी तुम्हे···"

"तुम्हारे बैलो का नाम सुनकर मै अब समझ गया हूँ कि तुम्हारा देश क्रीट है।" मैने कहा, "स्मर्ना मे मैंने सुना था उस स्थान के बारे मे। वहाँ लोगो ने यह भी कहा था कि देवता के उस घर के अदर ले जाकर पुजारी लोग युवतियो की हत्या कर देते है जिससे वह कभी लौटकर आ ही न सके—पर तुम निश्चय ही अधिक जानती होगी क्योकि तुम क्रीट की ही हो।"

कोई और होता तो शायद उससे बलात्कार कर देता। परन्तु मैंने उसे छोड दिया। क्यो ? क्योकि यह मै समझ गया था कि वह अपने देवता से विमुख होकर कभी सुख न पा सकेगी। देवताओ का असर ही होता है उन पर जो उन्हे मानते है, उन पर विश्वास करते है।

शाम होते-होते कप्ताह नीद से जाग उठा और आँखे मलता हुआ जमुहाइयाँ लेता हुआ कहने लगा।

"देवता की कसम—हाँ भूल गया—अम्मन की भी कसम ! अब तो मै बिल्कुल ठीक हूँ। पर भूख से बुरा हाल है !"

और बिना पूछे ही वह हमारे खाने पर आ डटा। मैंने उसे देखते ही कहा :

"मूर्ख ! यहाँ तो हालत बुरी हो रही है और तू बार-बार मदिरा पीकर सो जाता है। जानता है कि सम्राट् के सैनिक ढूँढकर इधर आ निकले तो तीनो ही उलटे लटके नजर आएँगे ?"

कप्ताह ने सिर खुजाया और फिर कुछ सोचकर कहा, "नाव तो यह

हम तीनो से खेई नही जा सकती क्योकि यह बटी बहुत है और फिर नाव खेने का काम मुझे पसद नही है क्योकि इससे हाथ मे छाले पड जाते हैं। परन्तु यहाँ रुकना भी खतरे मे खाली नही है। इसलिए हमे यहाँ से तुरन्त किनारे उतरकर चल देना चाहिए, वैसे भी नाव वाले जो गरीब हैं, नाव छोडकर तो जाएँगे नही बल्कि यही कही आस-पास छिपे हुए होंगे और शायद वह दम मिलकर हमारी हत्या ही कर दे क्योकि बहुत देर तो वह डरकर बैठे नही रहेगे। फिर बादशाह के सैनिको का भी भय है। अतएव हमे मैले कपड़े पहनकर कम-से-कम सामान लेकर यहाँ से चल देना चाहिए जिससे आगे चलकर हमारे मैले वस्त्रो को देखकर किसी को शक न हो।"

उसकी बातो मे तथ्य था। हम लोग तुरन्त कपड़ो को कीचड़ से मैला करके चल दिये। अंग पर भी हमने धूल लगा ली। मैं अपनी औषधियों के बक्स को छोडना नही चाहता था इसलिए मैंने उसे कप्ताह की पीठ पर झोला बाँधकर लटका दिया हालाँकि वह बुरी तरह विरोध कर रहा था। उसने कहा :

"परन्तु रास्ते मे इन्हे खोलकर न बैठ जाना और यह मत कह बैठना कि तुम वैद्य हो। तुमने तेल को जल मे मिलाकर और भेड का जिगर देखकर भाग्य बताना तो सीख ही लिया है। सो तुम तो जादूगर बन जाओ। मैं विचित्र कथाएँ लोगो को सुनाऊँगा और यह लडकी नाचकर अपना पेट भर लेगी। इस तरह हमारी जादूगरो की इस टोली पर न कोई शक करेगा न हमे कोई टोकेगा।"

फिर जितना सोना-चाँदी हमारे पास बचा था उसे हम तीनो ने अपनी कमर मे बाँध लिया और चल पडे। चलते समय दो पात्र भरकर मदिरा नाव मे छोड आये। कप्ताह ने कहा, "नाविक आते ही मदिरा देखकर पहले इसे पीएँगे और इस बीच हमे दूर निकल जाने का मौका मिल जायेगा। यदि उसके बाद उन्होने अधिकारियो से जाकर शिकायत की तो भी उनकी उस नशे की हालत मे उनकी बातों का कोई विश्वास नही करेगा—उल्टे उनकी पीठ पर डडे और पडेगे।"

और हम बेबीलोन के गांवो मे होकर पद-यात्रा करने लगे। हम इतने गदे और गरीब लगते थे कि कोई हमारी ओर ध्यान ही नही देता था। धूप

से हमारी खालें जल गयी थी और मै लोगो को ज्योतिष से उनके भविष्य बताया करता। मार्ग मे यदि कोई सभ्रात व्यक्ति पालकी पर जाता होता तो हम रास्ता चलते उसे सिर झुका देते। कप्ताह गजब का झूठ बोलता। उसने शहजादियो की जादू की अनेकानेक कथाएँ लोगो को गढ-गढकर सुनायी। उसने कई स्थानो पर कहा कि 'अमुक' देश मे लोग ऐसे होते थे जो साल मे एक बार भेडिये बन जाया करते और जब सोचते-सोचते थक जाते तो अपने सिर को कधे से उतारकर काँख मे दबा लेते थे। लोग उसका विश्वास कर लेते और उसे खूब अच्छा खाना खिलाते थे। मीनिया अपने देवता के सामने नृत्य करने के लिए नित्य नृत्य करके अपनी आदत बनाये रखती और उसे देखकर लोग उसकी भूरि-भूरि प्रशसा करते और कहते, "ऐसा नृत्य कभी न देखा, न सुना।"

इस यात्रा से मैंने यह सीखा कि हर देश मे भाषाएँ, देवताओ के नाम और रीति-रिवाज अवश्य भिन्न होते है परन्तु सभी जगहो मे धनवान और गरीबो का रहन-सहन, सोचने की शक्ति और अधिकारो के पीछे झगडे एक-से ही होते है। गरीब हर जगह एक-से ही होते है—उनका दु:ख सभी स्थानो मे अवर्णनीय होता है। मेरा हृदय उनके दु ख को देखकर पिघल गया और गाँवो मे उस भेष बदले हुए काल मे भी मै उनका इलाज किये बिना न रह सका। कइयों के फोडे मैंने काटे और बहुत-सो की आँखे साफ की।

और इसी तरह हम मितन्नी देश की सीमा पर पहुँच गये। वहाँ चरवाहो ने हमे गरीब जानकर मार्ग दिखाया और सीमा के सैनिको ने भी हम से कोई प्रवेश-शुल्क वसूल नही किया।

नाहरानी नगर मे पहुँचकर हमने अच्छे वस्त्र खरीदे और फिर वहाँ की सबसे अच्छी सराय मे ठहरे। और क्योंकि मेरा धन समाप्त हो चला था, मैंने यहाँ अपना पेशा शुरू कर दिया। मितन्नी देश के लोग भी नई औषधियो से आकर्षित होकर मेरे पास आने लगे और मेरे पास फिर सोना बरसने लगा। मीनिया की सुन्दरता से आकर्षित होकर लोगो ने उसे मोल लेना चाहा। और कप्ताह फिर आराम करके मोटा होने लग गया।

दिन गुजरने लगे और मेरा धन बढने लगा। मीनिया नित्य रात्रि के

समय रोती और मुझे घृणा करती। मैं जानता था कि वह मुझसे क्या चाहती थी। परंतु मैं उससे बिछुड़ना नहीं चाहता था। अंत में मैंने एक दिन हाती देश जाना निश्चित किया। वहाँ हितैती लोग रहते थे जिनके बारे में मैंने बहुत कुछ सुन रखा था। मैंने मीनिया से कहा।

"हाती देश से क्रीट सीधे जहाज जाते हैं यहां से नहीं; अतएव पहले वहीं जाना ठीक रहेगा।" परंतु मैं जानता था कि मैं उसे धोखा दे रहा था। पर उससे बिछुड़ना भी तो मैं नहीं चाहता था। करता भी क्या, खासकर जब वह अपने देवता से मिलने को इतनी इच्छुक थी। मैं यह तो जानता ही था कि एक बार क्रीट पहुँचने पर तो यह मुझसे सदा के लिए बिछुड़ जायेगी।

एक कारवाँ के साथ हाती देश जिसे चेटा भी कहते थे, मैंने जाना निश्चय किया। कप्ताह ने जब यह सुना तो वह चिल्लाने लगा और उसने मिस्र के तमाम देवताओं की दुहाई दे डाली। फिर अपने छोटे से देवता का नाम लेकर वह यात्रा की तैयारी में लग गया। उसे मुझे विश्वास दिलाना पड़ा था कि यात्रा समुद्र के रास्ते नहीं करनी थी क्योंकि वह जल के मार्ग से अत्यन्त ही भय करता था।

कारवाँ के साथ मितन्नी यात्रा में कोई विशेषता नहीं घटी। हितैती लोगों ने हमें रास्ते में खाने-पीने की कमी नहीं होने दी दी। वह लोग बहुत कड़े होते हैं। उन्हें सर्दी-गर्मी तो जैसे सताती ही नहीं है। उन्हें छुटपने से ही कठोर जीवन व्यतीत करना सिखाया जाता है। युद्ध उन्हें अत्यन्त प्रिय होता है। कमजोर मुल्कों से वह घृणा करते हैं और उन्हें दबा लेते हैं और पराक्रमी लोगों से मित्रता बनाये रखते हैं।

उनका राष्ट्र कई छोटे-छोटे गाँवों, कबीलों और नगरों में बँटा हुआ है। हर एक में एक-एक राजा होता है और वह सब हाती देश के सम्राट् को ही अपना मालिक मानकर चलते हैं जोकि अपने पर्वतीय नगर हत्तूशाश में रहता है। वही उन सबका सबसे बड़ा पुजारी सेनापति और उच्चतम न्यायाधीश है। संसार पर राज्य करने के दोनों अधिकार—सांसारिक और धार्मिक—उसको प्राप्त हैं। ऐसा पूर्ण अधिकार मैंने कहीं न देखा न सुना।

सभी जगह और खासकर मिस्र मे तो धार्मिक वर्ग का सम्राट् के ऊपर भी आतक छाया रहता है।

जब लोग संसार के बडे नगरो का उल्लेख करते है तो या तो थीबीज़ या बेबीलोन और कभी-कभी निनवेह (जो मैंने नही देखा है) का ही नाम लेते हैं। कोई हित्तितियो के इस महानगर हत्तूशाश का नाम नही लेता हालांकि पर्वत पर बसा हुआ यह नगर अत्यन्त शोभनीय और महान् है जहाँ पत्थर मे तराशी हुई ऊँची-ऊँची इमारतें हैं और जहां का परकोटा अभेद्य है। इसका कारण मैंने यहाँ आकर यह जाना कि वहाँ के सम्राट् ने अपने देश को परदेसियो के लिए बिल्कुल वद कर रखा है। देश के केवल वही राजदूत सम्राट् के सामने पहुँचकर उपहार भेंट कर सकते हैं जिन्हे पूर्व आज्ञा प्राप्त हो जाती है। अन्यथा बहुतो को तो अपने उपहार महल के बाहरी कक्ष मे रखकर चला जाना पड़ता है। जो भी परदेशी यहाँ आता है उस पर राज्य की ओर से कडी निगाह रखी जाती है। उसके पीछे सदा जासूस लगे फिरते हैं जो उनकी गतिविधि को देखा करते हैं। वैसे यहाँ के लोग मैले होते हैं लेकिन बाहर के लोगो के साथ स्नेह से बातें करते हैं। यदि वह रग-बिरगे भडकीले वस्त्र पहने होते हैं तो इन्हे वह बहुत ही अच्छे लगते है और वह बाज़ार मे उनके पीछे-पीछे बडी दूर तक चले जाते हैं। पर राज्य-भय से वह उनसे अधिक बोलते नही हैं। यदि उनसे कुछ पूछे भी तो उत्तर देते हैं 'मुझे मालूम नही' या 'मैं समझा नही'।

इस देश मे सभ्य देशो की भाँति सैनिक नौकर नही रखे जाते। यहाँ हर नागरिक सैनिक होता है। उनका दर्जा उनके जन्म से नही माना जाता बल्कि इससे जाना जाता है कि उसकी कितनी हैसियत है। यदि किसी के पास रथ होता है तो वह ऊँचे दर्जे का सैनिक माना जाता है। अन्य बडे नगरो की भाँति हत्तूशाश व्यापारिक केंद्र नही है। यहाँ तो जैसे घर-घर लोहसारी खुली हुई है और दनादन अस्त्र-शस्त्र बनाये जाते हैं।

जब मैं वहाँ पहुँचा, उन दिनो वहाँ महान् मुर्श्लिलुल्एमा अट्ठाईस वर्ष तक राज्य कर चुका था। उसका नाम ही लोगो के लिए आतक का विषय था। लोग उसे केवल सुनकर ही सिर झुका लेते और दोनो हाथ उठाकर उसकी स्तुति करने लग जाते। वह नगर के बीच एक पत्थर के बने हुए

विशाल महल मे रहता था और उसके बारे में अनेक कथाएं प्रचलित थीं जैसे हर देश मे हर सम्राट् के बारे में होती हैं, खास कर तब जबकि वह ज़बर्दस्त हो। मैं उसे कभी नही देख पाया।

हत्तूशाश मे लोग अपनी बीमारी छिपाकर मर जाना ज्यादा पसंद करते हैं बजाय इसके कि उनका इलाज कराया जाय। यहां रोगी होना जैसे अपमान का विषय माना जाता है। दुर्बल बच्चों और रोगी दासो को तो यह बिना हिचके मार डालते हैं, इसीलिए वहाँ के वैद्य प्रायः गँवार ही होते है क्योंकि उन्हे रोग का ज्ञान ही नहीं होने पाता। फिर भी उनके पास शरीर की गर्मी शमन करने की विचित्र और आश्चर्यजनक औषधियां होती है जिन्हें सीखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हितैतियों को वैसे मृत्यु से भय नहीं होता।

फिर भी सभी महानगर के रहने वालो की आदत एक-सी नही होती है। जब मेरे ज्ञान और विलक्षण इलाज की ख्याति फैली तो लोग मेरे पास शाम के बाद छिप-छिपकर आने लगे। वह मुझे उनके रोगों को छिपाकर रखने के लिए अलग उपहार देते थे क्योंकि यदि उनका रोगी होना अन्य कोई जान लेता तो वह समाज में लोगों की निगाहों में गिर जाते। हत्तूशाश में जहां मुझे भय था कि भूखो मरने की हालत न पहुँच जाये, मैंने काफ़ी धन कमाया। मीनिया मेरे रोगियों के सामने अपना अद्भुत नृत्य करती और लोग उसे बहुमूल्य उपहार देते। वह इससे अधिक उससे और कुछ न चाहते क्योंकि एक तो वह कभी किसी स्त्री से बलात्कार नही करते, दूसरे वह उदार हृदय भी होते हैं और प्रसन्न होकर मुक्त हस्त से उपहार और धन लुटाते हैं -

एक दिन मेरे पास सम्राट् का एक उच्चपदाधिकारी आया जो उसके पुस्तकालय का निरीक्षण करता था। वह कई भाषाएं लिख और बोल सकता था और राज्य के तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्र-व्यवहार किया करता था। मैंने उसका इलाज किया और मीनिया ने उसे नृत्य से लुभाया। थोड़े ही दिनों में मैंने उसे विश्वास दिला दिया कि मैं मिस्र से निकाला हुआ व्यक्ति था जो वहां कभी वापस नही जा सकता था। और यह कि मैं वैद्य होने के नाते केवल धन कमाने और ज्ञान प्राप्ति के लिए ही उत्सुक था इसीलिए

देशाटन किया करता था। बातो-ही-बातो मे मैंने उससे पूछा, "हत्तूशाश परदेशियो के लिए बद क्यो कर रखा गया है ?" जबकि वह मीनिया के नगे कधो की सुन्दरता देख-देखकर ललचा रहा था। उसने मदिरा का घूँट लिया और मेरी ओर देखा। मैंने फिर अपना प्रश्न दोहराया और कहा, "...और खासकर जब यह इतना बडा और महान् नगर है— क्यो नही यहाँ भी परदेशियो को आने दिया जाता ताकि अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान फैल सके ?"

उसने उत्तर मे कहा, "हमारा महान् सम्राट् सुब्बिलुल्लियुमा जब सिहासनारूढ हुआ था तो उसने कहा था, "तीस साल मे मैं हाती देश को ससार का सबसे बडा देश बना दूँगा और अब वह तीस साल पूरे होने वाले है। और तब मेरा विचार है कि ससार यहाँ के बारे मे इतनी अधिक जानकारी प्राप्त कर लेगा कि..."

'लेकिन' मैंने कहा, "बेबीलोन मे तो मैंने साठ के साठ गुने और फिर साठ गुने, इतने सैनिक बादशाह के सामने कवायद करते देखे थे जिनके पैरो की आवाज ऐसी थी जैसे कोई समुद्र गरज रहा हो। और यहाँ तो दस आदमी भी इकट्ठे चलते मैंने नही देखे है। मेरी समझ मे नही आता कि इस पर्वतीय प्रदेश मे तुम लोग इन रथो का क्या करते हो जब इन्हे चला नही सकते ? यह तो मैदानी इलाकों के लिए होते है। यहाँ विचित्र बात यह है कि घर-घर लोहसारी है।"

वह सुनकर हँसा, फिर बोला

"मिस्री सिन्यूहे! वैद्य होकर तुम्हारी यह चिता व्यर्थ नही कही जा सकती क्या ? शायद हम रथ बेचकर ही अपना निर्वाह करते हों, तो ?" और उसने अपने नेत्र अधमुँदे करके मेरी ओर गौर से देखा।

"यह विश्वसनीय बात नही हो सकती", मैंने कहा, "क्योकि भेडिये अपनी दाढे औरो को उधार नही देते।"

मेरी निर्भीकता पर वह मुग्ध हो गया। शायद उसे अब बिल्कुल ही शक नही रह गया था। वह बडी जोर से हँसने लगा और उसने अपने घुटने खूब ठोके। फिर कहा

"हितैतियो का न्याय मैदानो से भिन्न होता है। शायद तुम्हे और तुम्हारे देश वालो को हितैतियो का न्याय देखने के लिए अब बहुत प्रतीक्षा

नही करनी पड़ेगी सिन्यूहे ! तुम्हारे देशों मे अभी लोग गरीबों पर राज्य करते हैं। परंतु हाती देश मे ऐसा नही होता। यहाँ तो बलवान दुर्बल पर राज्य करते हैं।"

"परन्तु हमारे नये फराओ का तो एक नया देवता प्रगटा है जो युद्ध नही चाहता !" मैंने जोड़ा तो वह कहने लगा :

"वह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं ही तो सम्राट् के तमाम पत्र पढ़ता हूँ। उसका यह देवता शांति का पाठ सबको सिखाता है और युद्ध तथा रक्तपात नही चाहता। हमे उससे कोई आपत्ति नही है बल्कि हम तो उसे चाहते है जब तक कि वह मिस्र में तथा मैदानो मे बना रहे। तुम्हारे फ़राओ ने हमारे महान सम्राट् के पास एक मिस्री सलीब जैसा पदक भेजा है जिसे वह जीवन का चिह्न कहता है। और हमारा शासक भी कुछ वर्षों तक निश्चय ही शांति रखेगा और विशेष रूप से तब तक जब तक कि फराओं उसे सोना भेजता रहेगा जिससे कि और ताँबा, लोहा और अनाज खरीदा जा सकेगा और लोहसारियाँ व कारखाने खुल सकेंगे और अधिकाधिक रथ बनाये जा सकेंगे। इन सबके लिए धन बहुत जरूरी है और हमारे सम्राट् ने यहाँ हत्तूशाश मे संसार भर के सर्वोत्तम कवच और शिरस्त्राण बनाने वाले एकत्रित कर लिये हैं जिन्हे वह मुक्त हस्त से उपहार देता है। लेकिन वह ऐसा क्यो करता है यह मुझे नहीं मालूम।"

"तुम्हारी भविष्यवाणी से कौए और गीदड़ भले ही खुश हों पर मुझे तो यह विषय सुनने मे भी बुरा लगता है", मैंने कहा, "मितन्नी मे तुम लोगो के जुल्मों की भयानक बातें कही जाती हैं, आखिर सभ्य होकर ऐसी बातें तुम लोग करते क्यो हो ?"

"सभ्यता ?" उसने पुनः मदिरा ढालकर कहा, "यह क्या होती है ?" वह मदिरा पीने लगा। थोड़ी देर बाद फिर बोला, "यदि इससे आशय लिखने-पढ़ने का है तो हम भी कई भाषाएँ लिख-पढ़ सकते हैं और मिट्टी की तख्तियो को किताबखानो मे जमा कर लेते हैं। हमारा तो उद्देश्य यह है कि हमारा आतक चारों ओर फैल जाये, कि जब हम उठें तो लड़े बिना ही दूसरे हमारे सामने भय से हथियार डाल दें। क्योंकि हम भी बरबादी नही चाहते। हम नही चाहते कि मारकाट, तोड़फोड़ के बाद किसी जगह को दबाये। तुमने तो

सुना होगा कि डरपोक दुश्मन को आधा हारा हुआ समझना चाहिए ?"

"इसका मतलब है कि सभी तुम्हारे शत्रु है।" मैंने कहा, "तुम्हारा कोई मित्र नही है ?"

"हमारे शत्रु वह जो हमारे सामने आये और मित्र वह जो हमारे सामने सिर झुकायें और हमे नजर दें," वह आराम से हथेली फैलाकर बोला।

"परन्तु क्या तुम्हारा कोई देवता ऐसा नही है जो तुम्हारे इन कुकर्मो को रोके ?" मैंने उसकी अवहेलना करते हुए कहा, "जो क्या सही है क्या गलत है तुम्हे बताये ?"

"यह जानना तो बहुत ही सरल है", उसने कहा, "सही वह जो हम चाहते है और गलत वह जो हमारे पडोसी या अन्य कोई चाहते हो। इस सिद्धात से जीवन और राजनीति दोनो ही सरल हो जाती हैं। वैसे मैं जानता हूँ कि हमारा सिद्धात मैंदानो के सिद्धातो से तनिक भिन्न है। वहाँ देवता लोग उसे सही समझते है जो अमीर चाहते है और उसे गलत समझते है जिसे ग़रीब पसद करते है।"

"इन देवताओ के बारे मे जितना अधिक ज्ञान मै एकत्रित करता हूँ उतना ही उदास हो उठता हूँ।" मैंने घृणापूर्वक कहा।

उसी शाम मैने मीनिया से कहा, "हाती देश मे मैं जो कुछ जानना चाहता था वह मैने जान लिया है, अब हम क्रीट चल सकते है। मुझे यहाँ लाशो की बदबू आने लग गई है और मेरा दम-सा घुटने लगा है।"

तत्पश्चात् कुछ उच्च अधिकारियो के द्वारा जो मेरे मरीज थे, मैंने आम रास्ते से समुद्र तट पर पहुँचने के लिए आज्ञा प्राप्त कर ली। हालाँकि लोगो ने मुझसे बहुत कहा कि मैं न जाऊँ परतु मैंने जाना ही जब निश्चय कर लिया था तो फिर उन्होंने मुझे अधिक नही दबाया। हत्तूशाश की भयानक दीवारों को छोडकर हम गधो पर चढकर निकल आये। मार्ग के दोनो ओर जादूगरो की लाशें पडी थी और गुलाम, जिनकी आँखे निकाल ली गई थी, भारी-भारी चक्की के पाट चला रहे थे। पूरे बीस दिन बाद हम समुद्र तट पर आ पहुँचे।

"तुम तो जानती हो मीनिया ।" मैंने उत्तर दिया ।

और उसने दीर्घश्वास छोड़कर अपनी उँगलियाँ मेरे हाथो मे दे दी फिर कहा : "हम साथ काफी आगे बढ गये है सिन्यूहे ! मैंने इतने सारे देश और इतने सारे लोग देख लिये है कि अब मेरी मातृभूमि मेरे लिए कोई विशेष महत्त्व नही रखती और अब मै अपने देवता के लिए उतनी उत्सुक नही रहती । तुम तो जानते हो कि मैंने जान-बूझकर इस यात्रा को काफी टाला है कि टल जाय तो शायद टल ही जाय । पर हाल ही मे जब मैं फिर सॉडो के सामने नाची हूँ तो मेरे मन मे यह बात जम गई है कि यदि तुम्हे मैंने आत्मसमर्पण कर दिया तो मेरी मृत्यु निश्चित हो जाएगी ।"

"यह तो ठीक है, ठीक है" मैंने ऊबते हुए उत्तर दिया, "वह सब तो पुरानी बाते हैं, उन्हे दोहराने से भला प्रयोजन भी क्या है ? मैं तुम्हे पाना भी तो नही चाहता कि तुम्हारा देवता तुमसे हाथ धो बैठे । और फिर जो कुछ तुम्हारे पास से मिल सकता है, कप्ताह के कहे अनुसार, किसी भी दासी युवती से मिल सकता है—वह तो सभी एक ही बात है ।"

और तब वह फुंफकार उठी । उसके नेत्र गहरे हरे हो गये । उसे यह बिल्कुल स्वीकार नही था कि मैं किसी अन्य स्त्री की ओर आँख उठाकर भी देखूं ।

उसके प्रेम का यह अनूठा व्यवहार था कि न तो स्वयं ही समर्पण करती थी न किसी और से सम्बन्ध रखने देती थी । परन्तु मुझे उस विचित्र परिस्थिति मे भी आनन्द का अनुभव हुआ । आखिर ससार की विचित्र-ताएँ ही तो मन को आकर्षित करती है ।

और हम तीनों क्रीट की ओर चल दिए । जहाज के लगर उठा दिये गए—सामने अनन्त समुद्र उमड रहा था ।

दिन और रात बीतते गये और हमारा जहाज हिलता हिचकोले लेता अनंत समुद्र मे चला जा रहा था, परन्तु मेरी मीनिया मेरे साथ थी और मुझे कोई चिन्ता नही थी ।

कप्ताह मल्लाहो से देश-देश की चर्चाओ की डीगें हाँकता । उसने उनसे कहा कि मिस्र से स्मर्ना आते समय समुद्र मे जब तूफान ने मस्तूल से

पाल को उड़ा दिया था तो केवल वह और जहाज़ का कप्तान ही वेफिक्र वने रहे थे वाकी सव लोग भय से रो-रोकर भूखे-प्यासे जान दे रहे थे। उसने यह भी कहा कि नील जहाँ समुद्र मे मिलती है उस स्थान पर ऐसे-ऐसे समुद्री जतु पाये जाते हैं जो नाव सहित लोगो को खा जाते थे। परन्तु मल्लाह भी पूरे शेखीखोर थे। उन्होने उससे भी तगडी गप्पे सुनाईं जिन्हे सुनकर भय से उसके रोंगटे खड़े हो गये और वह भागा-भागा मेरे पास आया कि मैं उसे दिलासा दूं। वह वोले : "समुद्र के दूसरे छोर पर अगणित खभे खड़े हैं जिन पर आकाश टिका हुआ है। सुदूर समुद्र मे मछलियो की मूँछो और पखो वाली सुन्दर नारियाँ रहती है जो जहाज़ी लोगो की प्रतीक्षा मे रहा करती हैं। जैसे ही कोई उनके पास गया और उन्होने उस पर जादू फेरा।"

जहाज़ के लोगो को जव मीनिया के वारे मे पता चला कि वह देव-निर्माल्य थी तो वह उसकी हृदय से श्रद्धा करने लगे। परन्तु उनसे जव मैंने उनके देवता के वारे मे पूछा था तो बोले : "हम तुम्हारा आशय नही समझे परदेशी," या "हमे नही मालूम," इसके अतिरिक्त तीसरा उत्तर मुझे उनसे नहीं मिला।

और आखिर हम क्रीट आ ही पहुंचे। मीनिया अपने देश की पहाड़ियो को देखकर रो दी। मेरा हृदय वैठने लगा क्योकि अव समय पास आ रहा था जब वह मुझसे निश्चित रूप से विछुड़ जाने वाली थी। क्रीट के वन्दर-गाह मे करीव एक हज़ार पोत खडे थे। कप्ताह ने उन्हे देखकर आश्चर्य से कहा कि यदि वह उन्हे स्वयं न देखता तो कभी विश्वास नही करता कि संसार-भर मे कुल मिलाकर भी इतने जहाज हो सकते थे।

नगर वन्दरगाह से मिला हुआ था। न वुर्जे थी, न नगर कोट और न किले न मोर्चे। क्रीट के समुद्र की धाक ऐसी ज़वर्दस्त है—उसके समुद्री देवता की धाक खासकर!

सारे ससार मे जहाँ-जहाँ भी मै गया, मैंने क्रीट का-सा सौंदर्य कही नही देखा। जिस प्रकार चमकती हुई भाप किनारे की ओर उडा दी जाती है, जिस प्रकार इन्द्रधनुष के पाँचो रगो से जल का वुलवुला दमकने लगता है और जिस प्रकार सीप के सम्पर्क से घोघे भी चमक उठते हैं—ठीक वैसे ही

इनके पास ऐसे-ऐसे वाद्य है जो बजाने वाले के विना के भी बजते है और इन्होने तो वल्कि सगीत के रागो की भी पुस्तके वना ली है।

और एक बात जो सभी जगह सुनी थी वास्तव मे विल्कुल सही है—और वह है यह कहावत—कि यह तो क्रीटन की भाँति झूठ बोलता है, शायद ही मैने क्रीट का-सा झूठ कही और सुना हो।

वहाँ कोई मदिर दिखाई नही देता—लोग अपने बैलो को चराने और उनके सामने युवको और युवतियो के नृत्य देखने नित्य ही जाते है—इसमे वह कभी नही चूकते। बैलो पर यह शर्त लगाकर दाँव लगाया करते है और इस प्रकार जुए मे लाखो का वारा-न्यारा इनमे होता है।

उनके यहाँ राजा की भी कोई विशेष कद्र नही की जाती और उससे लोग चाहे जब जाकर मिल सकते है। यह आवश्यक नही होता कि वह अपनी फुरसत से उनसे मिले वल्कि लोग अपनी फुरसत से जाकर उससे मिल आते है। अतर केवल इतना है कि वह एक बहुत ही विस्तृत महल मे रहता है। वैसे उससे वह उपहास इत्यादि भी वरावरी मे कर लेते हैं।

मदिरा वह लोग कभी इतनी नही पीते कि वेहोश हो जाएँ या उल्टी करने लगे।

स्त्रियो पर—विशेषकर विवाहित स्त्रियो पर कोई प्रतिबध नही होता वह चाहे जिस पर-पुरुष की शय्यागामिनी हो सकती है और इसी भाँति पुरुष भी। स्त्रियाँ अपने स्तनो को वस्त्रो से नही ढँकती।

परन्तु जो देव निर्माल्य युवक अथवा युवतियाँ होती है वह सभोग से वचित रहती है। ऐसो की वडी इज्जत होती है।

यहाँ की जिस परदेशियो की सराय मे हम वन्दरगाह पर उतरकर ठहरे, वह इतनी अच्छी और आरामदेह थी कि वेवीलौन का 'इश्तर का आनन्द भवन' उसके सामने तुच्छ लगने लगा।

मीनिया नहा-धोकर अपने कक्ष से जव शृ गार करके निकली तो मै उसके सौन्दर्य और वस्त्रो को देखता ही रह गया।

उसके सिर पर एक छोटी-सी टोपी लगी थी जो दीप जैसी लगती थी। पैरो मे ऊँची एडी के काठ के जूते थे जिनसे चलने मे निश्चय ही उसे कष्ट होता होगा। मैने उसे रंग-विरगे पत्थरो से बना हुआ एक हार दिया जिसे

मुझे एक व्यापारी ने यह कहकर दिया था कि यह उस दिन का अत्यन्त प्रचलित हार था हालाँकि अगले दिन के बारे मे वह कुछ नही कह सकता था। मीनिया के वस्त्रो मे से उसके नग्न-स्तन बाहर तने हुए निकल रहे थे जिनकी चोंचो को उसने लाल रँग रखा था। उसने मुझसे आँखें नही मिलाईं पर हठ करती हुई बोली : "मैं कोई अपने स्तनो के प्रदर्शन से डरती थोड़े ही हूँ? लोग देखे तो सही कि क्रीट की अन्य स्त्रियो से यह किसी भाँति कम नही है।" और वास्तव मे वह उन्नत स्तन यौवन की सीमा को मानो फाड़े दे रहे थे।

क्रीट का नगर ससार के अन्य नगरो से कितना भिन्न था! यहाँ न शोर था न भीड। मकान हवादार, प्रकाश से पूर्ण और सुन्दर थे। मीनिया मुझे एक अधेड़ व्यक्ति के पास ले गई जो ऊँची हैसियत का-सा जँचता था। जब हम पहुँचे तो वह लड़ने वाले वैलो की फहरिस्त देख रहा था कि किस पर दाँव लगाये। मीनिया का शायद उसके घर से निकट का सम्पर्क था। जब उसने मीनिया को देखा तो अपनी फहरिस्त भूलकर उसने उसे खुशी से आलिंगन मे लेकर प्यार किया और कहा·

"तुम कहाँ चली गई थी? मैने तो समझा कि तुम शायद देवता के घर अपने आप ही चली गई थी फिर जाने कहाँ गईं—फिर भी मैंने तुम्हारा नाम अभी तक देव-निर्माल्य स्त्रियों मे ही रख छोड़ा है—शायद तुम्हारा कक्ष भी खाली ही पडा है—पर कही मेरी स्त्री ने उसे तुडवा न दिया हो···? क्योकि वह उस स्थान पर एक कुण्ड वनवाना चाहती थी।"

"कुण्ड ?"

"हाँ, वह मछली पालने के लिए वहुत उतावली हो रही थी।"

"कौन हीलिया? हीलिया कव से मछली पालने लगी?" मीनिया ने आश्चर्य से पूछा।

कुछ, जैसे इस प्रश्न से फँस गया हो वृद्ध ने उत्तर दिया : "नही···नही वह हीलिया नही है···यह तो मेरी नयी स्त्री है—इस समय शायद वह अपने किसी युवक मित्र को अपनी मछलियाँ दिखा रही है···" फिर मुझको देखकर वह बोला : "और यह सज्जन कौन हैं?"

मीनिया ने मेरे बारे मे जब सब कुछ उसे बतला दिया तो वृद्ध ने

मीनिया के स्तनो को देखकर कहा .

"परन्तु वैसे तो तुमने अपना कौमार्य बना ही रखा है न ? क्योकि तुम्हारे स्तन कुछ जरूरत से ज्यादा बडे हो गये है इसीलिए मैने पूछा है कि शायद तुम कामोत्तेजना मे अपने मित्र के साथ···"

"नही !" बीच मे ही मीनिया गुस्से से बोल उठी। फिर उसने दीर्घ श्वास छोडकर कहा, "और जब मै यह कह रही हूँ तो तुम्हे विश्वास कर लेना चाहिए क्योकि बेबीलौन की दासो की हाट मे एक बार मेरे कौमार्य की जो जाँच हो चुकी है तो मुझे अब फिर उसी प्रकार की जॉच पसन्द भी नही है।···मेरा खयाल था कि मुझे वापस देखकर तुम्हे खुशी होगी और तुम हो कि अपनी हार-जीत मे लगे हुए हो।" और वह रोने लगी।

वृद्ध परेशान हो गया। फिर बहाने लगाकर कि उसे माईनौस के पास जाना था, सटक गया। माईनौस क्रीट के राजा को कहा जाता था।

तत्पश्चात् मीनिया भी मुझे लेकर माईनौस के पास गई। वहॉ अगणित लोग विचित्र वेश-भूषा पहने मिले जो हँस-हँसकर आपस मे तथा माईनौस से बाते कर रहे थे। महल मे असख्य कक्ष थे जो सभी हवादार और प्रकाश से पूर्ण थे और सभी सुन्दर सजे हुए थे। भीतो पर वहाँ सुन्दर मछलियाँ और रग-बिरगे पुष्प बने हुए थे। माईनौस मुझसे मिस्री भाषा मे बोला और उसने अत्यन्त प्रसन्नता दिखाई कि मै उसे (मीनिया) सही-सलामत उसके देवता के लिए लौटा लाया था। यही मुझे मालूम हुआ कि मीनिया राजवश की थी।

जब हम बैलो के स्थान मे पहुँचे तो मैने देखा कि वह स्थान स्वयं एक महानगर था जहाँ अगणित साँड बँधे डकरा रहे थे और खुरो से पृथ्वी खोद रहे थे। वहाँ हमे मीनिया के पुराने जान-पहचान वाले कई युवक और युवतियाँ मिली। सभी मीनिया को देखकर खुश हुए। परन्तु एक बात माईनौस के यहाँ और इस स्थान मे भी एक-सी ही थी—सभी लोग बेपरवाह थे, खुशी होती थी तो वह भी क्षणिक और वे किसी एक बात पर ध्यानपूर्वक जमकर बात नही करते थे। सभी मे एक अजीब-सी मस्ती थी।

अन्त मे मीनिया मुझे एक छोटी-सी इमारत मे क्रीट के सबसे बडे पुजारी के पास ले गई। जिस प्रकार वहाँ का राजा सदा माईनौस ही कह-

लाता था इसी भाँति वह बडा पुजारी भी सदा मार्ईनोटौरम कहलाता था। इसका क्रीट मे सबसे वड़ा सम्मान था और साथ ही सब इससे वेहद डरते थे। लोग आपसी वातो मे उसका नाम नही लेते थे और उसे वैलो वाला आदमी कहकर ही आपस मे पुकारते थे। स्वय मीनिया भी उसके पास जाते डर रही थी परन्तु वह उसे मेरे सामने जता नही रही थी। वैसे मै उसकी आँखे देखकर उसके हर भाव अव वतला सकता था।

वह हमसे एक अँधेरे कक्ष मे मिला। उसे देखकर एक वार तो मैं सचमुच ही समझा कि जो कुछ क्रीट के देवता के वारे में मैंने सुना था वह सब सच था। परन्तु जब हम दोनो ने उसको झुककर अभिवादन कर दिया तो उसने अपना वह चेहरा उतार दिया। मैंने देखा कि वह तपे हुए रग का एक सुदर पुरुष था जिसके रोम-रोम मे जैसे अधिकार कूट-कूटकर भरा हुआ था। उसने मुझे मीनिया को वापस लाने के उपलक्ष मे धन्यवाद दिया और कहा कि मैने उसके देश की भलाई की थी क्योकि उसको वचाने का अर्थ था देवनिर्माल्य की रक्षा करना, जिससे उनका देवता प्रसन्न होता था। फिर उसने कहा, "तुम्हारी सराय मे तुम्हारे लिए उत्तमोत्तम उपहार तुम्हारी प्रतीक्षा करते तुम्हे मिलेगे।"

"उपहार एकत्रित करना मेरा काम नही है।" मैंने कहा, "मैं तो ज्ञान का भूखा हूँ जो मै देश-देश मे जाकर ढूंढता फिरता हूं। मैंने वेवीलोन और हितैतियो के वीच जाकर उनके देवताओं को भी देखा है और अव क्रीट के देवता के वारे मे सुनकर यहाँ आया हूँ। यहाँ का देवता पवित्र युवक और युवतियो को पसन्द करता है तो सीरिया मे मन्दिरो मे रंगशालाएँ होती है जहाँ स्त्रियाँ संभोग मे ही निपुणता दिखाती हैं और पुरुषो को प्रसन्न करती है। वहाँ के पुजारी हिजडे बना दिये जाते है जिससे उन स्त्रियों से जो सभोग करे सो वाहर का ही हो।"

"परतु हमारा देवता अन्य देशो के देवताओं से भिन्न है। वैसे हमारे वदरगाह पर तुम्हे अम्मन और बलि के भी मन्दिर मिलेगे। पर हमारा देवता एक जीवित वस्तु है, अन्य देशो की भाँति लकडी, पत्थर या धातु का नही वना है, और मरा हुआ नही हे। उसे केवल देवनिर्माल्य युवक और युवतियाँ ही देख पाती है। उसका सपर्क इतना सुखकर है कि फिर उसे छोड-

कर कोई नही लौटता हालाँकि कायदा यह है कि वह चाहे तो एक मास बाद लौट सकता है। परन्तु अभी तक कोई नही लौटा। जब तक हमारा देवता जीवित है, क्रीट समुद्रो पर शासन करता रहेगा। वैसे हमारा जहाजी बेडा भी जबर्दस्त है। उसने यह भी बतलाया कि उनके देश मे जिस युवती का नाम वहाँ जाने के लिए बारी से आ जाता है वह बहुत ही भाग्यवान समझी जाती है। और सभी उसकी इज्जत करते है।

मैने कहा . 'स्मर्ना मे लोग आसमान को देवता मानते है क्योकि वहाँ मेह से अन्न पकता है। क्रीट मे शायद समुद्री देवता की इसलिए मान्यता है क्योकि यहाँ सारा वैभव समुद्री व्यापार से ही आता है। वैसे मैने समुद्र मे रहने वाले मल्लाह देखे है जिनके शरीर बेडौल और बुरे होते है। मुझे तो समुद्री देवता पर कोई श्रद्धा नही होती हालाँकि मैने सुना है कि यहाँ का देवता किसी अन्धकारपूर्ण भूल-भुलैयाँ मे रहता है और देश के सबसे सुन्दर युवक व युवतियाँ उसको अर्पित कर दिये जाते है। चाहता तो मै भी हूँ कि उसे जाकर एक बार देख सकूँ।"

माईनोटौरस ने सुनकर केवल इतना कहा, "पूर्णिमा को मीनिया देवता के घर जायेगी। तुम भी उसे जाते हुए देख सकोगे।"

"और अगर वह मना कर दे तो ?" मैने जोर से प्रश्न किया। क्योकि मीनिया का बिछोह अब मुझे वास्तविक दिखने लग गया था।

"ऐसा कभी हुआ ही नही है। मीनिया स्वय साँडो के सम्मुख नृत्य कर चुकी है और वह अवश्य जाना चाहेगी।" उसने इत्मीनान से जवाब दिया और अपना बैल का सिर ओढ लिया। हम वहाँ से उठ आये। परन्तु मैने प्रत्यक्ष देखा कि मीनिया अब दु खी हो गई थी।

जब मैं सराय मे अपने निवास-स्थान को लौटा तो मैने देखा कि कप्ताह बन्दरगाह की मदिरा की दूकानो से खूब पीकर लौटा था। मुझे देखते ही बोला .

"मालिक ! नौकरो के लिए तो यह सचमुच पश्चिमी देश है। यहाँ उन्हे कोई मारता-पीटता नही है, न किसी मालिक को यही याद रहता है कि उसके बटुये मे कितना सोना और कितने जवाहरात थे। यदि कोई

मालिक गुस्सा होकर किसी नौकर को निकाल दे तो नौकर बस उस दिन छिप जाये और दूसरी सुबह फिर आकर अपने काम मे लग जाये। यहाँ उस मालिक को पिछले दिन की कुछ याद नही रह जाती है।"

फिर वह अपने कक्ष मे चला गया जहाँ जाकर वह द्वार बन्द करके जैसे कि उसकी आदत थी अपने आप मे बातें करता हुआ कहने लगा, "मालिक ! इस देश मे विचित्र बातें होने वाली हैं। मदिरा की दूकानों पर जहाजी लोग कह रहे थे कि क्रीट का देवता मर गया है और कि यहाँ के पुजारी लोग भयभीत होकर नया देवता ढूंढ रहे है। यह है खतरनाक बात क्योंकि ऐसा कहने वाले कई मल्लाह तो जहाज के मस्तूल से नीचे जल मे फेंक दिये गए हैं कि उन्हें काटने वाली मछलियाँ काटकर खा जाएँ क्योकि क्रीट मे यह भविष्यवाणी प्रचलित है कि जब यहाँ का देवता मर जायेगा तो क्रीट भी खत्म हो जायेगा।"

सुनकर मेरे हृदय मे एक विचित्र हूक उठी और आशा दिखाई देने लगी और मैं मनाने लगा कि यह समाचार सही निकले जिससे देवता को मरा हुआ देखकर मीनिया वापस लौटकर मुझे मिल जायेगी।

दूसरे दिन खेल के मैदान मे मैं एक अच्छे स्थान पर बैठा। यहाँ की चौकियाँ बडी होशियारी से एक के पीछे एक सीढ़ियो जैसी बनाई जाती थी जिसमे आगे वालो से पीछे वालो को अडचन पैदा न हो सके। निश्चय ही यह एक बहुत चतुर नीति थी जिसे मैंने अभी तक कही नही देखा था। मिस्र मे तो खेल-कूद इत्यादि इस प्रकार के काम ऊँचे टीले पर किये जाते थे कि नीचे से सभी उसे देख सकें।

साँड मैदान मे लाये जा रहे थे और नृत्य करने वाले युवक और युवतियाँ जोड़ा बना-बनाकर उनसे खेल रहे थे। अद्भुत था उनका नृत्य जो साक्षात् मृत्यु का सामना था। बाल बराबर चूके और मृत्यु निश्चित थी। क्रीट के मालदार लोग बैलो पर और युवक-युवतियों पर दाँव लगाने मे अत्यन्त व्यस्त थे।

मीनिया भी नाची। पहले मुझे उसके लिए डर लगा परन्तु फिर उसके दक्ष नृत्य मे मुझे आनन्द आने लगा। वहाँ बहुत-सी सुन्दरियाँ और युवक बिल्कुल नंगे होकर भी नाचे क्योकि जरा-सी भी वस्त्र की अडचन कभी-

कभी ख़तरा पैदा कर देती थी। हालाँकि उनके मुकाबले मे मीनिया सुन्दरता मे इतनी बढी-चढी नही थी, फिर भी उसका तैल से चमकता हुआ शरीर मुझे अत्यन्त लुभावना लगा। वहुत समय से आदत न रहने से उसका नृत्य उनसे हलका रहा और जिन लोगो ने उस पर दाँव लगाये थे उन्हे निराश होना पडा। वह लोग फिर दाँव लगाने के लिए नये साँड छोडने लगे। उस दिन मीनिया के कठ मे एक भी फूल की माला नही डाली गई।

खेल के वाद जब वह मुझसे मिली तो उसने मुझसे विरक्त स्वर से कहा, "सिन्यूहे! अव शायद मै तुमसे मिल नही सकूँगी क्योकि मेरी सहेलियाँ और मेरे मित्र मुझे वुला रहे है जहाँ मुझे काफी समय लग जायेगा। और फिर परसो ही तो पूर्णिमा है!" मैने उपेक्षा का भाव दिखाते हुए उसे चिढाने के लिए कहा :

"क्रीट मे मैने वड़े वडे नवीन अनुभव किये है, यहाँ की वेश-भूपा अद्भुत है। जब मै तुम्हारा नृत्य देख रहा था तो मुझे सुन्दर स्त्रियाँ अपने उन्नत पीन स्तनो को हिला-हिलाकर बुला रही थी। उन्होने मुझे अपने घर भी वुलाया है। वैसे वह तुमसे कुछ अधिक माँसल थी और शायद मनचली भी अधिक थी।"

वह एकदम कड़ी पड गई। मेरी बाँह पकडकर मेरी ओर आग्नेय नेत्रो से देखकर फुफकारती हुई कहने लगी :

"तुम मेरे रहते किसी अन्य स्त्री से सम्बन्ध नही रख सकते...नही, कभी नही...तुम्हारी निगाहो मे मै दुवली हूँ—यह मै जानती हूँ पर मेरी मित्रता की इतनी मर्यादा अवश्य करो—मेरे रहते पराई स्त्री को मत सगाओ!"

"मै तो उपहास कर रहा था। तुम्हे चिढाने के लिए।" मैने कहा पर मेरा भी दिल भर आया था।

और फिर मै चला आया था। उन वैलो के गोवर की वदवू मेरे दिमाग मे घुस गई थी जो निकलती ही न थी। अव भी जव कभी मैं वैल का गोवर देख लेता हूँ तो उवकाई आने लगती है। सराय आकर मैं अपने रोगियो की सेवा-सुश्रूपा करने लगा और उन्हे औपधियाँ देने लगा। दीवालो के दूसरी ओर से हँसी-मजाक और सगीत सुनाई दे रहा था।

शाम के अँधेरे मे मैं अपने कमरे मे आकर अपनी चटाई पर सो गया। कप्ताह को मैंने दीपक जलाने से मना कर दिया था। मैं उदास हो रहा था। चाँद मुझे बुरा लग रहा था क्योंकि वही तो मेरी बहिन को मुझसे छीन रहा था ! और तभी किवाड़ खुले और मीनिया अन्दर आ गई। वह इस समय अपनी पुरानी पोशाक पहने हुए थी। उसके सिर के बाल एक सुनहरे फीते से बँधे थे। मैंने चौंककर पूछा :

"मीनिया ! अब कैसे आईं ? मैंने तो समझा था कि तुम अपने देवता के पास जाने की तैयारी कर रही होगी।" उसने उँगली उठाकर कहा, "धीरे बोलो, मैं नही चाहती कि और लोग हमारी बातें सुने।"

वह मुझसे सटकर बैठ गई और फिर चाँद को देखकर कहने लगी, "बैलो वाले गृह मे अपने सोने की जगह मुझे बिल्कुल पसन्द नही है और न अब मैं पहले की भाँति अपने मित्रो मे ही सुख अनुभव करती हूँ। लेकिन इस रात तुम्हारे पास क्यों चली आई हूँ—यह मेरी खुद समझ मे नही आ रहा है—शायद तुम्हे नीद आ रही हो—तो सिन्यूहे ! मै चली जाऊँगी।"

फिर कुछ रुककर वह कहती गई, "मुझे नीद नही आई और मुझे हर रात की भाँति औषधियो की गंध सूँघने की इच्छा होने लगी—कप्ताह के कान मलने व बाल खीचने की इच्छा होने लगी कि वह जाने क्या ऊँट-पटाँग बोलता रहता है—यात्राओ और अनेकानेक देश के लोगो को देखने के बाद अब मुझे बैल, साँड और यहाँ के खेल के मैदानो के शोर अच्छे नही लगते। इनकी हरकते अब मुझे बच्चों की-सी मूर्खता लगती है—और अब तो मुझे देवता के घर जाने की भी वैसी इच्छा बाकी नही रह गई है। मेरा हृदय और मेरा मस्तिष्क शून्य हो गया है। सभी ओर मुझे दुःख-ही-दुःख दिखाई देता है। अभी तक मुझे इतनी वेदना कभी नही हुई थी। सिन्यूहे ! मै तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि फिर मेरे हाथो को अपने हाथो मे ले लो जैसे कि हमेशा ले लिया करते थे। और जब तक तुम्हारे हाथो मे मेरे हाथ रहेगे तब तक मैं मृत्यु से भी नही डरूँगी—हालांकि मैं जानती हूँ कि तुम्हे मांसल स्त्रियाँ अधिक पसन्द हैं।"

मैंने उसको उत्तर दिया, "मीनिया ! मेरी बहिन ! मेरा बचपन और मेरी जवानी गहरी परन्तु शुद्ध जल की धारा के समान थी और मेरा

पौरुष एक बडी नदी के समान जो फैला और फैला परन्तु तव जल गंदला हो गया और फिर वह गन्दे, गहरे गड्ढो मे भर गया जहाँ रो उसका वहना वन्द हो गया। परन्तु मेरी मीनिया ! जब तुम आई तो तुमने उन गड्ढो से उस तमाम जल को निकालकर फिर एक स्वच्छ धारा मे वहा दिया जिससे मेरी तमाम ग्लानि और विपमता दूर हो गई। और तव दुनिया मुझे देखकर मुस्करा उठी। तुम्हारी ही खातिर मै अच्छा वना। मैने स्वर्ण व्योम किये विना रोगियो का इलाज किया और मुझ पर किसी देवता का कभी कोई असर नही हुआ, न मैने उन्हे माना ही। लेकिन अब जब तुम फिर चली जाओगी तो मेरे जीवन की ज्योति फिर बुझ जायेगी। और तब मै मरुभूमि में एक कौए के समान रह जाऊँगा। मुझे अब किसी के प्रति सद्भावना नही रह गयी है—मै मनुष्य मात्र से घृणा करने लग गया हूँ—और देवताओ के बारे मे एक शब्द भी नही सुनना चाहता—

"चलो मेरी मीनिया हम भाग चले। दुनिया मे देश कई है परन्तु नदी केवल एक है। उसके किनारो की काली भूमि पर मै तुम्हे ले चलूँगा जहाँ वाँस के झुरमुटो मे जगली वत्तखें कैं-का करती है और जहाँ नित्य ही सूर्य अपने सुवर्ण रथ मे सवार होकर पूर्व से पश्चिम की ओर आकाश मे होकर निकल जाता है। मीनिया चलो और हम दोनो मिलकर एक मटकी तोड लेगे और फिर हम स्त्री-पुरुप हो जायेंगे और फिर कभी न बिछुडेगे—और जव हम मर जायेगे तो हमारे शरीर मसालों से अमर वना दिये जायेंगे कि हम पश्चिमी देश की यात्रा भी साथ ही साथ प्रेमपूर्वक कर सके।"

मीनिया ने मेरी भँवे, पलकें और मेरा मुँह अपनी उँगलियों से छूकर मेरे हाथों को अपने हाथो मे दबाया, फिर कहा :

"अगर मै ऐसा करना भी चाहती तो भी नही कर सकती थी क्योंकि क्रीट मे एक भी जहाज ऐसा नही है जो हमे छिपा ले या यहाँ से भगाकर ले जाय। वास्तविकता तो यह है कि मेरे ऊपर अभी भी पहरा लग रहा है और मै यह कभी सहन नही कर सकती कि वह लोग मेरे कारण तुम्हारी हत्या कर दे। अब तो मुझे वहाँ जाना ही होगा—क्यो ? यह मुझे मालूम नही। शायद माईनोटौरस कारण जानता हो।"

मेरे सीने मे मेरा दिल ऐसा सूना हो गया जैसे कोई खाली कब्र हो

और तब मैंने कहा :

"कल क्या होने वाला है यह भला कौन जान सकता है? परन्तु मुझे नही लगता कि तुम देवता के यहाँ से कभी लौट सकोगी। शायद समुद्र के अन्दर बने हुए उन सुवर्ण के महलो में वह सुन्दर देवता तुम्हे मोह ले कि तुम लौटना ही पसन्द न करो ! तुम मुझे भी भूल जाओ। परन्तु सच तो यह है कि मैं इन झूठे किस्सो का तनिक भी विश्वास नही करता। मैंने कई देशो मे कई प्रकार के देवता देख लिये हैं और उन स्थानो पर उनकी कोई विशेषता नही देखी। यह सब कपोल कल्पित बातें है। अतएव एक बात मैं तुमसे कह दूं और वह यह कि यदि तुम निश्चित अवधि के अन्दर मेरे पास लौटकर नही आ गईं तो समझ लो कि मैं तुम्हे ढूँढता हुआ स्वयं उस देवता के घर मे घुस जाऊँगा और फिर तुम्हे पकड़ लाऊँगा—और यदि तब तुम मेरे साथ भी न आना चाहो तब भी जबर्दस्ती घसीट लाऊँगा—क्योंकि तुम्हारे बिना तो मेरे लिए जीवन में कोई सुख ही नही रहेगा।"

उसने घबराकर मेरे मुँह पर अपना कोमल हाथ रखकर कहा: "हिश ! ऐसा नहीं कहते। बल्कि ऐसा सोचना भी नही चाहिए। देवता का घर अँधेरा है और उसमें किसी भी अजनबी को मार्ग नही दिखाई देता। और फिर बाहर भी पहरा रहता है और बड़े ताँबे के फाटक चढ़े रहते हैं। कम-से-कम यही मेरे लिए बड़ी तसल्ली की बात है। वरना शायद तुम अपने पागलपन मे मुझे ढूँढते हुए चले ही आते ! परन्तु सिन्यूहे, मेरा विश्वास करो कि निश्चित अवधि के पश्चात् मैं तुम्हारे पास अवश्य लौट आऊँगी। मेरा देवता ऐसा निष्ठुर नही होगा कि मेरी प्रसन्नता मे भी अड़चन डालेगा। वह तो अत्यन्त सुन्दर और प्यारा देवता है जो क्रीट को शक्ति प्रदान करता है, और हर क्रीटन का भला सोचता है। उसी की कृपा से जैतून के वृक्ष फूलते-फलते है और खेत अनाज उगलते है और जहाज बन्दरगाह से बन्दरगाह निर्बाध तैरते रहते हैं। वही हमारे लिए अनुकूल हवाएँ चलाता है और जब घने कुहासे मे हमारे जहाज फँस जाते है तो उन्हे मार्ग दिखाता है। फिर भला वह मेरी खुशी मे क्यो अड़चन पैदा करने लगा ?"

छुटपन से ही वह उस अन्धविश्वास की छाया मे पली थी। वह अन्धी थी। और हालाँकि मैं अपनी सुई से अंधो की आँखे खोलकर उन्हे नई

रोशनी दे देता था फिर भी मैं उसकी आँखे न खोल सका। मैंने उस मजबूरी की हालत मे उसे चिपटा लिया और उसे चूमता हुआ उसके स्निग्ध शरीर पर हाथ फेरने लग गया। वह मुझे उस समय रेगिस्तान मे फव्वारे की भाँति दिखायी दे रही थी।

उसने कोई आपत्ति नही की। उल्टे अपना मुख मेरी गर्दन पर रखकर वह सिसकने लगी। उसके आँसुओ से मेरी ग्रीवा भीग गई। फिर वह बोली : "सिन्यूहे! मेरे मित्र! यदि तुम्हे मेरे लौट आने की बात पर शक है तो मैं आज तुम्हे किसी बात के लिए मना नही करूँगी। जिस तरह तुम्हे आनन्द प्राप्त हो उसी भाँति मुझसे ले लो—चाहे मुझे मरना ही पड़ जाय पर आज तुम्हे मै सब कुछ देने को तैयार हूँ। मैं मृत्यु से भी नही डरूँगी क्योकि तुम्हारी बाँहो मे तो मै उससे भी नही डरती।"

"और क्या उससे तुम्हे भी सुख मिलेगा?" मैने पूछा, उसने उत्तर देने मे कुछ हिचकिचाहट की।

"मै नही जानती," उसने उत्तर दिया। "इतना तो जानती हूँ कि मेरा मन और शरीर दोनो बेचैन है। तुम्हे देखकर मैं कमजोर हो उठती हूँ। पहले मुझे मेरी नृत्यकला ही अत्यन्त प्रिय थी और मुझे मेरी कमजोरियो पर घृणा हुआ करती थी। परन्तु अब तुम्हारा सग और तुम्हारा स्पर्श मुझे अत्यन्त प्रिय लगता है चाहे इससे मुझे दुख ही क्यो न भुगतना पड़े। शायद मैं बाद मे पछताने लगूँ। परन्तु यदि इससे तुम्हे खुशी होगी तो मुझे भी होगी—क्योकि तुम्हारी खुशी मेरी खुशी है और इससे अधिक मै कुछ चाहती भी नही हूँ।"

अपना आलिगन शिथिल करते हुए मैने उसके बालो और आँखो को थपथपाकर कहा : "मेरे लिए यही बहुत है कि तुम मुझसे आज मिलने आ गई और हम फिर उसी भाँति मिले जैसे पहले बेबीलोन मे मिले थे। यह फीता मुझे दे दो।"

उसको एकदम शक हो गया। आँखे आधी मूँदकर अपनी हथेलियो को अपनी रानो पर मलती हुई वह कहने लगी :

"शायद मैं काफी दुबली हूँ और तुम सोचते होगे कि मेरे शरीर मे तुम्हे आनन्द न प्राप्त हो सकेगा—निश्चय ही तुम मेरे बजाय एक माँसल

और सुन्दर स्त्री पसन्द करोगे—लेकिन मैं भी तुम्हें पूरा सुख देने का प्रयत्न करूँगी—तुम्हे निराश नही करूँगी—जितना मुझसे सम्भव होगा वह सब आनन्द तुम्हे दूँगी।"

मैंने मुस्कराकर उसके स्निग्ध और सुडौल कधो पर हाथ रख दिये फिर कहा : "मीनिया ! मेरी दृष्टि मे तो तुम्हारे समान सुन्दरी और कोई नही है और न तुमसे अधिक आनन्द ही मुझे कोई दे सकती है। परन्तु यह कैसे हो सकता है कि तुम्हे तुम्हारे देवता के सम्मुख आपत्ति मे डालकर मै तुम्हारे शरीर से सुख भोगूं ? मुझे एक युक्ति सूझी है जिससे हम दोनो ही को आनन्द प्राप्त हो सकेगा। मेरे देश की विधि के अनुसार हम दोनो अपने बीच अभी एक घडा फोड़ लेते है और फिर हम दोनो स्त्री-पुरुष, पत्नी-पति बन जाएंगे हालांकि फिर भी तुमसे मैं कुछ नही माँगूंगा। हमारे विवाह का न कोई गवाह होगा—न कोई पुजारी आयेगा और न किसी मदिर की पुस्तक मे हमारा नाम ही लिखा जायेगा—"

और उस रात जब मैं मीनिया को अपनी बाँहो मे कसकर सोया तो उसके गर्म श्वास मेरी गर्दन पर लगने लगे। उसके गर्म प्रेमाश्रुओ से मेरा वक्ष भीग गया। मेरा विचार है कि जो सुख मुझे उस समय मिला शायद तब न मिलता यदि मै उससे वह वस्तु ले लेता जिसे देना उसके लिए निषेध बना हुआ था, मुझे तब ससार बहुत ही अच्छा मालूम होने लगा—और मेरा हृदय गद्गद हो उठा था।

दूसरी सुबह मीनिया फिर बैलो के सामने नाची, मेरा दिल धडकने लगा पर उसके कोई चोट नही आई। परन्तु इसके बाद नाचनेवाले एक युवक से जरा-सी चूक हो गई और वह साँड के माथे पर से जो फिसला तो साँड ने उसके शरीर को सीगो से फाड़ डाला। वह मर गया, सभी स्तब्ध रह गये। फिर स्त्रियो ने आकर उसके रक्त को छुआ और वह चीख मारकर भागने लगी। परन्तु पुरुषो ने केवल इतना कहा : "बहुत दिनो बाद ऐसी घटना घटी है परन्तु आज का खेल रहा सर्वोत्तम," फिर वह अपनी हार-जीत का हिसाब करने लगे। उस रात भी मीनिया मुझसे न मिल सकी।

दूसरे दिन सुबह ही मैने एक पालकी किराये पर की और मै उस जुलूस

के साथ नगर के बाहर चल दिया जिसमें मीनिया को देवता के घर ले जाया जा रहा था। पूरे जुलूस मे एक विचित्र नीरव वातावरण था। मीनिया एक सुवर्ण के रथ मे सवार थी जिसमे परों की किलगियाँ लगे हुए घोड़े जुते हुए थे। साथ मे बहुत से लोग पालकियो पर बैठकर जा रहे थे और वह सभी मीनिया पर पुष्पवर्षा कर रहे थे, सबसे आगे सुवर्ण मेखला मे सुवर्ण की मूठ की तलवार लगाये माईनोटौरस सुवर्ण का बैल-मुख लगाये जा रहा था।

देवता का घर एक नीची पहाडी जैसा था जिसके ऊपर घास और जगली फूल खिल रहे थे। और पीछे की तरफ से यह जाकर एक बडे पहाड से मिल गया था। सामने भारी ताँबे के फाटक लगे हुए थे—इतने भारी कि एक किवाड को हटाने के लिए दस आदमियो की जरूरत होती थी।

और जब जुलूस द्वार के पास पहुँच गया तो मीनिया को लेकर माईनो-टौरस आगे चला। द्वार अर्राकर खुला और भीतर चुप अधकार दिखाई दिया। माईनोटौरस ने हाथ मे जलती मशाल ली और मीनिया को लेकर अदर धँसता चला गया। फाटक पीछे से बन्द कर दिये गए और ताला लगा दिया गया।

और तब मुझे लगा कि मेरी मीनिया मुझसे हमेशा के लिए छिन गयी थी।

बाहर युवक और युवतियो ने नृत्य आरभ कर दिया था। मुझे पता नही जाने कब तक मै बेसुध वहाँ रेत मे पडा रहा। मेरी दुनिया उजड गयी थी।

फिर जब कप्ताह ने कहा : "यदि मेरी दृष्टि मुझे धोखा नही देती तो बैल तो वापस निकल आया है—पता नही कैसे ? क्योकि फाटक तो बन्द है।"

मैने मुडकर देखा—सचमुच माईनोटौरस वापस आ गया था। वह भी उस उत्सव मे भाग ले रहा था और नृत्य कर रहा था। मुझे उसे देखकर एकदम जोश आ गया और मैने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया और उससे पूछा : "कहाँ है मीनिया बताओ ?"

उसने मेरा हाथ झटक दिया पर जब मैं फिर भी अड़ा रहा तो क्रुद्ध

होकर बोला : "पवित्र उत्सव की कार्रवाइयों के बीच में पडकर व्यर्थ प्रश्न करना हमारे यहाँ निषेध है; परन्तु क्योकि तुम परदेसी हो अतएव क्षम्य हो।"

"कहाँ है मीनिया ?" मैं फिर चिल्लाया पर तभी कप्ताह मुझे बलपूर्वक घसीट ले गया। अलग लाकर वह मुझसे कहने लगा : "क्यों व्यर्थ सबका ध्यान अपनी ओर खीचकर मूर्खता दिखा रहे हो ?" माईनोटौरस जिस रास्ते से वापस आया है वह मैंने सब देख लिया है। वह एक बगल की छोटी खिड़की से निकल आया था।" और फिर उसने मुझे मदिरा पिलाना प्रारम्भ कर दिया। उसने उसमे पौपी फूल का रस चुपचाप मिला दिया था। जिसे पीकर मैं बेहोश हो गया। पर उसने मुझे जैसा कि मैंने उसके साथ बेबीलोन मे किया था घड़े में बन्द नही किया बल्कि कम्बल उढा दिया।

पूरे दो दिन दो रात तक नृत्य जारी रहा। लोग जाते-आते रहे। और तीसरे दिन सभी लौट गये। केवल कुछ युवतियाँ अब भी नाच रही थी।

जब माईनोटौरस लौटने लगा तो मैंने उससे जाकर अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और कहा कि मै उन युवतियो को वहाँ रुककर और देखना चाहता था। मैंने कहा : "यहाँ कई युवतियो और गृहणियो ने अपने स्तन हिला-हिलाकर मुझे रुकने के लिए कहा है और मै उनकी सुदरता पर मोहित हो गया हूं अतएव मुझे यही रुकने की आज्ञा दे दो।"

उसने मुझे मूर्ख समझा और मुस्कराकर चला गया। परन्तु जाते-जाते शायद वह उन स्त्रियो की ओर सकेत कर गया कि वह मुझे अधिकाधिक रिझाएँ क्योकि उसके जाते ही मुझे खुले वक्षो वाली स्त्रियों ने चारो ओर से घेर लिया।

और फिर वह केलि करती रही परन्तु मेरा मन उनमे बिल्कुल नही लग रहा था। रात्रि होने पर वह सब चली गयी।

पहरे वालो को मै नित्य ही मदिरा दिया करता था और जब आज फिर मैने उन्हे मदिरा दी तो उन्हे कोई आश्चर्य या शक नही हुआ। परन्तु मेरी मदिरा पीकर वह बेहोश होकर सो गये। मैंने उनकी कमर से चाभी निकालकर खिड़की खोली और कप्ताह को साथ लेकर उस गुफा के अन्दर जाकर

द्वार बन्द कर लिया और फिर अन्दर जाकर दीप जला दिया।

अब मैंने कप्ताह से कहा :

"कप्ताह, चाहो तो तुम मेरे साथ अन्दर चलो अथवा लौट जाओ; परन्तु मैं तो अपनी मीनिया को वापस लाने अवश्य जाऊँगा, क्योकि उसके बिना मुझे संसार ही सूना-सा लगने लगा है।"

और कप्ताह ने मेरे साथ ही रहना उचित समझा। उसने मदिरा का वडा पात्र उठाया और वह उसे पीने लग गया।

सामने एक लम्वी गुफा थी जिसके घने अन्धकार मे हमारी मशाल का प्रकाश वहुत ही क्षीण लग रहा था। हम आगे बढे। कप्ताह हाथ मे मदिरा का वडा पात्र लिये चला आ रहा था। भय से उसके दाँत वज रहे थे। गुफा के छोर पर दस और गुफाएँ वनी हुई थी, यह सव ईटो से वनी थी। मैंने वेबीलोन मे सुन रखा था कि भूलभुलैयाँ आमतौर पर वैल की पसलियो की शक्ल की वनी होती है। अतएव मैंने आखिरी रास्ते से आगे बढना तय किया। परन्तु कप्ताह ने तव कहा :

"जल्दी क्या है? फिर यदि हम खतरे मे चौकसी कर ले तो हर्ज भी क्या है? हो सकता है कि इस भूलभुलैयाँ मे हम मार्ग खो वैठे और उसने ईट मे एक कील ठोककर अपने झोले मे से एक डोरे की गेद निकाली। एक छोर उसका कील से वाँधकर वह गेद से डोरा खोलता हुआ आगे वढने लगा। उसकी उस चतुर युक्ति से मै अत्यन्त प्रभावित हो गया क्योंकि इतनी आसान तरकीव मुझे निश्चय ही कभी न सूझती। परतु प्रत्यक्ष मे मैंने अपनी इज्जत का खयाल करते हुए उसकी प्रशसा नही की और केवल कहा, "जल्दी करो।"

अन्धकार मे हम घूम-घूमकर आगे वढते ही गये, बढते ही गये। और हमारे सामने नये-नये रास्ते खुलते गये। कई बार रास्ता सामने से वन्द हो जाता और हमे लौटना पडता। आखिर मे कप्ताह ने हवा सूँघकर कहा : "मालिक! वैलो की गध लग रही है न?" उसके दाँत अब भी वज रहे थे।

मुझे भी वह वुरी गध आने लगी थी—घृणित और मिचली लाने वाली और ऐसा लगने लगा जैसे हम किसी वहुत वडे वैलो के अस्तवल मे आ गए थे। पर मैने कप्ताह को आज्ञा दी कि वह साँस रोककर आगे वढे। उसने

फिर मदिरा का घूंट लिया और आगे बढा ।

परन्तु थोड़ी ही दूर जाकर मेरा पैर फिसल गया । रोशनी मे देखा—वह किसी स्त्री का सडता हुआ मुड था जिसके केश अभी भी लगे हुए थे। और तब मैं समझ गया कि मुझे मेरी मीनिया अब कभी नही मिलनी थी। मैने लौटना चाहा परन्तु न जाने क्यो मैं फिर भी पागलो की तरह बढ़ता ही गया और कप्ताह डोरा खोलता हुआ चलता रहा।

कप्ताह एक स्थान पर हठात् रुक गया। सामने जो कुछ उसने देखा उससे उसके रोम-रोम भय से खडे हो गए। दाँत बजने लगे। हाथ की मशाल हिलने लगी। मैने देखा कि वह गोबर का एक बहुत बडा चबूतरा था जो सूख गया था। वह मनुष्य के बराबर ऊँचा था। कप्ताह बोला, "यह बैल का गोबर नही हो सकता। इतना बडा बैल तो इस गुफा मे आ ही नही सकता। मेरा विचार है कि यह कोई जबर्दस्त सर्प है !"

मैंने देखा कि वह बिलकुल ठीक कह रहा था। और मैं घबराकर लौटना ही चाहता था कि मुझे मीनिया की याद फिर हो आयी और पागलो की भाँति मै फिर आगे बढ चला। मैने अपने पसीजे हुए हाथ मे अपना चाकू मजबूती से पकड लिया था। जानते हुए भी कि उससे मेरा कोई बचाव नही हो सकता था।

बदबू बढती गयी। यहाँ तक कि साँस लेना भी कठिन हो गया। और हमारे पैरो के नीचे हड्डियाँ बोलने लगी और गोबरो के ढेर आने लगे। अब दीवालें ईंट की नही थी बल्कि गुफा चट्टान मे कटी हुई थी। निश्चय ही हम पर्वत के नीचे आ गये थे। रास्ता नीचे जाने लगा। ढलुआ मार्ग पर हम बढ़ने लगे। पूरे रास्ते हड्डियों के ढेरो और दुर्गन्धपूर्ण हवा में हम चलते गये। अन्त मे हम एक चट्टान के पास जाकर रुक गये। गुफा खत्म हो गयी और सामने ऊँचे पर्वतो से घिरा हुआ एक विस्तृत जलाशय था जहाँ क्षीण प्रकाश हो रहा था। हवा वहाँ की अत्यन्त विषाक्त और दूपित थी। भयानक हरी-सी रोशनी मे वह स्थान अत्यन्त वीभत्स लग रहा था। दूर कही समुद्र का गर्जन सुनाई दे रहा था जहाँ चट्टानो से भी लहरें टकरा रही थी।

सामने उस जल मे पक्तिबद्ध कई चमडे के थैले पडे थे जो जल मे फूल रहे थे। जब निगाह जमी तो मैने देखा कि वह कई थैले नही थे बल्कि एक

ही विशाल जंतु का शरीर था जिसकी खाल जगह-जगह उभर आयी थी। वह जंतु जल मे मरा पडा था। वह इतना बड़ा था कि जिसका अनुमान भी नही लगाया जा सकता। उसका मुख एक भीमकाय बैल का-सा मुख था और शरीर कप्ताह के कहे अनुसार सर्प का-सा था। अब वह सडकर हल्का हो गया था और जल पर तैर रहा था। मैने देखा कि क्रीट का देवता मरा पडा था—वह निश्चय ही महीनो से वहाँ पडा सड़ रहा था। परन्तु मीनिया तब कहाँ गयी ?

और तभी मुझे मीनिया से पहले वहाँ आये हुए युवक और युवतियो का ध्यान आया। और वह कहाँ गये ? इसी देवता के पास आने के लिए युवको को स्त्री निषेध थी और युवतियो को पुरुष ! और देश का छँटा हुआ सौदर्य यहाँ आता था। और मेरी आखो के सम्मुख चित्र घूमने लगे। युवक और युवतियाँ भाग रही हे और यह भीमकाय जन्तु उनका पीछा कर रहा है—और यह उन्हे गुफा की भूलभुलैयो मे जब सामने दीवाल आ जाती है अपने विशाल शरीर से घेरकर खा जाता है। हड्डियो को चबाकर थूक देता है—एक महीने मे एक नर भक्षण—यही था क्रीट का देवता। पर मेरी मीनिया कहाँ गयी ? और निराश होकर मैं 'मीनिया', 'मीनिया' चिल्लाने लगा। गुफा गूँज उठी। कप्ताह ने मेरा हाथ पकडा और जल के अन्दर एक चट्टान की ओट मे पडे हुए एक शरीर की ओर इगित किया। ऊपर चट्टान पर ताजा खून सूखा हुआ था। मैंने देखा वह मीनिया का शरीर था जिसका मुख केकडो ने खा लिया था। मैने उसके केशो पर बँधे चाँदी के जाल से उसे पहचाना। शरीर जल मे हिल रहा था क्योकि केकड़े उसे कुरेद-कुरेदकर खा रहे थे, उसकी पीठ मे होता हुआ आरपार एक तलवार का घाव था।

अपनी मीनिया के पास उसी समय पहुँच गया होता। उसके बाद मुझे होश नही रहा।

जब मेरी आँखे खुली तो मैंने देखा सुबह हो चुकी थी और कप्ताह मुझे एक झाडी मे लिये बैठा था। दूर क्रीट नगर दिखाई दे रहा था।

जब मेरी सज्ञा लौटी तो उसने मुझे बतलाया कि जब मैं बेहोश हो गया तो वह मुझे उठाकर बडी कठिनाई से बाहर लाया था। मीनिया तो मर ही चुकी थी अतएव उसे लाना तो उसने व्यर्थ समझा और साथ ही मदिरा पात्र को क्योकि वह नही ला सकता था। अतएव उसने उसमे से सपूर्ण मदिरा पीकर उस पात्र को वही जल मे फेक दिया था कि दूसरी बार जब माईनोटौरस आये तो उसे देखकर चकराये। गुफा के मुहाने पर आकर उसने डोरा फिर से लपेट लिया था और कील भी उखाड ली थी कि उनकी तरकीब के बारे मे किसी को पता न लग सके। बाहर आकर उसने खिड़की मे ताला लगाकर चाबी फिर बेहोश चौकीदार की कमर मे खोंस दी थी।

उसने मुझे मदिरा पिलायी और फिर हम दोनो नगर की ओर चल दिये। मुझे अब ऐसा लग रहा था जैसे मीनिया को मै पिछले जन्म मे जानता था—उसके वियोग मे मैं बिल्कुल नही रोया। गाना गाता हुआ पागलो की भाँति मैं कप्ताह का सहारा लिये चलने लगा। मार्ग मे मीनिया के मित्र हमे मिले और कप्ताह ने मुझे बाद में बतलाया कि मेरी उस नशे की हालत को देखकर उन्होने आश्चर्य प्रगट किया क्योंकि क्रीट मे इस तरह सबके बीच नशे मे घूमना अत्यन्त घृणित कार्य समझा जाता था। परन्तु उन्होने मुझे परदेसी समझकर सब बाते जैसे भुला दी और वह मुँह फेरकर चल दिये। उसके बाद मैं सराय मे पहुँचकर नित्य पीने लगा। कप्ताह मुझे खलने लगा था क्योकि वह मुझे जबर्दस्ती खाना खिलाता था जब कि मैं केवल मदिरा ही पीना चाहता था। मुझे ध्यान आता कि माईनोटौरस की जाकर मैं हत्या कर दूं क्योकि वह मीनिया के अतिरिक्त अनेक युवक और युवतियो की निर्मम हत्या कर चुका था, परन्तु फिर ध्यान आता कि आखिर जब वह विशाल जन्तु जीवित था तब भी तो वह जान-बूझकर ही उन युवक-युवतियो को जाकर उसको बलि चढाया करता था। एक बात का मुझे सतोष था कि अब जब उनका देवता मर चुका था तो क्रीट वालो

का अंत आ गया था क्योकि यही तो थी उनकी भविष्यवाणी। जो कुछ भी हो, पर मेरी मीनिया की मृत्यु बहुत ही आसानी से हो गयी थी उसे अपने प्राणो को लेकर उस नरभक्षक जन्तु के सामने भागना नही पडा था। और क्रीट का जब नाश होगा—मै सोचता तो स्त्रियो की यह काम से विह्वल किलकारियाँ मृत्यु की भयानक चीखो मे परिणित हो जाएँगी और वह सुन्दर इमारते सब जलकर राख की ढेरियाँ बन जाएँगी—माईनोटौरस का सोने का सिर पीट-पीटकर सीधा कर दिया जायेगा और फिर लूट के अन्य सामानो के साथ बाँट लिया जायेगा।

और मुझे कप्ताह ने बतलाया कि मै खूब हँसता था—एक दिन कप्ताह मेरे सामने बैठकर जब रोने लगा तो मुझे बडा क्रोध आया और मैने घृणा से कहा .

"क्यो रोता है कुत्ते ?"

वह बोला, "मालिक ! तुमसे अब मै भी थक गया हूँ, तुमने अब हद कर दी। मरने वाले तो मर गये और अब लौटने के नही। पर तुम हो कि मरने पर तुले हुए हो। तुमने अपना तमाम सोना-चाँदी खिडकियो से नीचे फेक दिया है—काँपते हाथो से तुमने जब अपने मरीजो को देखना चाहा तो वह सब तुम्हे छोडकर भाग गये यह कहते हुए कि यह तो बुरी तरह नशे मे चूर हो रहा है।

प्रारम्भ मे तो मैने भी लोगो से बड़ी शेखी हाँकी कि देखो मेरा मालिक कैसे दरियाई घोडे की भाँति मदिरा पीता है। मै स्वय मदिरा को उत्तम वस्तु समझता था परन्तु अब तो तुम्हारे कारण लज्जित हूँ। तुमने पराकाष्ठा को भी पार कर दिया है। यदि तुम मरना ही चाहते हो तो फिर इस तरह पी-पीकर मरने से अच्छा तो यह है कि एक मदिरा से भरे हुए हौज मे डूबकर मर जाओ। तब तो कुछ नाम भी है।"

मैंने देखा कि वह बिल्कुल ठीक कह रहा था। मेरे हाथ अब वैद्य के हाथ नही रहे थे। वह स्वत काँपते थे जैसे अब मै उनका मालिक नही रहा था। मुझे उस हालत मे जाने कितने दिन और कितनी राते निकल गई थी। मैंने मदिरा पीना बन्द कर दिया। वास्तव मे मै पराकाष्ठा को पार कर गया था। मैने कप्ताह से कहा :

"तुम्हारी वाते मेरे कान मे मक्खियो की भिनभिनाहट-जैसी लगती है—फिर भी मैंने अव मदिरा से हाथ खीच लेने का निश्चय किया है—चलो स्मर्ना वापस चले।"

और जहाज हमे क्रीट से दूर—दूर अनन्त समुद्र की ओर ले चला।

९

तीन साल के वाद जव मैं स्मर्ना लौटा तो मै युवक नही रहा था—मेरा पौरुप थक चुका था। इस वीच मैने कई देशो मे ज्ञान प्राप्त किया था अच्छा, वुरा, सव। पूरी समुद्री यात्रा मे मुझे समुद्र के हरे जल मे से मीनिया की हरी आँखे झाँकती हुई दिखाई देती और मैं उसी की याद मे खोया-खोया रहता।

स्मर्ना मे मेरा मकान अव भी खडा था हालाँकि उसके किवाडो व खिडकियों को चोर तोड गए थे। अन्दर से काम-काज का जितना सामान था सव गायव हो चुका था और पडोसियो ने मुझे लम्वे अर्से से गायव देख कर मेरे मकान के सामने की जमीन को काम मे लाना शुरू कर दिया था और उसे वेहद गदा कर दिया था।

मेरे पडोसी लोग मुझे वापस आया देखकर खुश नही हुए वल्कि आँखे फिराकर आपस मे वोले,"यह मिस्री है और सारी वुराइयाँ मिस्र से ही निकलती है", अतएव मैं सीधा एक सराय मे गया और कप्ताह को मैने आज्ञा दी कि वह मकान को रहने लायक ठीक करे। फिर मैं उन व्यापारियो के पास गया जिनके पास मेरा धन जमा था। वैसे अव मैं गरीव होकर लौटा था यहाँ तक कि होरेमहेव का दिया हुआ तमाम सुवर्ण भी अव समाप्त हो गया था। धनी व्यापारी लोगो ने मुझे देखकर वहुत आश्चर्य किया साथ ही वह कुछ उदास भी हो गए। क्योकि मेरी लंवी गैरहाजिरी से वह मेरे धन को अपना समझने लग गये थे। फिर भी उन्होने दाढी खुजाते हुए मुझे

गम्भीरतापूर्वक हिसाब समझाया। बहुत से जहाजों मे फायदा हुआ तो कुछ लौटकर ही नही आये थे। हिसाब के उपरान्त जो उन्होने मुझे दिया तो मैंने देखा कि मेरी आर्थिक परिस्थिति इतनी जबर्दस्त अभी तक कभी नही हुई थी। मेरे पास अब बहुत धन हो गया था। स्मर्ना के रहने के लिए मुझे कोई चिन्ता नही करनी थी।

परन्तु मुझे वह व्यापारी लोग अलग बुलाकर कहने लगे, "सिन्यूहे! तुम कुशल वैद्य हो और इसीलिए हम तुम्हारा सम्मान करते है; परन्तु आज कल यहाँ हवा दूसरी तरह की चल रही है। जो कर फराओ को देना पडता है उससे यहाँ के लोग ऊब गये है और अब विद्रोही हो गये है। हाल ही मे सडकों पर लोगो ने मिस्रियो को पत्थरो से मार-मारकर हत्या कर दी है। अतएव हम तुम्हे सावधान किये देते है कि भविष्य मे सँभलकर रहने मे ही लाभ है वैसे नही।"

कप्ताह ने बताया कि जब वह एक सराय मे मदिरा पीने गया तो लोगो ने उसे वहाँ खूब मारा।

मै अपने मकान मे आकर अब अपने रोगियो की सुश्रुषा करने लग गया था। वहाँ भी रोगियो से मेरी आये दिन मिस्र के करो को लेकर झडपें हो ही जाया करती थी। परन्तु घृणा इत्यादि सब कुछ करते हुए भी लोगो का आना मेरे यहाँ कम नही हुआ क्योकि बीमारी और दुख-दर्द मनुष्य मात्र देखकर आते हैं न कि जन्म अथवा राष्ट्र।

एक शाम मैं इश्तर के मदिर से लौट रहा था कि मुझे मार्ग मे तीन-चार आदमियो ने घेर लिया और आपस मे कहा .

"यह तो मिस्री लगता है। हमारे मदिर की कुमारियों को तो यह खतने वाला पुरुष बिगाड देगा। है न?"

"तुम्हारी इन कुमारियो को राष्ट्र या जाति की परवाह नही होती—वह तो सोना माँगती है सोना—" मैने कहा "मै तो रोज रात उनके पास सभोग के लिए आता हूँ और आता रहूँगा भी—इसमे किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?"

और अब उन सबने मिलकर मुझे पृथ्वी पर दे मारा परन्तु जब मेरा मुख उनमे से एक ने देखा तो वह चिल्लाया और एकदम तमाम लोग मुँह

ढँककर भागे और कहते गये "ओह यह तो सिन्यूहे वैद्य है। हमारे सम्राट अजीरू का मित्र !"

मुझे पता भी नही लगा कि वह कौन थे और क्यो वह मुझे छोड़कर भाग गए जव कि वह इतने अधिक थे और मुझे इतनी आसानी से मार सकते थे।

और तव मैने सोचा कि मिस्र वापस चलना चाहिए। कप्ताह से मैंने अपनी इच्छा प्रकट कर दी।

हालांकि मै सीरिया के लोगो की भांति वस्त्रादिक पहनने लग गया था फिर भी मुझ पर वहाँ के लोग गोवर इत्यादि फेककर मारने लग गये थे।

कुछ दिनो वाद मेरे घर के द्वार पर एक घुडसवार आकर रुका तो मुझको तथा मेरे पडोसियो को वडा आश्चर्य हुआ क्योकि इस ऊँचे और जगली जानवर पर मिस्री या सीरियन लोग कभी यात्रा करना पसन्द नही करते थे। यह चढने मे भी दिक्कत पैदा करता था जवकि गधा अत्यन्त प्रिय जन्तु था। घोडा मुँह से झाग डाल रहा था जिससे प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था कि वह वहुत तेजी के साथ आया था। सवार की पोशाक से जाहिर हो रहा था कि वह पहाडो का रहने वाला था जहाँ लोग भेड पालकर जीवन यापन करते थे। वह उतरकर तेजी से आकर हाँफते हुए वोला :

"शीघ्र अपनी कुर्सी मँगाओ और चलो—मै अम्मूर से आया हूँ—मुझे वहाँ के राजा अजीरू ने भेजा है। उसका पुत्र वीमार है और कोई उसका इलाज नही कर पा रहा है। अजीरू शेर की तरह विफर रहा है और जो उसके पास जाता है उसी की हड्डियाँ तोड देता है। अतएव शीघ्र अपनी दवाओ की पेटी लेकर मेरे साथ चलो—अन्यथा मै तुम्हारा सिर अभी काटे लेता हूँ और उसे सडक पर लात देकर ढुलकाता हूँ।"

"मेरे सिर से तो अजीरू का काम नही चलेगा" मैंने कहा, "पर क्यो कि वह मेरा मित्र हे अतएव चलता हूँ। वैसे तुम्हारी धमकियो की मै तनिक भी चिन्ता नही करता।"

मेरा मन अपनी नित्य की एकाकी जिंदगी से ऊव रहा था। और मैंने

एक पुराने मित्र से मिलकर कुछ नवीनता अनुभव करनी चाही।

और कप्ताह से मैंने एक कुर्सी लाने को कह दिया। मैंने सोचा कि अजीरू के साथ निश्चय ही आनन्द रहेगा क्योकि यह वही तो था जिसके दाँतो पर मैंने सोना चढाया था और जिसे मैंने किफ्तीयू नाम की स्त्री दी थी।

थोडी दूर जाकर जब पहाडी इलाका आया तो मुझे घोडे जुता रथ तैयार मिला। वह मुझे अनगढ पत्थरो पर लेकर भाग चला। भारी पहियों के नीचे जबर्दस्त गडगडाहट होती और वह रथ इतना ज्यादा हिलता कि मेरा जोड-तोड हिलने लग गया। मै घबरा गया, पर रथ था कि खण्डहर-खण्डहर भागा चला जा रहा था। मेरी हड्डी-पसली हिलने लगी और मैं चिल्लाने लगा। गाडी वाले को गालियाँ देने लगा। हर क्षण मुझे ऐसा लगता अब गिरा-अब गिरा, गिरकर मेरी गर्दन टूटी—रथ की बगली को मेरे हाथ स्वत. मजबूती से पकडे हुए थे। मेरे पसीना छूट रहा था और मैं रथवान की पीठ पर घूँसे लगाता, गालियाँ देता, चीखता, पर जैसे कोई परवाह ही नही थी उसे। रथ उसी रफ्तार से हडबड़ाहट करता भागा चला जा रहा था। दो-एक स्थानो पर रथ रुका और नये घोडे बदले गये। जब मै अम्मूरू पहुँचा उस समय सूरज छिपा नही था। परन्तु मैं स्वय रथ से उतरने के काबिल नही रह गया था। मुझे उठाकर वह लोग अन्दर ले गये। नगर अब बडा बन गया था उसके चारो ओर ऊँचा परकोटा नया ही खिंचा था। पर हमारे लिए द्वार पहले ही से खुले रखे गये थे। जब बाजार मे होकर रथ निकला तो उसके पहियों के नीचे जाने कितनी डालियाँ मटकी इत्यादि टूट गईं जो वहाँ हाट वाली स्त्रियो ने रख रखी थी; रथ को रोककर उन्हे हटवाने का समय नही था और स्त्रियाँ चिल्ला रही थी।

मुझे बाँह पकडकर दो सैनिक घसीटकर अन्दर ले चले और दास मेरी औषधि की पेटी को उठा लाये। महल मे घुसते ही हम अजीरू से भिड गये जो तेजी से बाहर आ रहा था। और वह घायल हाथी की भाँति चिंघाड उठा। उसने अपने तमाम वस्त्र फाड डाले थे और केशो मे राख डाल ली थी। मुँह उसने नाखूनों से इतना रगड डाला था कि उन खरोचो मे से रक्त झलकने लग गया था।

परन्तु मुझे देखते ही उसका वह उग्र रूप शान्त होकर विनीत बन गया और वह मुझसे लिपट गया। वह रोकर कहने लगा, "मेरे पुत्र को अच्छा कर दो सिन्यूहे ! उसे अच्छा कर दो। और जो कुछ मेरे पास है वह सभी तुम्हारा हो जायेगा—"

"पहले मुझे देख लेने दो" मैंने कहा। वह मुझे तुरन्त एक बड़े कमरे मे ले गया जिसमे अँगीठी जल रही थी हालांकि वह ग्रीष्म ऋतु थी। कमरे मे एक पालना रखा था जिसमे एक बच्चा, जो सालभर से कम था, ऊनी वस्त्रों से लिपटा पडा बुरी तरह चीख रहा था। उसके माथे पर पसीना बह रहा था। हालाँकि वह इतना छोटा था फिर भी उसके सिर पर अपने पिता की भाँति घने काले बाल थे। मैंने देखा कि उसे कोई खास मर्ज नही था। यदि वह मर रहा होता तो उस कमजोरी मे कभी इतना चिल्लाकर रो नही सकता था। पालने के पास भूमि पर किफ्तीयू पडी रो रही थी। वह अब पहले से मोटी और ज्यादा गोरी भी हो गई थी। कमरे के अन्य भागो से दास चिल्ला रहे थे क्योकि अजीरू ने क्रुद्ध होकर उन्हे खूब पीटा था—इसलिए कि वह उसके पुत्र को ठीक नही कर सकते थे।

"घबराओ मत अजीरू," मैंने कहा,"तुम्हारा पुत्र अच्छा हो जायेगा—परन्तु इस बीच जब मै अपने औजारो को शुद्ध करूँ तुम यहां से तमाम लोगो को और इस अँगीठी को बाहर निकलवा दो।"

"बच्चे को ठंड लग जायेगी" किफ्तीयू बोली पर तभी उसने सिर ऊँचा किया और मुझे देखकर वह मुस्कराकर कहने लगी :

"अच्छा तुम हो सिन्यूहे !" और उसने अपने केश जो खुले पडे थे, उठाकर उन्हे जूडे मे बाँध लिया।

अजीरू दीन स्वर मे बोला :

"बच्चे ने तीन दिन से न कुछ खाया है न पिया है—यह तो सिर्फ रो-रोकर जान दे रहा है। मेरा दिल इसकी चिल्लाहट सुनकर पानी-पानी हुआ जाता है।"

जब कमरा दास-दासियो से खाली हो गया और अँगीठी भी हटा दी गई तो मैने कमरे की खिडकियाँ खोल दी जिससे सध्या की मन्द बयार अन्दर आने लगी। बच्चे का स्वेद मैंने पोछ दिया क्योकि अब तक मैं भी

शुद्धि कर चुका था। फिर मैने उस बच्चे के ऊनी वस्त्र खोलकर उसे सूती चादर से उढा दिया। बच्चा एकदम चुप हो गया और अपने मोटे-मोटे पैरो से लात चलाने लगा मैने उसका पेट दबाकर देखा फिर उसके सारे शरीर को छुआ। हठात् मुझे एक बात सूझी और मैने उसके मुँह मे उँगली डाल दी। मेरा अनुमान बिल्कुल ठीक निकला, बच्चे का पहला दाँत उसके जबडे मे मोती की भाँति निकल रहा था।

और तब मैने बनावटी क्रोध मुख पर लाकर कहा, "अजीरू! क्या इतनी-सी बात के लिए तुमने स्मर्ना के सबसे बडे वैद्य को बुलवाया है कि जिसके हाथ-पैर तुम्हारे उस रथ मे ढीले हो गए? तुम्हारे बच्चे को कोई बीमारी है ही नही—वह तो केवल अपने पिता की भाँति उतावला हो रहा है। हो सकता है कि इसे दो-एक दिन बुखार भी हो गया हो और इसने कै भी की हो पर अब इसे बुखार भी नही है। अगर इसने कै की है तो इसका अर्थ है कि यह उस गाढे दूध को हजम नही कर सकता था जो इसे जबर्दस्ती पिलाया गया था। अब किफ्तीयू का दूध इसे न दिया जाय अन्यथा यह उसके स्तन को काट डालेगा—देखो इसका पहला दाँत निकल रहा है" और मैने बच्चे का मुँह खोलकर वह दाँत दिखा दिया। अज़ीरू खुशी से नाचने लग गया और किफ्तीयू ने कहा कि ऐसा सुन्दर दाँत उसने आज तक नही देखा था।

जब किफ्तीयू उसे फिर ऊनी कपडे पहनाने को आगे बढी तो मैने उसे रोक दिया।

और अजीरू फिर खुशी से नाचता फिरा। उसे अपनी हैसियत और मान का भी खयाल न रहा। वह कहता रहा .

"कितनी राते मैने जागकर इसके पालने के सहारे काटी है? क्रोध मे जाने कितने लोगो को मैने मारपीट कर घायल कर दिया है—लेकिन तुम्हे यह तो समझ ही लेना चाहिए कि यह मेरा बेटा है; मेरा पहला बच्चा, मेरा युवराज, मेरी आँखो का तारा, मेरा रत्न, मेरा छोटा शेर है जो एक दिन अम्मूरू का राजमुकुट धारण करके अनेको पर राज्य करेगा। क्योकि इस देश को तो मै इतना बडा बना जाऊँगा कि वास्तव मे इसका उत्तराधिकारी आनन्द भोगेगा—देखो इसके बाल कैसे शेर के-से है—मै दावे के साथ कह

सकता हूँ कि तुमने अपनी सारी यात्राओं में ऐसा सुन्दर बालक और कहीं नहीं देखा होगा।"

मैं उसकी बातों से ऊब उठा था। मेरा जोड़-जोड़ दुख रहा था। तत्पश्चात वह मुझे बाँह पकड़कर प्रेम से भोजन कराने ले गया। अनेक भाँति के खाद्य पदार्थ चाँदी के पात्रों में हमें परोसे गए और सोने के पात्रों में से अच्छी मदिरा दी गयी। खा-पीकर मैं तरोताजा हो गया।

उसका अतिथि बनकर मैं कुछ दिन वहाँ रहा। उसने मुझे मन-भर कर सोना-चांदी दिया—मैं प्रत्यक्ष देख रहा था अब वह काफी अमीर हो गया था। वह कैसे अमीर बना जब मैंने उससे पूछा तो केवल हँस दिया। उसने मुझे कारण नहीं बतलाया। उसने दाढ़ी सहलाते हुए हँस कर कहा, "जो स्त्री तुमने मुझे दी थी वही अपने साथ भाग्य लाई थी"। किफतीयू ने भी मेरी बड़ी इज्जत और सेवा की। जब वह चलती, उसके पीन नितंब और स्तन हिलते तब उसके आभूषण बजने लगते। अजीरू उसके पीछे इतना अधिक पागल था कि उसने अपनी और स्त्रियों के पास जाना करीब-करीब बन्द ही कर दिया था। वह कभी एक-आध बार उनसे मिलकर कायदे निभा देता था—क्योंकि वह भी आसपास के छोटे कबीलों के सरदारों की बेटियाँ थीं जिनसे उसने अपनी शक्ति बढ़ाने के विचार से विवाह किये थे।

अजीरू ने अपनी बढ़ती हुई शक्ति के बारे में डींग मारी। उसी ने बातों में ज़ाहिर किया कि मेरा पता उसे उसके कुछ आदमियों ने दिया था जो एक रात मुझे मारने लगे थे, पर फिर मुझे पहचान कर भाग गए थे। उसे इस बात के लिए दुख था। उसने कहा :

"यह सच है कि कई मिस्रियों के सिर टूट जायेंगे—क्योंकि सबसे बड़ा काम यह है कि बिबलौस, सिडौन और गाजा के लोग यह जान लें कि मिस्री भी मारे से मर जाता है, कि उसके शरीर से भी अन्य किसी की भाँति ही रक्त बह निकलता है। लोग उनसे व्यर्थ ही इतने डरे हुए हैं और उन्हें अजेय समझते हैं।"

"परन्तु अजीरू?" मैंने पूछा, "तुम्हें मिस्रियों से इतनी तीव्र घृणा क्यों है?"

उसने अपनी दाढी पर हाथ फेरा और मुस्कराया, फिर बोला ·

"मुझे घृणा क्यो होने लगी ? क्या मैं तुम्हे नही चाहता ? तुम भी तो मिस्री हो और तुमसे तो मुझे घृणा नही है। फिर मैं तो फराओ के स्वर्ण-गृह मे पला हूँ। वही मैने सीखा है कि विद्वानो की दृष्टि मे सभी लोग बराबर होते है। कोई देश एक-दूसरे से न बुरा होता है न अच्छा। सभी जगह बहादुर, विद्वान, डरपोक, क्रूर और बदमाश लोग रहते है। अतएव राजा लोग स्वय तो किसी से घृणा नही करते परन्तु घृणा राजा का सबसे बडा अस्त्र बन सकती है। जब तक यह लोगो के दिलो मे नही बैठायी जाती लोग हथियार चलाने मे असमर्थ रहते है। मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे अब करना चाहिए क्योकि सीरिया और मिस्र के बीच आग लगाना ही मेरे लिए लाभप्रद है। मै इस आग को तब तक फूँकूँगा जब तक कि वह लपट बनकर मिस्री धाक का सीरिया मे अन्त न कर देगी। सभी नगरो मे यह बात प्रत्यक्ष हो जाएगी कि मिस्री डरपोक, क्रूर, बुरे, लालची और एहसान-फरामोश होते है और घृणा के योग्य है।"

"लेकिन यह बात सच तो नही है," मैने टोका। अजीरू ने हाथ बढाकर कधे झटके, फिर कहा

"सिन्यूहे ! सच क्या है ? जब उनका रक्त इस सत्य को काफी सोख लेगा तो वह कसम खाकर कहने लगेगे कि असली सत्य यही है और यदि कोई उस समय उनका विरोध करेगा तो वह मारा जाएगा। सत्य तो यह होगा कि यहाँ के लोग जान जाएँ, बल्कि उनके दिलो मे यह बात घर कर जाय कि वह स्वय मिस्रियो से अधिक योग्य, अधिक वीर और अधिक ताकतवर है। बस फिर यही सत्य उन्हे हिसा की ओर चलायेगा। यह भी तो सत्य ही है कि जब मिस्री सीरिया मे आये थे तो अपने साथ रक्तपात और आग लाये थे, फिर क्यो न उसी सत्य से उन्हे निकाला जाय ? सीरिया तभी स्वतन्त्र हो सकेगा।"

"स्वतत्र ?" मैने डरते हुए पूछा, "कैसी स्वतत्रता ?" उसने फिर अपने हाथ उठा दिये और वह मुस्करा दिया फिर बोला .

"स्वतन्त्रता शब्द के भी कई अर्थ होते है—कोई उसका कुछ अर्थ लगाता है तो कोई कुछ और परन्तु जब तक वह मिल नही जाती तब तक

तो उसकी कुछ चिन्ता है ही नही ? वहुत-मे स्वतन्त्र होने में लगे रहते हैं परन्तु जब स्वतन्त्रता मिल जाती है तो वह उसे केवल अपने लिए रख लेते हैं—मेरा विचार है कि एक दिन अम्मूरू की भूमि स्वतन्त्रता का मुल्क कहलायेगी—जो राष्ट्र उन सव वातो पर विश्वास कर लेता है जो भी उससे कही जाती हैं—उस मवेशियों के झुड की भाँति होता है जिसे डडा लेकर एक द्वार से हाँका जा सकता है या शायद भेड के उस वच्चे के समान है जो अगली घटी को सुनकर पीछे-पीछे चलता जाता है और समझता है कि वह ही उस झुड का सरदार है।"

"तुम्हारे माथे मे सचमुच भेड का ही भेजा भरा है," मैंने कहा, "क्योकि तुम फराओ ! उस महान् फराओ की शक्ति से टक्कर लेना चाहते हो ! वह तुम्हे, तुम्हारे नगर को धरती मे मिला देगा और तुम्हे व तुम्हारे लडके को अपने जगी जहाजो की कमानो से उल्टा लटका देगा।"

सुनकर वह केवल मुस्करा दिया, फिर वोला :

"तुम्हारे फराओ से मुझे कोई ख़तरा नही है क्योकि उसके भेजे हुए 'जीवन के चिह्न' नामक पदक को मैंने सहर्ष स्वीकार करते हुए उसके देवता का मदिर अपने यहाँ वनवा दिया है। वह मुझ पर इतना अधिक विश्वास करता है कि सीरिया मे किसी और पर नही करता—वल्कि अपने लोगों पर भी विश्वास नही करता क्योकि वह अम्मन के मानने वाले है। चलो मैं तुम्हे कुछ दिखा दूं—"

और उसने मुझे महल से वाहर लाकर दीवाल के सहारे उल्टी लटकी हुई एक लाश दिखाई जिस पर मक्खियाँ वुरी तरह भिनभिना रही थी। वह वोला : "देखते हो उसे ! वह मिस्री है—ध्यान से देखो कि उसका खतना हो रहा है—यह मिस्र का कर-एकत्रित करने वाला था। इतना उद्दण्ड और दुस्साहसी हो गया था यह कि मेरे पास आकर जवाव-तलव करने लगा कि मैंने दो साल से मिस्र की नजरें क्यों रोक रखी थी। मेरे सैनिको ने उसके साथ खूव उपहास किया और फिर उसे उसकी हिम्मत की सजा दे दी। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मिस्री लोग अपनी मर्जी से यहाँ आना पसन्द नही करते क्योकि इसके वाद फिर कोई और नही आया और यहाँ के व्यापारी लोग जो है, वह मिस्रियों की वजाय मुझे कर देना ज्यादा पसन्द करते हैं।

मैंगिडो मेरे कब्जे मे आ चुका है—वहाँ के मिस्री सैनिक किले से बाहर निकलकर नगर मे नही घूम सकते क्योकि उन्हे अपने प्राणो का भय है। पत्थरो से मार-मारकर उनका भुर्ता बना दिया जायेगा।

उसके पास देश-देशातरो से आई हुई मिट्टी की तख्तियाँ थी जो उसके लिखने-पढने के कक्ष मे सजी रखी थी। वह उसने मुझे नही दिखायी। उसके पास हितैती राजदूत भी आते-जाते थे। मैने उसे उनके बारे मे जो मैंने वहाँ देखा था सब बतलाया परन्तु उतनी बाते वह पहले से ही जानता था। साफ था कि वह मिस्र के विरुद्ध उसकी सहायता ले रहा था। मैने कहा :

"शेर और गीदड मिलकर भले ही एक शिकार मार ले, परन्तु क्या तुमने कभी सुना है कि बढिया माल गीदड को मिल गया हो ?"

वह केवल हँस दिया फिर बोला . "तुम्हारी तरह ज्ञान प्राप्त करने की मेरी प्यास बेहद है परन्तु राजकाज से मुझे इतना अवकाश नही मिल पाता। तुम्हारा ज्ञान अपार है क्योकि तुम पक्षी की भाँति स्वतन्त्र हो—परन्तु यदि हितैती सेना के उच्चाधिकारी मेरे लोगो को—मेरे सरदारों को, युद्ध की कला सिखाएँ तो हर्ज ही क्या है ? उनके पास नये-नये हथियार है और उनके सैनिको को अनुभव भी अधिक है। फिर यह तो फ़राओ की ही सेना है, क्योकि यदि युद्ध छिड गया तो सीरिया ही तो हमेशा से मिस्र की ढाल रहा है ? यह सब हम तभी तय करेगे !"

युद्ध का नाम आते ही मुझे हौरेमहेब की याद हो आयी। मैंने कहा : "तुम्हारा आतिथ्य मैने जी भरकर भोग लिया है अब मुझे आज्ञा दो। परन्तु मै तुम्हारे रथ मे वापस नही जाना चाहता जिसमे हर घडी मुझे मृत्यु का भय बना रहता है। मेरे लिए एक पालकी मँगा दो। स्मर्ना मेरे लिए अब जगल हो गया है जहाँ अब मैं रहना नही चाहता। अब नील का जल पीने को मेरा मन अकुलाने लगा है। मै शीघ्र ही मिस्र की ओर जाने वाले जहाज मे चला जाऊँगा। शायद अब तुमसे कभी मिलना न हो सके। कौन जाने कल क्या होने वाला है ! मैने दुनिया की काफी बुराइयाँ देख ली हैं और कुछ बुराई तुमसे भी सीखी ही है।"

वह हँस दिया। फिर उसने उत्तर दिया :

"कोई नहीं जानता कल क्या होनेवाला है ? सच है, ढुलकते पत्थरों

पर काई नही जमती—तुम्हारी आँखो में जो चंचलता है उससे मैं कह सकता हूँ कि तुम किसी स्थान पर अधिक दिन नही ठहर सकोगे।"

उसके सैनिक मुझे स्मर्ना के नगरद्वार तक छोड़ गए। द्वार में घुसते ही एक अवावील मेरे मुँह के सामने से उड गई। मेरा हृदय धक्-धक् करने लग गया। अजीरू का दिया हुआ सोना और चाँदी लेकर मैं घर घुमा तो कप्ताह खुशी से खडा हो गया और उसने अपनी आदत के अनुसार वकवक शुरू कर दी। मैने उससे कहा :

"सब सामान और यह घर वेच डालो। हम लोग शीघ्र मिस्र जाने-वाले है।"

जब बन्दरगाह मे मैं जहाज पर चढ गया तो मेरे मन मे थीवीज पहुँच जाने की ऐसी हूक उठी कि मैं नेत्र मूँदे वहाँ की कल्पना करने लगा। पतझड का मौसम था और सीरिया मे उत्सव शुरू हो गए थे। वहाँ के पुजारी लोग लकडी के चाबुको से अपने मुँह खरोचने लग गए थे—और घावो से रक्त बहने लग जाता था—परन्तु यह सब और वाल की पूजा मैं काफी देख चुका था। मुझे उन सबको देखने की अब कोई इच्छा नही रह गई थी।

मेरे हृदय मे उस काली भूमि मे पहुँच जाने की हूक उठ रही थी। जहाँ की मदिरा और नील का जल पीने को मानो मेरा कठ सूखने लगा था।

और हमारा जहाज हिला और चल पड़ा। लगर उठ गया था और नीचे मल्लाह अपने मज़बूत हाथो से डाँड चला रहे थे। सीरिया पीछे छूटने लगा—दूर से वह हरा-भरा देश वहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था—लाल भूमि पर पड़ी हुई घास ऐसी लगती थी मानो किसी ने वहाँ रक्त-वर्ण मदिरा फैला दी हो।

मैं घर आ रहा था हालाँकि मेरा कोई घर नही था—और मै ससार मे विल्कुल अकेला था।

जहाज चला जा रहा था—सामने अनत समुद्र था। मैं अपने स्वप्नो मे खो गया।

और फिर हमारे बगल से सिनाई का रेगिस्तान निकलने लगा—

उधर से लूएँ चलकर इधर आने लगी।

फिर पीला समुद्र आया जिसके आगे हरी भूमि दूर-दूर तक फैली हुई थी।

मल्लाहो ने एक पात्र नीचे लटकाकर वह जल भरा—फिर वह सबने पिया। वह खारा नही था—वह नील का जल था—

कप्ताह ने कहा "पानी तो सभी जगह एक-सा होता है—चाहे नील का ही क्यो न हो। मै तो तब घर आया समझूँगा जब थीबीज की मदिरा को किसी अच्छी सराय मे बैठकर पीऊँगा।"

उसकी बाते मुझे बहुत बुरी लगी और मैंने मुँह बिगाडकर कहा . "एक बार का गुलाम—हमेशा ही गुलाम रहा, चाहे वह उत्तम ऊनी वस्त्र ही क्यो न पहने हुए हो—ठहर जाओ कप्ताह, मुझे एक लचकदार बेत ले लेने दो—ऐसी जो नील के किनारे मिल सकती है—और तब तुम शीघ्र समझ जाओगे कि तुम घर वापस आ गए हो।"

परन्तु शायद उसने बुरा नही माना। उसके नेत्रो मे अश्रु भर आये। उसकी ठोडी काँपी और वह मेरे सामने झुक गया और उसने अपने घुटनो की सीध मे अपने हाथ फैला दिए फिर बोला :

"निश्चय ही मालिक ! आप मे सही मौके पर सही बात कहने की अद्भुत क्षमता है क्योकि मै बेत की उस मीठी मार को, जब वह पीठ पर या पैरो के पीछे की तरफ पडकर खाल उधेड देती है, भूल ही गया था। आह मेरे मालिक सिन्यूहे ! यह एक ऐसा अनुभव है कि मै चाहता हूँ कि तुम भी इसे देखो और सीखो। मदिरा से, इत्र से और बेत के जगलो मे जल मे तैरती हुई बत्तखो से भी मजेदार और सम्पूर्ण मिस्र की भाषाओ से मधुर स्वर इस बेत मे से निकलता है। मै अब समझ गया हूँ कि मै घर वापस आ गया हूँ—ओह ! देवता के सदृश्य बेत ! तू ही सबको अपने-अपने स्थान पर रखती है—तेरे समान ससार मे और कोई नही है।"

और वह थोडी देर तक रोता रहा फिर अपने उस ताबीज पर तेल मलने चला गया। लेकिन मैने देखा कि अब वह कीमती तैल काम मे नही लाता था। मिस्र की भूमि पास आ चुकी थी और उसे एक बार फिर ध्यान हो आया कि वह गुलाम था।

जब हम निचले साम्राज्य के जबर्दस्त बन्दरगाह पर उतरे तो मुझे जीवन मे पहली बार अनुभव हुआ कि मै विदेशो के रगबिरगे वस्त्रो, घुँघराली दाढियों और भारी शरीरो से कितना ऊब गया था। यहाँ कुलियो की सुँती हुई कमर, उनके कटिवस्त्र, उनकी मुँडी हुई ठोडियाँ, उनकी बोली, उनके पसीने की गध, नदी की कीचड, बेत के पेड, सब सीरिया से कितने भिन्न थे और उन सबसे मेरा कितना लगाव था।

जो सीरियाई वस्त्र मैने पहन रखे थे वे मेरे शरीर मे अब चुभने लग गए और जब मैं बन्दरगाह से कई कागजो पर हस्ताक्षर करके छूटा तो सीधा बाजार गया और वहाँ मैने सूती वस्त्र खरीदकर पहन लिये। मन जैसे एकदम हल्का हो गया। परन्तु कप्ताह सीरियाई ही बना रहा क्योंकि उसे भय था कि कोई 'भागे हुए दासो' मे उसे अब भी न ढूँढ रहा हो, हालाँकि सीरिया से वह एक प्रमाण-पत्र बनवा लाया था कि मैने उसे वहाँ खरीदा था।

फिर हम अपना सामान लेकर नाव मे चढ़े और नील के रास्ते ऊपरी साम्राज्य की ओर चल दिए। मार्ग मे शायद ही किसी बन्दरगाह पर, जहाँ-जहाँ नाव ठहरी, कप्ताह सरायो मे जाकर मदिरा पीकर न आया हो। फिर वह लौटकर मल्लाहो और नाव के कुलियो के सामने अपनी यात्रा की गप्पे हाँकता और मेरे हुनर की प्रशसा करता—लोग उससे खूब मजाक करते।

अब हम प्रतिक्षण मिस्र मे घुसते चले जा रहे थे। नील के किनारे खेतो मे किसान बैलो को हाँककर खेत जोत रहे थे—चिडियाएँ उड़ रही थी—खजूर के पेड लहरा रहे थे, दूर साईकामोर के घने पेडो के झुरमुट के पास कच्ची झोपडियाँ दिखाई देने लगी। वह शायद कोई गाँव था। सब कुछ वैसा ही था जैसा मैं छोड गया था—मिस्र—मेरा मिस्र मुझे अपने अक मे फिर भर रहा था।

और अब सामने थीबीज के शाश्वत प्रहरी—वह तीन पहाड़—पूर्व की ओर खडे दिखाई देने लगे। इमारत पास-पास खड़ी थी—अब गरीबों की झोपड़ियों के स्थान पर उत्तम और ऊँचे मकान दिखने लगे और फिर दिखाई दी नगर की दीवाल जो पहाड़ की भाँति उठी खड़ी थी।

विशाल मदिर, उसके असख्य स्तम्भ, पवित्र झील और दीर्घ प्रासाद दिखाई देने लगे। पश्चिम की ओर मृतको का नगर दूर तक फैलकर पहाडियो की ओर घूम गया था। फराओ का मृत्यु-मदिर सफेद चमक रहा था और महान् साम्राज्ञी के मदिर के स्तभो की पक्तियो के मध्य अब भी असख्य फूल खिले दीख रहे थे। पहाडियो की दूसरी तरफ निषेध घाटी थी जहाँ साँपो और बिच्छुओ के बीच फराओ की कब्र के पास रेत के अन्दर मेरे माता-पिता के शरीर अनत निद्रा मे सोये हुए थे। सुदूर दक्खिन की तरफ नील-जल के किनारे पुष्पो से लदे उद्यानो के बीच फराओ का हवादार सुवर्णगृह खडा था। और मुझे हौरेमहेब की याद हो आई—कही वही तो नही रहने लगा था वहाँ कही ?

नाव जाकर जब किनारे लगी तो मै उस स्थान पर उतरा जहाँ सामने ही मेरा पिता सैन्मट रहा करता था और मेरी आँखो के सामने मेरा बचपन घूमने लगा—यहाँ मैं खेला था—यहाँ मैं बढा था—यही मेरे अच्छे पिता ने मुझे पढाया-लिखाया था और मेरी माता कीपा मुझे यही गर्म-गर्म रोटियाँ कितने प्यार से खिलाया करती थी।

मैने कप्ताह से कहा : "कप्ताह, मुझे यही इस गरीब बस्ती मे, मेरे पिता के मकान के स्थान के पास (क्योकि मकान तो गिरा दिया गया था) ही एक घर खरीद दो—मैं यही रहूँगा, हाँ मेरा सामान इत्यादि आज ही ठीक कर दो जिससे सुबह से ही मैं अपना काम चालू कर सकूँ।"

सुनकर उसका मुँह लम्बा हो गया। परन्तु उसने एक बार केवल मुझे घूरकर देखा फिर सिर लटकाये चला गया। शायद वह सोच रहा था कि मै थीबीज मे जाकर किसी उत्तम स्थान मे जहाँ धनी रहते थे, ठहरूँगा, जहाँ अनेक दास-दासियाँ सेवा करने के लिए हाथ बाँधे खडे रहेगे।

उसी शाम को मै एक छोटे से मकान मे चला गया। इसी को कप्ताह ने मेरे लिए खरीदा था। पहले यह किसी ताँबा गलाने वाले का घर था। जब शाम हुई तो गरीबो के घरो से रोटी सिकने की और मछलियो की गध आने लगी। दूर रगशालाओ मे तेज रोशनी हो रही थी और थीबीज ?—थीबीज उज्ज्वल उल्काओ से आलोकित हो रहा था।

× × ×

दूसरी सुबह मैंने कप्ताह से कहा :

"मेरे घर के द्वार पर एक बहुत ही मामूली तख्ती टाँग दो जिस पर केवल मेरा नाम लिखा हो—और लोगों से कह दो कि मैं हर किसी का इलाज करता हूँ—चाहे वह गरीब हो चाहे अमीर और मूल्य जो भी वह देना चाहे—जो उनके बूते का हो—सो ही लेकर संतुष्ट हो जाता हूँ।—हाँ व्यर्थ ही मेरी प्रशंसा उनके सामने मत करने लगना।"

"गरीबों का इलाज ?" कप्ताह ने आश्चर्य से पूछा : "वैसे हैं तो ठीक ? कहीं बीमार तो नहीं है ? गदला पानी तो नहीं पी लिया है या बिच्छू ने तो नहीं काट लिया तुम्हें ?"

"यदि तुम मेरे साथ रहना चाहते हो तो जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो अन्यथा तुम स्वतंत्र हो चाहे जहाँ जाओ और रहो। मैंने तुम्हें तुम्हारे अब तक के अच्छे कार्य के लिए तुम्हें मुक्त कर दिया है। मेरा विचार है, तुमने वैसे अब तक मेरे पास से काफी माल चुरा लिया होगा जिससे तुम अपना घर बसा सकोगे चाहो तो विवाह भी कर सकोगे।"

"विवाह ? स्त्री ?" कप्ताह ने माथे में बल डालकर आश्चर्य से पूछा . "निश्चय ही मालिक तुम बीमार हो तभी ऐसी बेसिर-पैर की बातें कहते हो। मैं भला स्त्री क्यों लाने लगा जो मेरी जान को बवाल बन जाय ?—छोड़ो इस बात को—चलो पास ही में 'मगर की पूँछ' नामक मदिरालय है—वहाँ अनेक मदिराओं को मिलाकर उत्तम आसव बनाया जाता है जिसे पीते ही तबीयत झटके के साथ फड़क उठती है—चलो वहाँ तुम्हें मदिरा पिला लाऊँ।"

"कप्ताह", मैंने उसी तरह कहा : "हर कोई जब दुनिया में आता है तो नंगा ही आता है और रोग के लिए अमीर, गरीब, मिस्री और सीरियाई सब एक होते हैं।"

"वह तो ठीक है—परन्तु उनके उपहारों में तो अन्तर होता है !" वह बोला, "और फिर ऐसे विचार तो दासत्व भोगते हुए नवयुवकों के होते हैं—मेरे भी होते थे जब तक कि बेंत ने उन्हें न भुला दिया। आप तो दास नहीं हैं फिर इतना उदासी का कारण क्या है ?"

"और सुनो।" मैंने कहा, "यदि मुझे कोई अनाथ बालक मिल गया तो

मेरा विचार उसे गोद ले लेने का है।"

"और वह क्यो ?" उसने फिर प्रश्न किया, "मदिर मे अनाथालय बना ही हुआ है जहाँ ऐसे बच्चे पाले जाते है। वह बडे होकर या तो नीचे दर्जे के पुजारी बना दिए जाते है या फिर फराओ के सुवर्ण-गृह मे स्त्रियो के बीच हिजडे बनाकर भेज दिये जाते है।—हाँ, एक बात मैं कहना चाहता था और वह यह कि एक दासी मोल ले ली जाय तो अच्छा रहे क्योकि मेरे बूढे हाथ-पैरो से अब अच्छी तरह से काम नही होता—वैसे ही मेरे पास काफी काम हो गया है।"

"यह तो मैने अब तक सोचा ही नही था।" मैने उत्तर दिया, "तुम ठीक कहते हो—पर फिर भी मै दासी मोल लेना नही चाहता—तुम चाहो तो किसी स्त्री को नौकर रख सकते हो।"

और फिर मैं बाहर चल दिया।

मैने सोचा अपने पुराने मित्रो से मिल आऊँ। 'सीरियन जार' नामक मदिरालय मे मैंने टोथीमीज़ को ढूँढा। पर वहाँ अब कोई नया किरायेदार रहता था। फिर मै सेना के शिविर मे गया कि हौरेमहेब से मिल आऊँ। परन्तु वह स्थान भी खाली था। न अखाडे मे कोई पहलवान लड रहे थे न भाले वाले निशाना साध रहे थे और न बड़े-बडे पात्रो मे खाना उबल रहा था। सब कुछ वीरान था।

'शारदानाओ' का एक नायक वहाँ अकेला बैठा था। उसने मुझे घूरकर देखा और रेत मे पैर चलाने लगा। उसका मुख बिना तेल लगा सूखा और हड्डी निकला हुआ था और जब मैने उससे हौरेमहेब के बारे मे पूछा तो उसने मुझे झुककर अभिवादन किया। उसने कहा कि हौरेमहेब अब भी मिस्र का सेनापति था परन्तु कुछ समय से कुश देश गया हुआ था जहाँ वह सैनिको को छुट्टी देने गया था। किसी को मालूम नही था कि वह कब लौटने वाला था। मैने उसे एक चाँदी का सिक्का दिया जिसे पाकर वह अपने शारदानापन की याद भूल गया और किसी अपरिचित देवता की शपथ लेकर वह मुस्करा दिया। जब मै जाने लगा तो वह मुझे हाथ उठाकर रोकते हुए कहने लगा

"हौरेमहेब जबर्दस्त आदमी है जो सैनिको का दुख समझता है—वह

निर्भीक है।—वह शेर है—पर फ़राओ विना सीग की वकरी है। शिविर सूने पडे है—न तनखा हे न खाना। मेरे साथी भीख माँगते फिरते है—क्या होने वाला है कौन जाने ? अम्मन तुम्हारा भला करे, तुम वडे अच्छे आदमी हो जो तुमने मुझे चाँदी का सिक्का दिया—मैंने महीनो से मदिरा नही छूई है—भर्ती करने वाले मिस्री पदाधिकारियो ने कहा था कि ढेर सारी चाँदी, वहुत-सी औरते और भर-भर कर पात्र मदिरा मिलेगी—और अव···? न चाँदी है और न औरत, न मदिरा !"

उसने ज़मीन पर थूक दिया। और थूक को पैर से रेत मे रगड दिया। मै चल दिया। मुझे उसके लिए दु:ख हुआ। जिन सैनिकों को पहले फ़राओ के जमाने मे भर्ती किया गया था वह सव उसके पुत्र द्वारा निकाल दिए गए थे।

वहाँ से मैं जीवन-गृह मे गया कि वृद्ध ताहोर के वारे मे जाँच करूँ। पर वहाँ जाकर पता चला कि वह तो मृतकों के नगर मे पहुँच चुका था।

अव मै सीधा मदिर मे जा पहुँचा जहाँ अगणित स्तम्भ खडे हुए थे। अम्मन का यह विशाल प्रागण जहाँ हमेशा भीड लगी रहती थी आज खाली-खाली दिखाई दे रहा था। तेल लगे, उस्तरा फिरे पुजारी लोग आपस मे धीरे-धीरे वाते कर रहे थे।

जव मैं मन्दिर से वाहर आया और फराओ की दैत्याकार मूर्तियो के पास से होकर निकला तो मुझे वगल मे ही एक और नया मन्दिर दिखाई दिया। यह भी काफी वडा था। इसके चारो तरफ कोई दीवाल नही खिची हुई थी। एक खुले मैदान मे एक वाल-स्तंभ पर कुछ फूल, अनाज के दाने और फल इत्यादि पड़े थे। एक दीवाल पर एटोन के सामने फराओ वलि चढाता दिखाया गया था। एटोन मे से किरणे निकल रही थी जिनके अगले छोर पर एक-एक हाथ फराओ को अभय देता दिखाया गया था। इन हाथो मे हर एक मे 'जीवन चक्र' वना हुआ था। वहाँ जितने पुजारी थे सभी नौजवान थे, और उनके सिरो पर केश थे, वह लोग एटोन की स्तुति जव गाते जो उनके मुखो पर असीम आनन्द छा जाता—उसी भाँति जैसे मैंने उस पुजारी के मुख पर देखा था जिसने जैरूसलम मे होरेमहेव और मेरे सामने स्तुति की थी। परन्तु इन सभी से अधिक आकर्षक वहाँ चालीस

दीर्घ प्रस्तर के स्तभ थे। इनमे हर एक मे वर्तमान फराओ की हू-ब-हू मूर्ति गढी हुई थी। वह मूर्तियाँ ऐसी बनी थी कि एक साथ सभी दर्शको को देखती थी। फराओ सीने पर हाथ बाँधे खडा था—हाथो मे उसके शासन का दण्ड तथा काँटा था।

फराओ की हू-ब-हू मूर्तियाँ देखकर जिनमे वह जैसा था बिल्कुल वैसा ही दिखाया गया था, मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ क्योकि ऐसी कला तो मेरे मित्र टोथीमीज की ही थी। अम्मन के मन्दिर मे तो फराओं की मूर्तियाँ देव-तुल्य सुन्दर बनाई जाती थी। और यहाँ जैसा बेडौल वर्तमान फराओ का वैसा ही दिखाया गया था। वही पतली-पतली टाँगे, मोटी जाँघे, इठी हुई गर्दन और उभरी हुई गाल की हड्डियाँ प्रत्यक्ष लग रही थी। और सभी मूर्तियो मे वही व्यग्यात्मक मुस्कान खेल रही थी जो दिन मे स्वप्न देखती-सी लगती थी। मेरा अन्तर उन्हे देखकर काँप उठा क्योकि यह पहली बार था कि चौथा ऐमनहोटप अपने वास्तविक रूप मे गढा गया था। निश्चय ही उनका बनाने वाला शिल्पी मिस्र भर मे अपूर्व साहसी व्यक्ति होगा।

मन्दिर मे ज्यादा भीड नही थी। कुछ राजसी वस्त्र और जवाहरात जडे कठे पहिने हुए लोग वहाँ थे जो फराओ के घराने के मालूम पडते थे। मामूली आदमी पुजारियो के भजनो को सुन रहे थे परन्तु लग रहा था जैसे उनकी समझ मे कुछ भी नही आ रहा था। क्योकि यह भजन अम्मन के भजनो से बिल्कुल भिन्न थे—जिन्हे लोग दो हज़ार सालो से—जब पिरै-मिड बनी थी—सुनते आये थे। हालाँकि उनका अर्थ भी वह नही जानते थे फिर भी वह उन्हे कठस्थ थे।

और जब प्रार्थना हो गई तो एक वृद्ध जो वस्त्रो से गाँव का रहने वाला लगता था श्रद्धा से आगे आया और उसने एक पुजारी से एक तावीज माँगा। लोग मन्दिरो मे तावीज़, रक्षक चक्षु या जादू किया हुआ कागज़ का टुकडा मामूली दामो मे लेने आया करते थे—यह प्रथा प्रचलित थी। पुजारियों ने उस वृद्ध से कहा कि उस मन्दिर मे इस प्रकार की वस्तुएँ नही मिलती थी क्योकि एटौन को जादू, भेट, बलि इत्यादि की कभी आवश्यकता नही होती थी। वह तो उसके पास जो उस पर भक्ति रखते थे, वैसे ही आ जाता था।

सुनकर वृद्ध नाराज हो गया और वडवड़ाकर उनकी मूर्खता को कोसता हुआ वाहर चला गया और मैंने देखा कि वह सीधा अम्मन के मन्दिर की तरफ चला गया।

फिर एक मछली वेचने वाली वुढिया आई और पुजारियों की ओर श्रद्धा से झुकती हुई कहने लगी :

"क्या कोई एटौन को मैंढे या वैल भेंट मे नही चढाता ? तुम जवान आदमी कितने दुर्वल हो रहे हो ? यदि तुम्हारा एटौन अम्मन से भी ज्यादा शक्तिशाली है, जो मुझे तो नही लगता, तो उनके पुजारियो को तो खूब मोटा-ताजा और चुपड़ा होना चाहिए।"

सुनकर पुजारी लोग हँसे और आपस मे शैतान लड़को की तरह फुस-फुसाने लगे परन्तु उनमे सबसे वड़े ने गम्भीर वनकर कहा :

"एटौन रक्त की वलि नही माँगता।—एटौन के मन्दिर मे अम्मन का नाम लेना ठीक नही है क्योंकि वह झूठा देवता है—उसका साम्राज्य शीघ्र छिन्न-भिन्न हो जाएगा—उसका मन्दिर खडहर वन जाएगा—"

वुढिया भय से घवराकर पीछे हट गई और पृथ्वी पर थूककर जल्दी-जल्दी अम्मन का चिह्न वनाकर चिल्लाई : 'यह तुमने कहा था—मैंने नही कहा था—शाप तुम्हे ही लगेगा !"

और वह शीघ्रता से वाहर चली गई। उसके साथ और भी वहुत से लोग निकल चले। लेकिन पुजारी समवेत स्वर से हँसे और वोले : "जाओ, क्योंकि तुममे विश्वास की कमी है—परतु याद रखो कि अम्मन झूठा देवता है, अम्मन केवल एक मूर्ति है और उसका साम्राज्य ऐसे ही कटकर गिर जाएगा जैसे हँसिये के नीचे घास गिर जाती है।"

और तव जाते हुओ मे से एक घूमा और उसने एक पत्थर उठाकर निशाना साधकर एक पुजारी के मारा। पत्थर उसके मुँह पर आकर लगा और रक्त वहने लगा। वह मुँह ढँककर वुरी तरह रोने लगा और अन्य पुजारी लोग सैनिको को वुलाने लगे। परन्तु मारने वाला भीड़ मे मिलकर भाग गया था।

इस सवको देखकर मैं चिन्तित हो उठा। पुजारियो के पास जाकर मैने कहा : "मै मिस्री हूँ परन्तु अभी तक सीरिया मे रहा हू। आप कृपया मुझे

अपने देवता के बारे मे बताएँ—वह है कौन, क्या चाहता है और उसकी पूजा कैसे की जाती है ?"

पहले उन्होने समझा मै व्यग कर रहा हूँ परन्तु फिर कहा : "एटौन ही असली देवता है। उसी ने धरती और नदी, मनुष्य और जन्तु और जो कुछ भी इस पृथ्वी पर है, सब बनाया है। वह शाश्वत है और अपने प्रारम्भिक पुत्र फ़राओ को दिखाई दिया था—वह फराओ जो सत्य के लिए प्रादुर्भाव मे 'रा' के नाम से पूजा जाता था। परन्तु वह एटौन के रूप मे ही रहता है। एटौन ही केवल देवता है बाकी सब तो मूर्तियाँ है। उसके लिए सभी 'गरीब', अच्छे-बुरे--सब एक-से है और वह सभी पर अपना प्रकाश डालता है--हरएक को जीवन प्रदान करता है। वह सभी जगह मौजूद है और उसकी इच्छा के बिना कुछ भी नही हो सकता।

वह शाश्वत है और उसकी कृपा से फराओ--उसका पुत्र--हर किसी के हृदय को पुस्तक की भाँति पढ सकता है।"

"फिर तो वह मनुष्य नही है।" मैंने विरोध किया।

उन्होने आपस मे सलाह की फिर उत्तर दिया, "हालाँकि फराओ स्वय मनुष्य ही रहना चाहता है--फिर भी हमे तनिक भी सन्देह नही है कि वास्तव मे वह दैवी शक्ति लिये हुए है। और यह इससे पता चलता है कि थोडे ही समय के अन्दर वह अपने कई जीवनो की बाते देख सकता है। लेकिन, यह उन्ही को पता चल सकता है जिन्हे वह प्रेम करता है--और इसीलिए कलाकार ने उसे इन स्तम्भो पर पुरुष और स्त्री, दोनो रूपो मे दिखाया है क्योकि एटौन एक जीवित शक्ति है, पुरुष के बीज को शीघ्र अकुरित करके स्त्री की कुक्षि से बच्चे को बाहर निकाल लाता है।"

और तब मैने व्यग्यात्मक रूप से हताश होते हुए हाथ उठाकर कहा .

"मैं तो एक बिल्कुल ही भोला आदमी हूँ—शायद उस बुढिया से भी भोला जो अभी गई है और मेरी समझ मे तुम्हारी बाते नही आ रही है। इसके अतिरिक्त मुझे ऐसा लगता है कि खुद तुम्हारी समझ मे भी पूरी तरह से यह धर्म नही आया है क्योकि मुझे उत्तर देने के पूर्व तुम्हे आपस मे सलाह करनी पडती है।"

वह बोले : "जिस प्रकार सूर्य की थाली पूर्ण है, उसी प्रकार एटौन भी

पूर्ण है और जो कुछ भी उसके साम्राज्य मे है--साँस लेता है और जीवित है--वह सभी पूर्ण है। मनुष्य के विचार अपूर्ण और कुहासे की तरह है और इसीलिए हम तुम्हे सभी बातो का उत्तर नही दे सकते क्योंकि हम स्वयं अपूर्ण है और दिन-पर-दिन हमे सीखना-ही-सीखना है। केवल फ़राओ को ही उसका पूरा ज्ञान है--फराओ को--जो उसका पुत्र है और जो सत्य के सहारे ही रहता है।"

और जब मै लौटा तो मेरे हृदय मे तूफान उठा हुआ था। मैंने स्वय से पूछा:

"क्या फराओ और उसके पुजारियों को अतिम सत्य मिल गया था? क्या उसी का नाम एटोन था ?"

जब मै घर लौटा तो शाम हो चुकी थी—मेरे घर के द्वार पर मेरे नाम की तख्ती लटक रही थी और बाहरी प्रागण मे कुछ रोगी मेरी प्रतीक्षा मे बैठे थे जो देखने मे सभी निर्धन लगते थे, कप्ताह एक नई मदिरा की बोतल लिये हुए खजूर के पत्ते से मक्खियाँ उड़ाता हुआ एक तरफ चुपचाप बैठा था।

मैने अन्दर जाकर सबसे पहले उस स्त्री को बुलवाया जो एक सूखे हुए बच्चे को लिये हुए थी। इसका इलाज केवल कुछ ताँबे के सिक्को से भोजन खरीदकर खाना था कि वह अपने बच्चे को दूध पिला सके। सो मैंने कर दिया—फिर एक दास की उँगलियाँ मैंने जोड़कर बाँध दी जो चक्की मे पिस गई थी। फिर एक लेखक आया जिसकी गर्दन पर एक बड़ा-सा गोला उठ आया था, उससे उसकी साँस भी ठीक तरह से नही चल पाती थी। ऐसे रोगो का इलाज मैंने स्मर्ना मे सीखा था। जब वह जाने लगा तो उसने एक साफ कपडे मे बँधे ताँबे के दो सिक्के मेरी ओर बढाये। प्रत्यक्ष था कि वह अपनी गरीबी पर लज्जित था। मैने उन्हे उसी को लौटा दिया और कहा कि कभी लिखाई में चुका लूंगा।

फिर पास ही रगशाला मे मे एक युवती आई जिसकी आँखे दुखती थी और जिससे उसके पेशे मे हानि होती थी। मैंने उसकी आँखे साफ की और उनमे दवा डाली। वह झेपती हुई मुझे दाम चुकाने मेरे सामने नगी

खडी हो गई क्योकि उसके पास देने को और कुछ नही था। मैंने उसे मना करके दु ख पहुँचाना उचित न समझकर कहा कि मुझे उन दिनो किसी विशेष उपचार के कारण स्त्रियो से दूर रहना पड रहा था। उसने मेरी बात का विश्वास कर लिया और मेरे नियमित अनुशासन से वह प्रभावित हुई। फिर मैंने उसकी जाँघो और पेट पर, जहाँ त्वचा बिगडकर सूजी हुई-सी थी, दवा लगाकर हल्के नश्तर लगाये, जिससे उसको पीडा भी नही हुई और उसकी कुरूपता भी मिट गई। वह मेरी प्रशसा करती हुई चली गई।

इस प्रकार मेरी पहले दिन की आमदनी से नमक भी नही खरीदा जा सकता था। जब कप्ताह ने मुझे थीबीज के रुचिकर तरीके से मोटी पकी हुई बत्तख खाने को दी तो वह मुँह बिचकाने लगा। उसके बाद रगीन काँच के पात्र मे उसने मुझे अम्मन के बगीचो मे तैयार की हुई बेहतरीन मदिरा पिलाई।

उसने फिर इतमीनान से बैठते हुए कहा : "मेरा विचार है आज से तुम्हारा यश फैलने लग जाएगा और कल सुबह तक तुम्हारा प्रागण मरीजों मे खचाखच भर जायेगा—मैंने अभी कुछ भिखारियो मे आपस मे बाते करते हुए सुना था।" वह कह रहे थे, "उस कोने मे ताँबा गलाने वाले के घर जल्दी चलो—वहाँ एक वैद्य आया है जो बडी होशियारी से और बिना पीडा किये उत्तम इलाज करता है। वह इलाज के दाम तो लेता ही नही है बल्कि गरीबो को धन भी दान देता है। उसने रगशालाओ की वेश्याओ के शरीरो की कुरूपताएँ चीरा-फाडी करके दूर कर दी है और बदले मे उनसे भी कुछ नही लिया है। जल्दी चलो क्योकि जो पहले पहुँच गया वही फायदे में रहेगा—क्योकि यह तो निश्चय है ही कि वैद्य को शीघ्र ही अपना मकान बेच-बाचकर कही और भाग जाना पडेगा।"

मै सुनकर हँस दिया। वह फिर बोला

"लेकिन वह सब मूर्ख है। उन्हे क्या मालूम कि तुम्हारे पास कितना सोना है। पूरी ज़िन्दगी इसी तरह मुफ़्त इलाज करो तो भी आराम से दोनों वक्त मोटी बत्तख खाओ और उत्तम मदिरा पीओ—कोई घाटा नही है—लेकिन हर रोज तुम एक-से नही रहते--तुम्हारे मस्तिष्क मे तूफान आते

रहते हैं। यदि किसी दिन तुमने यह मकान मुझ सहित किसी को वेच दिया या मुफ्त दे दिया तो भी मुझे आश्चर्य नही होगा अतएव यदि मेरी दासत्व से मुक्ति जो तुमने कृपा करके की है—लिखित मे आ जाय तो अच्छा रहेगा—क्योकि लिखित के सामने जुबानी बातो का कोई मूल्य नही होता। इसके अतिरिक्त एक कारण और भी है जिसे मै इस समय कहकर तुम्हे तग नही करना चाहता।"

वह पतझड़ की सुहावनी संध्या थी। कच्ची झोपडियो के सामने उपले जल रहे थे। वन्दरगाह से सिडार की लकडी और सीरिया के सुगन्धित जल की खुशवू आ रही थी। भुनी मछलियो की खुशवू के साथ एकेशिया वृक्षो की सुगन्ध मिलकर एक विचित्र वातावरण पैदा कर रही थी। मैंने तो मोटी वत्तख खाई थी—और मैं वेहद खुश था। मैंने कप्ताह से कहा कि वह भी मेरे साथ अपने मिट्टी के पात्र मे पिये, फिर कहा :

"कप्ताह, तुम स्वतन्त्र हो—कल राजा के लेखक तुम्हारी स्वतत्रता का प्रमाण-पत्र लिख देंगे। परन्तु यह वताओ कि तुमने मेरा सोना कहाँ रखा है ? कौन से व्यापार मे लगाया है ? क्या मन्दिर के खजाने मे रख दिया है ?"

"कभी नही।" वह वोला : "वहाँ रखने से तो उल्टा नुकसान ही है। प्रथम तो मन्दिर वाले उसकी चौकसी के लिए ही धन मांगते है फिर वहाँ रखने से कर वसूल करने वालो को पता चल जाता है कि जमा करने वाले के पास कितना धन है। मैंने पूरे नगर मे चक्कर लगाया है--और जांच की है--अम्मन आजकल जमीन वेच रहा है।"

"झूठ !" मैंने कहा : "अम्मन कभी नही वेचता—वह तो खरीदता है। उसने हमेशा से खरीदा है और देश की चौथाई भूमि का वह स्वामी है, और जो उसका एक वार हो गया वह फिर उसी का रहता है।"

"ठीक है, ठीक है।" कप्ताह ने कहा और मदिरा ढाली। फिर कहा : "भूमि मे लगाया हुआ धन शाश्वत रहा आता है—इसे कौन नही जानता वशर्ते कि हर वाढ के उतर जाने पर राजकर्मचारी मित्र वने रहे—लेकिन यह सच है कि अम्मन भूमि वेच रहा है और छिपकर अपने भक्तो को वेच रहा है, वह भी सस्ती। तुम तो जानते हो कि अम्मन के पास उत्तम भूमि

है और ऐसी भूमि मोल लेने मे फ़ायदा ही फायदा है। अब तक अम्मन की बहुत भूमि बिक चुकी है और ठोस सोना तँखानो मे जमा किया जा चुका है।"

"मुझसे यह मत कहना कि तुमने भी उसमे कुछ भूमि खरीद ली है।" मैंने आँख घुमाकर कहा—

"मै कोई मूर्ख थोडे ही हूँ ?" वह बोला, "अम्मन की भूमि मे जो इस बिक्री मे जो इतनी अच्छी और लाभप्रद दिख रही है कही न कही गीदड छिपा हुआ जरूर बैठा है—पर है यह सारा झगडा फराओ के नये देवता के ही कारण--लेकिन मैंने तो तुम्हारा लाभ देखते हुए कई इमारते तुम्हारे लिए खरीद ली है--मकान, दुकान इत्यादि जिनका सालाना किराया भी काफ़ी आ जाया करेगा--मैने उन्हे बहुत ही सस्ते दामो मे खरीदा है।"

आगे उसने यह भी बतलाया कि वह अनाज का व्यापार करने की सोच रहा था। फिर उसने मुझे और लाभप्रद योजना बताई और वह थी दासो के व्यापार की। पर मैंने जब मना कर दिया तो उसने स्वय भी सतोष की साँस ली क्योकि हृदय से वह भी उस कार्य को नही करना चाहता था।

बाद मे जब उसने 'मगर की पूँछ' चलने को कहा तो मै ठहाका लगा-कर हँस दिया। मुझे वह सब उस दिन बहुत अच्छा लग रहा था, क्योकि मदिरा ने मुझे हर्षित कर दिया था।

वन्दरगाह की घनी बस्ती मे बडी-बडी दुकानो और गोदामो से घिरा हुआ एक अँधेरी-सी गली मे 'मगर की पूँछ' नामक मदिरालय था। इसकी ईंटो की दीवाले काफी मोटी थी जिससे गर्मियो मे यह ठडा और जाडो मे गर्म रहता था। मुख्य द्वार के ऊपर एक सुखाया हुआ मगर लटक रहा था जिसकी काँच की आँखे और फूले हुए जबडे मे अनेक दाँतो की पक्तियाँ दिखाई दे रही थी। कप्ताह मुझे उत्सुक होकर अन्दर ले गया और मालिक-दुकान को बुलाकर अच्छी गद्दियों वाली कुर्सियो की तरफ चला। मैने बैठने के उपरान्त आश्चर्य से देखा कि वहाँ की दीवालो और भूमि पर लकडी जडी हुई थी और साथ ही साथ चारो ओर लम्बी समुद्री यात्राओ से प्राप्त

पारितोषिक सजे रखे थे जिनमे हब्शियो के भाले, परो की कलगियाँ, घोघे और शख इत्यादि थे, और क्रीट के चित्रित पात्र भी रखे थे।

कप्ताह को वहाँ सब जानते थे। जब उसने मेरी दृष्टि देखी तो गर्व से मुस्कराता हुआ कहने लगा : "निश्चय ही तुम्हे इन्हे देखकर आश्चर्य होगा क्योकि यह केवल धनी व्यक्तियो के घरो पर लगे रहते हैं। पर जान लो कि यह पुराने जहाजो की लकडियाँ है। यह जो सामने पीली लकडी है यह पत के देश तक आई है--और यह भूरी सीरिया तक--अब कहो तो मदिराओ को मिलाकर बनाया हुआ उत्तम पेय पिया जाय जिसे यहाँ के मालिक ने अपने हाथ से हमारे लिए बनाया है।"

शख की भाँति चक्करदार एक सुन्दर फैला हुआ गिलास मुझे दिया गया जिसे हथेली खोलकर लिया जा सकता था, मैने उसे बिना देखे ही ले लिया क्योकि मेरी दृष्टि उस स्त्री को देखने मे अटक गई थी जो उसे लाई थी। वह आम तौर पर सरायो मे परोसने वाली लडकियो की भाँति युवती तो न थी और न वह अधनगी ही थी कि जिसके नगे शरीर को देखकर ग्राहक खिचे चले आवे, वह कायदे के वस्त्र धारण किये हुए थी और उसके कानो मे चाँदी की बालियाँ और नाजुक कलाइयो मे चाँदी की चूड़ियाँ थी, उसने मेरी ओर निर्भीकता से देखा और तनिक भी नही शर्माई जैसे कि आम तौर पर स्त्रियाँ आँखे झुका लेती है। उसकी भँवो के बाल उखड़े हुए थे और वह कमानदार थी, भूरे नेत्रो मे मुस्कराहट और दर्द दोनों का विचित्र सम्मिश्रण था—वह सुन्दर चमकदार नेत्र थे—वह पूरी तरह देखने मे सुन्दर, स्वस्थ और लुभावनी लगती थी।

उसके नेत्रो मे देखते हुए मैने उससे पूछा "हे सुन्दरी! तुम्हारा क्या नाम है?"

वह धीमे स्वर मे बोली : "मेरा नाम 'मैरिट' है—परन्तु मुझसे शर्मीले युवको की भाँति सुन्दरी कहना उचित नही है खासकर जब वह किसी लडकी की जाँघे सहलाना चाहते हो—मुझे आशा है कि आप अबकी बार जब भी यहाँ आयेगे तो इस बात को ध्यान में रखेगे—सिन्यूहे वैद्य—तुम जो एकाकी हो।"

आश्चर्यचकित होकर मैने पूछा : "परन्तु मेरा तो ऐसा कोई विचार

नही था कि तुम्हारी जाँघे सहलाऊँ ! और तुम्हे मेरा नाम किसने बतला दिया ?"

वह मुस्कराई और वह मुस्कराती हुई बहुत अच्छी लगी फिर व्यंग्यात्मक स्वर से कहने लगी : "तुम्हारा यश तुमसे पहले यहाँ आ पहुँचा है—जगली गधे के पुत्र ! और तुम्हे देखकर तो मुझे अब पता लगता है कि तुम्हारा यश झूठ नही बोला था—बल्कि अक्षरश: सही था।"

और मै उसकी दी हुई मदिरा को पी गया—और पीते ही मेरा सिर गर्म हो गया—गला चटपटाने लगा और ऐसा लगा कि मुझमे अग्नि ने प्रवेश पा लिया है। मैं सामने रखे कमल के भुने हुए बीजो को खाने लगा—मुझमे एक विचित्र स्फूर्ति आ गई और मुँह नमकीन हो गया। मुझे मेरा शरीर चिडिया की भाँति हल्का लगने लगा। मैने कहा

"सैट और सम्पूर्ण शैतानो की कसम ! जाने किस विधि से यह पेय बनाया गया है ! अद्भुत है इसकी रुचि और आश्चर्यजनक है इसका असर--परन्तु यह मेरी अभी तक समझ मे नही आया कि यह जो जादू मुझ पर हो गया है, यह इस मदिरा का है या मैरिट ! तुम्हारी मद भरी आँखो का मेरी भुजाओ मे अब जादू बह रहा है और मेरा हृदय एकदम जवान हो गया है। यदि अब मैं तुम्हारी जाँघे सहलाने लग जाऊँ तो आश्चर्य न करना क्योकि वह मेरा नही इस प्याले का दोष होगा।"

वह पीछे हट गई और हाथ उठाकर व्यग्य करती हुई कहने लगी—मैने देखा वह छरहरे शरीर वाली स्त्री अत्यन्त लुभावनी लग रही थी। बोली : "तुम्हे इस प्रकार यहाँ, जो एक अच्छी सराय है—भले लोगो का तदूरखाना है—कसम खाते हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता है और फिर मैं इतनी वृद्धा भी नही हूँ और कौमार्य भी मेरा नही खोया है—हालाँकि शायद तुम इसका विश्वास न करो—कि तुम चाहे जैसे मेरे सामने कसम खाओ। रह गई यह मदिरा बनाने की विधि—वह मेरे पिता की मेरे लिए देन है कि जब मै विवाह करके चली जाऊँ तो अपने पति को इसे बतला दूँ। और इसी कारण तुम्हारे इस दास ने मुझे इतने दिन फसलाने की चेष्टा की है। पर यह काणा और वृद्ध है और निश्चय ही मुझ-जैसी पूर्ण तरुणी इसमे आनन्द प्राप्त नही कर सकती—अब इसके पास सिवाय इस तन्दूर-

खाने के खरीदने के और कोई चारा नही रह गया था—और इसे मोल लेने के वाद अब यह इस विधि को भी मोल लेना चाहता है, पर इसके बताने के पहले इसे हमे काफी सुवर्ण देना होगा।"

कप्ताह मुँह वना-वनाकर पूरे समय उसे चुप कराने की चेष्टा कर रहा था। और तभी मुझे पता चला कि कप्ताह ने उस तदूरखाने को खरीद लिया था। थोडी देर वाद जब मैंने उससे उस व्यापार की हानि-लाभ के बारे मे पूछा तो वह वोला :

"चाहे फराओ की शक्ति हिल जाय, चाहे देवताओ के सिंहासन हिल उठे—पर मनुष्य के कठ मे प्यास की चटक तो हमेशा बनी ही रहेगी—और लोग यहाँ पीने-खाने तो आएँगे ही—मनुष्य खुशी मे और दुख मे, दोनो मे मदिरा पीता है। फिलहाल तो मैरिट का पिता और मै साझी रहेगे और यही जादूगरनी इस पेय को बनाती रहेगी—मैरिट का पिता अम्मन का भक्त भी है और हर उत्सव मे वहाँ बलि भी चढाता है—यहाँ अम्मन के पुजारी भी कभी-कभी आते है—शायद उन्हे खुश रखने को ही वह ऐसा करता हो—पर यह सब जानते है कि यह अम्मन दल का आदमी है। लेकिन मुझे सतोष तो इस वात का है कि मेरे इस काम से तुम्हे भी खुशी है···।"

जब हम वहाँ से चलने लगे तो द्वार के पास अँधेरे मे मैंने मैरिट की स्निग्ध जंघा पर हाथ डाला पर उसने मेरा हाथ झटक दिया और कहा : "तुम्हारा स्पर्श शायद मुझे अच्छा लगने लगे परन्तु तव नही जब तुम इस मदिरा के नशे मे झूमते होओ—"

मैंने अपने हाथ फैलाकर देखे और मुझे वह मगर के हाथो जैसे कुरूप दिखाई देने लगे।

थीबीज़ के गरीवों के मुहल्ले मे मेरे दिन वीतने लगे। कप्ताह की भविष्यवाणी सच निकली क्योकि मै जितना कमाता था उससे ज्यादा खर्च कर देता था। परन्तु फिर भी न जाने मुझे क्यो एक विचित्र आत्मसतोष होता था।

कप्ताह ने घर के काम-काज के लिए एक वृद्धा नौकर रख ली थी।

वह ऐसी लगती थी जैसे जीवन से ऊब चुकी हो परन्तु वह वकवक बिल्कुल नही करती थी। उसका नाम मूती था।

महीने-पर-महीने निकल गये और थीवीज की अशाति बढती ही गई। हौरेमहेब के लौटने का कोई समाचार नही मिल रहा था। गर्मी की ऋतु आ रही थी और सूर्य का ताप उग्र हो गया था। कभी-कभी मै कप्ताह को साथ लेकर 'मगर की पूँछ' मे मैरिट से दिल्लगी करने चला जाता था हालॉकि वह मुझसे खिची-खिची ही रहती थी। मैने देखा कि उस स्थान मे हर किसी का स्वागत नही किया जाता था। यहाँ के ग्राहक गिने-चुने थे और उनमे हालाँकि वहुत से तो गिरहकट, चोर और डाकू भी थे, परन्तु यहॉ आकर वह सव गम्भीर वन जाते और अत्यन्त भद्र व्यवहार करते थे। जितने लोग आते थे उन सबका आपस मे कोई-न-कोई सम्बन्ध होता और हर किसी का एक-दूसरे से कोई-न-कोई काम होता। केवल मै ही एक ऐसा था जिससे किसी का कोई काम नही होता था—परन्तु मै कप्ताह का मित्र था—

यहाँ फराओ का गुणगान होता तो उसको गालियॉ भी दी जाती, उसके नये देवता का उपहास किया जाता—

एक शाम एक गन्धी तद्दूरखाने मे आया। उसके वस्त्र फटे हुए थे और केशो मे राख लगी हुई थी। वह अत्यन्त उदास लग रहा था और अपने दुख को 'मगर की पूँछ' के पेय मे डुबोने आया था। वह चिल्लाने लगा :

"इस नकली फराओ का नाश हो—इस जारज, इस लुटेरे का नाश हो जो अपनी इच्छा के अनुसार आज्ञा देता फिरता है। हमेशा से जहाज अन्य देशो को व्यापार के लिए जाते रहे है और उनमे से अधिकतर साल-के-साल मुनाफा लेकर लौटते भी रहे हैं, परन्तु अव इससे और अधिक मूर्खता और क्या होगी कि फराओ स्वय बन्दरगाह पर गया और उसने जब देखा तो मल्लाहो और उनके परिवारो को वहॉ रोते पाया। मल्लाहो को तो डर लगा ही रहता है कि जाने लौटेगे कि नही—वस उन्होने तेज पत्थरो से मुँह खुरच डाले और लहूलुहान होकर फराओ के सामने रोने लगे। फराओ ने वजाय उन्हे पिटवाकर सही रास्ते पर लाने के उल्टे यह

आज्ञा दे डाली कि अब से कोई जहाज़ पत के देश को जायेगा ही नही—अम्मन हमारी रक्षा करे ! अब तो सभी व्यापारियो के कारोबार ठप्प हो जाएँगे—मालनोदा मे माल रखा ही रह जायेगा—मिट्टी के सुन्दर पात्र, काँच के बर्तन सब व्यर्थ ! कुछ भी बाहर नही भेजा जा सकेगा—मिस्री आढतिये भूखे मर जायेगे !"

वह बकता रहा—परन्तु जब तीसरा गिलास उसके कठ से नीचे उतर गया तो वह मुस्कराया, फिर कहने लगा : "साम्राज्ञी ताया को तो आर्यी (पुजारी) की सलाह लेकर फराओ को रोकना चाहिए कि वह मनचाही आज्ञाएँ देकर लोगो को परेशान न करे !—और—और—"

फिर वह इधर-उधर देखकर बोला—

"—यह जो नेफरतीती है—इसे बस वस्त्रो का ही सदा ध्यान बना रहता है—अब दरबार मे स्त्रियाँ आँख के चारो ओर हरा रंग लगाती है और नाभि से नीचे नगी घूमती है—खासकर पुरुषो के सामने ।"

कप्ताह ने आश्चर्य से पूछा : "मैंने किसी भी देश मे ऐसी पोशाक नही देखी है—तो क्या तुम्हारा मतलब है कि अब स्त्रियाँ अपने छिपे अंगो को खोलकर चलती हैं ? और साम्राज्ञी भी ?"

गवी सुनकर नाराज होकर बोला : "मैं एक शरीफ़ आदमी हूँ जिसके घर मे स्त्री-बच्चे सब है, मै भला किसी स्त्री की नाभि से नीचे देखने ही क्यो लगा—और तुम्हे भी ऐसा नही करना चाहिए ।"

"शर्मनाक तो तुम्हारा मुँह है जो ऐसी घृणित बाते करते हो न कि गर्मियो के मौसम के लिए बनायी गयी यह पोशाक जो इतनी ठडी और सुखकर रहती है—इससे स्त्री की सुन्दरता भी अच्छी दिखायी देती है बशर्ते स्त्री का पेट इत्यादि सुगठित और सुन्दर हो। तुम नीचे भी आँखे चलाकर देख सकते थे क्योकि नीचे उत्तम महीन वस्त्र की पतली पट्टी लगी रहती है जिससे कोई बेअदबी नही रह जाती ।"

जब कप्ताह और मै चलने लगे तो मैंने मैरिट से द्वार के पास कहा :

"मैं तो एकाकी हूँ ही पर तुम्हारी आँखें मुझसे कहती है कि तुम भी एकाकी हो। तुम्हारी कही हुई बातो को मैंने सोचा है और मै भी विश्वास करने लगा हूँ कि कभी-कभी झूठ सच से अधिक सुखकर लग सकता है यदि

व्यक्ति एकाकी हो। तुम सुन्दर और स्वस्थ हो। यदि तुम ऐसी नयी पोशाक पहिनने लगो तो निश्चय ही सुदरी दिखाई दोगी और तब जब तुम मेरे साथ मैढो वाले राजपथ पर चलोगी तो निश्चय ही तुम्हे अपने सौंदर्य पर गर्व हो उठेगा।"

उसने अब की मेरा हाथ नही झटका बल्कि मेरे हाथ पर हाथ रखकर अपनी जांघ पर उसे दबा लिया। और उच्छ्वासित स्वर से बोली : "जैसे तुम कहोगे वैसे ही होगा।"

फिर भी, जब मैं बाहर आया तो मुझे दुनिया रगीन दिखायी नही दी। दूर नदी तट से कोई दुःख भरे स्वर मे बाँसुरी बजा रहा था।

दूसरी सुबह हौरेमहेब थीबीज को लौट आया और उसके साथ एक सेना भी आयी। परन्तु उसके बारे मे कहने से पहले मै यह बतला दूं कि इस बीच मैने दो स्त्रियो के सिर खोले। उनमे से एक अपने आपको महान साम्राज्ञी हतने हतशेप्सत समझती थी। दोनो ही मरीज ठीक हो गये। निश्चय ही वह ठीक होकर पहले से अधिक आनन्द का अनुभव करती होगी।

१०

जब हौरेमहेब लौटा उस समय ग्रीष्म ऋतु चरम सीमा को पहुँच रही थी। तालाबो मे पानी सूख गया था और टिड्डियो ने फसलो पर हमला कर दिया था। चिडियाँ नदी की कीचड मे घुस चुकी थी, परन्तु धनिको के उद्यान अब भी हरे-भरे और ठडे थे और मैढो वाले राजपथ के दोनो ओर इन्द्रधनुषी-सी रगो के विविध पुष्प खिले रहते थे। केवल गरीबो पर धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर फराओ का स्वर्णगृह हरा-भरा लगता और उस ग्रीष्म ऋतु के धुँधले आकाश की पृष्ठभूमि मे दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत

होता था। हालाँकि गर्मी अब काफी तेज थी फिर भी अबकी बार फराओ निचले साम्राज्य मे अपने गर्मी के महलो मे नही गया था और थीबीज मे रुका हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय लगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार तूफ़ान के पहले आकाश मे अँधेरा छा जाता है वैसे ही लोगो के हृदयो मे भय और आतक के काले बादल छाये हुए थे।

थीबीज के राजपथो पर धूल से मैली ढाल लिये और चमचमाते हुए शिरस्त्राण पहने हुए सैनिक नित्य कवायद करते हुए निकलते और उनके हाकिम अपने घोडो पर कलगियाँ लगाये हुए ऐंठते हुए चले जाते। छावनी मे फिर से बडे-बडे पात्रो मे लाल किये हुए पत्थर पटके जाते और उनमे खाना पकाया जाता। परन्तु कही भी मिस्री सैनिक दिखाई नही देता था —जो थे सब या तो न्यूबियन थे जो दक्षिण से आये थे अथवा उत्तर-पश्चिम के रेगिस्तान से शारदाना लोग थे जो निर्दय होकर हत्या कर सकते थे। सभी काले-काले भयानक लगते थे।

नदी का मार्ग राजाज्ञा से बद कर दिया गया था और सेना ने महा-नगर मे अपना शासन प्रारम्भ कर दिया था। चतुष्पथो पर अलाव जलते रहते और पहरे लगा करते। धीरे-धीरे कारख़ानो मे काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानो से सामान उठाकर गोदामो मे बन्द करने लगे और तंदूरखानो पर हट्टे-कट्टे जवान ज्यादा तादाद मे नौकर रखे जाने लगे। लोग श्वेत वस्त्र धारण किये अम्मन के मदिर मे इकट्ठे होने लगे। वहाँ इतनी भीड लगने लगी कि भीतरी तमाम प्रागण भर कर बाहरी तोरण के भी बाहर लोगो के ठट्ट के ठट्ट जमा रहते थे।

और इसी बीच एक दिन हल्ला उड़ा कि रात के अवसान मे एटौन का मदिर अपवित्र कर दिया गया था। किसी ने वहाँ के बलि स्तभ पर, जहाँ नित्य पुष्प, अनाज इत्यादि चढाये जाते थे, एक कुत्ते की सडी हुई लाश रख दी थी और वहाँ के चौकीदार का गला कान से कान तक फाड डाला था। लोगो मे जब यह समाचार फैला तो आतक छा गया परन्तु बहुत से मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

"अपने औज़ार साफ करके तैयार रख लो मालिक," मुझसे कप्ताह ने

कहा, "क्योकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा —शायद दो-चार सिर भी खोलने पड जाएँ।"

लेकिन फिर भी शाम तक कोई खास वारदात नही हुई। नशे मे चूर न्यूबियन सैनिको ने कुछ दुकाने लूट ली थी। और दो-चार स्त्रियो के साथ बलात्कार कर दिया था। पहरे के सैनिको ने उन्हे पकड लिया और उन्हे सबके बीच कोडे से पीटा जिससे उन दुकानदारो और उन स्त्रियो को सान्त्वना मिली।

यह जानकर कि हौरेमहेब सेनापति वाले जहाज़ मे मौजूद था। मै भी बन्दरगाह गया हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहरे वालो ने मुझे उडती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातो पर कोई ध्यान नही दिया और अत मे मेरे बहुत कहने पर एक अदर सूचना देने गया। परन्तु वह जब लौटा तो मुझे स्वय आश्चर्य हुआ क्योकि मुझे तुरन्त अन्दर बुलाया गया था।

और मैने जीवन मे पहली बार जगी जहाज़ अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-शस्त्र रखे हुए थे, बाकी सब वह मामूली ही था। हौरेमहेब मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मालूम हुआ और कुछ रोबदाब भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके पुट्ठे चौडे और बाँहे गठित दिखाई देती थी। परन्तु उसके चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएँ उभर आई थी और उसकी आँखे खूनी लाल और थकी लगती थी। मैने झुककर घुटनो के सामने हाथ सीधे फैलाकर उसका अभिवादन किया।

वह कडवी हँसी हँसते हुए बोला '

"देखो वह सिन्यूहे है—जगली गधे का बेटा! सचमुच तुम शुभ घडी मे ही आये हो!"

अपने रुतबे की वजह से उसने मेरा आलिगन नही किया। लेकिन मुडकर अपने पास खडे हुए एक छोटी-छोटी आँखो वाले और नाटे कद के हाकिम से जो गर्मी के कारण हाँफ रहा था, वह बोला: "यह लो, सँभालो।"

और उसने उसके हाथ मे अपनी सोने की चाबुक दे दी। अपने गले

से जड़ाऊ सोने की कंठी उतारकर उसकी मोटी गर्दन में लपेट दी। फिर कहा :

"अब तुम सेना को सँभालो। अब लोगों का रक्त तुम्हारे गंदे हाथों में बहे !"

मेरी ओर मुड़कर होरेमहेब ने फिर एकदम कहा :

"सिन्यूहे, मेरे मित्र, अब मैं स्वतंत्र हूँ—मेरा विचार है कि तुम्हारे घर में मेरे लिए एक चटाई होगी जिस पर मैं आराम से हाथ-पैर फैला कर सो सकूँगा—ओफ ! मैं इन मूर्खों में सिर खपाते हुए कितना थक गया हूँ।"

उसने उस पदाधिकारी के कंधों पर हाथ रख दिये, जो उससे एक सिर नीचा था, फिर मुझ से बोला :

"इस व्यक्ति को देखो सिन्यूहे ! और उसका हुलिया देखो—इसी के हाथ में फराओ ने आज थीबीज़ का भाग्य दे दिया है। जब मैंने फराओ से कहा कि वह पागल था जो उसने इसे मेरी जगह नियुक्त किया है—इसे देखकर अंदाजा लगा लो कि कितनी जल्दी फराओ को फिर मेरी ज़रूरत पड़ जायेगी।"

वह हँसा और उसने अपने घुटने पीटे, पर उसकी हँसी में हँसी नहीं थी। मैं भयभीत हो गया। उस छोटे से हाकिम के चेहरे, गर्दन और फूली छाती में पसीना बह रहा था।

"मुझसे क्रुद्ध न होओ होरेमहेब," वह पतीली तेज़ आवाज़ से बोला, "कोई मैंने तो तुम्हारे अधिकार की चाबुक स्वयं तुम से ली नहीं है—मैं तो तुम जानते ही हो कि अपनी बिल्लियों और अपने उद्यान में ही मस्त रहता हूँ—और मुझे युद्ध अच्छा भी नहीं लगता है। लेकिन फराओ की आज्ञा का उल्लंघन करने वाला भी तो मैं कोई नहीं होता। और वह कहता है कि जंग नहीं होंगे—और झूठा देवता स्वयं ही समाप्त हो जायेगा—फिर मैं क्या करूँ ?"

चलते वक्त जब होरेमहेब ने उसकी पीठ पर एक धौल जमाया तो वह 'ऊई' कर गया और हाँफने लग गया—और जो कुछ वह कहना चाहता था वह उसके गले में ही अटक गया। होरेमहेब ने तेजी से जहाज़ से निकल-

कर सीढियो पर जैसे ही पैर रखा कि सैनिको ने सीधे खडे होकर भाले तानकर उसका अभिवादन किया। उसने उनकी ओर हाथ हिलाया और चिल्लाकर कहा .

"विदा मिट्टी के ढेलो ! अब इस बिल्ली के बच्चे की आज्ञा का पालन करना—देखना कि कही यह रथ मे से न लुढक जाय या कही अपने ही चाकू से घायल न हो जाय।"

सैनिक हँस पडे और उन्होने उसका जयनाद किया परन्तु वह उसे सुनकर क्रुद्ध हो उठा और घूँसा तानकर चिल्लाया · "नही मै तुमसे विदाई नही ले रहा हूँ—मैं तुमसे शीघ्र ही मिलूँगा—क्योकि तुम्हारी आँखे मुझे तुम्हारे इरादे बता रही है—मैं तुमसे कहता हूँ कि सम्भलकर रहना अन्यथा मुझे लौटकर तुम्हारी पीठो पर पट्टियाँ बँधवानी पडेगी।"

उसने अपना सामान जहाज पर ही रहने दिया क्योकि वहाँ ज्यादा हिफाजत थी। फिर वह मेरे साथ चल दिया। अब उसने पहले की भाँति मेरे गले मे हाथ डाल दिया और कहा : "आज मैने बडी ईमानदारी का रास्ता पकडा है सिन्यूहे ! आज मै स्वतत्र हूँ।"

जब मैंने उससे 'मगर की पूँछ' के बारे मे कहा तो वह बहुत खुश हुआ और तब मैने साहस करके उससे कहा कि वह कप्ताह के उस तंदूरखाने पर पहरा लगवा दे। उसने पहरे के हाकिम को आज्ञा दी, जिसने वायदा किया कि दूसरे ही दिन वहाँ वह कुछ पुराने और जिम्मेवार सैनिको को तैनात कर देगा—इस भाँति कप्ताह के लिए मैने एक बडा काम कर दिया जिसमे मुझे कुछ लगाना भी नही पडा।

'मगर की पूँछ' मे जब मैरिट उसके लिए पेय देकर चली गई तो उसने कहा :

"स्त्री तो सुन्दर है—शायद तुम्हारा···"

"नही !" मैने उत्तर दिया। "यह मेरी कोई नही है" परन्तु हौरेमहेब ने उसके साथ कोई हरकत नही की। भाग्यवश तब तक मैरिट ने वह सामने से खुली नई पोशाक नही पहनी थी अन्यथा शायद वह उस पर हाथ फेर देता। परन्तु दूसरी बार मदिरा लाने पर जब मैरिट ने उसकी चौडी पीठ और सुगठित बाहुओ को देखकर प्रशसा-युक्त नेत्रो से उसे देखा तो मैंने

तीव्र स्वर मे उसे वहाँ से भगा दिया।

होरेमहेब तीसरा गिलास पीने के बाद आँखो मे आँसू भर कहने लगा :

"कल थीवीज मे रक्त बहेगा सिन्यूहे! और मै उसे रोकने के लिए कुछ नही कर सकता—फराओ मेरा मित्र है और मैं उसकी मूर्खता के बावजूद उससे प्रेम करता हूँ। एक बार जब मेरा बाज मुझे उसके पास लाया था, मैंने उसको अपने वस्त्र से उढाया था और तभी मेरा और उसका भाग्य जुड गया था…"

फिर कुछ सोचकर उसने दीर्घ श्वास छोडकर कहा : "ओह! मेरे मित्र सिन्यूहे! उस दिन से जब हम उस गदे देश सीरिया में मिले थे, अब तक नील मे बहुत जल बह गया है। मैं अभी फ़राओ की आज्ञा से कुश के देश से सेना को बर्खास्त करके आ रहा हूँ और हब्शी सैनिकों को थीबीज ले आया हूँ, सच पूछा जाय तो दक्षिण मे देश इस समय अरक्षित है। अगर ऐसे ही चलता तो सीरिया मे शीघ्र बलवे होना अवश्यभावी है। शायद तभी फराओ की समझ लौट आवे। जब से यह सिंहासनारूढ हुआ है तब से न्यूबिया की सोने की खानो मे काम बद है—अब आलसी को दड से काम पर लगाना जायज नही है—निश्चय ही फराओ और उसका नया देवता दोनो ही विचित्र है।"

फिर वह चुप हो गया। मैने कहा :

"पर अम्मन भी तो झूठा देवता है—घृणित भी है और उसके पुजारियो ने एक लम्बे समय से लोगो को अधकार मे रखा है। यहाँ तक कि यह हालत हो गई है कि लोग उनके विरुद्ध एक शब्द कहने की भी हिम्मत नही करते।"

वह मेरी ओर घूरकर देखने लगा फिर बोला :

"और कल वह हटाया जाएगा—वैसे उसका हटाया जाना ठीक भी है क्योकि देश मे फराओ के मुकाबले मे दूसरी शक्ति इन पुजारियो की हो गई है—और यह उचित नही है। दूसरे देवताओ के पुजारी लोगो को भी अम्मन के पुजारियो ने दबा दिया है—लोगो का यह हाल है कि वह पुजारियो द्वारा ही शासित हैं—और यह बात खतरे से खाली नही है।"

"मेरे विचार से एटौन अच्छा देवता है।" मैंने कहा, "कम स कम यह

लोगो को धोखे मे तो नही रखता।"

"जो कुछ भी हो," वह बोला, "देवताओ की शक्ति फराओ से बढ़नी नही चाहिए।"

मैंने उसे हाती देश, क्रीट, वेबीलौन मे जो कुछ देखा था सब उससे कह सुनाया—परन्तु वह नशे मे चूर शायद ही उन सबसे कुछ तथ्य निकाल सका।

सारी रात वह मेरी बाँहो मे सोया, परन्तु थीबीज मे सारी रात सैनिक घूमते रहे—उनके अस्त्र-शस्त्रो की खडखड़ाहट होती रही, कप्ताह और तदूरखाने के मालिक ने ढेर सारे सैनिको को अपने यहाँ बुलाकर उन्हे मुफ्त मदिरा पिलाकर उनको अपने यहाँ रोक रखा कि वह आपत्ति के समय उनकी रक्षा करे।

उस रात थीबीज मे शायद ही कोई सोया हो। भयानक आतंक छाया हुआ था—लोग बुरी तरह घबराये हुए थे। निश्चय ही फ़राओ भी उस रात नही सो सका होगा—

परन्तु होरेमहेब—जो जन्म-जात सैनिक था—गहरी नीद सोया—

अम्मन के मन्दिर के सामने सारी रात भीडे लगी रही। गरीब ठडी घास पर लेटे हुए थे। अम्मन के तेल लगे मोटे पुजारियो ने बलि पर बलि दी और नाना प्रकार के भोग लगाये, फिर वह माँस और खाद्य सामग्रियाँ लोगो मे बाँटने लगे। मदिरा और रोटी के तो जैसे भडार खोल दिये गये थे। पुजारी लोग अम्मन का नाम ज़ोरो से उच्चारण करते और लोगो को समझा देते कि जो भी उसके प्रति सच्चा रहेगा वह शाश्वत जीवन प्राप्त करेगा—

यह पुजारी लोग यदि चाहते तो रक्तपात बिल्कुल न होता—उन्हे केवल झुकना पडता था और तब फराओ उन्हे शान्तिपूर्वक रह लेने देता क्योकि उसका देवता तो रक्तपात से घृणा करता ही था। लेकिन अधिकार और धन ने उनके मस्तिष्को को घेर दिया था, यहाँ तक कि वह मृत्यु से भी अब नही डरते थे। वह यह जानते थे कि युद्ध के घिसे-पिटे सैनिको के सामने नागरिको की भीडें और उनके अपने पहरेदार लोग ऐसे बह जायेगे जैसे नदी की बाढ मे तिनके बह जाते है। पर वह अम्मन और एटौन के बीच

रक्तपात इसलिए चाहते थे कि फ़राओं सदा के लिए खूनी और हत्यारा कहलाने लगे—क्योंकि गृहयुद्ध छिडने के बाद उसकी सेना के काले-काले हब्शी लोगो का मिस्रियो का रक्तपात करना अवश्यम्भावी होता—वह चाहते थे कि अम्मन की बलि चलती रहे चाहे उसकी मूर्ति फेंक दी जाय और मदिर बद कर दिया जाय।

आखिरकार रात बीत गई और तीनो पहाड़ियो के पीछे से एटौन की थाली ऊपर उठने लगी—और रात की शीतलता के स्थान पर गर्मी छाने लग गई। हर राजपथ और चौराहो पर सीग फूँके जाने लगे और फराओ की आज्ञा पढकर सुनाई जाने लगी, जिसमे कहा गया कि—अम्मन नकली देवता था—और उसे हटा दिया गया था और वह हमेशा-हमेशा के लिए शापग्रस्त हो चुका था—कि उसका नाम सपूर्ण ऊपरी और निचले साम्राज्य में तमाम लिखावटों, खुदावटो—यहाँ तक कि कब्रों से भी हटा दिया जाय, अम्मन की तमाम भूमि, मवेशियाँ, दास-दासियाँ, इमारतें, सोना-चाँदी, ताँबा सब जब्त समझा जाय—वह सब अब फराओ और उसके देवता एटौन का समझा जाय—फराओ ने लोगो को आश्वासन दिया था कि वह उसके (अम्मन के) मदिरो को सराये और उद्योगो को जनसाधारण के घूमने के लिए मैदान बना देगा—उसकी पवित्र झीलो को सभी के नहाने के लिए खोल देगा जहाँ गरीब लोग नहा सके और स्वतत्रापूर्वक वहाँ पानी भर सके—उसने वायदा किया कि वह उसकी अपार भूमि को गरीबो मे बाँट देगा—ख़ासकर उनको जिनके पास भूमि नही थी—जिससे कि वह एटौन के नाम पर काश्त कर के सुखी जीवन व्यतीत कर सके।

राजाज्ञा को आदत के अनुसार लोगो ने चुपचाप सुना परन्तु उसके बाद सभी जगह लोग चिल्लाने लगे, "अम्मन ! अम्मन !" चिल्लाहट इतनी ज़बर्दस्त थी कि दीवारे हिलने लगी। ऐसा लगने लगा जैसे बादल गरज रहे हो—समुद्र शोर कर रहा हो—और अब काले सैनिक घबराये। उनके लाल और सफेद पुते चेहरे भय से उतर गए, उनकी आँखों की सफेदी दिखाई देने लग गई—और उन्होने देखा कि गो वह काफी थे फिर भी भीड के सामने कुछ नही के समान थे। थीबीज़ का महानगर उमड़ पडा था। इतनी भीड उन्होने जीवनभर मे कही नही देखी थी।

उस भयानक शोर से हौरेमहेव भी जाग उठा। उठकर हम सीधे अम्मन के मन्दिर की ओर चल दिये। मार्ग मे एक फ़व्वारे के पास हम फारिग हुए और मुँह-हाथ धोकर जव मन्दिर पहुँचे तो देखा कि वह मोटी विल्ली जैसा लगने वाला नया सेनापति अपने सैनिको और रथो को मन्दिर के सामने भेजने मे लगा हुआ था। जव उसे सूचना दी गई कि सव तैयार हो गए थे और हर सैनिक उसका उद्देश्य समझ गया था तो वह अपनी कलई की हुई पालकी पर खडा हो गया और तीखी-पतली आवाज मे चिल्लाया :

"मिस्र के सैनिको! कुश के वीरो! वहादुर शारदानाओ! सव चलो और अम्मन की मूर्ति को उल्टा कर दो जो शापग्रस्त है—फ़राओ की आज्ञा पूरी करो। तुम्हारा उपहार अमूल्य होगा!"

इतना कहकर, क्योंकि वह समझता था कि उसका काम अव समाप्त हो चुका था। वह अपनी पालकी के नर्म गद्दो पर वैठ गया और दास उसे हवा करने लगे क्योंकि वेहद गर्मी पड़ रही थी।

लेकिन मन्दिर के सामने असख्य लोग खडे थे—मर्द-औरत, जवान-वूढे और वच्चे, जव रथ आगे वढे तो वह नही हटे। भयानक कोलाहल हो रहा था। घोडो पर चावुक चटकी और वह फुदके। रथ के पहिये अर्राकर लुढके—भीड़ न हटी और रथ के घोडे, पहिये भीड पर चढ गए। भारी पहियो के नीचे शरीर कुचल गए, घोडो की टापो से सिर फट गए और भयानक चीत्कार से वातावरण गूँज उठा। सेनानायको ने देखा कि रक्तपात विना वह आगे नही वढ सकते थे क्योंकि रक्त अव वहने लगगया था। उन्होने सैनिको को पीछे हटाने की आज्ञा दी क्योंकि फराओ की आज्ञा थी रक्तपात विल्कुल न हो--वे खून से भीग गए थे--घायल चीख़ रहे थे--भीड़ गर्जन कर रही थी--अम्मन की जय-जयकार से आकाश गूँज रहा था। जव सैनिक पीछे हटे तो भीड ने समझा वह भाग रहे थे।

इसी वीच पैपीटैमौन को ध्यान हुआ फराओ ने अपना नाम इस राजाज्ञा मे, वदलकर, एखनैटौन रख लिया था--क्यो न वह भी उसे खुश रखने के लिए अपना नाम भी वदल डाले, जव सेनानायक उससे सलाह तथा आज्ञा लेने आये तो वह चुप लगा गया क्योंकि वह उसका असली नाम ले रहे थे। अत में आँखे पूरी फाडकर वोला :

"मैं पैपीटैमौन नामक किसी व्यक्ति को नही जानता, मेरा नाम तो पैपीटैटीन है—पैपी-ऐटीन का प्यारा।"

सेनानायक जिनके हरएक के हाथों मे एक-एक सोने का कोड़ा था और जो एक-एक हजार सैनिको के जत्थे की कमान अपने नीचे रखते थे, सुनकर वहुत चिढे, रथो का नायक चिल्लाया : "विना पैंदे के गड्ढे मे जाए ऐटीन ! यह क्या मूर्खता है ? हमे अपनी आज्ञा दो !"

तव पैपीटैटीन ने उनका उपहास करते हुए व्यंग से कहा : "तुम लोग योद्धा हो या औरते ? भीड भगा दो—पर रक्त न वहाना क्योंकि उसके लिए फराओ ने खासतौर पर मना कर दिया है।"

उन्होने एक-दूसरे की ओर देखा और घृणा से थूक दिया। फिर क्योंकि वह और कुछ कर ही नही सकते थे, वह लौट गए।

इधर जव यह वातें हो ही रही थी उधर भीड ने हव्शियो को धर दवाया—उन पर पत्थर फेंके, कई हव्शियो के सिर फट गए और वह गिर पडे। वह अपने ही खून मे नहा गए। घोड़े विदक गए और रथवानों को उन्हे रोकना कठिन मालूम होने लगा। पत्थरो की वौछारे वरावर आती रही।

जव रथों का नायक अपने सैनिको के पास पहुँचा तो उसने देखा कि सवसे उत्तम नस्ल के घोड़े की एक आँख निकल आई थी और वह लँगड़ा हो गया था। वह थर-थर काँप रहा था। देखकर वह क्रुद्ध हो उठा और पागल होकर चिल्लाया :

'अरे मेरा सोने का तीर ! मेरा हिरन ! मेरा सूर्यपुज ! इन कमीनो ने इसकी आँख निकाल ली—ठहर तो—!" और वह रथ वढा कर भीड़ मे चला—फिर चिल्लाया : "फराओ की आज्ञानुसार खून वहाना वर्जित है।"

फिर उसने वढकर सवसे ज्यादा चिल्लाने वाले वागी को पकडकर रथ मे खीच लिया और उसकी गर्दन लगाम मे फँसा कर खीची—वह मनुष्य घुटकर मर गया। उसकी देखा-देखी अनेक रथ वढ़े और उन्होने वहुत मे आदमी इसी भाँति मार डाले। घोडों के नीचे अगणित पिस कर मर गए। भारी पहियो से वहुत से कट गए और भयानक कराहे उठने

लगीं—रक्त से पृथ्वी भीग गई। जब रथ वाले मरे हुए लोगो की लाशें लटकाये लौटे तो भीड मे भयानक आतक छा गया। तभी न्यूबिया के सैनिकों ने धनुष खोले और प्रत्यचा मे जकडकर वह लोगो को घोंट कर मारने लगे, उन्होने बच्चे भी घोट दिये। परन्तु पत्थर अब भी फिक रहे थे और सैनिक उन्हे अपनी ढालो पर रोक रहे थे। भयानक कोलाहल हो रहा था—और तभी भीड ने एक रथवान को खीचकर नीचे गिरा दिया। "मारो मारो" का नारा लगा—और लोगो ने उसके सिर को पत्थर पर दे मारा—वह छटपटा कर मर गया—रक्त मे रक्त मिलकर ,वहने लगा। भीड अब और क्रुद्ध हो उठी थी।

सेनापति पैपीटैटौन परेशान हो उठा था। उसे अपनी सूडान की विल्ली का ध्यान हो आया था। आज वह वच्चे देने वाली थी और वह यहाँ व्यर्थ मे समय गँवा रहा था जवकि उसे इस समय उसके पास रहना जरूरी था। वह चिल्लाया :

"मेरी विल्ली अकेली है! मुझे जाना है। एटौन के नाम पर जाओ और उस अभिशप्त अम्मन की मूर्ति को उल्टा कर दो, वरना सैट और तमाम शैतानो की शपथ! मै तुम्हारे गले की जजीरो को छीन लूँगा और तुम्हारे कोडो को तोड दूँगा···"

सैनिको ने जब यह सुना तो वह समझ गए कि उनके साथ घोखा ही रहा था और उन्होने कम-से-कम अपनी सैनिक मर्यादा रखनी चाही। उन्होने व्यूह वनाया और भीड पर हमला कर दिया। भीड उनके सामने ऐसे साफ हो गई जैसे वाढ के सामने तिनका। हब्शियों के भाले रक्त से लाल हो गए और खून वहने लगा—और उन्होने सौ बार हमले किये और हर बार सौ पुरुष-स्त्री-वच्चे-वूढे मार डाले। एटौन के नाम पर भूमि लाशो से पट गई। अम्मन के मदिर का दीर्घद्वार वन्द कर दिया गया और पुजारी उन्हे शाप देने लगे। अव लोग भागे—सैनिको ने उन्हे चुन-चुनकर मारा—रथ उनके पीछे दौड पडे और तब लोगो मे भयानक आतक फिर छा गया। लोग भाग रहे थे—गिर रहे थे—जिसका जहाँ सीग समा गया वही छिपने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु प्रतिशोध की तलवार वहाँ भी उन्हे नही छोडती थी।

हब्शियो पर खून चढ गया और वह निरकुश होकर हत्या करने लगे। भीड़ घबराकर एटीन के मंदिर मे घुस गई और उन्होने वहाँ के पुजारियो को काट डाला और वाल-स्तम्भ को उखाड फेंका। रथ वहाँ भी आ गए। और फिर जो मार-काट हुई तो एटीन के मदिर का विशाल पक्का प्रांगण रक्त से चमकने लग गया।

पर अम्मन का मोटा तांवे का द्वार वन्द हो चुका था। ऊपर से मदिर के पहरेदार तीर चला रहे थे। सैनिको ने मदिर घेर लिया था पर आगे उन्हे और कुछ नही सूझ रहा था। गाढा खून राजपथ पर जम गया था—उस पर मक्खियाँ भिनभिना रही थी।

पैपीटैटीन ने अपनी सुवर्ण पालकी पर वैठे हुए देखा कि दूर-दूर तक लाशे फैली पडी थी—धूल उठ रही थी—मक्खियाँ भिनभिना रही थी, रक्त वह रहा था। वह घवरा गया और वदवू से परेशान हो उठा। उसने दासो को आज्ञा दी कि अगरु-धूम जलाया जाये उसने अपने कपडे फाड़ डाले।

फिर भी उसे अपनी विल्ली की याद आ रही थी। वह अपने नायको से बोला :

"मुझे डर है कि जो कुछ हुआ है उसे सुनकर फराओ अत्यन्त क्रुद्ध हो उठेगा क्योकि इतना सव करके भी तुमने अभी तक अम्मन की मूर्ति को उल्टा नही किया है उल्टे नालियों मे रक्त की धारे वहा दी हैं। मैं अव शीघ्र फराओ के पास जाता हूँ—निश्चय ही मैं तुम्हारा पक्ष लूंगा—और मार्ग मे अपने घर भी होता आऊँगा क्योकि मेरी विल्ली आज वच्चा देने वाली है—फिर मुझे वस्त्र भी वदलने है—यहाँ वेहद वदवू है—आज तो हम मदिर को नही तोड सकेंगे—स्वय फराओ को निश्चय करना होगा कि अव क्या किया जाय।"

वह चला गया। सैनिक मन्दिर से हट गए। लाशे पडी रही पर जव सैनिको की खाने की गाडियाँ आई तो वह मुर्दो पर वैठकर खाने लगे।

फिर जो राते गुजरी उनमे महानगर मे जगह-जगह आग लगी—हब्शियों ने सोने के प्यालो मे मदिरा मुफ्त पी और शारदाना और न्यूविया के सैनिक घरों मे घुस कर नर्म से नर्म गद्दो पर गृहणियो के साथ सोये।

महानगर के तमाम गुडो का दाँव लग गया—चोर-बदमाश, कब्रचोर, उचक्के लूटमार करने लगे। वह न एटौन से डरते थे न अम्मन से। उन्होंने एटौन को धन्यवाद दिया कि ऐसा शुभदिन उन्हे दिखाया। एटौन का मदिर फराओ की आज्ञा से तुरन्त पवित्र कर दिया गया था और वहाँ भक्तो को मुक्त-हस्त से जो जीवन पदक बाँटे गये थे, सारे बदमाश उन्हे ले आये थे और उन्हे पहनकर सैनिको से मुक्त होकर खुली लूट कर रहे थे। थीबीज की शक्ति और सम्पत्ति घायल के शरीर से रक्त के समान वह रही थी।

हौरेमहेब मेरे घर रुका रहा। क्रोध से उसके नेत्र लाल हो गये। मुर्ती उसका विशेष सत्कार करती और बारम्बार उसे स्वादिष्ट भोजन परोसती।

हौरेमहेब ने कहा: "मुझे अम्मन या एटौन की परवाह नही है—मुझे तो दु ख केवल अपने सैनिको के लिए है जिन्हे आजकल उद्दण्ड बना दिया गया है। इससे पहले कि वह फिर अनुशासन मे लाये जावे मुझे उनकी पीठों पर मुझे बरसाने पडेंगे। यह मेरे बडे अच्छे सैनिक है और बस यही मुझे दुख है।"

और कप्ताह दिनो-दिन मालदार होता गया। उसका चेहरा चिकनाहट से सना हुआ चमका करता। रातो को वह अब 'मगर की पूँछ' मे ही रहा करता क्योकि सैनिक लोग उसे मदिरा के मूल्य मे मुट्ठी भर कर सुवर्ण देते और तदूरखाने के पिछवाडे के कक्षों मे चोरी के माल के ढेर के ढेर जवाहिरात, सोना-चाँदी, चटाइयाँ इत्यादि के ढेर लगे रहते क्योकि मदिरा के बदले ग्राहक इन्हे बिना मूल्य ठहराये ही पटक जाते थे। 'मगर की पूँछ' पर कोई हमला नही करता था क्योकि हौरेमहेब के सैनिक वहाँ पहरा दे रहे थे।

तीसरे दिन मेरी दवाइयाँ खत्म हो गईं और सोने के मूल्य मे भी कही न मिल सकी। लाशो और गँदले पानी से जो रोग गरीवों के मुहल्लो मे फैले उनसे मैं लोगो को नही बचा सका। मै बुरी तरह थक गया था और मेरी आँखे लाल हो गई थी—मेरी तबीयत सबसे ऊब गई थी। अम्मन, एटौन, गरीब-अमीर, जख्म—सबसे, और मै 'मगर की पूँछ' चल दिया। वहाँ

जाकर मैंने भर-भर कर मदिरा पी। फिर वही सो गया।

सुवह जब मैरिट ने मुझे जगाया तो मैंने देखा कि मैं रात-भर उसी के साथ उसी की चटाई पर सोया था। मुझे रात की बातों पर ध्यान हो आया और शर्म से मेरा सिर झुक गया। मैंने मैरिट से कहा : "जीवन एक ठंडी रात के समान है लेकिन यदि दो एकाकी मिल जाते है तो वह सुखकर हो जाती है—हालाँकि उनके हाथ और उनकी आँखें साफ बतला देती है कि वह मित्रता बनाये रखने के लिए कितना बडा झूठ— छिपा रहे हैं।"

मैरिट ने नीद की खुमारी में अलसाई हुई जम्हाई ली। फिर बोली : "तुम कैसे कहते हो कि मेरे हाथ और आँखें झूठ वोलती हैं? सैनिको की उँगलियों को झटकने और उनके पैरो मे लात मारती हुई मैं थक गई हूँ और सिन्यूहे! यहाँ तुम्हारे वगल में ही मुझे पूरे शहर मे सुरक्षित स्थान मिल पाया है—जहाँ मुझ पर कोई हाथ नही डाल सकता। ऐसा क्यो है, मैं नही कह सकती, लेकिन लोग कहते है कि मैं सुन्दर हूँ। मेरा पेट अत्यंत लुभावना है—हालाँकि तुमने उसको देखने का कष्ट नही किया है।"

उसने मुझे मदिरा दी जिसे पीकर मैंने अपना दिमाग साफ किया। उसने मुझे मुस्कराकर देखा परन्तु फिर भी उसकी आँखो की गहराई मे मुझे दुख दिखाई दिया—जैसे गहरे कुएँ मे पानी।

थीवीज मे अशाति बनी रही। लूट-खसोट, जोर-ज़बर्दस्ती और रक्तपात होता रहा। रातो को जगह-जगह स्त्रियों की चीखे सुनाई देती जहाँ सैनिक बलात्कार करते। मुझे ऐसे समय अपने पिता और माता की याद हो आई और मैंने अपना एक उद्देश्य पूरा करने की ठानी।

पाँचवे दिन सैनिकों ने अपने हाकिमो की आज्ञा मानने से भी इंकार कर दिया—उद्दण्डता पराकाष्ठा को पहुंच चुकी थी। उच्चपदाधिकारियो ने जाकर पैपीटैंटौन को दबाया कि वह फ़राओ के पास जाकर वास्तविक स्थिति समझाये। पैपीटैटौन स्वयं युद्ध और रक्तपात से ऊब गया था और फिर उसे अपनी विल्लियो से भी दूर रहना पड रहा था।

परिणाम यह हुआ कि फ़राओ के दूत मेरे घर हौरेमहेव को बुलाने आ गये। हौरेमहेब अपनी शैया पर से सिंह की भाँति उठा—नहाया, वस्त्र बदले और बड़बड़ाते हुए चला गया। अब स्वय फराओ का अधिकार भी

ख़तरे मे आ गया था—कल की कोई नही जानता था।

फराओ एख़्नैटौन के सम्मुख जाकर उसने अभिवादन के उपरांत कहा : "अव एक पल भी नष्ट करने का नही है—यदि तुम चाहते हो कि फिर सब कुछ वैसा ही हो जाय जैसा कि था तो मुझे अपना अधिकार तीन दिन के लिए दे दो—तीसरे दिन मै उस अधिकार को तुम्हे लौटा दूंगा। तुम्हे कोई जरूरत नही पडेगी कि जानो कि क्या हुआ।"

"तुम अम्मन को उखाड दोगे ?" फराओ ने पूछा।

"निश्चय ही तुम्हारे ऊपर देवता सवार है," हौरेमहेव ने कहा।

"लेकिन अव जो कुछ हो चुका है उससे अम्मन को उखाडना ही पड़ेगा यदि फ़राओ की शान कायम रखनी है—निश्चय ही मै उसे उखाड़ दूंगा—परन्तु यह न पूछो कि मैं क्या करूँगा।"

फराओ ने कहा : "तो तुम उसके पुजारियो को कोई नुकसान मत पहुँचाना क्योकि वह अवोध है—जानते नही है कि वह क्या कर रहे है।" हौरेमहेव क्रोध के घूंट को पीकर वोला :

"निश्चय ही तुम्हारा सिर खोल देना चाहिए क्योकि यह स्पष्ट है कि इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नही है—लेकिन फिर भी मैं तुम्हारी आज्ञा मानूंगा—कम-से-कम उस घडी की मर्यादा के लिए जव मैंने तुम्हे अपना उत्तरीय उढाया था।"

और फराओ ने रोकर उसे अपना कोडा और राजसी चिह्न दे दिया कि वह उन्हे तीन दिन तक रखे। यह सब वाते मुझे बाद मे हौरेमहेव ने ही वताई थी।

फराओ के सुवर्ण रथ मे आरूढ होकर हौरेमहेव नगर को आया और मुहल्ले-मुहल्ले मे सैनिको को आवाज़ देता हुआ—उन्हे नाम लेकर वुलाता हुआ वह रथ दौड़ाने लगा—विश्वस्त सैनिको से उसने सीग फुंकवाये और सैनिक जव उमडने लगे तो उन्हे विविध झडो के नीचे एकत्रित करने लगा। आकाश मे वाज़ उसके ऊपर उडने लगा था। और सारी रात ढुँढाई होती रही। लोगो के शयन-कक्षो से चावुका की आवाज आने लगी और चीखो-कराहो से सुनने वाले भयभीत हो उठते। हौरेमहेव ने अपने सर्वोत्तम सैनिक राजपथो पर गश्त लगाने भेजे कि जो कोई भी हाथ रक्त से भीगा

अथवा कानून तोड़ता मिल जाय वह वही काट डाला जाय, उद्दण्डों के सिर धडो से अलग कर दिये गये। रात-भर रथों की गड़गडाहट थीवीज़-भर मे सुनाई पडती रही। आतक छा गया था—

और जब सुवह हुई तो थीवीज के तमाम वदमाश और उचक्के चूहों की भाँति अपने विलो मे जाकर छिप गये क्योकि जो पकड़ा गया था, उसकी खाल खीच ली गई थी।

हौरेमहेव ने नगर के तमाम कारीगर और राज बुलवाये और उन्हे आज्ञा देकर धनिको के मकान गिरवा दिये—उनके जहाजो को तुडवाकर लकडी निकलवाई और फिर घेरा डालने, फाटक तोड़ने और वुर्जो पर चढने के लिए आवश्यक वस्तुएँ वनवानी प्रारम्भ कर दी—यहाँ तक कि सारी रात हथौड़े और घन वजते रहे। इन सवसे ऊपर थी आवाज और चीख-पुकार उन न्यूबियन और शारदाना सैनिको की जिन्हे हौरेमहेव के कोडो के नीचे अनुशासनहीनता के कारण आना पड़ा था—और जिन्हे सुनकर नागरिको को सतोष हुआ था।

हौरेमहेव ने अम्मन के पुजारियो से वातचीत मे समय गंवाना उचित नही समझा और जैसे ही उजाला हुआ उसने हुक्म दिया कि मदिर का मुहासरा डाल दें। पाँच स्थानों पर मदिर की दीवालो से ऊँची वुर्जें रखी गईं और वडी-वड़ी चोटो से धडाधड फाटक पर टक्कर लगने लगी। अर्राकर गर्जन होता और फाटक हिल उठता—भड-भड के शोर से आकाश गूंजने लगा। सैनिको ने अपने ऊपर अपनी ढाले तान ली थी कि ऊपर से उन पर कोई प्रहार न कर सके। कोई घायल नही हुआ। मदिर के पुजारी लोग और पहरेदार इस ज़वर्दस्त और सुव्यवस्थित आक्रमण को विफल न कर सके और वह आतंकित होकर दीवालो पर यहाँ वहाँ भागे। नीचे घेरे मे तथा प्रागणो मे जो नागरिकों की भीड प्राण वचाये छिपी खड़ी थी, वह अव भयभीत होकर चीखने लगी और फाटक चर्राने लग गया था—भड-भड! चोटें। घन वज रहे थे। अव मंदिर के पुजारियो ने देखा कि फाटक टूट जायेगा तो सीगे फुंकवा दिए—उधर हब्शी भी दीवालों के पास आ लगे थे। सीगे फुंकवाने का अर्थ था कि सुलह कर ली जाये—व्यर्थ खून-खराबा न हो। उनका कहना यह था कि अम्मन ने काफ़ी वलि ले ली थी और अव वह नही चाहते

थे कि वे लोग मरे क्योकि वे भविष्य मे काम आ सकते थे।

मदिर के दीर्घ द्वार अर्राकर खुल गये और हौरेमहेब की आज्ञा से सैनिकों ने अदर की भीड को भागकर निकल जाने दिया। लोग अपने प्राणो को लेकर भागे और गिरते-पडते अपने-अपने घर पहुँचे।

अब हौरेमहेव के कब्जे मे बाहरी तमाम प्रागण, गोदाम, घुडसाल, मदिर के कारखाने इत्यादि सभी आ गये थे, केवल थोडे से लोग मरे थे, फिर जीवन-गृह इत्यादि भी जीत लिये गये, हौरेमहेब ने वहाँ के वैद्यो को आज्ञा दी कि वह नगर मे जाकर घायलो का इलाज करे। मृतक-गृह की ओर कोई नही गया क्योकि वह तो एक ऐसा विभाग था जिसका बाहरी दुनिया से कोई मतलब ही नही था।

परन्तु जब सेना अन्दर खास मदिर के सामने पहुँची तो अम्मन के पुजारियो ने अतिम विरोध किया। उन्होने अपने सैनिको पर जादू कर दिया और उन्हे ऐसी दवाएँ मदिरा मे मिलाकर पिला दी कि वह भयानकता से युद्ध करने लगे। स्वय पुजारी लोग भी हथियार लेकर सामने आ गये थे।

रात तक वहाँ मारकाट होती रही और अम्मन के सारे सैनिकों का जादू समाप्त कर दिया गया। केवल सबसे ऊँचे दर्जे के पुजारी देवता की प्रतिमा को घेरे खडे रह गये। हौरेमहेव की आज्ञा से युद्ध बन्द कर दिया गया। सैनिक लाशों को उठा-उठाकर नदी मे फेंकने लगे—

और तब हौरेमहेब ने पुजारियो के पास जाकर कहा : "मै स्वय अम्मन के विरुद्ध नही हूँ क्योकि मै होरस का चाकर हूँ जो मेरा बाज है। फिर भी मुझे फराओ की आज्ञा का पालन तो करना ही होगा। क्या यह तुम्हारे लिए और मेरे लिए—दोनो के लिए अच्छा न होगा यदि सैनिको को तोड़ने के लिए कोई मूर्ति ही न मिले ? क्योकि स्वय मै पवित्र मूर्ति का हनन नही करना चाहता और वैसे फराओ से वचनबद्ध भी हूँ—मेरी बातो को सोच कर देखो—मै तुम्हे एक बार पानी की घडी से पानी पूरा बह जाने तक का समय देता हूँ—इसके बाद तुम लोग शातिपूर्वक यहाँ से चले जाना और कोई तुम्हारे खिलाफ हाथ नही उठायेगा क्योकि हमे तुम्हारी जान नही चाहिए।

पुजारियो को यह बात जँच गई क्योकि उन्होने तो अम्मन के हक मे

मरना अगीकार कर रखा था। जब निश्चित समय हो गया तोहोरेमहेव ने अपने हाथ से मदिर का पर्दा खीच दिया और पुजारी चले गये। जब वह चले गये तो मदिर खाली हो गया—वहाँ कोई प्रतिमा नही रही। पुजारियों ने उसे शीघ्रातिशीघ्र तोड़कर उसके टुकड़ो को अपने लवादो मे छिपा लिया था और ले गये थे कि वाद मे उसे एकांत मे जोडकर लोगों को चमत्कार दिखा सके कि अम्मन अब भी मौजूद था।

होरेमहेव ने सोने-चाँदी से भरे तैखानों पर अपने हाथों से मुहर लगा दी और पहरे पर सैनिक नियुक्त कर दिये। उसी रात कारीगरो ने मशालो की रोशनी मदिर मे जहाँ भी अम्मन का नाम खुदा हुआ था, छैनी और हथौडो से छील दिया। मदिर के प्रागण, मेढो वाला राजपथ, चतुष्पथ इत्यादि सब लाशो व रक्त से भरे पडे थे—सब साफ कर दिये गये। जहाँ-जहाँ अब भी आग लगी हुई थी वह सब बुझा दी गई।

जब धनिको को पता लगा कि अम्मन का नाश हो गया था तो वह उत्तम वस्त्र पहनकर एटौन की विजय मनाने घर से निकल पड़े। दरबारी लोग जो भय से सुवर्णगृह मे जा छिपे थे फिर नदी के इस पार नावों मे आ गए। और थीवीज़ मे द्वार-द्वार पर मशाले जलने लगी और महानगर प्रकाश से जगमगाने लगा। शीघ्र ही लोगो ने मार्गो पर पुष्प बिखेर दिए और नाच-गाने शुरू हो गये। हँसी-खुशी मे लोग आपस मे एक.दूसरे से मिलने लगे। अट्टहास और रँगरेलियों कीआवाज़े आने लगी। लोग शारदाना सैनिको को मदिरा पिलाने लगे और उन कुलीन स्त्रियो को तो होरेमहेव स्वय भी न रोक सका जो मदिरा से उन्मत होकर न्यूविया के काले-काले भीमकाय सैनिको से चिपटी पडती थी—उन सैनिकों से जो भाले की नोक पर अम्मन के तैल लगे पुजारियो के कटे हुए सिरो का प्रदर्शन कर रहे थे। उस रात थीवीज मे एटौन के नाम पर महोत्सव मनाया जा रहा था और मिस्री और हब्शी मे कोई अंतर नही रह गया था। इसकी देखा-देखी दरबार की स्त्रियो ने अपने शयन-कक्षो मे न्यूविया के हब्शियो का स्वागत किया और अपनी नई ग्रीष्म ऋतु की पोशाको को फेंककर उनके पौरुप की परीक्षा की थी। और तब यदि कोई मदिर के घायल सैनिक अपनी बेहोशी मे कही दीवाल की छाया मे निकलकर 'अम्मन-अम्मन' की आवाज़े लगाते तो सैनिक

उनके सिर पक्के फर्श पर तोड देते और स्त्रियाँ उनके चारों ओर मदोन्मत्त होकर नाचने लग जाती।

यह सब मैंने अपनी आँखो देखा था। कैसा था मनुष्य का जीवन कि कुछ ही घटो मे हत्याओ को भूलकर उत्सव मनाने मे लग रहा था। और मुझे मैरिट की कही बाते याद हो आई। मुझे अपने माता-पिता की याद हो आई और मै पागलो की भाँति उठा और कुछ सैनिको को लेकर अपना एक अभीष्ट सिद्ध करने चल दिया। सैनिको ने मुझे हौरेमहेव के साथ देखा था—वह मुझसे भय करते थे—तुरन्त मेरे साथ चल दिये।

मैं नेफर नेफर नेफर के घर के सामने जाकर रुक गया। यहाँ मेरे पैर लड़खडाने लगे परन्तु मैंने अपूर्व साहस से सैनिको से कहा . "हौरेमहेव—फराओ के सेनापति की आज्ञा है— इस मकान मे घुस जाओ। तुम्हे एक स्त्री मिलेगी जो गर्व से अपना सिर ऊपर उठाये रखती है—उसकी आँखे पन्ने की तरह हरी है—उसे यहाँ ले आओ—यदि वह विरोध करे तो उसके सिर मे भाले की मूँठ मारो और उसे उठा लाओ—परन्तु उसे मारना मत।"

सैनिक हँसते हुए उस घर मे घुस गये। शीघ्र ही वहाँ भगदड मच गई। वहाँ के अतिथि भागने लगे और नौकर पहरेदारो को बुलाने लगे। परन्तु तब तक सैनिक हाथो मे शहद मे डूबी रोटियाँ, मदिरा के पात्र इत्यादि के साथ नेफर नेफर नेफर को उठा लाये थे। वह शायद उनसे लडी थी तभी उसके सिर पर गुम्मड उछल आया था। जहाँ भाले की मूँठ मारी गई थी, वहाँ थोडा खून भी निकल आया था। उसके सिर से ओढनी (विग) हट गई थी और वस्त्र फट गये थे। मैने उसके स्तनो पर हाथ रखा—वह गर्म थी परन्तु मुझे लगा जैसे मैंने किसी साँप पर हाथ रख दिया था। उसका हृदय धडक रहा था जिससे मैने जान लिया कि वह जीवित थी फिर भी मैने उसे एक काले कपडे मे लपेट लिया जैसे मुर्दे लपेटे जाते है और उसे लेकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। पहरेदारो ने मुझे नही टोका क्योकि मेरे साथ सैनिक जो थे। मैंने दासो से कहा कि मृतकगृह की ओर चले। कुर्सी पर मै उस स्त्री के कोमल शरीर को लिये बैठा था। वह अब भी सुन्दरी थी—परन्तु मुझे उससे घृणा थी।

मृतकगृह पहुँचकर मैने सैनिको को सुवर्ण देकर विदा कर दिया और कुर्सी भी लौटा दी फिर नेफर नेफ़र नेफर को लेकर—कधों पर उठाकर—अदर प्रवेश किया। लाश धोने वालो से मैने कहा : "यह स्त्री मुझे मार्ग में पडी मिली। मै न इसका नाम जानता हूँ न वश परन्तु इसके शरीर पर जो आभूषण और जवाहरात है वह काफ़ी है और इन्हे तुम ले सकोगे यदि तुम इसके शरीर को शाश्वत काल तक मसाले लगाकर वने रहने लायक वना दोगे।"

वह लोग बकने लगे, "तुम पागल हो क्या ? आजकल क्या हमारे पास कम काम है जो एक और वेगार ले आये ?"

परन्तु जब उन्होने ऊपर का काला वस्त्र हटाया तो उन्होने देखा कि उसका शरीर गर्म था—उन्होने उसके सब वस्त्र उतार डाले और आभूपणो को भी खोल लिया। उस जैसी सुन्दरी उन्होने जीवन-भर मे कभी नही देखी थी—वह उसके स्तनो पर हाथ रखकर धडकते हुए दिल की आवाज सुनने लगे। उन्होने उसे शीघ्र काले वस्त्र से ढँक दिया और आपस मे इशारे करके मुँह बनाने लगे और उनकी हँसी रोके नही रुकती थी। फिर मुझसे वोले :

"अव तुम जाओ अजनबी ! और अपने इस नेकी के काम के लिए तुम धन्य हो। हमसे जो कुछ हो सकेगा हम सब कुछ करेगे कि इसका शरीर वना रहे—और यदि कोई और बीच मे बोलने नही आया और इसका सारा ज़िम्मा हमारे ऊपर ही रहा आया तो हम इसे अपनी ही देख-रेख मे रखेगे और सत्तर दिनो मे सत्तर-सत्तर बार इसकी सेवा-सुश्रूषा करेगे—जाओ, तुम चिन्ता न करो।"

और इस भाँति नेफर नेफर नेफर से मैने बदला ले लिया। परन्तु वाद मे मुझे पता लगा कि मेरे इस वदले से उसकी कोई हानि नही हुई।

और मै 'मगर की पूँछ' लौट आया जहाँ मैरिट से मैने कहा : "मैने अपना प्रतिशोध ले लिया है—परन्तु फिर भी न जाने क्यो मेरे मन को शाति नही मिल सकी है—मेरे हाथ-पैर अब भी ठडे है हालाँकि रात काफी गर्म है।"

मैने मदिरा पी और वह मुझे बुरी लगी। मैंने घृणा से कहा : "यदि कभी किसी स्त्री पर मैं हाथ रखूं तो मेरा शरीर नष्ट हो जाए ! क्योकि मैं

जितना उसके बारे मे सोचता हूँ उतना ही मेरा भय बढता जाता है।"

मैरिट ने मेरे हाथ पकड लिये और स्नेहासिक्त स्वर से कहा : "प्यार करने वाली, भला चाहने वाली स्त्री से शायद अभी तक तुम मिले ही नही हो।"

और मैं फिर मैरिट को बाहुओ मे लेकर उसी की चटाई पर सो गया। मैने उससे कहा : "मैरिट मैने एक स्त्री के साथ पहले घडा फोड लिया है पर वह अब मर चुकी है—उसके सिर के बाल बाँधने का चाँदी का फीता मेरे पास अब भी मौजूद है—परन्तु फिर भी यदि तुम कहो तो हमारी मित्रता के कारण मै तुम्हारे साथ फिर घडा फोड लूँ।"

उसने जम्हाई ली और मेरे गालो को छूकर बोली·

"तुम्हे 'मगर की पूँछ' का पेय अब कभी नही पीना चाहिए—इससे तुम्हारा दूसरा दिन भी खराब हो जाता है।"

मैने उसे प्यार से अक मे भर लिया। फिर उसने कहा : "तुम एकाकी हो और मै भी हूँ, परन्तु ससार मे और भी बहुत से ऐसे है। मैं तुम्हे किसी भी स्त्री के साथ रहने से कभी नही रोकूँगी—और न तुम्ही को मेरे मार्ग मे आना चाहिए। फिर तुम तो जानते हो कि मैं तदूरखाने मे ही बडी हुई हूँ—न कोई नई लडकी ही हूँ कि पुरुषो से परिचित न होऊँ—"

मेरा हृदय पक्षी की भाँति हल्का हो गया—मुझे उस समय लगा जैसे अब तक कुछ भी नही हुआ था और जो होना था वही मेरे लिए सब कुछ था।

दूसरी सुबह मै मैरिट को साथ लेकर फराओ की सवारी देखने गया। वह अपनी नई ग्रीष्मऋतु की पोशाक पहने हुए अत्यत कमनीय लग रही थी हालाँकि वह तदूरखाने मे ही पली हुई थी—फराओं के कृपापात्रो के लिए पहले से ही निर्धारित स्थान पर जब मै उसे साथ लेकर पहुँचा तो मुझे उसके कारण तनिक भी शर्मिदा न होना पड़ा।

मेढो वाला राजपथ रगबिरगी झडियो से सजाया गया था और मार्ग के दोनो ओर लोगो की अपार भीड लगी हुई थी। दोनो ओर उद्यानो मे पेडो पर लडके चढ गये थे और पैपीटैटौन की आज्ञा से राजमार्ग पर अगणित

फूलो की टोकरियाँ रख दी गई थीं कि रीति के अनुसार जब फराओ आने लगे तो लोग उसके सामने फूल बरसावें। मेरे मन में उल्लास और आशा बँध रही थी क्योंकि देश की स्वतन्त्रता का आभास होने लगा था। मुझे फराओ के यहाँ से एक सुवर्ण का बड़ा पात्र दिया गया था। और मैं राजपरिवार का सिर खोलने वाला वैद्य बना दिया गया था। बगल में मेरे एक सुन्दर तरुणी खड़ी थी जो कि मेरी मित्र थी और जहाँ-जहाँ भी दृष्टि जाती थी मुझे लोग खुश और हँसते ही दिखाई देते थे।

फिर भी निस्तब्ध वातावरण छाया हुआ था—यहाँ तक कि मंदिर की छतों पर से कौवों की काँव-काँव भी सुनाई दे रही थी। उन दिनों कौवे और गिद्ध थीब्ीज से इतने हिल गये थे कि यहाँ से लौटकर पहाड़ों को जाते ही न थे।

फराओ ने अपनी कुर्सी के पीछे मुख पर रंगपुते हुए हब्शियों को लाकर गलती की। केवल उन्हें देखकर ही लोगों में क्रोध फूट निकला क्योंकि ऐसे बहुत थे जिन्होंने उनके हाथों इन दिनों चोट खाई थी।

लेकिन फराओ एखनैटोन लोगों के सिरों से भी बहुत ऊपर दिखाई दे रहा था—उसके सिर पर दोनों साम्राज्यों का ताज था—उसकी बाँहें उसके सीने पर बँधी थीं और हाथों में राजदंड और चाबुक इत्यादि थे। वह मूर्तिवत बिना हिले-डुले बैठा था—ठीक उसी प्रकार जैसे हर समय के फराओ लोगों के सामने बैठते आये थे—और जब वह आया तो भयानक सन्नाटा छा गया जैसे उसे केवल देखकर ही लोग गूँगे हो गए हों। मार्ग-रक्षक सैनिकों ने भाले उठाकर उसका जय-जयकार किया और लोगों ने राजसी कुर्सी के सामने फूल फेंककर जय बोलना शुरू कर दिया। लेकिन तभी भीड़ में उस जय-जयकार को चुप कराने के लिए आवाजें उठने लगीं और उनके सामने वह जयकार नगाड़े के सामने तूती जैसा प्रतीत होने लगा। लोग आश्चर्य से घबराकर एक-दूसरे को देखने लगे और तब तमाम रीति-रिवाजों के विरुद्ध फराओ हिला और उसने अपना राजदंड और कोड़ा उठाकर लोगों का अभिवादन किया—भीड़ पीछे हट गई और हठात् उनमें से कई वज्रकंठ समवेत गर्जन कर उठे—जैसे महासमुद्र में भी लहरें भीषण चट्टानों से टकराकर रौरव कर उठी हों।

"अम्मन ! अम्मन ! हमे अम्मन वापस दे दो सारे देवताओं का राजा अम्मन !"

और अम्मन का जयनाद गूँजने लगा। प्रत्येक जयनाद पहले से भयकर होने लगा जिन्हे सुनकर चील-कौवे उड-उडकर फराओं के ऊपर चक्कर लगाने लगे और लोग चिल्लाये :

"नकली फराओ ! वापस जाओ—जाओ !"

अग-रक्षक डर गए । कुर्सी जहाँ थी वही रुक गई और साथ के सैनिक और उसके नायक घबराकर इकट्ठे हो गए परन्तु मेढों वाले उस राजपथ पर लोग ऐसे टूट पडे कि उनका प्रवाह रोके न रुका और तब यह हालत हो गई कि जो कुछ हुआ उसका ठीक-ठीक पता नही चल सका । सिपाही लोग भीड को रोक रहे थे पर शीघ्र ही वह उनसे अपनी आत्मरक्षार्थ लडने लगे । हवा मे भाले चले, लकडियाँ चली और पत्थर उड़ते दिखाई देने लगे और राजपथ पर रक्त बहने लग गया । तुमुल रौरव हो रहा था—मारो ! मारो ! वह हब्शी ! वह ! जाने न पाये ! एटौन का नाश हो ! इत्यादि से वातावरण गूँज उठा ।

परन्तु फराओ के ऊपर किसी का हाथ नही उठा । वह सूर्य का पुत्र था—तमाम फराओ की भाँति--उसका शरीर पवित्र था--पूरी भीड़ मे एक भी आदमी ऐसा नही था जो उस पर हाथ उठाने की क्षमता रखता--उस पर स्वप्न मे भी हाथ तो हाथ, आँख भी नही उठाई जा सकती थी--मेरा विचार है कि पुजारी लोग भी ऐसा करने की नही सोच सकते थे । फराओ ने सब निर्भय होकर देखा, फिर वह अपनी शान भूलकर उठ खडा हुआ और उसने चिल्लाकर सैनिको को रोकना चाहा—परन्तु उस तुमुल रोर मे उसकी आज्ञा किसी ने नही सुनी ।

भीड ने सैनिको पर पत्थरो की वर्षा की और सैनिको ने आत्मरक्षार्थ उन्हे मार डाला । भीड चिल्लाती रही : "अम्मन ! अम्मन ! हमे हमारा अम्मन दे दो ! नकली फराओ वापस जाओ—थीबीज़ तुमसे कोई सपर्क रखना नही चाहता !" उच्चपदाधिकारियों और विशेष व्यक्तियो के लिए सुरक्षित स्थानो पर पत्थर आने लगे—जहाँ मैरिट को साथ लिये मैं भी खडा था—और लोग उन स्थानो को घेरने लगे । तब स्त्रियो ने अपने हाथ

के फूलो के गुच्छे फेंक दिये, अपनी इत्रदानियाँ नीचे पटक दी और वह भागी। भीषण कोलाहल होने लगा।

पर तभी होरेमहेब की आज्ञानुसार सीगो मे फूंक भरी गई और प्रांगणों और राजमार्ग के मोडो से रथ आगे बढने लगे। उन्हे उसने वहाँ पहले से ही छिपा रखा था। वह नही चाहता था कि शुरू में ही लोग उन्हें देखकर भडक उठे। रथ गडगडाहट करते हुए आने लगे। भीड घोडो की टापों और पहियो से कट-कटकर गिरने लगी—लेकिन होरेमहेब की आज्ञा से रथो की बगलो से लम्बे-लम्बे चाकू निकाल लिये गए थे क्योकि वह व्यर्थ रक्तपात नही करना चाहता था—रथ अब फराओ की कुर्सी और राजवश के अन्य लोगो को घेरकर धीरे-धीरे चलने लगे। पर भीड कम न होती थी। अन्त मे फराओ और राजवश के अन्य लोग नदी तट पर पहुँचकर राजसी जहाज मे बैठ गये और सुवर्णगृह की ओर चले गए। और तब भीड ने नारा लगाया—और उनमे से गुडो ने धनिको के घरों पर हमला कर दिया परन्तु होरेमहेब के सैनिक सन्नद्ध थे। उन्होने उन्हें पकडकर उनकी निर्मम हत्या कर दी—और फिर एक बार सुव्यवस्था आ गई। शाम हो गई थी। मैंढों के राजपथ मे पड़ी हुई लाशो को कौवे और गिद्ध फाड़-फाडकर खा रहे थे। और इस भाँति फराओ एखनैटोन ने पहली बार लोगो का रोप देखा और अपने देवता के कारण रक्त बहते देखा। वह उस दृश्य को कभी न भूल सका। घृणा ने उसके प्रेम में विप घोल दिया और उसकी कल्पना ने उड़ान भरी यहाँ तक कि जब वह आपे मे आया तो उसने आज्ञा दी कि जो कोई भी अम्मन का नाम ले या छिपकर उसकी पूजा करे उसे पकड़कर न्यूबिया की सुवर्ण खानों मे भेज दिया जाय—उस भयानक रेगिस्तान मे जहाँ मृत्यु ही अतिम निशानी है।

उसी शाम मुझे सुवर्णगृह बुलवाया गया क्योकि फ़राओ बीमार हो गया था। उसके वैद्यों ने घबराकर मुझे बुलवाया था कि मैं भी जिम्मेवारी बँटा सकूं। फ़राओ देर तक मुर्दो जैसा पड़ा रहा—उसकी नाडी इत्यादि सभी गायब रही। कुछ समय तक मूर्छित रहने के उपरात उसने अपने होठ और जीभ दाँतों से अर्ध-प्रज्ञा की हालत मे इतनी काट डाली कि रक्त बहने लगा—और तब वह प्रकृतिस्थ हुआ। तब उसने बाकी तमाम वैद्यो को

भगा दिया क्योंकि वह उन्हे देखना भी सहन नही कर सका। मुझे देखकर उसने क्षीण परन्तु दृढ स्वर से कहा :

"मेरा जहाज तैयार कराओ—उस पर लाल झडा फहराओ—मेरे साथ मेरे तमाम मित्र चलेक्योकि मै जा रहा हूँ—जा रहा हूँ जहाँ मेरी दिव्य दृष्टि मुझे ले जाय—मै वहाँ जाकर रुकूँगा—जहाँ की भूमि न मनुष्यो की होगी न देवताओ की। उसे मै ऐटौन को समर्पित कर दूँगा—वही एक नगर वनाऊँगा—जो ऐटौन का नगर होगा—मै थीवीज मे लौटकर कभी नही आऊँगा।"

उस अस्वस्थ अवस्था मे ही उसने आज्ञा दी कि उसे उसके जहाज मे पहुँचा दिया जाय। उसका निश्चय इतना दृढ था कि मै वैद्य होकर भी उसे न रोक सका।

हौरेमहेव ने सुना तो कहा "यह अच्छा रहा। थीवीज के लोग अपने रास्ते चलेगे और एखनैटौन अपने रास्ते चलेगा—अव दोनों ही खुश रह लेगे। देश मे फिर से शाति तो स्थापित हो जायेगी।"

नदी मे जहाज़ वढने लगा। मै साथ था। फराओ को झडा खोलकर चल देने की इतनी जल्दी पडी कि उसने राजवश के अन्य लोगो की प्रतीक्षा भी नही की। हौरेमहेव की आज्ञा से वहुत से जंगी जहाज उसके साथ चले कि कही उस पर कोई आपत्ति न आ जाय। थीबीज पीछे टूट गया था परन्तु उसकी याद हमारे साथ-साथ चल रही थी। नदी मे वार-वार मोटे मगर पुच्छ फटकारते जव सैकडो ही वार सैकडो ही फूली सडी हुई लाशे गदले पानी मे वहकर निकल जाती। हर वेत की झाडी मे लाशे या तो वस्त्रो से या केशो से उलझी मिलती जो सव फराओ एखनैटौन के नये देवता के कारण वहाई गई थी; परन्तु फराओ जैसे उससे अनभिज्ञ था—वह अपने कक्ष मे नर्म चटाई पर लेटा हुआ था—जहाँ अनुचर उसके शरीर मे सुगधित तेल मल रहे थे [illegible] ध भी जला रहे थे कि वह कहीं अपने देवता की

शामों को वह अपनी मवेशियो को नदी मे लाकर पानी पिलाते और दुनाली बाँसुरियाँ आनन्द से बजाते।

जब लोगो ने फराओ का पोत देखा जो वह श्वेत वस्त्र धारण करके नदी तट पर आकर खजूर की टहनियाँ हिलाकर चिल्ला-चिल्लाकर उसका अभिवादन करने लगे। फराओ की आज्ञा से कभी-कभी जहाज़ किनारे लगा दिया जाता और तब वह अपनी प्रजा से बाते करने, उन्हे छूने और उनकी स्त्रियो और बच्चों को आशीर्वाद देने नीचे उतर जाता, भेड़ें भी शर्मीली बनकर आती और उनके वस्त्रो को अपनी नाक लगाकर सिर हिलाने लगती—और उन्हे देखकर वह बहुत खुश होता।

रात्रि के अवसान मे वह पोत की कमान मे खड़ा होकर चमकते हुए सितारो को घूरकर देखा करता। उसने मुझसे कहा :

"नकली देवता की भूमि मैं इन सब गरीबो को बाँट दूंगा—" फिर एक बार कहा :

"मनुष्य का हृदय अँधेरी रात जैसा काला है—थीबीज़ अँधेरी रात के समान है—एटौन का साम्राज्य उज्ज्वल है अतएव मैं थीबीज़ मे नही रह सकता—सितारो से मुझे भय लगता है क्योकि जब वह टिमटिमाते हैं तो गीदड चिल्लाने लगते हैं—शेर अपनी माँद से निकलकर रक्त-पिपासा मे दहाडने लगता है—मुझे पुरानापन कुछ भी अच्छा नही लगता। क्योकि वह सब रात के समान है। बच्चे कितने अच्छे होते है सिन्यूहे! वही नये ससार—एटौन के ससार के सच्चे प्राणी है—वही आगे चलकर एटौन के प्रकाश से ससार को भर देगे—संसार बदल जायेगा—मैं पाठशालाएँ हर जगह खुलवाऊँगा जहाँ पाठ्यक्रम बदल दूंगा—लिखना भी आसान बना दूंगा कि गाँव मे लोग लिख सके—पढ सके—कि जब मैं उन्हें एटौन का सदेश लिखकर भेजूं तो वह स्वय उन्हे पढ ले आह! तब कितना आनद होगा!"

फराओ की बातो ने मुझे चक्कर मे डाल दिया। इस नई लिपि के बारे मे जिसकी ओर उसका सकेत था, मै जानता था कि वह आसान थी परन्तु वह पवित्र नही मानी जाती थी और न प्रचलित लिपि के समान सुन्दर ही थी। मैंने कहा :

"नई लिपि सुदर नही है और न पवित्र है—और यदि सभी लिखना-पढ़ना सीख जायेगे तो मिस्र का क्या भविष्य होगा ? ऐसा कभी नही हुआ है—फिर भला मेहनत कौन करना चाहेगा ? खेत सूने पडे रह जायेगे—और फिर जब लोग भूखे मरने लगेगे तो लिखने-पढने का आनद कौन भोगेगा ?

मुझे शायद यह सब नही कहना चाहिए था क्योकि सुनते ही वह मुँह सिकोडकर गुस्से से बोला .

"तो अधकार मेरे इतने पास मौजूद है ! सिन्यूहे ! वह तुममे साक्षात्कार होकर बोल रहा है—तुम मेरे पवित्र मार्ग मे शक के रोडे अटका रहे हो—परन्तु ध्यान रखो कि सत्य मेरे अदर उज्ज्वल अग्नि की भाँति जलता है। मेरी आँखे अडचनो के पार ऐसे देख लेती है जैसे वह अड़चनें सब पवित्र जल की हो और जो दुनिया मेरे बाद आयेगी उसे मै साफ देख रहा हूँ—उस दुनिया मे न घृणा है न भय है—लोग सब मिलकर मेहनत करते है और वहाँ न अमीर है न गरीब है—सभी बराबर है—सभी लिख-पढ सकते है और जो कुछ मै उन्हे लिख कर भेजता हूँ उसे वह पढ सकते हैं—कोई किसी से 'गदे सीरियन' या 'घृणित हब्शी' नही कहता—सभी भाई-भाई है और ससार से युद्ध समाप्त हो गया है—इस सबको देख कर मेरी शक्ति बढ जाती है और मुझे इतना ज्यादा आत्मसतोष होने लगता है कि मेरा हृदय फूल उठता है और ऐसा लगने लगता है कि वह खशी से फट जाएगा।"

मैने उसे औषधि पिलाकर सुला दिया। मै उसके पागलपन के बारे मे सोच रहा था और तब मुझे लगा कि उसके पागलपन मे भी कितना सार था—कैसी थी उसकी वह बाते जो हृदय मे डक की तरह लग जाती थी—कितनी सचाई थी उसके सदेश मे ! मेरा विचार है कि उसका वह सत्य बाकी तमाम सत्यो से ऊँचा था। हालाँकि उसी सत्य के पीछे पृथ्वी रक्त-रजित हो रही थी, मै सोचता हूँ कि ऐसा भी ससार कही हो सकता था जैसा एखनैटौन चाहता था—कहते थे कि मृत्यु के उपरात पश्चिमी देश मे ऐसा ही साम्राज्य मिलता था जहाँ होकर आत्मा को जाना पडता था—पर कौन जाने, क्योकि मृत्यु के बाद का हाल किसने देखा था। शायद वह

झूठी ही हो ! मैंने आकाश मे चमचमाते तारे देखे और मुझे अनुभव होने लगा कि मैं एकाकी था—और तभी मुझे लगा कि फ़राओ एखनैटॉन महान् था—शायद वह संसार को बदलने के लिए ही पैदा हुआ था—क्योकि जो कभी नही हुआ उसे वह कर दिखाना चाहता था—वह समर्थ था, कर भी सकता था—फिर क्यो न मैं उसके साथ रहूँ और उसे सहारा दूँ—उसका साहस बढ़ाऊँ ? मिस्र ही तो ससार का सबसे बड़ा देश है फिर क्यो न वही सबको सत्य का मार्ग प्रदर्शित करे ? और मुझे लगा शाश्वत काल से चालू रीति-रिवाज टूट गए हैं--नई दुनिया का प्रकाश फैल रहा है।

पंद्रहवे दिन फराओ की आज्ञा से पोत रोका गया। वहाँ तट पर की भूमि न देवता की थी न किसी मनुष्य की। दूर तक वह भूमि सुवर्णमयी बनकर सूर्य के प्रकाश मे चमक रही थी—उसकी पृष्ठभूमि मे नीली पहाड़ियाँ पहरेदार बनी खडी थी। फ़राओ ने वह भूमि एटॉन को समर्पित कर दी। उसकी आज्ञा से वहाँ एक नगर स्थापित किया जाने लगा--उसका नाम रखा गया--एखटैटौन—स्वर्गों का नगर। यहाँ भूमि जुती हुई नही थी--केवल कुछ चरवाहे वेत की टट्टियाँ बाँधकर रहा करते थे।

जहाज पर जहाज आने लगे। कारीगर और कलाकार, और बढई और लुहार--सभी इकट्ठे होने लगे, और फ़राओ स्वयं उन्हे नये नगर बसाने का नक्शा समझाने लगा—कहाँ उसका सुवर्णगृह बनना था—कहाँ एटॉन का मंदिर बनना था और लोगो के घर बनने थे। चरवाहे भगा दिये गये। और उनकी वह कच्ची झोपडियाँ उखाड़ दी गई, फ़राओ ने उन्हे आज्ञा दी कि वह महानगर के बाहर अपने कच्चे मकान बना ले।

उत्तर से दक्षिण की ओर पूर्व से पश्चिम की ओर पाँच-पाँच सडके बनाई गई और उनके दोनो ओर प्राय. एक से मकान बनाये गये—और नगर बनने लगा—बसने लगा—-रात-दिन हथौडे चलते रहे—पत्थर लगता गया, ईंटे पकती गई और मकान खडे होते गए।

जाडे आ गए पर फ़राओ थीबीज़ नही लौटा। उसका नगर बन रहा था, बस रहा था—और जब खंभे पर खंभे जुडते, पत्थर पर पत्थर रखा जाता वह खुशी से नाचने लग जाता। उसने अम्मन से प्राप्त तमाम धन इस नगर को बनवाने मे खर्च कर दिया और उसकी सारी भूमि अत्यत

निर्धनो मे बाँट दी।

जब बाढ उतरी तो हौरेमहेब दरबार के अन्य लोगो साहित जहाज से उतरा—और एखटैटौन आया—वह फराओं को समझाने आया था कि वह सेना को छुट्टी देने का अपना विचार वदल डाले।

परन्तु फराओ अपने इरादे पर अडा रहा और दोनो की नित्य की बहसो का कुछ भी नतीजा नही निकल रहा था।

हौरेमहेब ने कहा : "सीरिया मे काफी हलचल मची हुई है और वहाँ मिस्र के लोगो के लिए प्राण-भय उत्पन्न हो गया है। राजा अजीरू मिस्रियो के प्रति घृणा का जोरों से प्रचार कर रहा है—इसमे अब तनिक भी सदेह नही है कि वहाँ बलवा हो जावेगा।"

और फ़राओ एखनैटौन ने उत्तर दिया

"तुमने मेरे महल का फर्श नही देखा जिसमे कारीगर बाँस की झाडियो के बीच जल मे तैरती हुई बत्तखे क्रीट की कला के अनुसार, उसी प्रणाली मे चित्रित कर रहे है?—रह गई सीरिया मे बलवे की बात—मेरे विचार से वह असभव है, क्योंकि वहाँ के राजाओ के पास मै 'जीवन-पदक' भेज चुका हूँ। राजा अज़ीरू तो मेरा खास दोस्त है जिसने मेरा 'जीवन-पदक' ससम्मान ग्रहण करने के उपरांत अम्मूरू की भूमि पर एटौन का मदिर भी बनवाया है—जिसने निश्चय ही यहाँ मेरे महल के अतिरिक्त एटौन के मदिर का विशाल मडप तो देखा ही होगा—वह सचमुच देखने योग्य ही है हालाँकि उसके स्तभ सब ईंटो के ही बने है—समय बचाया गया है इसके अतिरिक्त खानो से दासों को कड़ी मेहनत करके पत्थर लाने पडते और वह दृश्य मुझे नही सुहाता—नही—नही—और हाँ अज़ीरू—उस पर तुम्हारा शक करना व्यर्थ है। उसके पास से मेरे पास अगणित मिट्टी की तख्तियाँ आई है अपने व ऐटौन के बारे मे ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत ही इच्छुक है। अगर तुम चाहो तो मेरे किताब-खाने के लोग तुम्हे वह सब तख्तियाँ दिखा सकते है पर पहले किताब-खाना ज़रा ठीक हो जाय—अभी वह इमारत बनकर पूरी नही हुई है—"

हौरेमहेब ने उत्तर दिया : "मैं उसकी मिट्टी के तख्तियो पर थूकता हूँ—जैसा झूठा वह स्वय है वैसी ही वह तख्तियाँ है—लेकिन यदि सेना

को छुट्टी दे देने का तुम्हारा विचार दृढ हो गया है तो कम-से-कम मुझे सीमांत प्रदेशों मे तो सेना को सुदृढ कर लेने दो—क्योंकि अभी दक्षिण से कवीलो ने कुश की भूमि मे और सीरिया में अपने मवेशी चराने के लिए हाँक दिये है—हमारे काले मित्रों के गांवों को वह जला रहे हैं क्योंकि वह फूंस के वने है जो आग को झट पकड लेते है—"

"वह सव किसी शत्रुता से वह लोग नही करते।" फ़राओ वोला :

"वह लोग वेहद गरीव हैं—हमारे मित्रों को दक्षिणी कवीलो के लोगो के मवेशियो को भी चरने देना चाहिए—हर्ज क्या है ? और फिर कुछ गांवों की ख़ातिर पूरे-के-पूरे कवीलो से हमे घृणा भी नही करनी चाहिए—पर यदि तुम सीमा की रक्षा करने जाना चाहते हो तो वहां सैनिक सगठन कर सकते हो क्योंकि राज्य की सुरक्षा का उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर है—पर ध्यान रखना कि वह केवल रक्षा करे--हमलावर सैनिक न वन जाएं।"

हौरेमहेव ने सिर पीट लिया। पर फराओ कहता गया :

"तुमने पहले भी मेरा कहना नही माना था—यदि लोगों को तुम शुरू से ही एटौन का सदेश सुनाते तो आज ऐसे दिन देखने को न मिलते—और हाँ, तुमने देखा कि मेरी दोनो पुत्रियाँ अव चल लेती हैं ? वड़ी छोटी से कितना प्यार करती है और उनके पास एक छोटा-सा प्यारा-प्यारा हिरन का वच्चा भी है जिससे वह खेला करती हैं—और रह गई सुरक्षा की वात—सो तुम इन्ही वर्खास्त हुए लोगो को फिर रख सकते हो—और यह रथ तो सव झगडे और फसादो की जड है—इनको तोड़ देना चाहिए क्योकि शक मे शक पैदा होता है—हमे अपने पडोसियो मे शक पैदा नही करना चाहिए।"

"इससे वेहतर होगा कि अपने रथो को अज़ीरू या हितैती लोगो को वेच डालो।" व्यंग्य और घृणा से हौरेमहेव वोला : "वह तो सुवर्ण दे देंगे वदले मे और उससे तुम यहाँ ईंटें अधिकाधिक पकवा सकोगे।"

और रोज़ उनका झगड़ा चलता रहा। फ़राओ ने हौरेमहेव से कहा : "सीमाओं पर चाहे जितने सुरक्षादल रखो पर मेरे विचार से सवको लकडी के भालो से सज्जित करो।"

हौरेमहेव ने मैम्फिस मे तमाम ज़िलों के शासको को इकट्ठे होने की

आज्ञा दी क्योकि वह देश के मध्य मे था, ऊपरी और निचली सल्तनतो की सीमा पर। और जब वह जहाज मे चढकर जाने ही वाला था कि दूत आये और काफ़ी खतरे के समाचार लाये। सीरिया से बहुत से पत्र और मिट्टी की तख्तियाँ भेजी हुई आई थी। उसकी सेना बढाने की आशा फिर चमक उठी क्योकि अब उसे मालूम हुआ कि थीबीज के झगडो के बारे मे समाचार सुनकर अजीरू ने अपने राज्य की सीमा आगे बढा ली थी। सीरिया के मुख्य केन्द्र मैगिड्डो मे बलवे हो गये थे और वहाँ के किले मे स्थित मिस्री फौजो को अज़ीरू के लोगो ने घेर लिया था। मिस्रियो ने फराओ से प्रार्थना की थी कि शीघ्र मदद पहुँचाई जाय अन्यथा जीवित रहना दुर्लभ था।

पर फराओ ने जब यह सुना तो बोला—

"अजीरू गुस्सैल आदमी है। शायद उसने ठीक ही किया है क्योकि मेरे दूतो ने ही कुछ गडबडी की मालूम होती है। जो कुछ भी हो उससे उसकी हरकतो के बारे मे पूछे बिना मै उसके विरुद्ध कुछ नही करना चाहता। एक चीज़ मैं जरूर कर सकता हूँ, यह जरूर मुझे पहले ही कर देना चाहिए था, अब जबकि एटौन का नगर काली भूमि मे खडा हो रहा है सो मुझे ऐसा ही एक लाल भूमि मे बनवा देना चाहिए। सीरिया मे, कुश मे, मैगिड्डो कारवानो के मिलने का अड्डा है, ठीक है वही सबसे उत्तम रहेगा। परन्तु अभी तो मुझे शक है क्योकि तुम कहते हो वहाँ हलचल है।"

और वह खाँसने लगा। फिर कहने लगा

"लेकिन तुमने मुझसे कहा था कि एटौन का मन्दिर जैरूसलम मे बना है। हमने देखा था न जब तुम खबीरियो से युद्ध करने गए थे? ओफ़! उस युद्ध के लिए तो मै कभी अपने-आपको क्षमा नही कर सकता। खैर, पर मैगिड्डो के मुकाबले मे जैरूसलम सीरिया के बीच मे तो नही है, क्योकि वह जरा और दक्षिण मे है, फिर भी अब मै ध्यान रखूँगा कि वह नगर भविष्य मे एटौन का नगर बन जाय। इस समय वह केवल गाँव है। पर अब वह सीरिया का मुख्य केन्द्र बन जायेगा।"

और वह नेत्र मूँदकर एटौन के उस भविष्य मे बनाये जाने वाले नगर

की कल्पना मे खो गया।

हौरेमहेब ने यह सब सुना तो उसका धैर्य जाता रहा और उसने अपनी चाबुक तोडकर फराओ के कदमो के पास फेंक दी। वह क्रुद्ध होकर अपने जहाज पर चला गया। वहाँ से वह मैम्फ़िस चला गया जहाँ जाकर उसने सारे देश की मेना का सगठन प्रारम्भ कर दिया। एखटैटोन आकर उसको लाभ ही हुआ क्योकि मैने उसे इतमीनान से बेबीलोन, मितन्नी और हाती देश मे जो कुछ मैंने देखा था सब बतलाया, वह चुपचाप सुनता रहा और मेरे उस चाकू पर हाथ फेरता रहा जो मुझे हाती देश मे जहाजी कप्तान ने भेट मे दिया था। उसने मुझसे पूछकर वहाँ की सडकों, पुलो और वहाँ के मुख्य लोगो के नाम लिये। मैंने उसे सलाह दी कि विशेप परिचय यदि वह उन देशो के बारे मे सुनना चाहता था तो कप्ताह से मिले, क्योकि कई बातो मे उसकी स्मृति मुझसे अच्छी थी।

हौरेमहेब एखटैटोन से जब गया तो अत्यन्त क्रुद्ध था और फ़राओ ने उसके चले जाने की खुशी मनाई। मुझसे वह मुस्कराता हुआ बोला—

"शायद एटौन की यही इच्छा है कि हम सीरिया को खो बैठें और यदि ऐसा होना ही है तो भला मैं कौन होता हूँ जो मिस्र के उज्ज्वल भविष्य मे रोडा अटकाऊँ ? वैसे सीरिया के धन ने मिस्र का कलेजा खा लिया है। सारी बुराइयाँ उसी देश से यहाँ आई है। सीरिया हमारे हाथ से निकल जाय तो शायद हमारा रहन-सहन भी सीधा-सादा हो जाय। सच्चा और पवित्र !"

मेरा हृदय उसकी बातो से विद्रोह कर रहा था मैंने कहा :

"परन्तु सीरिया मे इस समय सारे बच्चो और स्त्रियो पर अत्याचार हो रहे है। स्मर्ना मे मिस्री किलेदार का एक लडका है, उसका नाम रैमिसीस है। वह भूरी-भूरी आँखो वाला बड़ा प्यारा बच्चा है। मैगिड्डो में एक सुन्दरी मिस्री महिला रहती है जिसका मैंने इलाज किया था। वह गर्भवती थी।"

"यह सब मुझसे क्या कह रहे हो ?" फराओ ने ऊबकर बीच में ही टोका, मैंने कहा :

"और सीरियन लोगो ने रैमिसीस को काटकर फेंक दिया हो और उस स्निग्ध त्वचा वाली स्त्री के साथ बलात्कार करके उसे काट डाला हो तो ?" मेरा स्वर आवेश के साथ कुछ ऊँचा हो गया था।

सुनकर फराओ की मुट्ठियाँ बँध गई और वह नेत्र अधमुँदे करके बोला "सिन्यूहे! जानते हो कि यदि जीवन और मृत्यु मे से एक को चुनना ही पड़े तो मै सौ मिस्रियो की जान के बदले हजार सीरियनो की जान लेना कभी पसन्द नही करूँगा ? क्योकि यदि मैंने सीरिया मे युद्ध किया तो जाने कितने मिस्री और सीरियन दोनो ही मारे जायेगे, यदि मै बुराई को बुराई से ही मारूँगा तो नतीजा और भी भयानक होगा और यदि बुराई का सामना अच्छाई से करूँगा तो शायद नतीजा इतना बुरा न निकले। मै किसी भी हालत मे जीवन से मृत्यु को अच्छा नही समझता और इसलिए तुम्हारी बाते सुनने मे असमर्थ हूँ। एटौन के नाम पर और सत्य के नाम पर मुझे शाति से रहने दो क्योकि मैं मरने वालो की चीत्कार निरतर नही सुन सकता। नही!"

और वह सिर झुकाकर सोचने लग गया। वह भावावेश मे काँप रहा था, उसके नेत्र लाल हो उठे थे। मैंने देखा कि वह कैसा पागल था, परन्तु फिर भी मैगिड्डो मे शत्रु के अत्याचारो को मै भूल गया क्योकि मैं उस पागल को प्यार करने लगा था। वह कितना बडा सत्य कह रहा था। मुझे निश्चय हो गया कि यदि वह अधिक दिनो तक जीवित रहा तो अपना ही राज्य खो बैठेगा। फिर भी उसका पागलपन बुद्धमानो की बुद्धि से ज्यादा अच्छा और सुन्दर प्रतीत हो रहा था।

नये नगर के बसाये जाने से राजघराने मे दरार पड गई। राजमाता ताया ने अपने पुत्र के साथ उस रेगिस्तान मे जाना मजूर नही किया। थीबीज उसका अपना नगर था जहाँ उसके पति फराओ ने सुवर्ण-गृह बनाया था। ताया ने निचले साम्राज्य मे बेत के जगलो मे अपना जीवन प्रारम्भ किया था। तब वह बत्तख बेचने वाली लडकी थी। वहाँ से उसके पति एमनहोटप ने उसे लाकर थीबीज मे साम्राज्ञी बना दिया था। वह थीबीज छोडकर कही नही जा सकती थी। राजकुमारी बैकेटेमौन ने भी

उसी के साथ रहना मंजूर किया था। पुजारी 'आई' फ़राओ के स्थान पर थीवीज मे न्याय देने लगा। वह चमडे मे लिपटी हुई पुस्तको को सामने रखकर फ़राओ के सिंहासन पर बैठकर वहाँ शासन करता। थीवीज़ मे सब कुछ पूर्ववत था। केवलनकली फराओ नही था और न उसके न होने का किसी को अफसोस ही था।

साम्राज्ञी नेफरतीती अपना तीसरा जापा कराने थीवीज आ गई थी क्योकि थीवीज के वैद्यो और जादूगरनियों के विना वह जापा कैसे करा सकती थी ?

उसने तीसरी पुत्री को जन्म दे दिया था। जो आगे चलकर रानी वनने वाली थी। जापा आसानी से कराने के लिए हब्शिन जादूगरनियो ने वच्ची का सिर पतला और लम्वा कर दिया था जैसाकि पहली दोनों लड़कियो का किया था। आगे चलकर जव राजकुमारियाँ वडी हुई तो उनकी देखा-देखी घरवार की स्त्रियाँ भी अपने सिरो के पीछे नकली सिर वांधती कि उनके सिर भी वैसे ही फूले दिखाई दे पर राजकुमारियाँ अपने सिरो पर नित्य उस्तरा फिरवाकर अपनी खोपडियो का सौदर्य प्रदर्शित किया करती और कलाकार उनकी प्रशसा करते और अपने चित्रो मे भी वैसे ही सिर के उभार वनाया करते थे।

और जव साम्राज्ञी नेफरतीती एखटैटौन लौटी तो लोगो ने देखा कि वह सौदर्य मे और अधिक निखर आई थी। फराओ सिवाय उसके किसी और अपनी स्त्री के साथ रहना पसन्द नही करता था।

एखटैटौन एक ही वर्ष मे जगल से महानगर वन गया। वहाँ वाजारो मे खजूर के पेड दोनो ओर शान से लहराने लगे थे। संपूर्ण नगर एक उद्यान के सदृश्य था। वहाँ स्थान-स्थान पर पुष्प खिले रहते और फलो के पेड फूला करते थे। सुन्दर मकान, मनोहर, चित्र और स्वच्छ जल से भरे कुण्ड वहाँ अगणित थे और वागो मे पालतू हिरन घूमा करते थे। रग-विरगे फूल और रग-विरगी मछलियो की वहाँ कमी नही थी। राजमार्गो पर हल्के रथो को दीर्घकाय जवर्दस्त घोडे जिनके सिरो पर शुतुर्मुर्ग के पर लगे रहते, जव टेढी गर्दन किये खीचते तो मानो नगर की महिमा स्वय वोलने लग जाती थी और रसोइयो की नाना प्रकार की सामग्रियो से आगन्तुको की

भूख बढ जाती थी, वहाँ सारी दुनिया से मसाले लाये जाते थे।

और जब जाड़ा लौटा तो इस नगर को फराओ ने एटौन को समर्पित कर दिया। जव वह अपने सुवर्ण रथ मे वैठकर पक्के राजपथो पर मे होकर उस उत्सव मे निकला तो उसके मार्ग मे फूल विछा दिए गए और तारो के वाद्यों पर एटौन की स्तुति की गई।

फराओ ने निश्चय किया कि मृत्यु के उपरान्त भी वह उस नगर को नही छोडेगा। जव नगर वन गया तो उसकी आज्ञा से पूर्वी पहाडियो के पास कब्रो का निर्माण प्रारभ कर दिया गया। कारीगरो और राजो के पास इतना काम था कि वह जीवन-भर वही रहकर उसे किया करते। और उन्होने लौटकर घर न जाने का ही निश्चय किया क्योकि यहाँ फराओं की छाया मे उन्हे सुख था—उनके पास धान्य और तैल की कमी नही थी—वह उन्हे भर-भरकर मिलता था और यहाँ उनकी स्त्रियाँ सुखी थी जो उन्हे हृष्ट-पुष्ट सतान देती थी।

वाद मे फराओ ने एखटैटौन मे मृतको के शरीरो मे मसाले लगाने का भी प्रवंध किया—और मृतक-गृह वनाया गया। और इस सम्वन्ध मे थीबीज से मृतकगृह के विशेषज्ञ वुलाये गए। फराओ ने मुझे उस विभाग का अधिकारी वनाया। जव मृतक-गृह के लाश धोनेवाले जहाज से उतरे तो उनकी अन्धकार की प्रकृतिस्थ आँखे वहाँ की चकाचौध मे मुँद गईं। वह भी शीघ्र ही अपनी दुर्गन्ध सहित नये मृतकगृह मे घुस गए—और उनमे मैने देखा कि मेरा पुराना मित्र रैमोज भी था—वह जिसका काम नाक के रास्ते चिमटियो से भेजा वाहर निकाल लेना था। मैंने जव उससे मित्र कहा तो वह मुझे घूरने लगा फिर शीघ्र ही पहचान गया। मुझमे उससे नेफर नेफर नेफर के वारे मे पूछने की उत्कठा जाग्रत हो उठी। मैं अपने लिये हुए वदले के वारे मे जानना चाहता था। और उसी ने मुझे वतलाया कि किस प्रकार उस वुरी स्त्री ने होश मे आने पर उन सवको आपस मे लडाया—उसके एक कटाक्ष पर लाश धोने वाले एक-दूसरे को मारने को तुल जाते थे। उसको जव वह सव अपना चोरी किया हुआ सम्पूर्ण धन दे चुके तो भी उसकी पिपासा कम न हुई और तव उसके स्पर्श की खातिर लोग आपस मे एक-दूसरे की चोरी करने लग गए। वह पूरे तीस

दिन तीस रातें वहाँ रही थी और निर्लज्ज होकर उनके बीच नग्न होकर रही थी—परन्तु उसने जब जाने की ठानी तो कोई उसे नही रोक सका था क्योंकि यदि एक उसे रोकता तो दूसरा चाकू लेकर उसके पक्ष मे तैयार हो जाता था—जब वह गई तो तीन सौ दबन सोना—न जाने कितनी चाँदी और ताँबा, कपड़े, मसाले इत्यादि ले गई थी और जाते-जाते कह गई थी कि अगले साल वह फिर आवेगी, यह देखने कि हमने इस बीच फिर चोरी से कितना धन इकट्ठा किया है। और तब से मृतकगृह मे चोरियाँ बढ गई थी।

रैमोज ने मुझे अन्त मे बतलाया कि उन्होंने उसका नाम 'सैट-नेफ़र' रखा था क्योंकि वह सुन्दरी तो थी पर उसका सौन्दर्य सैट के ही समान प्रलयकारी था—

और तब मैंने जाना कि बदले से आत्मा तृप्त नही होती थी—उसका असर क्षणिक होता है और अक्सर कर्ता के ही विपरीत उसका असर हो जाता है। वह उसी के हृदय को आग की भाँति झुलसा करता है। मैं सचमुच नेफर नेफर नेफर का कुछ भी न बिगाड़ सका था हालाँकि जब वह मृतकगृह से गई होगी तो निश्चय ही कई दिनो तक उसके शरीर से वहाँ की दुर्गन्ध नही जा सकी होगी।

११

जलघडी मे से जल बहते सभी ने देखा है; और उसी भाँति जीवन भी बहता चला जाता है— बस यह पानी से नही नापा जाता बल्कि विशेष घटनाओ से विभूषित किया जाता है। वृद्धावस्था मे पहुँचकर ही मनुष्य इस सत्य को पहचान पाता है जब उसे सभी कुछ बुरा मालूम होने लगता है— एक महत्वपूर्ण दिन कई वर्षों के मामूली जीवन से अधिक छाप मनुष्य के हृदय पर छोडता है—और यह सत्य मैंने नये महानगर एखटैटोन मे रहकर

सीखा जहाँ मेरा जीवन नील के जल के समान निर्बाध रूप से वहता रहा और मेरा जीवन मुझे स्वप्न की भाँति प्रतीत होने लगा था—दस साल मैंने फराओ एखटैटौन के सुवर्ण-गृह मे बिता दिये—यह दस साल मेरे जीवन के सबसे छोटे साल थे जो हाथ भी न आये—एकदम फिसल गये।

एखटैटौन मे मैंने अपने ज्ञान मे कोई वृद्धि नही की—वल्कि जो कुछ विद्या मैने देश-देशातरो मे जाकर सीखी थी उसी के बल पर जिया किया—जैसे मधुमक्खी गर्मियो मे इकट्ठे किये हुए मधु को जाडो मे बैठकर खाती है— लेकिन जैसे बहता पानी पत्थर के कगारो को न जाने कब काट जाता है—उसी भाँति आयु ने शायद मेरे हृदय मे परिवर्तन कर दिया था—अव मै पहले से अधिक शात और स्थिर चित्त का हो गया था—शायद इसलिए कि अब कप्ताह मेरे पास नही रहता था—वह दूर थीबीज़ मे 'मगर की पूँछ' मे मेरा व्यापार सँभाल रहा था—

और फराओ एखनैटौन के लिए एटौन के नगर की सीमाओ से वाहर होनेवाली तमाम वातो मे जैसे कोई सवध और रुचि नही होती थी—वह सब उसके लिए वैसी ही निरर्थक थी जैसे जल की छाती पर चमकती हुई चन्दा की चाँदनी।

थीबीज़ मे पुजारी 'आई' फ़राओ का राजदड लेकर दोनो साम्राज्यो पर शासन करता था—वह फराओ का ससुर भी था और उन दिनो वास्तविक सम्राट् वना हुआ था। वह वृद्ध अवश्य था परन्तु महत्वाकाक्षी था। अब जव अम्मन की शक्ति समाप्त की जा चुकी थी तो वह जानता था कि फ़राओ का ही अधिकार सर्वोच्च था और इसीलिए वह उसे दूर-ही-दूर रखना चाहता था कि वह उसके शासन मे आकर बाधा न डाल दे। जिस तरह भी होता वह धन समेटता और फराओ के पास उसे भेजता रहता कि वह अपने नगर को बसाने, वहाँ नई-नई इमारते बनाने और एटौन का प्रचार करने मे व्यस्त रहे।

उसके शासन का साझीदार मैम्फिस में वैठा हुआ होरेमहेब था जिसके ऊपर सपूर्ण देश की सुव्यवस्था का भार था—उसी की शक्ति से अम्मन का नाम कब्रो मे से टाँकी से छील दिया गया था—फराओ एखनैटौन को तो अम्मन से इतनी ज्यादा चिढ थी कि उसने अपने पिता की कब्र खुलवाकर

उसमे से भी उसका नाम मिटवा दिया था।

'आई' चाहता था कि फ़राओ इसी प्रकार के काम मे लगा रहे और उसके बीच न बोले। राज्य मे कर उसी भाँति वसूल किये जाते और यदि गरीब उन्हे न दे सकने के कारण पीटे जाते अथवा दास बनाकर बेच दिये जाते या सिर पर राख डालकर रोने लगते तो यह सब विशेष नही माना जाता क्योंकि हमेशा से ऐसा ही होता आया था।

जब फराओ की स्त्री नैफरतीती ने चौथी बच्ची को जन्म दिया तो वह बात स्मर्ना की हार से भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण समझी गई—नैफ़रतीती भागकर थीबीज पहुँची कि अपनी माँ के साथ की हब्शिन जादूगरनियो से इस मामले मे सलाह करे कि कही वह किसी के जादू के कारण तो ऐसा नही था। परन्तु उसे तो फराओं को दो और पुत्रियाँ देनी थी और वह उसने जन्मी।

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया सीरिया मे उपद्रव बढने लगे। जब-जब जहाज आते तो नई-नई मिट्टी की तख्तियाँ लाते और जब मैं उन्हे पढता तो मुझे लगता मेरे सिर के ऊपर से तीर छूट रहे थे—नगर जल रहे थे—जिनका धुआँ मेरी नाक मे घुसता हुआ-सा लगता—बच्चे और स्त्रियो के कुचले हुए शरीर मेरे नेत्रो के सामने से घूम जाते। अम्मूरू के लोग हिंस्र पशुओ की भाँति अत्याचार कर रहे थे। बेबीलौन और जैरूसलम के शासको ने लिखा था कि वह फराओ के सदा के दास थे और उससे उस अत्याचार से पीडित होकर सहायता माँग रहे थे। फराओ अत मे उन्हे सुनते-सुनते ऊब गया था। अब उसने उन्हे सुनना भी बन्द कर दिया था—अब वह वैसे ही राजसी किताबखानो मे जमा कर दी जाती थी।

लेकिन जब जैरूसलम भी हाथ मे चला गया और जोप्पा ने भी राजा अजीरू से मित्रता कर ली तो होरेमहेब मैम्फ़िस से एखटैटौन आया। वह उससे सेना बढाकर सीरिया मे युद्ध करने की आज्ञा लेने आया था।

उसने आकर फराओ से कहा :

"मुझे दस हजार भाले वाले सैनिक और धनुर्धारी दे दो—सौ रथ दे दो—और मैं सीरिया को फिर तुम्हारे नीचे ला दूंगा—अब जबकि योद्धाओं ने हथियार डाल दिये है और अजीरू शत्रु से मिल गया है तो सीरिया मे

मिस्र की शक्ति समाप्त ही समझनी चाहिए ।"

फराओ एखनैटौन को बडा दुःख हुआ जब उसने सुना कि जैरूसलम का ध्वस कर दिया गया था क्योकि सीरिया को शान्त करने के लिए वहाँ एटौन का नगर बनाने का निश्चय कर लिया था बल्कि, उस सबध मे कुछ काम शुरू भी हो गया था। उसने कहा :

"जैरूसलम मे वह वृद्ध—उसका नाम तो मुझे याद नही रहा—मेरे पिता का मित्र था। जब मै छोटा था तो मैने उसे थीबीज के स्वर्ण-गृह मे देखा भी था। उसकी लम्बी श्वेत दाढी थी। मैं उसे मिस्री कोष से जीवन-यापन के हेतु धन दूँगा हालाँकि मिस्र की आमदनी सीरिया से व्यापार रुक जाने के कारण अब काफी घट गई है।"

"वह अब तुम्हारे धन को भोगने की हालत मे नही रहा है।" हौरेमहेब ने शुष्क उत्तर दिया, "उसकी खोपडी के ऊपर के हिस्से पर सोना मढा एक अत्यन्त सुन्दर और चित्रकारियो से युक्त प्याला बना लिया गया है—अजीरू की आज्ञा से वह हत्तूमाश के सम्राट् गुब्बिलुलिउमा के पास भेट मे भेज दिया गया है।"

फराओ का चेहरा सफेद पड गया। फिर वह धीरे से बोला :

"अजीरू ने ऐसा किया ? जिसे मै अपना मित्र समझता था। परन्तु हौरेमहेब, तुम मुझसे भाले और रथ माँगकर असभव कार्य कैसे करा सकते हो ? लोग वैसे ही करो से दबे जा रहे है, इधर फसले भी अच्छी नही हुई है।"

"एटौन के नाम पर मुझे अधिकार दे दो कि मैं कम-से-कम दस रथ और सौ भाले वाले ही एकत्रित कर सकूँ। मै उन्हे लेकर सीरिया मे जाऊँगा और जो कुछ बच पायेगा उसी को बचाऊँगा," हौरेमहेब ने व्यग मे उत्तर दिया।

परन्तु फराओ ने कहा . "नही, मैं सीरिया से युद्ध नही कर सकता। एटौन को युद्ध और रक्तपात से घृणा है। सीरिया को स्वतत्र हो जाने दो, हौरेमहेब ! और तब मिस्र उससे पहले की भाँति व्यापार करके ही सतोष कर लेगा। मिस्र के धान्य बिना उसका काम कैसे चल सकता है ?"

"तुम्हारा विचार है कि वह वही तक रुक जाएंगे फराओ एखनैटौन ?"

चौककर हौरेमहेव ने कहा : "प्रत्येक मिस्री की हत्या से, प्रत्येक दीवाल के टूटने से और प्रत्येक नगर की विजय से शत्रु का हौसला वढ़ता चला जायेगा। सीरिया के वाद सिनाई की खानो पर हमला होगा और तव हमे भालो और तीरो के लिए ताँवा कहाँ से मिलेगा ?"

"मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि रक्षकों के लिए लकडी के भाले ही काफी है," फराओ ने चिढकर उत्तर दिया फिर क्यो वार-वार मेरे सामने भालों और तीरो की वाते करते हो। जानते हो जव मै एटॉन की स्तुति मे कविता करता हूँ तो यह सव वाते मुझे परेशान करने लगती है और कविता नही वनाने देती ?"

परन्तु हौरेमहेव नही रुका—वह कहता ही गया : "और जैसा कि तुम कहते हो कि सीरिया का काम मिस्र के धान्य के विना कैसे चलेगा तो सुन लो कि वह उसे वेवीलौन से मँगा रहे है। यदि तुम सीरिया से नही डरते तो कम-से-कम हितँतियो मे तो डरो जिनकी शक्ति वढाने की पिपासा का कोई अत ही नही है।"

फराओ सुनकर हँसा फिर वोला :

"जव तक की मुझे याद है किसी शत्रु ने मिस्र की भूमि पर हमला करने का साहस नही किया है। मिस्र ससार का सवसे वड़ा और धनी देश है फिर मैंने सम्राट् गुव्विलुलिउमा के पास भी तो जीवन-पदक भेज दिया है और उसी की प्रार्थना पर उसे काफी सोना भी भेजा है कि वह अपने मंदिर मे मेरी पूरी प्रतिमा स्थापित करे। वह कभी मिस्र की शांति भग नही करेगा क्योकि वह जव चाहे मुझसे सुवर्ण प्राप्त कर सकता है।"

हौरेमहेव के माथे की नसे फूल उठी परन्तु अव उसने अपने आप पर नियत्रण करना सीख लिया था। वह गुस्से को पी गया। मैंने उससे कहा कि वैद्य होने के नाते अव मैं उसे फ़राओं से और अधिक वोलने की आज्ञा नही दे सकता—वह उठा और मेरे साथ वाहर चला आया।

जव वह मेरे घर आया तो अपने कोडे से अपनी जाँघ पीटकर कहने लगा :

"सैट और तमाम शैतानों की कसम ! सड़क पर पडी हुई लीद भी इस जीवन-पदक से ज्यादा फ़ायदेमद है। जहाँ फराओ निश्चय ही पागल है,

पर इससे भी ज्यादा पागलपन तो यह है कि जब वह मुझे
देखता है, मेरे कधो पर हाथ रखता है और मुझे मित्र
करता है तो मैं उसकी बातो से प्रभावित हो उठता हूँ।
हूँ कि वह जो कुछ कहता है सब गलत कहता है। यदि
आदमी उसके सामने एक-एक करके लाये जाएँ तो शायद
बदल दे पर यह सब व्यर्थ की बात है—पर मुझे
किसी खेल जैसा लगता है, नही रुकना चाहिए
बारियो की भाँति स्तन निकल आयेगे और फिर
दूध पिलाना पड जाय।"

जब हौरेमहेब मैम्फ़िस लौट गया तो मुझे
और फराओ का अच्छा मित्र नही था क्योंकि मेरी
थी, मुझे इस बात का दु.ख भी हुआ परन्तु फिर
शहद मे डूबी हुई चिडियाँ नित्य खाता और
पानी जल्दी-जल्दी निकलने लगा था।

इधर फराओ स्वस्थ हुआ तो उधर
बीमार पड गयी। वह दिनोदिन दुबली होती
बढने लगी। मैं उसे सुवर्ण मिश्रित औषधियाँ
सुश्रूषा मे लगा रहता। स्वय फराओ उसकी
क्योकि वह अपनी पुत्रियो से बहुत प्रेम
खो गया कि मुझे थीबीज मे अपने व्याप
रही। मै काफी थका हुआ और परेशान
स्वभाव भी चिडचिडा हो गया था। मैंने
"राजघराने का वैद्य बनकर उसका

फ़राओ की आज्ञा लेकर मै थीवीज़ के लिए चल दिया। जब मैं जहाज मे चला तो फराओ ने कहला भेजा कि मैं उसके बदले नदी तट के लोगो से मिलूँ जिनके बीच उसने नकली देवता अम्मन की भूमि बाँटी थी और उनकी कुशल-क्षेम पूछूँ।

मैं कई गाँवों के बडे-बूढो से मिला। यह यात्रा मेरी यात्रा से भी अधिक सुखकर निकली क्योकि इस जहाज के मस्तूल पर फ़राओ का झडा उड रहा था—मेरी शैया नर्म थी और नदी मे मक्खियाँ भी नही थी। लोग मेरे रसोइये को नित्य नई भेटें लाकर देते और मेरे सामने ताजा भोजन हर समय तैयार रहता था। परन्तु जब किसान मेरे सामने आये तो मैंने देखा कि हड्डी के ढाँचे बने हुए थे। उनकी स्त्रियाँ दुबली और भयभीत लगती थी, उनके बच्चे रोगग्रस्त थे। उन्होने मुझे अपना अनाज लाकर दिखाया था। मैंने देखा वह लाल चूरा-सा हो गया था, ऐसा जैसे रक्त मे डुबो दिया गया हो। उन्होने मुझसे कहा :

"पहले हम लोगो ने समझा कि हमारी असफलता हमारे अज्ञान के कारण थी क्योकि हमने कभी खेती का काम नही किया था—परन्तु अब हमे ज्ञात हो गया है कि जो भूमि हमे फराओ ने दी थी वह शापग्रस्त है और जो उसे जोतता है वह भी वैसा ही हो जाता है, रातो को अदृश्य पैर हमारी फसलो को कुचल जाते है और अदृश्य ही हाथ हमारे फलो के पेड़ो को तोड जाते है। हमारे मवेशी अकारण ही मर जाते है। हमारी सिंचाई की नहरें बद हो जाती है और कुओं का जल जहरीला हो जाता है। बहुत से तो भूमि छोड़कर नगरो को लौट गये है, उनकी हालत अब पहले से भी नाजुक हो गई है, वह फ़राओ और उनके नये देवता को गाली देते है। परन्तु हमने अभी साहस नही छोडा है क्योकि हमारे पास फराओ ने जीवन-पदक और पत्र भेजे हैं। हमने 'बिजूका' बना कर खेतो मे टाँग दिया है कि टीडी हमे नुकसान न पहुँचावे। लेकिन ऐसा लगता है कि अम्मन की शक्ति फराओं की शक्ति से अधिक है, अब तो हम लोग भी इस भूमि को छोड़कर चले जाना चाहते है अन्यथा हमारी स्त्रियो और बच्चो के जीवन ख़तरे मे पड़ जायेंगे, जैसे कि अब तक हुआ है और हो रहा है।"

मै पाठशालाओ मे भी गया। अध्यापकों ने मेरे वस्त्रों के ऊपर जो एटौन का जीवन-पदक देखा तो उन्होने अपने वेत छिपा दिये और अम्मन का चिह्न हवा मे उँगली फेर कर बनाया। आलथी-पालथी मारकर बैठे बच्चे मुझे इतने गौर से देखने लगे कि अपनी नाक पोछना भी भूल गए।

अध्यापको ने कहा : "इससे ज्यादा मूर्खता और क्या हो सकती है कि सभी के बच्चे पढाए-लिखाए जाएँ ?—पर हम क्या करें ? फराओं हमारा पिता है, वही माता है, फिर भला हम उसे नाखुश कैसे कर सकते है ? लेकिन हम पढे-लिखे लोग है और यहाँ गदी भूमि पर बच्चो की नाक पोछते हुए उन्हे पढाना हमारी मर्यादा के विरुद्ध है, न यहाँ मिट्टी की तख्तियाँ है न बाँस की कलमें। इसके अतिरिक्त यह जो नयी लिपि है, इसे पढाने के लिए तो हमने इतनी मेहनत करके लिखना-पढना नही सीखा था ? हमारी तनखाएँ हमे कायदे से हर महीने नही मिलती और बच्चों के माँ-बाप भी हमे कुछ भेट इत्यादि नही देते—और देते है भी तो थोडा-बहुत—फिर भी हम फराओ को यह जताने के लिए कि हर कोई नही पढाया जा सकता—लगे हुए है, करे भी क्या ?"

मैंने बच्चो की पढाई की जाँच की और उन्हे बहुत ही कमजोर पाया। अध्यापक लोग स्वय बिगडे हुए और पहले के असफल लेखक लोग थे। उन्होने एटौन का 'जीवन-पदक' लेकर नौकरी प्राप्त की थी। वह स्वय भी कुछ नही जानते थे।

गाँव के बडे-बूढो ने एटौन का नाम लेकर बड़ी कटुता से शपथ ली और कहा :

घरो मे घुसकर हमारी स्त्रियो से बलात्कार करते है। उनका कहना है कि यह सब एटीन की ही इच्छा से होता है क्योकि आदमी-आदमी और स्त्री-स्त्री मे कोई अन्तर नही होता। हम तो वास्तव मे अपने जीवन मे कोई तवदीली नही चाहते थे। शहर मे हम गरीव अवश्य थे पर दु.खी तो नही थे ! उस समय भी लोगो ने हमसे कहा था—परिवर्तन मे सावधान रहे ! क्योंकि इसमे गरीव और भी गरीव हो जाएँगे—ससार मे जव भी परिवर्तन हुए हैं उसमे सवसे अधिक सदा से गरीव ही पिसते रहे हैं और पिसेंगे।"

मैने देखा कि वह कितना वड़ा सत्य कह रहे थे—और मुझे लगा कि फ़राओ के चारो ओर रहने वाले लोग जिनमे मै भी एक था—कुत्ते के वालों मे घुसे हुए कलीलों की भाँति थे—जो प्रजा के दुःख से सर्वथा अनभिज्ञ थे।

मेरा जहाज वढता रहा। आखिरकार थीवीज़ की तीन पहाड़ियाँ दिखाई देने लगी। मैने थीवीज़ की ऊँची-ऊँची इमारतें देखी और रीति के अनुसार नील के जल मे मदिरा उँडेल दी।

जव मैं तांवा गलाने वाले के मकान पर पहुँचा, जो कि मेरा था तो वह मुझे वहुत ही छोटा लगा। उसके सामने का मोहल्ला बड़ा गदा था, जिसमे मक्खियाँ भरी पडी थी, और वदवू आ रही थी। साईकामोर का पेड़ जो मैंने स्वय लगाया था, वह अव काफी वड़ा हो गया था पर मुझे उसे देखकर भी कोई संतोप नही हुआ। फ़राओ एख़नैटौन के वैभव मे रहकर मैं इतना विगड गया था कि मैं अपने घर लौटकर भी सुख का अनुभव नही कर सका।

कप्ताह घर पर नही था, केवल मुती वहाँ थी। उसने अपनी आदत के अनुसार स्वागत तो मेरा किया परन्तु वडवडाते हुए क्योकि मैंने अपने आने की सूचना पहले नही भेजी थी जिससे वह पहले से ही मकान को साफ कर रखती और नये कपडो से उसे सजाकर रखती। वहाँ से मैं सीधा 'मगर की पूँछ' पहुँचा। द्वार पर मुझे मैरिट मिली जिसने मेरे राजसी वस्त्रो और उस राजसी कुर्सी के कारण मुझे नही पहचाना। वह वोली :

"क्या तुमने आज शाम के लिए यहाँ पहले से ही पालकी भाड़े पर ले ली है ? अन्यथा मैं तुम्हे अंदर नही जाने दे सकती।" वह पहले से कुछ मोटी

हो गई थी और अब उसके गालो की हड्डियाँ उतनी उभरी हुई नही लगती थी ।

मेरा दिल उसे देखकर खुश हो गया और मैंने उसकी जाँघ पर हाथ रखकर कहा : ,"मै समझता हूँ कि तुमने मुझे बिल्कुल ही भुला दिया है क्योकि एकाकी भी तो इस बीच अनेको यहाँ आये होगे जिनको तुमने अपनी चटाई पर अपने अग से गर्म किया होगा ! फिर भी मैंने सोचा कि शायद तुम्हारे घर मे स्थान मिल जाय और मै एक प्याला ठडी मदिरा पी लूं, तुम्हारी चटाई के बारे मे तो मै अब सोच ही कैसे सकता हूँ ?"

वह आश्चर्य और खुशी से चिल्ला उठी :

"सिन्यूहे ! तुम हो ? शुभ है यह दिन जो मेरे मालिक घर लौट आये हैं ।"

उसने अपने प्यारे-प्यारे हाथ मेरे कधो पर रख दिये और कहा :
"सिन्यूहे ! तुम्हे हो क्या गया है—अकेले रह-रहकर इतने भारी कैसे हो गये हो ?" उसने मेरे सिर से वस्त्र (विग) उतारा और मेरे गजे सिर पर हल्के से चपत लगाई फिर बोली : "बैठो न सिन्यूहे ! मैं तुम्हारे लिए ठडी मदिरा लाती हूँ···तुम तो यात्रा से थक गये हो और हाँफ रहे हो !"

मैंने कहा : "पर किसी भी हालत मे 'मगर की पूंछ' मत ले आना—क्योकि अब मेरे पेट मे वह शक्ति नही रही है कि उसे पचा सकूं और मेरे सिर की तो पूछो ही मत ।"

मेरे घुटनो को छूकर वह बोली : "क्या मैं इतनी मोटी बुड्ढी और कुरूप हो गई हूँ कि बरसो के बाद मुझसे मिलने पर भी आज तुम अपने पेट के बारे मे बाते करते हो ?"

मै उसकी बाते सुनकर झेप गया क्योकि उसने सच बात कही थी और सच बात हमेशा ठीक असर करती है । मैने उत्तर दिया :

"ओह मैरिट ! मेरी मित्र !—मै स्वय वृद्ध हो गया हूँ और अब क्या बाकी रहा है मुझमे ?"

लेकिन उसने शोखी से कहा : "तुम्हारा ख्याल ऐसा है ? पर जब तुम्हारी आँखे मुझे देखती है तब तो वृद्ध कही से भी नजर नही आती—और मुझे तो यही खाती हैं ।"

"मैरिट—मेरी मित्रता के नाते कम-से-कम 'मगर की पूंछ' जल्दी ला दो—इससे पहले कि मैं'''राजगी घराने का सिर खोलने वाला वैद्य—गुस्सा होकर चिल्लाने न लग जाऊं, और खासकर इस बंदरगाह की सराय मे।"

वह मेरे लिए मदिरा एक वडे सीप मे लाई जिसे मैंने अपनी हथेली पर रख लिया। पीते ही मेरा कठ जलने लगा क्योंकि अब मुझे तो अंगूरो की उत्तम मदिरा की आदत पड़ गई थी'''फिर भी वह जलन मुझे अच्छी लगी क्योकि मेरा दूसरा हाथ उसकी जाँघो पर रखा था।

और मैंने कहा: "मैरिट! तुमने मुझसे एक बार कहा था कि जिन लोगो के जीवन की पहली बहारें गुजर चुकी हो, और जो एकाकी हो उनके लिए सच से झूठ ही कभी-कभी हितकर साबित होता है। हम लोग बहुत सालो तक एक-दूसरे से बिछुडे रहे हैं लेकिन वह कौन-सा दिन बीता है जब मैंने तुम्हारा नाम हवाओ में नही फुसफुसाया है? मैंने उल्टी धाराओ मे आने वाली चिडियाओ के द्वारा तुम्हारे पास प्यार के सदेश भेजे है और हर सुबह जब मैं उठा हूँ तो तुम्हारा नाम स्वत: मेरे होठो से निकल गया है।"

उसने मुझे घूर कर देखा और मैंने देखा कि वह अब भी काफी लुभावनी और सुन्दर थी, उसकी आँखो की गहराइयो मे मुस्कराहट और वही पुरानी उदासी थी जैसी कि गहरे कुएँ के पानी मे होती है। उसने मेरे गाल छूकर कहा · "सिन्यूहे! अब बात बहुत अच्छी तरह करना सीख गए हो। मैं भी क्यो नही साफ कह दूं कि तुम्हारी याद मुझे बहुत आती रही है। जब मैं अकेली अपनी चटाई पर सोती थी तो तुम्हारे बिना मुझे सब कुछ सूना-सूना लगता था। 'मगर की पूंछ' के असर से यदि कभी किसी ग्राहक ने मेरे ऊपर हाथ बढाना चाहा है तो तुम्हारी याद हो आई है, पर, फराओ के सुवर्ण-गृह मे तो बहुत-सी स्त्रियां होगी, अतीव सुन्दरी भी होगी ही और निश्चय ही वैद्य होने के नाते तुमने उनके साथ रगरेलियां की होगी।"

"यह सच है कि मैंने वहाँ की स्त्रियो से संपर्क रखा था। वह सुन्दरियां भी थी और जवान भी और उनकी त्वचा भी ताज़ा फूल जैसी थी, पर वह सब कुछ नही, मेरी मित्र तो केवल तुम हो।"

उस तेज मदिरा ने अब तक मुझ पर पूरा असर कर दिया था। मेरा शरीर जवान हो गया था और मेरी रगों मे मद छा गया। मैंने कहा : "इस बीच तुम्हारी चटाई पर कई आदमी सोये होगे लेकिन जब तक मै यहाँ थीबीज़ में हूँ तब तक उनमे से कोई तुम्हारे पास न आने पावे। क्योंकि यदि मैं उत्तेजित हो गया तो समझ लो कि उनकी खैर नही होगी जब मैंने खबीरियो से युद्ध किया था तो मेरा प्रचण्ड रूप देखकर हौरेमहेब के सैनिको ने मेरा नाम 'जंगली गधे का बेटा' रख दिया था, समझी।"

उसने बनावटी भय दिखाते हुए हाथ उठा दिये और कहने लगी: "बस उसी से तो मुझे डर लगा करता है क्योकि कप्ताह से मै सुन चुनी हूँ कि तुम अपने गुस्से के कारण किस भाँति लोगो से लड पडते थे और फिर उसे तुम्हे उसे छुडाना पडता था।"

कप्ताह का नाम सुनकर मेरे नेत्र उमड आये, मैंने कहा : "वह है कहाँ ? मै उस अपने पुराने दास से मिलना चाहता हूँ।"

मैरिट ने मेरी तरफ चुप रहने का सकेत किया फिर बोली . "अब तुम्हे 'मगर की पूँछ' की आदत तो नही रही है। वह देखो मेरा पिता तुम्हारे शोर से परेशान होकर घूर रहा है। कप्ताह शाम से पहले नही लौटेगा क्योकि वह आवश्यक अनाज के व्यापार के सम्बन्ध मे बाहर गया है। उसे देखकर तुम आश्चर्यचकित रह जाओगे क्योकि अब तो उसे याद भी नही रहा है कि वह कभी तुम्हारा दास था। चलो इस बीच मै तुम्हे बाहर घुमा लाऊँ, बाहर की ठण्डी हवा से तुम्हारी हालत भी सुधर जायेगी, देखो तो सही कि तुम्हारे जाने के बाद थीबीज कितना बदल गया है।"

जब वह नये वस्त्र और आभूषणो से सजकर आई तो अत्यन्त कमनीय लग रही थी, उसे सिर्फ उसके हाथो और पैरो से ही पहचाना जा सकता था कि वह उच्च वश की स्त्री नही थी। हम दोनो पालकी मे सटकर बैठ गये और मुझे उसके शरीर की गध बडी अच्छी लगी। मैढो की सडक पर जब दास हमारी कुर्सी उठाकर चले तो मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और जब मुझे अनुभव होने लगा कि मै घर लौट आया था।

अम्मन के मदिर मे कौवे और काली चीले चक्कर लगा रही थी, प्रागण सब खाली पड़े थे, बागो मे घास उग आई थी, जीवन-गृह और

मृतक-गृह के बाहर थोड़े से लोग खडे थे। मैरिट ने मुझे बतलाया कि जीवन-गृह मे अब लोग अधिक संख्या मे नही जाते थे। वैद्यों ने नगर में अपनी-अपनी दुकाने खोल ली थी।

मैरिट ने कहा : "तुम मुझे कहाँ इस शापग्रस्त स्थान मे ले आये। तुम्हारे वस्त्रो पर बना हुआ यह जो एटोन का जीवन-पदक है यह हमे शायद आपत्तियो से बचा ले पर यह भी साथ-साथ मत भूलना कि इसके कारण हम पर पत्थर फेंके जा सकते है। लोगों मे अब भी उसके प्रति घृणा कूट-कूटकर भरी हुई है।"

उसने सच कहा था क्योकि जब हम मंदिर के बाहर आए तो लोगो ने मेरे 'जीवन-पदक' को देखकर घृणा से थूक दिया। और तभी मैंने देखा कि अम्मन का एक पुजारी उधर से आया—उसका सिर घुटा हुआ था और उसके मुख और सिर पर तेल चमक रहा था। वह शुभ्र श्वेत वस्त्र पहने हुए था, लगता था जैसे उसने किसी आपत्ति का सामना नही किया था। लोगो ने उसे आदर से नत-मस्तक होकर मार्ग छोड़ दिया। मैंने अक्लमंदी की और अपने जीवन-पदक पर हथेली रख ली। मै नही चाहता था कि उपद्रव का शिकार बनूं।

मैने देखा कि मदिर की दीवाल के सहारे एक आदमी कहानियाँ सुना रहा था। लोगो की भीड उसके चारो ओर लग रही थी। वह नाम बदल कर फ़राओ एखनैटोन और उसके एटोन की ही कथा सुना रहा था और लोग एकाग्रचित्त होकर उसे सुन रहे थे। आगे वह बोला : "और 'रॉ' क्रुद्ध हो गया, उसके शाप से अकाल पडने लगा। झीलों का पानी सड़ गया। उनमे खून मिल गया और फिर वह नकली फ़राओ जो हजारो साल पहले था और उसकी माँ जो एक जादूगरनी हब्शिन थी बिना पैंदे के गड्ढे में फेंक दिये गए।" और लोग खुशी से चीख उठे और उस कहानी सुनाने वाले के पात्र मे ताँबे के बहुत से सिक्के इकट्ठे हो गए।

मैटिन ने मुझसे कहा कि इस प्रकार की कथाएँ संपूर्ण उत्तरी और दक्षिणी साम्राज्यो मे प्रचलित थी जिन्हे भला कौन रोक सकता था? फिर उसने कहा : "आजकल भविष्यवाणियो का भी यहाँ बहुत जोर है। आज के भाव डाँवाडोल हो रहे है। गरीब भूखो मर रहे है और करों के बोझ से

सभी ऊब उठे है। भयानक भविष्यवाणियाँ हो रही है। सच मुझे तो अत्यन्त भय लगता है।"

जब हम तदूरखाने मे से लौट आये तो मुझे फराओ एखनैटौन के शब्द याद आने लगे—"एटौन माता से बच्चे को अलग कर देगा, पुरुष को उसके हृदय मे बसी हुई 'बहिन' से अलग कर देगा, जब तक कि ससार मे उसका साम्राज्य स्थापित न हो जायेगा।" लेकिन मुझे वह बात अच्छी नही लगी क्योकि मैं अपनी मैरिट से अलग नही होना चाहता था।

जब कप्ताह अन्दर आया तो मैं भौचक्क होकर उसे देखता रह गया। वह गजब का मोटा हो गया था और विशालकाय हो गया था, इतना अधिक कि द्वार मे अन्दर घुसने के लिए उसे आडा मुडना पडता था। उसका चेहरा गोल हो गया था जिस पर तेल चमचमा रहा था। सिर पर उसके नीला वस्त्र (विग) था और उसकी कानी आँख पर एक सोने की गोल पत्ती लटक रही थी। अब वह सीरियन पोशाक नही पहनता था बल्कि थीबीज़ के बेह-तरीन दर्जियो से मिस्री राजसी वस्त्र सिलवाकर पहना करता था। उसकी कलाइयो और टखनो मे सोने के कड़े झिलमिलाते थे। उसके गले मे कई लडी सोने की जजीरे पडी थी और मोटी-मोटी भद्दी उँगलियो मे सोने की जडाऊ अँगूठियाँ चमक रही थी। वह हाँफ रहा था और उसके पसीना बह रहा था।

जब उसने मुझे देखा तो आश्चर्य से हाथ उठाकर वह चिल्लाने लगा : "शुभ है यह दिन जो मेरे मालिक घर आये है।" फिर उसने झुककर बड़ी मुश्किल से अपने घुटनो की सीध मे अपने दोनो हाथ फैला दिये। उसका भारी पेट उसे झुकने नही दे रहा था।

भावावेश मे वह रोने लगा और उसने मेरे घुटने पकड़ लिये। उसने वह शोर मचाया कि मुझे यह अनुभव होने लगा कि मुझे मेरा पुराना कप्ताह मिल गया था। मैंने उसे उठाकर छाती से लगा लिया, मुझे लगा जैसे मैं किसी मोटे बैल का आलिगन कर रहा था जिसमे से नई रोटी की खुशबू आ रही थी।

उसने मेरा कंधा सूँघा, आँसू पोछे और फिर वह हँसा, फिर उसने

कहा : "आज का दिन मेरे लिए बहुत ही शुभ है। इस समय जितने लोग मेरे घर में बैठे हैं, सबको मैं मुफ्त में एक-एक सीप भर कर 'मगर की पूंछ' पिलाऊँगा। परन्तु यदि वह दूसरी बार माँगेंगे तो उन्हें दाम देने होंगे।" आखिरी शब्द उसने धीरे से कहे थे।

घर के अन्दर के हिस्से में ले जाकर उसने मुझे नर्म चटाई पर बिठाया और मैरिट को मेरे पास बैठने की आज्ञा दे दी। उसके अनुचर और दासों ने जो कुछ उस घर में था उनमें से छाँटकर सर्वोत्तम खाद्य और पेय मेरे सामने परोसे। उसकी मदिराएँ कीमती और फ़राओ की मदिराओं के समान ही थीं और उसकी परोसी हुई भुनी हुई बत्तख तो थीबीज़ की विशेष वस्तु थी ही, क्योंकि वह सड़ी हुई मछलियों पर पाली जाती थी जिनसे उनके मांस में एक विचित्र स्वाद आ जाता था।

जब हम खा-पी चुके तो उसने कहा : "सिन्यूहे, मेरे मालिक, मैंने जो तुम्हारे पास व्यापार के लाभ के हिसाब अब तक भेजे हैं, मुझे आशा है वह सब तुमने देख लिये होंगे और उनसे तुम्हें यह भी पता चल गया होगा कि तुम्हारा धन कितना अधिक बढ़ गया है, पर हाँ, आज का यह जो भोजन हमने किया है और जो जोश में मैंने सारे ग्राहकों को 'मगर की पूँछ' मुफ्त पिला दी है उसे मेरे विचार से घरखर्च में डलवा दिया जाये, क्योंकि इसमें फ़ायदा भी है, मुझे फराओ के कर वसूल करने वालों की वजह से बड़ी परेशानी रहा करती है।"

मैंने उत्तर दिया : "मेरे लिए तुम्हारे हिसाब सब कोई अर्थ नहीं रखते। न मेरा इतना दिमाग ही है कि ढेर सारे जोड़ों को देखूं या समझूं, जो मुनासिब जँचे वही करो क्योंकि तुम पर मुझे पूरा विश्वास है।"

सुनकर कप्ताह हँसने लगा और उसके मोटे पेट में से हँसी ऐसे निकलने लगी जैसे गर्म गद्दों में से आ रही हो। मैरिट भी हँसती रही क्योंकि आज उसने मेरे साथ मदिरा पी थी और अब वह सिर के पीछे दोनों हाथ लगाये चित्त लेटी हुई थी कि मैं उसके वस्त्रों के नीचे उसके वक्ष के उभार को देख सकूँ।

इसके बाद कप्ताह बतलाता रहा कि उसने दो बड़े मुनीम रख लिये थे जिनके हिसाबों से कर वसूल करने वाले भी घबरा जाते थे क्योंकि

वह उन्हे समझ ही नही पाते थे। सीरियन का हिसाब समझना हँसी-खेल नही होता था। वह तरकीबो से करो की चोरी किया करता था। कई खास मदों को वह नौकरो पर तथा अन्य लोगो पर खर्च मे दिखाता था। फराओं के करो का भार असह्य था। गरीबो से जब उनकी आमदनी का पाँचवाँ हिस्सा लिया जाता था तो अमीरो से तीसरा। कभी-कभी आधा ले लिया जाता था। "फराओं का यह अन्याय है?" वह बोला, "कि सभी पर एक-सा कर नही लगाया गया है। जब गरीबो से पाँचवाँ वट लेते है तो अमीरो से भी वही लेना चाहिए। एक तो यह और दूसरे सीरिया हाथ मे रहा नही और इन्ही दो के कारण मिस्र गरीब हो गया है और हाँ, सबसे विचित्र बात तो यह है कि जब मुल्क गरीब हो गया है तो गरीब और भी गरीब हो गये है और अमीर और भी ज्यादा अमीर हो गये है। इसे फराओ भी नही बदल सकता।"

मै चुपचाप सुनता रहा। कप्ताह ने और मदिरा दी फिर वह अपनी शेखी हाँकने लगा कि वह अनाज का कुशल व्यापारी था।

"हमारा देवता सचमुच ही बडा शक्तिशाली निकला, क्योकि जब देशाटन करके पहिले ही दिन मै इस सराय मे आया तो उसी दिन यहाँ अनाज के व्यापारियो से जान-पहचान हो गई। मैने एकदम अनाज खरीदना शुरू कर दिया और उसी साल मैने उसमे से बहुत लाभ उठाया, क्योकि तुम्हे तो पता ही है कि अम्मन—मेरा मतलब है कि बहुत-सी भूमि बजर पडी रह गई थी। हमे बडा मुनाफा हुआ। फिर मैने इसी तरह हर साल किया और अब मेरे पास अनाज के अगणित गोदाम भरे पडे है पर मै उन्हे अब बेच नही रहा हूँ बल्कि और भी खरीदने की सोच रहा हूँ जब तक कि उसे सोने के भाव न बेच सकूँगा। अनाज भी कमाल का मुनाफा देता है, जैसे कोई जादू हो।

"लेकिन यह सोचना फिर भी गलत है कि मैने तुम्हारा सारा धन केवल अनाज मे ही लगा दिया है—अनेक व्यापारो मे उन्नति प्राप्त की है मैंने मेरे प्यारे मालिक।" और उसने मेरा पात्र फिर मदिरा से भर दिया।

देर तक वह व्यापार की बाते करता रहा और मै उसे समझने की कोशिश करता रहा—मैरिट लेटे-लेटे हँसती रही। फिर वह बोला .

"मुनाफ़े से मेरा मतलव उस रकम से है जो कर देने के उपरात हाथ मे वच जाये—इसमे से मुझे वह उपहार भी घटा देने पडते है जो कर घटवाने के लिए मुझे हाकिमो को देने पडते है। समय-समय पर मैं गरीवों को अनाज भी वाँटा करता हूँ और यह काम वडा फायदेमद सावित होता है—जव मै किसी को एक नाप भर कर अनाज दान करता हूँ तो उससे पाँच नापो पर अँगूठा करा लेता हूँ और वह लिखा-पढा तो होता नही है और फिर यदि हो भी तो उसे दाम तो देने पड़ते नही है। वह निशानी भी कर देता है और दुआएँ देता हुआ हमारे यश का गान करता फिरता है और उन निशानियो मे मै कर लेने वालो से वच जाता हूँ···।"

मैने पूछा : "तो हमारे पास वहुत अनाज है?" उसने गर्व से सिर हिलाया। मैने कहा :

"तब तो तुम जल्दी करो और किसानो को जाकर वीज दो—उनके पास जो वीज हैं वह लाल है गोया खून की वर्षा हो गई है उस पर—पानी पड़ ही चुका है और अव फसल वोने का समय है।"

कप्ताह ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं मूर्ख था, फिर सिर हिलाकर कहा : "मालिक! जिस काम को तुम नही समझते उसमे दखल न दो—उसे मुझे ही करने दो—तुम्हारी राय मे तो वडा नुकसान है—मामला कुछ ऐसा है कि हम अनाज के व्यापारियो ने पहले वीज वाँटा—किसान गरीव तो थे ही—उन्हे उसकी आवश्यकता थी—हमने दुगना अनाज ठहरा लिया। पर जव फसल तैयार हुई तो वह न चुका सके। हमने उनकी मवेशियाँ कटवा दी और उनकी खाले ले आये और कर्ज़ का गट्ठर भरा, पर जव अनाज की कीमत वढ़ी तो यह सौदा नुकसान का रहा—अव तो यह है कि जिस कद्र ज़मीन कम वोई जाये वही अच्छा है—अनाज कम पैदा होगा और हमारे गोदामो के माल की कीमत दुगनी-तिगुनी-चौगुनी हो जायेगी—तुम व्यर्थ व्यापार के पचड़े मे मत पड़ो।"

और तव मैने जमकर कहना शुरू किया : "जैसे मैं आज्ञा देता हूँ कप्ताह वैसे ही करो—क्योकि अनाज मेरा है—मुझे इस समय मुनाफा लेना नही सूझ रहा है वल्कि मुझे उन किसानो की पसलियाँ दिखाई दे रही है जो विलकुल ही खानो में परिश्रम करने काले दासों जैसे दुर्बल हो गए है—

उनकी स्त्रियाँ याद आ रही है जिनके स्तन ऐसे लटकते है जैसे दो खाली थैलियाँ हो—उनके बच्चे जो नदी तट पर टेढे पैरो से चलते है और चलते-चलते कमजोरी से गिर जाते है। मैं चाहता हूँ कि तुम जाकर उन्हे वीज बांट आओ—एटौन के नाम पर फराओ एखनैटौन के नाम पर जिससे मै प्रेम करता हूँ। मै यह भी नही चाहता कि तुम उन्हे बीज मुफ्त दो क्योकि यह आदत भी अच्छी साबित नही होती। फराओ ने उन्हे भूमि मुफ्त ही तो दी थी? पर मै यह चाहता हूँ कि उन्हे नाप के नाप पर वीज दिया जाये—जितना दिया जाये उतना ही लिया जाये—यदि वह उसे भी न दे तो तुम अपना डडा सभालना, पर मुझे उनसे मुनाफा नही चाहिए।"

कप्ताह ने जव यह सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड डाले और वह चिल्लाने लगा :

"नाप का नाप? पागलपन है यह! फिर मैं मुनाफा कहाँ से कमाऊँगा? यह क्या देवताओ के लिए भी अप्रिय वात कह रहे हो? इससे तो व्यापारी लोगो के अतिरिक्त अम्मन—हाँ अब मैं उसका नाम स्वतत्रता से यहाँ ले सकता हूँ क्योकि यहाँ सुनने वाला कोई नही है—हाँ अम्मन के पुजारी लोग भी क्रुद्ध हो उठेगे।"

पर मै अपनी वात पर अडा रहा। तब वह वोला :

"क्या तुम्हे पागल कुत्ते ने काट लिया है या बिच्छू ने डक मार दिया है तुम्हारे? मेरा तो विचार था कि तुम उपहास कर रहे थे! पर खैर—जव तुम चाहते ही हो तो ऐसा ही सही—हमारे तावीज का देवता हमारी रक्षा करेगा—तो हम गरीव जरूर हो जायेगे—वैसे मै स्वय भी दुवले आदमियों को देखकर खुश नही होता—अक्सर अपनी आँखे फेर लिया करता हूँ।"

मैने कहा. "तुम वेहद झूठे हो—गरीब तुम कभी नही हो सकते—हर बात मे तुमने लाभ उठाना सीख लिया है—मै वैद्य हूँ और इस नाते जो तुम इतने मोटे हो, तुम्हारा भागना-दौडना अव जरूरी है—जाओ और किसानो की सहायता करो—याद है कप्ताह वेवीलौन की धूल मे हम कैसे चला करते थे—और लैवनान के पहाडो मे जव तुम गधे पर चढकर चले थे तो कितना खुश हुए थे। हाँ, वहाँ के चढे-चढे फिर 'का' देश मे आकर ही उतरे थे—ओह! क्या थे वह दिन! काश मै फिर जवान हो सकता!"

देर तक हम मदिरा पीते हुए बातें करते रहे। मैरिट जब मेरे साथ रात को मेरी चटाई पर सोई तो उसने वस्त्र हटाकर मेरे होंठों के सम्मुख अपनी भूरी त्वचा कर दी थी—मैं उसके साथ आनन्द भोगता हुआ सो गया। मैंने उसे फिर भी बहन कहना नही चाहा पर वैसे मैं उसके साथ घडा फोड़ने को तैयार हो गया क्योंकि वह मेरी मित्र तो थी ही—और प्यारी भी थी।

दूसरी सुबह मुझे सुवर्णगृह मे राजमाता की सेवा मे उपस्थित होना पडा जिसे सारा थीबीज जादूगरनी कहने लग गया था। मेरे विचार से उसकी यह उपाधि सही थी क्योंकि उसने अपनी अपार शक्ति मे सारी अच्छाइयो को बुराई में बदल दिया था।

जब मैं अपने जहाज़ की ओर लौटा और मैंने अपने राजसी वस्त्र पहने और अपने रुतबे के पदक पहने तब मेरी रसोई बनाने वाली स्त्री मुती वहाँ आ पहुँची और क्रुद्ध होकर कहने लगी :

"शुभ है यह दिन जो मेरे मालिक घर आये, पर यह कहाँ का कायदा है कि आते ही रातभर रंगशालाओ मे डोलते रहे और घर की सुध भी नही ली, जिसे मैंने साफ करके तुम्हारे लिए सजाया है और खाना तक नहीं खाया जबकि मैंने तुम्हारी पसंद के उत्तमोत्तम थीबीज़ के खाद्य बनाये हैं—अब घर चलो और उन्हे खाओ—और यदि अपनी उस रखैल को अलग नही छोड सकते तो उसे भी साथ ले आओ—पुरुषो का ही रहन-सहन विचित्र है—मुझे अब इस वृद्धावस्था मे तो उन पर कतई विश्वास नही रहा है।"

ऐसी थी मुती हालाँकि मैरिट को, जिसे उसने रखैल कहा था, बहुत ही आदर की दृष्टि से देखा करती थी। परंतु वह उसके बोलने-चालने की विचित्र आदत थी जिसका मैं आदी था। उसका बड़बडाना मुझे मधुकर प्रतीत हुआ क्योंकि अब मुझे लगने लगा कि मैं घर आ गया था। मैं मैरिट को लेने चला गया। मुती की बड़बड़ाहट तब तक जारी रही जब तक मैंने उसे डाँट न दिया। और तब वह एकदम चुप हो गई और साथ ही खुश भी

हो गई क्योकि उसे अनुभव होने लग गया कि घर का मालिक लौट आया था।

मैरिट के साथ मैने घर आकर थीबीज का उत्तम भोजन किया जो मुती ने वडे परिश्रम से बनाया था। उसने मकान सजाकर एकदम नया कर दिया था। जगह-जगह घर मे फूल लगाये थे और जिस बिल्ली की सूखी हुई लाश पहले मेरे घर के द्वार के पास पडी थी अव वह पडोसी के द्वार के पास पड़ी थी।

खा-पी चुकने के वाद पडोसी मुझसे मिलने और मुझे प्रेमोपहार भेट करने आये। उन्होने कहा : "मालिक सिन्यूहे! जव तुम चले जाते हो तो हमे तुम्हारा यहाँ न होना बहुत ही महँगा पडता है—तव हमे तुम्हारी कितनी ज़रूरत पडती है हम यह कैसे बतलाएँ।" उनमे मेरे सभी पुराने रोगी थे जिनका मैंने मुफ्त इलाज किया था।

उनके प्रेम को देखकर मेरा हृदय भर आया। उस समय मैंने अनुभव किया कि मै कितना सुखी था। मेरे पास सुन्दरी मैरिट थी। मेरे पास मेरे रोगी थे जो मुझे प्रेम करते थे, मुती थी जो सर्वोत्तम खाना बनाती थी।

फिर रोगी आने लगे और मै उनकी परिचर्या मे लग गया। मैरिट मेरी सहायता करने लगी। उसने अपनी वढिया पोशाक की बाँहे ऊपर सरका ली थी। कितनी अच्छी लग रही थी, वह मै कैसे लिखूँ? और तव मैने कहा : "ओ जल घडी! जल बहाना रोक दे—क्योकि ऐसा समय फिर तो नही आयेगा।"

शाम हो गई और मै राजमाता के यहाँ जाना विल्कुल भूल गया। मैरिट ने मुझे वहाँ जाने की याद दिलाते हुए कहा कि रात को वह मेरी प्रतीक्षा अपने पास करेगी।

जव मै नदी पार करके सुवर्णगृह पहुँचा तो पश्चिमी पहाडियो के पीछे सूर्य डूव गया था और पहला नक्षत्र आकाश मे दिखाई देने लगा था।

राजमाता मुझमे एक एकात कक्ष मे मिली जहाँ बहुत-सी छोटी-छोटी रगविरगी चिडियाएँ जिनके पर काट दिये थे—पिजडो मे फुदक रही थी। वह शायद अपनी जवानी के दिन अभी तक नही भूली थी जव वह चिड़िया पकड कर बेचा करती। उस समय वह बैठी हुई रगीन दरी बुन रही थी।

मुझे देखकर उसने तीखे स्वर मे डांटा क्योकि मैंने पहुँचने मे इतनी देर कर दी थी । फिर उसने पूछा : "क्या मेरे पुत्र का पागलपन कुछ कम हुआ है या उसका सिर खोलना ही पडेगा ? उसने अपने एटौन का वडा शोर मचा रखा है जिससे लोग भडक उठते है। मेरी समझ मे नही आता कि अव उसकी आवश्यकता ही क्या रही है जव नकली देवता अम्मन भी उठाकर फेंका जा चुका है और फ़राओ की सर्वोच्च शक्ति का प्रतिद्वंद्वी वाकी रहा ही नही है !"

मैंने उसे फराओ एखनैटौन के वारे मे और उसकी पुत्रियो के वारे मे सव कुछ वतलाया । राजकुमारियो के हिरन के वच्चो और कुत्ते के पिल्लो के साथ खेल और एखनैटौन की पवित्र झील पर सैर करने की सारी वार्ता कह सुनाई । सुनकर वह भावावेश मे आ गई और फिर उसने मुझे अपने पैरो के पास विठाकर मदिरा पिलाई और स्वय भी पीने लगी। और शीघ्र ही मदिरा उसके सिर मे चढ गई और उसकी जीभ पर से उसका नियत्रण उठ गया । वह कहने लगी ·

"मेरे पुत्र ने तुम्हारा नाम जाने किस मूर्खता की उचग मे एकाकी रख दिया था—परन्तु मै तो देखती हूँ सिन्यूहे ! कि तुम सासारिक व्यक्ति हो और साथ मे व्यवहार कुशल और नेक और बुद्धिमान भी हो। हालाँकि मेरी समझ मे नही आता कि नेकी किस भाँति हितकर हो सकती है, क्योकि नेक लोग आमतौर पर मूर्ख ही होते है । जो भी हो, तुम्हारे यहाँ रहने से तसल्ली होती है। इस एटैन को मैंने अपनी मूर्खता मे इतना शक्तिशाली वन जाने दिया है—और इससे अव मैं परेशान हो गई हूँ—यह मेरा विचार कभी नही था कि मामले इस हद तक पहुँच जाएँ। मैंने तो इस एटौन को इसलिए वनाया था कि इसकी आड मे अम्मन की शक्ति उखड जाय और मेरे पुत्र की एकमात्र शक्ति स्थापित रही आवे और असली वात तो यह है कि पुजारी 'आई' इसलिए ही इसे पोलिस से लाया था और उसी ने इस लडके के दिमाग मे घुसा दिया । 'आई' को तुम जानते ही हो कि वह मेरा पति वना हुआ है—हालाँकि उसके और अपने वीच मैंने कोई घडा नही फोडा है। फिर भी इस कम्वख्त से मैं ऊव उठी हूँ क्योकि उसका पौरुष अव खत्म हो चुका है।"

सारे थीबीज मे यह बात सभी जानते थे और इस भेद दो छिपाने की भी आवश्यवता राजमाता अब नही समझती थी। उसे जैसे शर्म आती ही नही थी। मै वैद्य था और जैसे कि वैद्यो से स्त्रियाँ बहुत कुछ कह लेती है वैसे ही वह बके जा रही थी। मैने देखा कि वह इन बातो मे अन्य स्त्रियो से भिन्न नही थी। फिर वह कहने लगी

"मुझे तो 'आई' की इस पुत्री के कारण बडी चिन्ता बनी रहती है—नेफरतीती बार-बार पुत्रियाँ ही जन्मती है हालाँकि मेरी हब्शिन दाइयो ने भरसक उसकी सहायता करने का प्रयत्न किया है—लोग इनसे इतनी घृणा करते है कि मुझे इन्हे छिपाकर रखना पडता है। वह नाक मे हाथी दाँत की सुइयाँ पहनती है और बच्चो के सिर लम्बे और चपटे बनाने मे दक्ष है। पर मेरा उनके बिना काम नही चलता क्योकि उनकी जैसी दक्ष पैर दबाने वाली और तलवे सहलाने वाली और कौन हो सकती है? फिर वह मुझे वह-वह औषधियाँ बनाकर खिलाती रहती है कि मेरी कामोत्तेजना उठती रहे और मै आनन्द भोगती रहूँ।"

वह स्वय ही-ही करके हँसने लगी। वह नशे मे चूर हो रही थी। मै चुपचाप बैठा हुआ उसकी काली उँगलियो को देख रहा था। वह नदी तट पर कपडे धोने वाली धोबिनो की भाँति लग रही थी। फिर वह बोली: 'आई' से मुझे घृणा है—उसमे अब क्या बाकी है? अब तो अपने प्यारे हब्शियो से आनन्द लेती हूँ—यह लोग बडे चतुर वैद्य होते है और लोग अपने अज्ञान के कारण इन्हे जादूगर कहते है—मैं अब सभोग को कोई नई चीज मानकर उसे नही करती बल्कि इसलिए कि मेरे हब्शी वैद्यो ने इसे जवान बने रहने के लिए मेरे लिए आवश्यक बताया है। हालाँकि अन्य दरबारी स्त्रियाँ सब जगह घूमने-फिरने के बाद 'उन्हे सडे माँस मे ही सबसे अधिक स्वाद है' मानकर ही उनसे प्रेम करती है—मै तो इसलिए उन्हे पसन्द करती हूँ कि उनके सपर्क से मैं जीवन की गर्मी महसूस करती हूँ—अधिकाधिक प्रकृति के पास अपने को अनुभव करने लगती हूँ क्योकि उनमे और जानवरो मे बहुत थोडा ही भेद होता है—वैसे मैं जवान हूँ—क्योकि यौवन बनाये रखने के लिए मुझे दवाइयाँ या पौष्टिक जडी-बूटियाँ नही खानी पडती" फिर वह थोडी देर चुप हो गई। मै चुपचाप देखता रहा।

"दुनिया मे भलाई मे कुछ प्राप्त नही होता—जो कुछ होता है सब शक्ति मे होता है। जो जन्मजात शक्तिशाली होते है वह इसका महत्त्व अनुभव नही कर पाते—परन्तु मैं इसका महत्त्व जानती हूँ क्योकि मैं तो गरीब थी। इसे बनाये रखने के लिए मैंने सब कुछ किया है—कभी कसर नही छोडी है—चाहे देवता लोग मेरे कर्मों से खुश न हों पर मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नही है क्योकि मैंने सदा से फराओ को ही सर्वोच्च माना है। दुनिया मे न सचाई रह जाती है और न बुराई—जो सफल हो गया वह अच्छा कहलाता है और जो असफल रह गया और पकडा गया वह बुरा। फिर भी कभी-कभी मेरा दिल घबरा उठता है और मेरे पेट मे पानी हो जाता है जब मैं अपने किये हुए पर सोचने लगती हूँ। आखिर मैं स्त्री ही तो हूँ और तुम तो जानते ही हो कि सभी स्त्रियाँ अन्धविश्वास करती हैं। नेफ़रतीती बार-बार लड़कियो को जन्म देती है—मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाता है—मुझे ऐसा लगता है कि जो पत्थर मैंने अपने पीछे फेंके है वे मुझे आगे पडे मिलने लगे है।"

उसके मोटे होंठ काँपने लग गए। मैंने देखा वह दरी के सूत मे गाँठ लगा रही थी और उसे देखकर मेरा हृदय स्तब्ध रह गया। सम्पूर्ण निचले साम्राज्य की बनी हुई दरियो मे मैंने ऐसी गाँठ कही नही देखी थी। ऐसी गाँठ मैने देखी थी अपनी माता कीपा के कमरे मे—धुएँ से काली हुई उस बाँस की कोठरी के अन्दर बिछी मोटी दरी मे—तो क्या वह इसी के हाथ की बनी हुई थी—तो क्या मैं सुवर्ण-गृह से ही—? और मेरी रीढ की हड्डी मे होकर ठड पार हो गई—मेरे माथे पर पसीना झलक आया। मेरा शरीर जैसे ऐंठ गया।

पर उसने मेरी ओर कोई ध्यान नही दिया। वह कहने लगी :

"सिन्यूहे! मेरी स्पष्ट वार्ता से शायद तुम मुझे बुरी और घृणा के योग्य औरत समझने लगे हो—लेकिन मेरे कामो के लिए मुझे कठोर नियमो से मत जाँचो—बल्कि वास्तविकता समझने की कोशिश करो। चिड़ीमार की जवान लड़की के लिए जिसके पैर चौड़े और बुरे से थे और जो काली थी—फराओं के हरम मे घुसकर वहाँ शासन करना कोई आसान बात नही थी—खासकर जब वहाँ सभी उससे घृणा करते थे। वह तो

केवल फराओ की एक उमग थी कि मै उसकी निगाहों मे चट गई और फिर मैने उसी उचग को बनाये रखने के लिए अपनी जवानी को काम मे लिया और उसे यौवन के वह्-वह आनन्द दिये कि जिनमे वह सदा अनभिज्ञ था। हब्शी जाति के पास अनेकानेक ऐसी विधियाँ है जिनसे सभ्य समाज अन-भिज्ञ है। और कमाल यह था कि मै न स्वय गर्भवती होती थी न फराओ की अन्य किसी स्त्री को गर्भधारण करने देती थी। तुम्हे यह जानकर आश्चर्य होगा कि मेरे शासन मे सुवर्णगृह मे किसी स्त्री ने पुत्र नही जन्मा—जो पुत्रियाँ हुई उनके विवाह मैंने पैदा होते ही अपने प्रभाव से उच्च सामतो के साथ करा दिये। मै स्वय गर्भधारण करके अपने सौन्दर्य और यौवन को बिगाडना नही चाहती थी और जब फराओ वृद्ध हो गया तब मैंने उपयुक्त समय समझकर पहला गर्भधारण किया। परन्तु जब मेरे उस गर्भ से पुत्री जन्मी तो मैं भयभीत हो गई—वही है यह बैंकेटैमौन जिसका विवाह अभी तक नही किया है—यह मेरे तरकस मे दूसरा तीर है—वैसे बुद्धिमान लोग अपने तरकसो मे कई तीर रखते हैं और एक से उन्हे सतोष नही होता। उसके बाद मैं काफी परेशान रही और फिर जाकर एक पुत्र हुआ—परन्तु उसने मुझे कोई सान्त्वना नही दी क्योकि वह पागल निकला और तब मैंने अपनी आशाएँ उसके बजाय उसके होनेवाले पुत्र पर लगाई—और यही मुझे अपनी हार दिखाई दे रही है क्योकि वैसे सिन्यूहे ! तुम वैद्य हो। बोलो है न यह कमाल कि मैने मैंने अपने जादू से फराओ की अन्य स्त्री के गर्भ से पुत्र उत्पन्न नही होने दिया !"

काँपते हुए मैने उनके नेत्रो मे झाँका और कहा "राजमाता तुम्हारा जादू बिल्कुल ही आसान है क्योकि उसे तुम्हारी उँगलियो ने रगीन दरियाँ बनाकर सबके सम्मुख खोल दिया है।"

उसके हाथ रुक गए और उसके नेत्रों की सफेदी दिखाई देने लगी फिर वह कुछ परेशान-सी होकर बोली :

"क्या तुम जादूगर भी हो सिन्यूहे ? या इन बातो को सभी जानते है ?"

मैने कहा . "सभी को सभी कुछ ज्ञात है—भले ही किसी ने तुम्हारे कामों को न देखा हो, लेकिन फिर भी रात ने तुम्हे पहचाना है और रात

की हवा ने तुम्हारी हरकतो के बारे मे कई कानो मे फुसफुसाकर कहानियाँ सुनाई है। तुम्हारे भय से लोगो की जुवान तो वन्द हो गई पर रात की हवा की फुसफुसाहट तुमसे भी न रुकी।—जो भी हो पर जो जादू की दरी तुम्हारी उँगलियो के नीचे इस समय वन रही है, अत्यन्त सुन्दर है और यदि यह मुझे उपहार मे मिल जाय तो मैं वहुत ही आभारी रहूँगा।"

वह चुप हो गई ! फिर काँपती हुई उँगलियो से काम करने लगी—और अधिक मदिरा उसने पी। फिर मेरी ओर हठात् मक्कारी से देखती हुई वोली :

"यह दरी सुन्दर है—इसका वडा मूल्य है क्योकि यह मेरे हाथो से वनी है—यह शाही दरी है—और यदि यह कभी वनकर समाप्त हो गई तो शायद मैं इसे तुम्हे दे दूँ—पर वदले मे तुम मुझे क्या दोगे ?"

मै हँसा और मैंने उत्तर दिया : "राजमाता ! तुम्हे वदले मे क्या, वल्कि यो कहूँ कि भेट मे मैं अपनी जीभ दूँगा—गो मै यह जरूर चाहूँगा कि वह जहाँ है वही रही आवे। यह जीभ तुम्हारे विरुद्ध कभी न वोल सकेगी यह तुम्हारी है।"

सुनकर वह कुछ वडवडाई फिर मुझे कनखियो से देखकर कहने लगी :

"जो चीज़ वैसे ही मेरी है उसे मैं उपहार मे क्यो स्वीकार करूँ ? यदि मैं तुम्हारी जीभ कटवा लेना चाहूँ तो भला ऐसा करने से कौन रोक सकता है। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे हाथो को भी कटवा डाल सकती हूँ कि तुम्हारी जीभ कट जाने के वाद तुम लिखकर भी किसी को कुछ वता न सको—इससे भी आगे का मार्ग भी मेरे पास ही है। मैं तुम्हे अभी पकड़वा-कर भूमि के अन्दर तैखानो मे अपने प्यारे हब्शियो के पास पहुँचाये देती हूँ जहाँ से तुम कभी लौट ही नही सकोगे क्योकि वह लोग नर-वलियो के कितने शौकीन होते है, यह तो तुम जानते ही होगे सिन्यूहे !"

मैंने कहा : "राजमाता, निश्चय ही तुमने अधिक मदिरा पी ली है। अव आज रात और न पीना अन्यथा स्वप्न मे तुम्हे दरियाई घोड़े दिखाई देने लगेगे।"

जव मै चलने के लिए उठा तो वह नशे मे चूर वुढ़ियाओ की भाँति

बहकने लगी, बोली :

"तुम मुझे खूब चमका देते हो सिन्यूहे ! खूब चमका देते हो ।"

मैं सही-सलामत नगर को लौट आया और मैरिट को भुजाओ मे बाँध-कर सो गया । अब मेरा हृदय उदास था । मुझे रह-रहकर दिखाई दे रहा था कि सुवर्ण-गृह से एक दरी मे लिपटा हुआ बच्चा सरकडो की नाव मे रखा गया और नील के जल मे थीबीज की ओर दो काले हाथो ने उसे बहा दिया जहाँ मेरी माता कीपा ने उसे उठाकर पाल लिया ।

जब मनुष्य का ज्ञान अधिक बढ जाता है तो परेशानी भी बढ़ जाती है ।

जब एखटैटोन से मैं थीबीज आया था तो उसका सरकारी रूप यह था कि मै वहाँ जीवन-गृह का मुआयना करने जा रहा था । बरसो बाद जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैने देखा कि अब वहाँ पहली-सी धूम नही थी । एखटैटोन मे भी अभी तक मैंने एक भी सिर नही खोला था और मुझे भय लगने लगा था कि कही मेरे हाथो की दक्षता कम तो नही हो गई है ।

जीवन-गृह मे विद्या प्राप्त करने के लिए वह पहली-सी पख नही रही थी कि विद्यार्थी को पहले नीचे दर्जे का पुजारी बनना पडे—अतएव मैने सोचा कि शायद उन्हे 'क्यो' पूछने का अधिकार भी मिल गया हो । परन्तु जाकर जब मैने उन्हे देखा तो मेरा दिल बैठ गया क्योकि अब के विद्यार्थी लोग 'क्यो' पूछना ही नही चाहते थे—बल्कि उन्हे तो पकी-पकाई खीर से मतलब था कि झट उसे घोट-पीसकर उत्तीर्ण हो जाएँ और फिर एकदम धन कमाने लग जाएँ । वहाँ ज्ञान प्राप्ति का जैसे उद्देश्य ही नही रह गया था ।

वहाँ अब इतने कम मरीज आते थे कि मुझे तीन सिर खोलने मे हफ्तों लग गए । मैने अनुभव किया कि अब मेरी आँखे कुछ धुँधला देखती थी और मुझे रोग पहचानने के लिए अब रोगी से बहुत सारे प्रश्न करने पडते थे । पहले जैसी सफाई और दक्षता अब मुझमे नही रही थी । उसी दिन से मैने घर आकर लोगो का ज्यादा-से-ज्यादा इलाज शुरू कर दिया और वह भी मुफ्त क्योकि मैं फिर अपने हुनर मे दक्ष बनकर रहना चाहता था ।

मेरे तीनो सिर खोलने के काम सफल रहे। दो तो तीसरे ही दिन मर गए पर उनसे मेरे हुनर मे फर्क न पडा। तीसरा जीवित रहा आया जो एक लडका था। जीवन-गृह मे मेरी धाक जम गई।

मेरे ओहदे के कारण जीवन-गृह में मुझसे सब डरते थे और मेरा आदर करते थे—परन्तु पुराने वैद्य लोग मुझसे खिचे-खिचे रहते थे क्योंकि मै एखटैटोन से आया था जहाँ एटौन का साम्राज्य था। परन्तु मैने वहाँ देवताओ के बारे मे एक दिन भी बाते नही की और पेशे की बाते ही करता रहा। वह लोग भी कुत्तो की भाँति मेरे चारो ओर सूँघने का प्रयत्न करते हुए चक्कर लगाते रहे।

तीसरा सिर खोलने के बाद शायद उन्हे विश्वास हो चला था कि मै केवल पेशे से ही सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति था जिसे देवताओ के झगडो और राजनीतिक विषयो मे कोई रुचि नही थी। और तब एक अत्यन्त योग्य और दक्ष वैद्य मुझसे आकर कहने लगा :

"शाही सिन्यूहे! यह तो तुम देख ही रहे हो कि जीवन-गृह मे अब पहले जैसा ज्ञान नही रहा है—हालाँकि थीबीज मे बीमारियो की कमी नही हुई है। तुम अनेकानेक देशो मे घूमे हो और नाना प्रकार के रोग तुमने देखे है लेकिन फिर भी मुझे शक है कि जैसा इलाज आजकल थीबीज मे रहस्यमय तरीको से और वह भी छिपकर किया जाता है—वैसा तुमने कही नही देखा होगा। इस इलाज मे न चाकू की जरूरत पड़ती है, न आग की, न औषधियों की, न पट्टियो की। मुझसे किसी ने यह बात कही है कि मै तुम्हे ऐसा इलाज देखने के लिए आमंत्रित करूँ परन्तु तुम्हे पहले वचन देना होगा कि जो तुम देखो उसे रहस्य ही बना रहने दो और अन्दर जाते समय, जिस स्थान पर ऐसा इलाज होता है, अपनी आँखे बँधवा लो जिससे मार्ग से तुम अनभिज्ञ रहे आओ—यदि तुम्हे यह सब स्वीकार है तो मेरा निमन्त्रण स्वीकार करो।"

उसकी बाते सुनकर मै घबरा गया क्योकि मुझे फ़राओ के प्रति खतरा दिखाई देने लगा फिर भी मेरी इच्छा हुई कि उस रहस्य को जान सकूँ। मैने कहा "मैने भी सुना है कि आजकल थीबीज़ मे विचित्र बाते हो रही है—पुरुष कहानियाँ सुनाते है और स्त्रियो को इलहाम होने लगे है—

परन्तु इलाजो के वारे मे मैने कुछ नही सुना है। लेकिन वैद्य होने के नाते मै इस विचार के बिल्कुल विरुद्ध हूँ कि बिना चाकू, आग, औषधियो और पट्टियो के भी इलाज हो सकता है—और इसीलिए मै ऐसी धोखेधडी की वातो मे पड़ना ही नही चाहता कि जाकर उन्हे देखूँ और स्वय झूठा कहलाऊँ।"

"हमारा तो विचार था शाही सिन्यूहे, कि तुम निष्पक्ष स्वभाव वाले हो।" वह वोला : "क्योकि तुमने देश-देश घूमे है और ऐसे-ऐसे इलाज निश्चय रूप से देखे होगे जिन्हे मिस्र मे कोई जानता भी नही है। जव वहता हुआ रक्त बिना चिमटी और गर्म सलाखो के रोका जा सकता है तो भला बिना चाकू या आग के इलाज क्यो नही हो सकते ? और फिर इसमे तुम्हारा नाम बिल्कुल नही आवेगा। तुम्हे ले चलने के तो और भी कारण है और तुम इतना विश्वास रखो कि तुम्हारे साथ किसी तरह का धोखा नही होगा।"

मेरी उत्कठा बढने लगी और मैने स्वीकृति दे दी। अँधेरा होने के वाद वह मुझे मेरे घर से पालकी पर बिठाकर ले चला। उसने मेरी आँखे एक कपडे से वॉध दी कि मै मार्ग न पहचान सकूँ। फिर वह मुझे पैदल किसी इमारत के अन्दर ले चला। लम्वे-लम्वे दालानो और पेचीदा मार्गो से सीढियाँ चढते-उतरते वह मुझे ले जाने लगा। जब इस तरह काफी चल लिये तो मैने ऊबकर कहा कि उस मूर्खता से मै परेशान आ गया था। उसने मुझे सात्वना दी और मेरी आँखो की पट्टी वही खोल दी और फिर वह मुझे एक पत्थर के वने हुए बडे कमरे मे ले गया जहॉ अनेक दीपक जल रहे थे।

पृथ्वी पर तीन रोगी पालकियो मे पडे थे। एक पुजारी जिसका सिर घुटा हुआ था और जो तैल से चमक रहा था आया और उसने मेरा नाम लेकर मुझसे कहा कि मैं उन रोगियो की जॉच स्वय कर लूँ कि वाद मे उनका इलाज चालाकी न कहलाए। उसकी वाणी स्थिर और शात थी और वह देखने से ही विद्वान मालूम होता था।

मैने रोगियो की जाँच की। तीनो रोगी पालकियो से नीचे उतरने के योग्य नही थे। उनमे से एक युवती स्त्री थी जिसके हाथ-पैर सूख गए थे

और जीव रहित थी। उसका मुँह भी सूजा हुआ था। दूसरा एक लडका था जिसके सारे शरीर पर खतरनाक फोडे-फुसी हो रहे थे और कई स्थानो पर रक्त चमचमा रहा था। तीसरा एक वृद्ध था जिसके पैरो को लकवा मार गया था। वह उन्हे हिला भी नही सकता था। उसकी तकलीफ़ वास्तविक थी क्योकि जब मैने उसके सुई चुभाई तो उसे पता ही नही चला।

मैने अन्त मे कहा :

"मैने इन्हे पूरी जानकारी से देख लिया है। वृद्ध और स्त्री का तो मैं कुछ नही कर सकता सिवाय इसके कि इन्हे जीवन-गृह मे भेज दूँ। लडके की तकलीफ शायद बार-बार गन्धक के जल से स्नान कराने से कुछ कम हो जाय।"

पुजारी सुनकर मुस्कराया और उसने उस बडे कमरे के कोने मे पडी हुई एक पत्थर की चौकी पर हमसे बैठने को कहा। फिर उसने दासो द्वारा रोगियो को पालकियो सहित कमरे के बीच मे बने हुए विशाल बाल-स्तभ पर रखवा दिया और फिर धूम्र जलाया जिसमे एक प्रकार का नशा था। और तभी बगल के मार्ग से गाते हुए बहुत से पुजारी लोग अन्दर आये। वह अम्मन की स्तुति गा रहे थे। रोगियों के पास बैठकर फिर वह गाने लगे, स्तुति करने लगे और जैसे-जैसे उनका जोश बढ़ता गया वह ज्यादा-ज्यादा चिल्लाने लगे और फिर उछलने, कूदने और चीखने लगे। उनके मुखो पर से स्वेद गिरने लगा और उन्होने अपने कन्धो पर से वस्त्र फेक दिये। हाथो मे घटियाँ बाँध ली और पैने पत्थरो से छाती पीटते हुए उन्होंने वहाँ घाव कर लिये।

मैने इस तरह की बातें सीरिया मे देखी थी और जो कुछ हो रहा था उसे मैं ठण्डी दृष्टि से अविचलित हुए देख रहा था। उनका शोर बढ़ता गया, बढता गया और फिर वह दीवाल पर मुट्ठियाँ मारने लगे और दीवाल खटके साथ खुल गई और अन्दर से अम्मन दीपो की ज्योति मे प्रकट होकर उन पर छा गया और एकदम पुजारी लोग चुप हो गये। मौत का सा-गहरा सन्नाटा छा गया। अम्मन का मुख उस अधकारपूर्ण स्थान

मे उन दीपो के प्रकाश मे दिव्य ज्योति-सा जगमगाता हुआ प्रतीत होने लगा।

फिर एकदम उन पुजारियो मे से उनका मुखिया आगे आया और उसने प्रत्येक रोगी का नाम लेकर उसे बुलाया। वह चिल्लाकर बोला . "उठ और चल, क्योकि अम्मन महान् की तुझ पर विशेष कृपा हुई है, क्योकि तेरा विश्वास उस पर है—उठ।"

और मैने, सिन्यूहे ने, अपनी आँखो से देखा कि तीनो रोगी अपनी-अपनी पालकी मे से उठ आये और अम्मन की भूमि की ओर टकटकी बाँधे हुए, काँपते हुए चलने लगे। फिर वह भूमि के सामने आकर फफक-फफक कर रोने लग गए और फिर उसकी स्तुति गाने लगे।

खटाक से अम्मन की दीवाल बन्द हो गई। पुजारी लोग उठकर चले गए। दासो ने धूम्र-पात्र हटाकर एकदम अनेक दीप जला दिए। अब स्त्री स्वय चल-फिर सकती थी और यही हालत उस वृद्ध की हो गई थी, लडके के शरीर पर अब एक भी फोडा या फुसी या रक्त के धब्बे नही रहे थे। उसकी त्वचा स्निग्ध हो गई थी। यह सब कुछ ही चन्द घडियाँ बीती होगी, इतने मे हो गया। मै इसका निश्चय ही कभी विश्वास नही करता यदि स्वय अपनी आँखो से न देख लेता।

जिस पुजारी ने मुझसे बैठने को कहा था अब विजय की मुस्कान लिये आया और बोला : "अब क्या कहते हो शाही सिन्यूहे ?"

मैने उसके नेत्रो मे निर्भीक होकर देखा और उत्तर दिया : "मैने यह देखा कि वह स्त्री और वह वृद्ध दोनो पर कोई जादू किया हुआ था, जिसने उनकी आत्मा को जकड लिया था और जादू का इलाज जादू है, यदि जादूगर के अन्तर-विचार जादू हुए के अन्तर-विचारो से जबरदस्त हो, परन्तु घाव और फोडे-फुसी तो घाव और फोडे ही रहेगे और उनका इलाज जादू-टोने से नही हो सकता। अतएव जो कुछ मैने देखा है वह अद्भुत है। ऐसा जैसा मैने कही नही देखा।"

उसकी जलती हुई निगाहे मुझ पर जम गई और उसने पूछा ·

"तब तुम यह मानते हो सिन्यूहे ! कि अब भी अम्मन देवताओ का राजा है ?"

पर मैंने कहा · "मै तो यह चाहूँगा कि तुम उस झूठे देवता का नाम जोर से न कहो क्योकि फराओ ने उसका निषेध किया है और मै फराओ का नौकर हूँ।"

मैंने देखा कि मेरी बाते सुनकर उसमें हिंसा जाग्रत हो उठी और वह क्रुद्ध हो उठा, पर वह सबसे ऊँचे दर्जे का पुजारी था और उसने अपनी भावनाओं पर विजय प्राप्त कर ली थी। वह चुप हो गया, फिर अपने आप पर पूर्ण नियत्रण करके वह बोला :

"मेरा नाम हहीर है और तुम चाहो तो मुझे सैनिको से पकडवा सकते हो, परन्तु मैं झूठे फराओ के सैनिकों, उसके कोडो और उसकी खानो से नही डरता। मेरे पास जो भी अम्मन का नाम लेकर आते है, उनका मैं इलाज करता हूँ। छोडो इन बातो पर हमे नही लडना चाहिए। बेहतर है हम सभ्य पुरुषों की भाँति वार्तालाप करें। मुझे आज्ञा दो कि मै तुम्हे अपने कक्ष मे, तैखाने मे आमन्त्रित कर सकूँ। निश्चय ही तुम इतनी देर पत्थर की चौकी पर बैठने के बाद थोड़ी मदिरा पीना चाहोगे।"

वह मुझे पत्थर के रास्तो से अपने तैखाने मे ले गया। हवा के दबाव के कारण मै समझ गया कि हम भूमि के अदर थे। शायद अम्मन ने उन भूगर्भ में स्थित तैखानो मे, जिनके बारे मे लोगो के बीच तरह-तरह की अफवाहे प्रचलित थी, हम दोनो जब बैठ गए तो मैंने देखा कि उसके कक्ष मे आराम के तमाम सामान मौजूद थे। उसकी शैया पर चाँदनी तनी थी। उसकी चटाइयाँ नर्म थी। उसके बक्स हाथीदाँत जडे लकडी के थे। पूरे कक्ष मे कीमती इत्रों की खुशबू फैल रही थी। मेरे हाथ उसने सुवासित जल से धुलाये और फिर मुझे शहद मे डूबी हुई रोटियाँ उसने खिलाई। फिर फल और अम्मन के उद्यानो की अगूर की बेलो से खिची मदिरा पिलाई जिसमें 'मह्ल' की खुशबू मिली हुई थी।

उसने कहा · "सिन्यूहे ! हम तुम्हे जानते है। हमने बहुत समय से तुम्हारी गतिविधियो पर दृष्टि रखी है। हम जानते है कि तुम्हे नकली फराओ और उसके झूठे देवता से प्रेम है, परन्तु फिर भी मै तुम्हे विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि उसके देवता मे ऐसा कुछ नही है जो हमारे वास्तविक देवता अम्मन मे है। बल्कि फराओ की घृणा और शत्रुता से अम्मन की

शक्ति तपकर अधिक पवित्र और अधिक प्रचण्ड हो उठी है। फिर भी मै तुम्हे दैवी वार्ता की ओर न घसीटकर तुमसे उस सज्जन की भाँति बात करूँगा, जिसने बीमारो का मुफ्त इलाज किया है और जो काली भूमि को लाल भूमि से अधिक प्रेम करता है। गरीबो के लिए और सपूर्ण मिस्र के लिए फराओ एखनैटौन का हटाया जाना अवश्यभावी है, क्योकि वह इन सबके लिए विनाशकारी है। अच्छा हो यदि वह इससे पहले ही हटा दिया जाय कि घृणा और विनाश का रूप उग्र हो उठे और पृथ्वी एक बार फिर रक्त-रजित हो उठे।"

मैंने उसकी उत्तम मदिरा पीकर कहा

"देवताओ से मै ऊब उठा हूँ और मुझे उनकी तनिक भी परवाह नही है, परन्तु फराओ एखनैटौन का देवता सभी देवताओ से भिन्न है। उसकी कोई प्रतिमा नही है और उसके सम्मुख सभी मनुष्य समान है। चाहे वह गरीब है, चाहे दास, यहाँ तक कि परदेसी भी उसकी दृष्टि मे एक से है। मेरा विचार है कि पहला चक्र अब समाप्त हो चुका है और अब ससार का दूसरा चक्र घूमने वाला है। शायद दुनिया को बदलकर मनुष्यो को बराबरी देने का यह अवसर सर्वोत्तम है।"

हहौर ने विरोध मे हाथ ऊपर उठा दिए और मुस्कराकर कहा . "तुम तो दिन मे भी स्वप्न देखने लगते हो सिन्यूहे! हालाँकि मैंने समझा था कि तुम समझदार आदमी होगे। मै शायद तुमसे कम महत्वाकाक्षी हूँ। मै तो केवल इतना चाहता हूँ कि जैसा था फिर वैसा ही हो जाय। इसी मे मिस्र की शान है। मालिक, नौकर, दास जो जहाँ जन्मा है वही रहा आवे और गरीब को भर पेट अन्न मिल जाय। न्याय मे दण्ड का प्रयोग हो, अन्यथा व्यवस्था शोचनीय हो उठती है।"

फिर उसने मेरी बाँह छूकर कहा

"सिन्यूहे, तुम समझदार व्यक्ति हो। कम-से-कम यह तो खूब जानते हो कि इस नकली फराओ का राज अधिक नही चलेगा। हम ऐसे समय से गुजर रहे है जब हर व्यक्ति को अपना ध्येय बनाना आवश्यक हो गया है। जो हमारे साथ नही है वह हमारा शत्रु है। फिर तुम्हारा अम्मन मे विश्वास रखने न रखने से भी हमारी और अम्मन की कोई हानि नही है क्योकि

यदि तुम उसे न मानो तो भी वह सर्वशक्तिमान बना रह सकता है। परन्तु मिस्र पर यह अभिशाप जो आजकल छा रहा है, तुम उतार सकते हो। तुम्हारी इतनी शक्ति है सिन्यूहे! कि तुम मिस्र को उसकी पुरानी शान मे वापस ला सकते हो, हम यह जानते है।"

उसके शब्दो से मैं कुछ परेशान हो गया। मैंने और मदिरा पी और मैंने जबर्दस्ती हँसते हुए कहा : "शायद तुम्हे किसी पागल कुत्ते या बिच्छू ने काट खाया है जो तुम मुझे शक्तिशाली समझ बैठे हो। जबकि मैं ऐसा नही हूँ जो तुम्हारे समान इलाज भी नही कर सकता।"

वह उठा फिर बोला :

"चलो मैं तुम्हे कुछ दिखला दूं।"

और वह दीप लेकर मुझे एक रास्ते की तरफ ले चला। आगे चलकर उसने कई ताले खोले और फिर हम एक बड़े कक्ष में घुस गए। मैंने देखा वहाँ सोना, चाँदी और जवाहरात चिने रखे थे जिन पर प्रकाश जब पडा तो वह चमचमा उठे, उसने कहा :

"घबराओ मत—मैं तुम्हे सोने से ललचाने नही आया हूँ क्योकि मैं जानता हूँ तुम्हारी दृष्टि मे यह धूल है—फिर भी यह देख लेने मे तो तुम्हारा कोई हर्ज है ही नही कि अम्मन अब भी फराओ से अधिक धनवान है—मै तुम्हे अब कुछ और ही दिखाऊँगा—"

उसने सामने का एक और भारी तांबे का द्वार खोल दिया, अन्दर जाकर मैने देखा—

एक पत्थर की चौकी पर एक मोम की मूर्ति सिर पर दुहरा ताज पहने लेटी हुई थी जिसकी छाती और कनपटियो मे हड्डी की कीले ठुक रही थी। स्वत: मेरे दोनों हाथ ऊपर उठ गए और मेरे मुँह से वह मत्र निकलने लगे जो मैंने प्रथम श्रेणी के पुजारी बनते समय जादू-टोने से बचने के लिए सीखे थे। हहोर ने मुझे मुस्कराकर देखा और उसके स्थिर हाथो मे दीप तनिक भी नही हिला।

वह बोला : "क्या अब भी तुम्हे विश्वास है कि नकली फराओं अधिक जी सकेगा ? हमने इस मूर्ति पर जादू कर दिया है और इसके हृदय और मस्तिष्क मे पवित्र सुइयां घुसा दी हैं—फिर भी हमारे जादू का असर

धीरे-धीरे हो रहा है और अभी बहुत गडबडियाँ होनी बाकी है। इसके अतिरिक्त उसका देवता भी उसकी थोडी-बहुत रक्षा कर रहा है—"

द्वार बन्द करके वह मुझे फिर अपने कक्ष मे ले आया और उसने मेरा प्याला फिर मदिरा से भर दिया—मेरा प्याला मेरे हाथ मे हिलने लगा—मदिरा मेरी ठोढी पर छलक आई और प्याले का किनारा मेरे दाँतो से बजने लगा—मैने ऐसा भयानक जादू आज तक कही नही देखा था।

उसने कहा : "हमने फराओं के केश और नाखून कैसे मँगा कर इस मूर्ति मे लगाये है यह हमसे न पूछो—इतना मै बताये देता हूँ कि यह सुवर्ण के बदले मे नही लाये गए हैं—बल्कि अम्मन के नाम पर आये है—जो भी हो अब तो तुम समझ ही गए होगे कि अम्मन की शक्ति फराओ एखनैटौन की शक्ति मे अधिक है।"

फिर वह आँखे अधमुंदी करके मुझे गौर से देखते हुए बोला "उन बीमारो को तुमने अम्मन के नाम पर अच्छा होते देखा है और इसी तरह उसकी शक्ति दिनो-दिन बढ रही है। फराओ जितना ज्यादा जियेगा उतनी ही कठिनाइयाँ लोगो को अधिकाधिक रूप से झेलनी पडेगी—क्योकि जादू का असर धीमा है। …सिन्यूहे! यदि मैं तुम्हे एक ऐसी औषधि दूँ कि जिसे तुम फराओ को उसकी सिर की पीड़ा होते समय पिला दो, जिससे फिर कभी पीडा रहे ही नही तो ?"

"आदमी और पीडा का तो साथ है," मैंने सब कुछ समझकर भी नासमझ बनते हुए उत्तर दिया, "और मरे हुए को ही पीडा नही होती।"

उसकी जलती आँखे मुझपर गड गईं और मैने अनुभव किया कि उसकी प्रबल आत्मशक्ति ने मुझ पर अपना असर कर दिया था—क्योकि अब मै जहाँ बैठा था वही जकड गया—हाथ-पैर भी न हिला सका—उसने धीरे से कहा : "यह सच है—पर इस दवाई से बाद मे कुछ पता नही चलता—किसी को तुम पर शक नही हो सकेगा, यहाँ तक कि शरीर मे मसाले भरने वाले भी इसका पता न लगा सकेगे—बस उसे तुम किसी तरह इसे पिला दो और वह फिर सोकर कभी न उठेगा—उसे न कोई कष्ट होगा न पीडा—सब कुछ शातिपूर्वक हो जायेगा।"

और इससे पहले कि मै बोलूं उसने हाथ उठा दिये और फिर कहने लगा :

"मैं तुम्हे सुवर्ण का लोभ नही देता—पर इतना अवश्य कहता हूँ कि यदि तुमने यह काम कर दिया तो तुम्हारा नाम शाश्वतकाल तक धन्य माना जायेगा—तुम्हारा शरीर भी कभी नष्ट नही होगा—अदृश्य हाथ तुम्हारी रक्षा करेगे और कोई भी ऐसी मानवीय इच्छा नही रहेगी जो तुम चाहो और पूरी न हो— यह मैं तुम्हें देता हूँ क्योकि यह सब मेरे अधिकार मे है।"

उसने अपने हाथ उठा दिये। उसकी जलती हुई आँखें मुझे घूर रही थी और मैं चाहकर भी उनसे अपनी निगाहे नही हटा पा रहा था। मैं अपने हाथ हिला भी नही सकता था—वह बोला :

"यदि मैं कहूँ 'उठो' तो तुम उठ बैठोगे, यदि मैं कहूँ 'हाथ उठाओ' तो तुम्हे उन्हे उठाना पड जायेगा। परन्तु मैं तुम्हे तुम्हारी इच्छा के बिना अम्मन के सम्मुख झुका नही सकता और न तुम्हे ऐसे कामो को करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ जिन्हे तुम्हारा दिल न माने—बस यही मेरी शक्ति समाप्त हो जाती है। सिन्यूहे, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मिस्र के लिए इस औषधि को उसे पिला दो और उसके सिर की पीड़ा को सदा के लिए शात कर दो।"

उसने अपने हाथ नीचे गिरा दिये और अब मैंने देखा कि मैं अपने हाथ-पैर हिला-डुला सकता था। अब मैं कांप भी नही रहा था। उसकी मदिरा की सुगन्ध एक बार फिर मुझे अनुभव होने लग गई थी। और मैंने कहा : "हहोर, मै तुमसे किसी प्रकार का वचन नही लेता लेकिन इस दर्द मिटाने वाली औषधि को मुझे दे दो क्योकि शायद यह पौपी के रस से अधिक उत्तम हो—और शायद कोई ऐसा समय आ जाय जब फ़राओ स्वय इसे पीकर सदा के लिए सो जाना चाहे।"

उसने मुझे वह औषधि एक रंगीन शीशी मे दे दी और कहा : "मिस्र का भविष्य तुम्हारे हाथ मे है सिन्यूहे! यह ठीक नही मालूम होगा कि फराओ के ऊपर किसी का हाथ उठ जाय—परन्तु लोगो मे दुख इतना अधिक बढ गया है कि शायद वह सोचने लग उठे कि फ़राओ भी मृत्यु से

परे नही है और किसी का चाकू उसके वक्ष मे घुस कर उसका रक्त वाहर निकाल लाय। लेकिन ऐसा नही होना चाहिए क्योकि इससे फिर भविष्य मे फराओ की शक्ति कम हो जायेगी—मिस्र का भविष्य तुम्हारे हाथ मे है सिन्यूहे।"

मैने शीशी अपनी पेटी के नीचे छिपाते हुए व्यग से कहा : "जिस दिन मेरा जन्म हुआ था उस दिन मिस्र का भविष्य किन्ही ऊँगलियो मे खेल रहा था जब वह सरकडो के वीच सूत की गाँठे लगा रही थी। हहौर—ऐसी-ऐसी वाते है जिन्हे तुम जान भी नही सकते—हालाँकि तुम अपने मन मे अपने आपको सर्वशक्तिमान समझते हो। मैने औपधि ले ली है—पर याद रखो—मैं कोई बचन नही देता।"

वह मुस्कराया, उसने विदाई मे अपने हाथ उठा दिये और रीति के अनुसार कहा "बहुत होगा तुम्हारा पारितोपक !"

फिर मेरी आँखे वाँधकर मुझे वाहर छोड दिया गया। इतना मै कह सकता हूँ कि वह तैखाने अम्मन के मन्दिर के नीचे थे—परन्तु इससे अधिक उनमे घुसने की विधि और मार्ग मैं नही बतला सकता क्योकि वह मेरा अपना भेद नही है।

कुछ दिन वाद साँप के काटने से राजमाता ताया की मृत्यु हो गई। जब मैने जाकर देखा तो वह मर चुकी थी। काटते समय उसके अपने वैद्यो मे से वहाँ एक भी मौजूद नही था।

रीति के अनुसार मुझे उसके शव के पास तब तक वैठना था जब तक कि 'मृतक-गृह' से लोग आकर उसे न ले जाते और तभी मेरी मुठभेड वहाँ पुजारी 'आई' से हो गई। उसने राजमाता के सूजे हुए गालो को छूकर कहा :

"यह ठीक समय पर मर गई—क्योकि यह एक घृणित बुढिया थी जो मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र करने लगी थी। इसकी अपनी करनी ही इसे ले बैठी—मेरा विश्वास है कि अब जबकि यह मर चुकी है, लोगो मे जो अशाति फैली हुई है वह दब जायेगी।

पुजारी 'आई' ने ही उसकी हत्या की थी। ऐसा मेरा विचार नही है

क्योंकि इकट्ठे किये हुए जुर्म और एक-दूसरे के जाने हुए भेद किसी कद्र प्रेम से ज्यादा जोरदार होते हैं।

जब सारे थीबीज़ मे यह समाचार फैला तो जैसे खुशी की एक लहर दौड़ गई। लोगो ने अपने उत्तम वस्त्र पहनकर सड़को और चौराहो पर भीड़ लगा ली और आनन्द मनाने लगे। उनको खुश करने और अपनी ओर करने के लिए पुजारी 'आई' ने रानीताया की हब्शिन जादूगरनियों को कोड़े लगवाकर सुवर्ण-गृह के तैखानो से बाहर निकलवा दिया। वह चार थी और एक और बहुत ही मोटी और कुरूप जादूगरनी भी उनके साथ थी जो दरियाई घोड़े जैसी लगती थी। पहरेदारों ने उन्हे पैपाईरस द्वार से जब मारकर बाहर निकाला तो भीड़ उन पर टूट पड़ी और उनके उन्होने टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उनकी तमाम जादूगरी भी उन्हें नही बचा सकी। 'आई' ने उनकी तमाम औषधियाँ, जड़ी-बूटियाँ सब जलवा डाली जिनका मुझे बड़ा खेद रहा क्योकि मैं उनकी परख करना चाहता था।

महल में रानी की मृत्यु और उन जादूगरनियों के भाग्य पर रोने वाला कोई नहीं था। केवल राजकुमारी बैकेटैटौन ने अपनी माता के शरीर के पास आकर अपने सुन्दर हाथ उसके काले हाथों पर रखे और कहा: "माँ तुम्हारे पति ने बुरा किया कि तुम्हारी जादूगरनियों को लोगो के हाथों बुरी मौत मरवा दिया।" उसने मुझसे कहा:

'यह जादूगरनियाँ तनिक भी बुरी नही थी—वह यहाँ अपनी इच्छा से रहना भी नही चाहती थी बल्कि जंगल मे अपनी फूंस की झोंपड़ियो को लौट जाना चाहती थी। मेरी माता के बुरे कर्मो के लिए इन्हे इस भाँति दंड नही मिलना चाहिए था।"

मैंने देखा वह सुन्दरी थी। जिसके व्यक्तित्व मे ही गौरव प्रतीत होता था। उसने हौरेमहेब के बारे मे मुँह सिकोड़कर कहा:

"वह नीचे जन्म का मनुष्य है—उसकी बोली रूखी है परन्तु यदि वह विवाह कर ले तो निश्चय ही एक कबीला खड़ा कर दे। बता सकते हो सिन्यूहे, उसने विवाह क्यो नही किया?"

मैंने उत्तर दिया: "शाही बैकेटैटौन, इस प्रश्न को पूछने वाली केवल

तुम ही नही हो, परन्तु तुम्हारी सुन्दरता को ध्यान मे रखकर मै केवल यह बात तुम्हे ही बता रहा हूँ क्योकि इसे अन्य किसी को बताने का साहस मैने अब तक नही किया है। जब लडका हौरेमहेब पहले-पहले सुवर्ण-गृह मे आया था तो उसने चाँद को देख लिया था और बस तभी से वह उस पर मर मिटा और फिर वह किसी भी स्त्री के साथ घडा फोडने मे असमर्थ हो गया। तुम्हे कैसा लगता है राजकुमारी ? कोई पेड सदा फूलता नही रहता—उसे कभी-न-कभी तो फलना ही पडता है—वैद्य होने के नाते मै जो तुम्हारे उदर मे गर्भ फूलता देखकर सतोष पाना चाहता हूँ।"

उसने गर्व से अपना सिर उठाकर कहा ·

"तुम तो जानते हो सिन्यूहे कि मेरा रक्त अत्यन्त पवित्र और शुद्ध है—उत्तम तो यह होता कि मेरा भाई मुझसे विवाह कर लेता जैसे कि होता आया है। यदि मेरी आज्ञा चल जाय तो इस हौरेमहेब की तो मैं आँखे निकलवा लूं—मुझसे जो उसने प्रेम करने की हिम्मत की है तो उसकी यही गति होनी चाहिए। अब तो सच बात यह है कि मुझे पुरुषो से घृणा-सी हो गई है। उनका स्पर्श ही कितना कठोर होता है और फिर उनसे प्राप्त आनन्द का बहुत बढा-चढा कर ही वर्णन किया गया है।"

परन्तु मैंने देखा उसकी आँखो मे एक विचित्र उत्तेजना आ गई थी और उसकी साँसें भी भारी हो गयी थी। यह देखकर कि ऐसी बातो से उसको मजा आता है मैंने और छेडा : "मेरे मित्र हौरेमहेब को मैने बाँह पर ताँबे के कडे को तोडते देखा है। उसकी भुजाएँ लम्बी है और जब वह क्रोध मे अपने सीने पर मुठ्ठी मारता है तो सीना मृदग की भाँति बजता है। दरबारी स्त्रियाँ उसके पीछे बिल्लियो की भाँति लगी रहती है और वह स्वेच्छा से उन्हे ग्रहण कर सकता है।"

राजकुमारी बैकेटैटौन ने मुझे घूर कर देखा। उसका रँगा हुआ मुँह कुछ काँपा और उसकी आँखो मे चमक आ गई और वह गुस्से से कहने लगी · "सिन्यूहे, तुम्हारी बात मुझे कडवी लगती है—मेरी समझ मे नही आता कि तुम इस घृणित हौरेमहेब का वर्णन मेरे सामने क्यो करते हो ? और फिर मुर्दे के सामने ऐसी बाते करने से क्या लाभ ?"

मैने उससे यह नही कहा कि हौरेमहेब का जिक्र तो उसने स्वय ही

किया था बल्कि क्षमा माँग ली फिर कहा .

'हे राजकुमारी ! मैं तो यही चाहूँगा कि तुम सदा फलने-फूलने वाली सुन्दरी बनी रहो—और क्या तुम्हारी माँ के पास एक भी ऐसी विश्वस्त स्त्री नही थी जो इस समय यहाँ बैठकर रो सके ?। कम-से-कम उस समय तक तो यहाँ किसी को रोना ही चाहिए जब तक कि मृतक-गृह से लोग शरीर लेने न आ जाएँ। रोने को तो मैं भी रो सकता हूँ पर मैं तो वैद्य हूँ जिसके आँसू मृत्यु के निरन्तर साथ रहने से सूख गए हैं—जीवन एक गर्म दिन है जबकि मृत्यु ठडी रात है—और बैकेटैटौन, जीवन उथले पानी की झील है जबकि मृत्यु गहरा शुद्ध जल है।"

उसने कहा : "मुझसे मृत्यु के बारे मे बात न करो सिन्यूहे, क्योंकि अभी जीवन मुझे अच्छा लगता है—यह सच ही शर्मनाक है कि मेरी माता के पास कोई रोने वाला नही है। मैं स्वयं तो भला किस प्रकार रो सकती हूँ क्योंकि यह मेरी शान के विरुद्ध है। परन्तु मैं अभी किसी दरबार की स्त्री को भेजे देती हूँ कि वह आकर यहाँ रोने बैठ जाय।"

और मुझे उपहास सूझने लगा। मैंने कहा .

"देवी बैकेटैटौन, तुम्हारे सौदर्य ने मुझे बेहाल कर दिया है और तुम्हारी मधुर वाणी ने मेरे मन की आग मे तैल डाल दिया है। किसी बुढिया को यहाँ भेजना जिससे मै उसे फुसलाने का प्रयत्न न करूँ···और इस शोक-गृह को बदनाम न करूँ।"

उसने मुझे देखकर गुस्से से सिर हिलाया फिर कहा :

"सिन्यूहे, सिन्यूहे—क्या तुम्हे ज़रा भी शर्म नही आती ? यदि तुम देवताओं से भी नही डरते, जैसाकि लोग तुम्हारे बारे मे कहते है···तो कम-से-कम मृत्यु से तो डरो।"

वह स्त्री थी और उसे मेरी इस प्रकार की बाते बुरी नही लगी—और वह दरबारी स्त्री लाने चली गई।

और जब शोक मे रोने वाली आई तो उसे देखकर मै चौक गया। क्योंकि वह मेरी आशाओ से भी अधिक कुरूप और बुड्ढी थी। अब भी हरम मे ताया के पति फराओ महान् की स्त्रियाँ रहती थी। वहाँ फराओ एखनैटौन की भी अनेक स्त्रियाँ और धायो की कमी नही थी। इस स्त्री का

नाम जो रोने आई थी मेहूनेफर था। उसे देखकर ही पता चलता था कि उसे पुरुषो और मदिरा से अत्यन्त प्रेम था। आते ही उसने कायदे के अनुसार बाल खोलकर रोना शुरू कर दिया। परन्तु थोडी देर बाद ही उसने मेरी दी हुई मदिरा को पीना स्वीकार कर लिया। फिर मैने उसे बातो-बातो मे ही घेरना शुरू कर दिया और उसके व्यतीत यौवन और सौदर्य का मैं गुण-गान करने लगा। फिर मैने उससे फ़राओ एखनैटौन की बच्चियो का वर्णन किया और अत मे मैने भोले बनकर पूछा

"क्या यह सत्य है कि गुजरे हुए फराओ की किसी भी स्त्री के साम्राज्ञी ताया के अतिरिक्त, पुत्र उत्पन्न नही हुआ ?"

उसने मृतक ताया की ओर तिरछी नजर से देखा फिर मेरी तरफ सिर ऐसे हिलाया जैसे चुप रहने का संकेत कर रही हो। परन्तु मैने फिर उसकी स्तुति प्रारम्भ कर दी और अधिक मदिरा उसे दिलाई। वह अब रोना भूल कर मेरी बातों मे आनन्द लेने लगी। स्त्रियो को ऐसी बाते प्राय अच्छी लगा करती है और विशेषकर यदि वह वृद्धा और कुरूप है तो और भी अधिक यह बाते सुनाती है। और हम मित्र बन गये।

जब मृतक-गृह से लोग आकर मृतक ताया के शरीर को उठा ले गये तो वह मुझे अपने कक्ष मे लिवा ले गई।

वहाँ मैंने बातों-ही-बातो मे सब कुछ उसके मुख से उगलवा लिया कि साम्राज्ञी ताया किस प्रकार नवजात शिशुओ को सरकडो की नावो मे रख कर नील मे बहा दिया करती थी। उसी के द्वारा मुझे मेरे जन्म के बारे मे भी पता चला और उसके द्वारा बताये हुए समय के अनुसार मै भी फराओ का ही पुत्र था जो फराओ एखनैटौन से कुछ ही महीने पहले पैदा होकर ताया द्वारा बहा दिया गया था क्योकि मै किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। मेरा हृदय यह सुनकर मानो जम गया और मै किंकर्त्तव्यविमूढ-सा रह गया। इस बीच मेहूनेफ़र उत्तेजित हो उठी थी और उसने बढकर कई बार मेरा आलिंगन कर लेना चाहा था परन्तु मैने उसे किसी-न-किसी बहाने से अपने से दूर रखा। पर जब हद हो गई और मुझसे लिपटने पर तुल गई, मेरे गालो पर हाथ फेरने लगी और जघाओ मे सिर घुसाने लगी तो मैने उसे चुपचाप मदिरा मे पौपीरस पिलाकर बेहोश कर दिया। फिर मैं वहाँ से उठ-

कर चल दिया। जब मैं बाहर निकला तो रात हो चुकी थी और पहरेदारो व नौकरो ने जब मुझे देखा तो आपस मे कुहनी चलाकर कनखियो से हँसने लगे। मेरी समझ मे उस समय कुछ नही आया कि वह ऐसा क्यों कर रहे थे।

घर पर मैरिट और मुती मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं, जब मैं पहुँचा तो उन दोनो ने मुझे देखते ही अपने हाथ उठाकर अपने मुँह पर लगा लिये और एक दूसरी की ओर देखा—

फिर मुती ने मैरिट से कहा :

"क्या मैंने तुमसे हजारो बार नही कहा कि पुरुष सब एक से होते है और कि इनका भरोसा नही करना चाहिए ?"

लेकिन मैं थका हुआ था और अकेला रहना चाहता था क्योकि अपने जन्म के बारे मे जो रहस्य मुझे पता चला था वह मेरे हृदय को खाये जा रहा था। मैंने गुस्से मे कहा, "बकबक मुझे बिल्कुल सहन नही होती—मैं थक गया हूँ।"

और तब मैरिट की आँखे कठोर हो गईं और उसने क्रोध-युक्त होकर मेरे सामने चाँदी का दर्पण लाकर रखकर कहा, "अपने आपको देखो तो सिन्यूहे कि कैसे लग रहे हो···वैसे मैंने तुम्हे किसी भी स्त्री से सपर्क रखने के लिए कभी मना तो किया नहीं है परन्तु तुम्हे कम-से-कम ऐसी बातें छिपाकर तो रखनी ही चाहिएँ जिससे मेरा दिल तो न दुखे। आज तो तुम झूठ बोल भी नही सकते कि तुम अकेले रहे—रज मे डूबे रहे और उदास रहे।"

मैंने जो दर्पण देखा तो चौंक गया क्योकि मेरे चेहरे पर···वस्त्रों पर मेहूनेफ़र के मुख का रंग लगा हुआ था। मेरे गालों पर उसके होठो का लाल रंग लग रहा था—कनपटियाँ, गर्दन···सभी चिकनी और रगीन हो रही थी। मैं ताडन का सताया हुआ-सा लग रहा था—मै बुरी तरह झेप गया और तुरन्त अपना चेहरा साफ करने चल दिया और मैरिट तब भी दयाहीन होकर मुझे दर्पण दिखा रही थी।

जब मैंने मुँह धो लिया और तैल लगा लिया तो कहा, "तुमको सारी बातो मे ग़लतफहमी हो गई है प्यारी मैरिट, मुझे सफ़ाई तो दे लेने दो।"

उसने कठोर दृष्टि से मेरी ओर देखकर उत्तर दिया, "सफ़ाई की कोई जरूरत नही है सिन्यूहे और फिर अव मै तुम्हारे होठो को झूठ से भरना नही चाहती।"

मैने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया पर सब व्यर्थ। मुती मुंह ढंक-कर रोती रही और बारबार घृणा से थूकती रही। मैने मेहूनेफ़र से बच निकलने मे जिन आपत्तियो का सामना किया था उनसे कही अधिक मुझे अव करना पड़ रहा था।

मैंने जब मैरिट की ओर हाथ वढाकर उसे समझाना चाहा तो उसने वडे स्वर से मुझे झिडक दिया और कहा :

"अपने हाथ अलग रखो सिन्यूहे! मुझे नही मालूम था कि तुम्हारे हृदय मे इतनी खदके है जहाँ तुम अपने रहस्यो को छिपाकर रखते हो। महलो मे तो तुम्हे मेरी चटाई से भी नर्म चटाइयाँ और मुझसे भी जवान औरते मिली होगी—फिर तुम्हे मेरी क्या परवाह ?"

मै 'मगर की पूंछ' चला आया। मैरिट ने मेरे साथ जाने से इकार कर दिया। रात को जब मैं घर लौटकर सोया तो मुझे नीद नही आई—जल घडी से जल वहता रहा—निरतर अटूट धारा मे और मुझे लगा कि मैं स्वयं से भी जाने कितनी दूर पहुँच गया था। और मैने अपने हृदय से कहा :

"मैं सिन्यूहे हूँ—जैसा मैने किया है वैसा भोगा है—मैने अपने माता-पिता को वुरी मौत मर जाने दिया है—वह भी एक निर्दयी स्त्री के साथ रमण करने के लिए!—मैने यह घृणित कार्य क्यो किया। मेरे पास मीनिया का चांदी का फीता अव भी है—मीनिया मेरी प्यारी थी और मैने उसे उस भीमकाय जन्तु के पास जल मे सडते देखा है जहाँ उसके कोमल मुख को समुद्री केकडे कुरेद-कुरेदकर खा रहे थे। मैं फिर भी क्यो जीवित हूँ ? शायद यह सब मेरे जन्म से पूर्व ही निश्चित हो चुका था—कि मैं ससार मे जीवन भर अपरिचित के रूप मे ही रहा आऊँ।"

भोर मे सूर्य अपने सुवर्ण रथ मे वैठकर पूर्वी पहाड़ियो के पीछे से निकला और तव मैं हँस उठा। कैसा विचित्र होता है मनुष्य का हृदय कि सूर्य के प्रकाश के अभाव मे भीरू और निराश हो जाता है और जब वह

उसे पा लेता है तो उसे स्वयं अपने आप पर तथा अपने विचारो पर हँसी आती है।

नहा धोकर मैंने नये वस्त्र पहने और तव मुती ने मुझे मदिरा और नमकीन मछलियाँ खाने को दी। रात-भर रोने से उसकी आँखे सूज गयी थी।

फिर मैंने एक पालकी किराये पर की और जीवनगृह की ओर चला गया। मेरे मुख के सामने होकर एक चिड़िया उड़कर सामने एटौन के मदिर की ओर उड गई और मैंने उसका अनुसरण किया। वहाँ अनेक व्यक्ति उपस्थित थे और पुजारी लोग एटौन का महात्म्य और फ़राओ के समय का वर्णन कर रहे थे।

देर तक मैं वहाँ खुदी हुई मूर्तियों का अवलोकन करता रहा। वहाँ मितन्नी की तादूखीपा की भी मूर्ति थी जिसके सामने जाकर मैं ठिठक गया कितनी सुन्दर थी वह—तो क्या मैं इसी का पुत्र हूँ? मैंने स्वयं से पूछा पर दिल ने यह वात नही मानी। परन्तु यह सत्य था और मै इसे जानता था। कितनी रोई होगी वेचारी होश में आने के वाद जव उसने मुझे अपनी वगल मे नही पाया होगा—ओफ़! कितनी हत्यारी थी ताया जो उसने माँ से वच्चा छुड़ाकर नील मे वहा दिया था। और मैं देर तक उस मूर्ति के सम्मुख खडा रहा—और मुझे मितन्नी की वातें—वहाँ के लोगो, वहाँ के मकान, धूल भरी सडके—सव याद आती रही।

शाम को मै 'मगर की पूँछ' पहुँचा तो मैरिट ने मेरा स्वागत ठीक उस प्रकार किया जैसे किसी अपरिचित से करती हो—जव मैंने खा-पी लिया तो उसने पूछा, "अपनी प्यारी से मिल लिये?"

मैंने चिढकर उत्तर दिया, "मैं औरतो के पीछे नही गया था वल्कि जीवन-गृह मे काम करने गया था और एटौन के मंदिर मे भी गया था—" और अपनी सफ़ाई मे उस दिन गुजरी हुई छोटी-से-छोटी वात भी उसे कह सुनाई। पर वह पूरे समय मुझे देखकर व्यग से मुस्कराती रही। फिर बोली—

"मैने एक क्षण के लिए भी यह नही सोचा था कि तुम किसी स्त्री के पीछे गए होगे क्योंकि रात ही तुम इतने थक गए थे कि आज तुम किसी

योग्य नही रहे—नगे और थुलथुल जो हो तुम, मैने तो केवल यह कहना चाहा था कि तुम्हारी प्यारी—कल रात वाली तुम्हे यहाँ ढूँढती हुई आई थी—मैंने उसे जीवन-गृह मे तभी भेज दिया था।"

सुनते ही मैं इतनी जोर से चौककर उठा कि मेरी पालकी औधी हो गई और मै चिल्लाया, "क्या बकती है मूर्ख स्त्री ?"

"वह यहाँ तुम्हे पूछती हुई आई थी—चिड़िया-सी सजी हुई—चमकदार रत्नो से सुसज्जित और बन्दर जैसी रगी-पुती—उसके अग-लेप और उसके तैल की तो जैसे नदी तक धार वह रही थी—वह तुम्हारे लिए एक पत्र छोड गई है और सवाद छोड गई है कि तुम उससे हर हालत मे मिलो जो कुछ भी हो यहाँ तो उसे मत लाना क्योंकि यह एक सम्रात व्यक्तियो के आने का स्थान है और वह लगती है रोटी वेचने वाली—

और फिर उसने मेरे हाथ मे एक बिना मुहर लगा खुला पत्र पकडा दिया। मैने उसे काँपते हाथो से खोला और जब उसे पढा तो मेरी कनपटियो मे रक्त भन्नाने लगा और मेरा सिर चकरा गया।

उसने एक प्रेमपत्र लिखा था—जिसमे इतनी वेशर्मी से मेरी चाहना की थी कि मैं स्वय उसे पढकर लज्जित हो उठा। लिखा था कि वह घर-घर मुझे ढूँढती फिरी थी और मुझे बुलाया था—कि मैं चिडिया की भाँति उसके पास उड़ा चला जाऊँ। धमकी भी थी कि यदि मै उसके पास न गया तो वह और भी तेजी से मेरे पास उडी चली आवेगी।

मैने घबराकर उसे कई बार पढा और मेरा साहस एक बार भी मैरिट से आँख मिलाने का न हुआ। अत मे उसने वह पत्र मेरे हाथ से छीन लिया। उसका डडा तोड दिया जिस पर वह लिपटा हुआ था और उसे टुकडे-टुकडे करके पैरो से रूँध दिया फिर गुस्से से कहा

"यदि वह सुदरी और जवान होती तब भी सिन्यूहे, मै तुम्हे क्षमा कर सकती थी परन्तु वह बुड्ढी है—उसके शरीर और चेहरे पर झुर्रियाँ पड रही है—मुझे तुम पर शर्म आती है।"

मैने अपना सिर पीट लिया, कपड़े फाड डाले और बाल नोच डाले और मैं चिल्लाया, "मैरिट मैने भारी भूल की है—जल्दी मेरे नाविको को बुलाओ कि मै थीबीज से भाग जाऊँ इससे पहले कि वह चुडैल मुझे घेरने

का प्रयत्न करे—ओफ़ो वह कंवख्त लिखती है कि वह चिड़िया की भांति उडी चली आवेगी—मैंने उससे बात की यही क्या कम गलती हुई है।"

मैरिट ने मेरा भय देखा तो हँस पड़ी फिर चोट करती हुई बोली :

"इससे तुम्हे सबक तो मिल जायेगा मेरे प्यारे सिन्यूहे !" फिर वह हँसती हुई कहने लगी, "अच्छा ही तो है—वह मुझसे दुगुनी उम्र की है तो तुम्हे उसके साथ दुगना आनन्द आता होगा—आखिर वह प्रेम के सभी क्षेत्रो मे दक्ष तो होगी ही—फिर भला मै तुम्हे क्यो पसन्द आने लगी ?"

और तब मुझे इतना अधिक दु.ख हुआ कि मै उठकर घर चल दिया और मैरिट को भी बलपूर्वक पकड़ लाया। घर आकर मैंने उसे सारा किस्सा कह सुनाया कि किस प्रकार मैंने अपने जन्म के बारे मे जानने के लिए ही मेहूनेफर से बाते की थी—कि मै मितन्नी की राजकुमारी—साम्राज्ञी तादूखीपा का पुत्र था जिसे ताया ने नील मे बहा दिया था—

सुनकर उसका व्यग समाप्त हो गया और वह गभीर हो गई और फिर उसने मेरे कधो पर हाथ रख दिये।

फिर उसने प्यार से कहा :

"अब मेरी समझ मे आई है सारी पहेली—और कि क्यो तुम्हारा एकाकीपन तुम्हारा दु:ख मुझे पिघलाया करता था जब मैं तुम्हारी आँखो मे झाँककर देखती थी—परन्तु मैं आज बहुत ही खुश हूँ कि तुमने मुझे अपना रहस्य बतला दिया है—मैं भी तुम्हे किसी दिन अपना रहस्य बतलाऊँगी—"

मुझे उसके रहस्य को जानने की लालसा हुई परन्तु उसने फिर मुँह ही नही खोला। बल्कि मेरे गालो को अपने नर्म होठो से दबाती हुई और मुझे अपनी कोमल भुजाओ मे लेकर वह रोने लगी।

दूसरी सुबह मेरी आज्ञा से मुती मेरा सामान बाँधने लगी—मैं मेहूनेफ़र के भय से थीबीज छोडकर एखनैटोन जा रहा था—मैंने एक पत्र मेहूनेफर को भी लिख दिया और उसे एक दास को देकर मैंने कहा : "जब मैं नाव में चढ़कर चला जाऊँ तत्पश्चात् इसे जाकर सुवर्ण-गृह मे मेहूनेफ़र नाम की स्त्री को दे देना।"

मैरिट ने मुझसे पूछा : "क्या तुम्हे बच्चो से प्रेम है?" सुनकर मैं कुछ चकरा गया तो वह मुस्कराकर दुःखद स्वर से बोली : "डरते क्यो हो ? तुम्हारा गर्भ धारण करने का मेरा कोई विचार नही है—परन्तु मेरी एक मित्र है जिसका एक चार वर्ष का बच्चा है और वह चाहती है कि उसका बच्चा जहाज पर यात्रा करे—वह दोनों ओर हरे, मैदान, जुते खेत, जलचरों और शुभ्र वातावरण का अनुभव कर सके—यहाँ थीबीज में तो वह कुत्तो और धूल से परेशान भी हो गया है।"

सुनकर मै परेशान हो गया। फिर बोला :

"लेकिन उसके रहने से तो मेरी सारी शांति ही लोप हो जायेगी। मेरा तो कलेजा मुँह को आ जाता है जब मै सोचता हूँ कि कहीं वह मगर के मुँह मे हाथ न दे दे या कही नदी में ही न जा पड़े—आखिर, मैं उसे कैसे सभालूंगा ?"

वह मुस्कराई पर उसकी उदासी बढ़ गई फिर बोली :

"यदि ऐसा है तो रहने दो—मैंने तो इसलिए कहा था कि बच्चे के लिए यह यात्रा सुखकर होगी। मुझ से वह काफी हिला हुआ है यहाँ तक कि मैं ही उसका खतना कराने ले गई थी—मैंने सोचा था कि मैं उसे लेकर तुम्हारे साथ चली चलती कि इस बात की भी देखरेख कर लेती कि मगर के मुँह मे हाथ न डाल दे या पानी में न कूद जाय और फिर तुम्हारे साथ जाने का मुझे एक बहाना भी मिल जाता—पर खैर अब रहने दो—तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ भी नहीं करूँगी।"

सुनते ही मैंने हर्ष मे ताली बजाई और कहा :

"आज का दिन सचमुच ही शुभ है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम एलेक्जेंड्रीन की सैर इस उदास यात्रा में इस प्रकार आनन्द का साधन बनोगी। सचमुच इस नन्हे बच्चे को साथ लाकर मैं तुम्हारा आभार कभी भुला भी नहीं सकूँगा।"

दूसरी भोर सूर्योदय से पहले ही हम जहाज मे सवार होकर चल दिये क्योंकि डर था कि कहीं मेहूनेफर आकर न घेर ले। मैरिट बच्चे को कम्बलो मे लपेट कर ले आई जो सो रहा था। उसकी माँ साथ नही आई थी। मुझे बच्चे का नाम सुनकर आश्चर्य हुआ क्योकि कोई भी देवता का नाम अपने बच्चो का नही रखता था। उसका नाम था 'थौथ' और वह आराम से मैरिट की भुजाओं मे सोता रहा। जब थीबीज के शाश्वत काल से खडे पहरेदार वह तीन पहाड अतरिक्ष मे डूब गए और सूर्य उग आया तब वह जागा। वह भूरा-भूरा कितना सुन्दर और प्यारा बच्चा था और वह बिना डरे हुए मेरी गोद मे चढ़ आया। अपनी भोली आँखो से वह कैसे सभी चीजो को और मुझे टुकुर-टुकुर देखता था और रोता तनिक भी न था। वह खेलने लगा तो मैंने उसे खेलने के लिए सरकंडों की नावें बना कर दी और वह रेशमी काले बालो वाला बच्चा उनसे खेलता रहा।

हमारी यात्रा सुखद थी। बच्चे ने मुझे तनिक भी परेशान नही किया—न वह जल में डूबा न उसने मगर के मुँह मे हाथ ही डाला। और हर रात मैरिट मेरे पास होती और बच्चा पास मे सोता रहता, सब कुछ कितना शांत और सुखद था मै कैसे लिखूँ! और तब मेरा हृदय प्रफुल्ल हो उठता था।

एक दिन मैंने मैरिट से कहा .

"मेरी प्यारी सहेली! क्यो न हम मटका तोड़ ले? हम हमेशा के लिए साथ रह सकेंगे और शायद तब इसी थौथ की भांति हमारे भी एक बच्चा हो जाये!

उसने मेरे मुँह पर हाथ रख दिया और फिर धीरे से कहने लगी:

"सिन्यूहे! मूर्खता की बातें न करो। मैं तो शायद अब गर्भ भी धारण न कर सखूँगी—तुम जो अपने भाग्य को अकेले ही सभालने मे असमर्थ हो भला तुम्हारे रास्ते मे मैं क्यो आने लगी? नही-नही मुझसे ऐसी बाते न करो, मै सचमुच इन्हे सुनकर कमजोर हो उठती हूँ। तुम एकाकी हो और तुम्हारा भाग्य निश्चय ही बड़ा है—भला मै तुम्हारे साथ कैसे निभ सकूँगी?···नही···नही···।"

तभी थौथ ने मुझसे तोतली बोली मे कहा: "पिता" और मैं उस समय उस सुख को सहन नही कर सका और अज्ञात शका से मेरा हृदय काँप उठा।

मनुष्य को निश्चय ही इतना सुखी कभी नही होना चाहिए क्योकि सुख भला कब स्थायी रह सकता है ?

मैं एखनैटौन लौट आया। परन्तु अब की बार मुझे वह स्वर्गो का नगर अच्छा नही लगा—मैने देखा कि सत्य वहाँ नही बल्कि वहाँ से बाहर रहता था—सत्य था भूख, दारुण-यन्त्रणा और अत्याचार।

मैरिट और थौथ थीबीज लौट गये थे और साथ मेरा दिल भी ले गये और मुझे कुछ भी अच्छा नही लगता था।

कई दिन गुज़र गए और एक दिन फराओ को सुवर्ण-गृह की विशाल छत पर वास्तविक सत्य से साक्षात्कार करना पडा। मैम्फ़िस से हौरेमहेब ने सीरिया के कुछ पीडित लोग भेजे थे कि उनकी यन्त्रणा को स्वयं फ़राओ देख सके। उनको उसने मार्ग का खर्चा भी दिया था, इस स्वर्ग-नगर मे वह विचित्र लग रहे थे। राज्य के उच्च पदाधिकारियों ने उन्हे देखकर घृणा से मुँह फेर लिये और सुवर्ण-गृह के दीर्घद्वार बद कर दिये गये। पीडितो ने महल पर पत्थर फेके और वह बुरी तरह चिल्लाये और तब फराओ को उन्हे अपने सम्मुख बुलाना ही पडा। उन्होने अपने कटे हाथ उठाकर कहा :

"कैम के देश मे अब कोई व्यवस्था नही रही है—हमारी हालत देखो—देखो कि शत्रुओ ने हमारा क्या हाल किया है···!"

फराओ ने देखा उनमे से कई की आँखे निकाल ली गई थी तो कई के हाथ-पैर काट डाले गए थे। उनके शरीर घावो से भरे हुए थे। दारुण थी उनकी व्यथा। वह चिल्लाये .

"फराओ एखनैटौन ! हमारी स्त्रियो और बच्चो का क्या हाल है यह न पूछो—क्योकि अजीरू के लोगो ने उनको हम से भी अधिक सताया है—उन्होने हमारे हाथ काट डाले है क्योकि हमने तुम पर विश्वास किया था···।"

फराओ ने दोनो हाथो मे अपना मुँह छिपा लिया और फिर वह उन्हे एटौन के बारे मे समझाने लगा। सुनकर वह लोग हँस पडे और फिर बोले ·

"इस एटौन के चक्र को तुमने हमारे शत्रुओ को भी भेजा था और उन्होने उन्हे अपने घोड़ो की ग्रीवाओ मे लटका दिया—जैरूसलम मे एटौन

के पुजारी के पैर काट डाले गए कि वह जीवन-चक्र अपने पैरो के ठूँठो पर लटका सके···।"

सुनकर झरोखे मे ही एख़नैटौन मूर्छित हो गया—उस पर उसकी वही पुरानी धार्मिक मूर्छा चढ आई थी। पहरेदारो ने तब उन लोगो को भगाना चाहा पर वह न हटे और उल्टे सामना करने के लिए अड गये। और तब उन गरीबो, पीडितो के रक्त से भीतरी प्रांगण भीग गया। उनके शरीर उठाकर नदी मे फेक दिये गये।

फ़राओ की चिकित्सा मैंने तुरत प्रारम्भ कर दी। वह देर तक बेहोश रहा। पर जब होश मे आया तो उसने कराहकर कहा :

"जाओ सिन्यूहे! जाओ मेरे मित्र! अज़ीरू के पास जाओ और उसे धन देकर उससे शाति का सौदा कर लो—चाहे मुझे अपना तमाम सोना दे देना पडे—चाहे देश निर्धन हो जाये पर इस शाति को तो मोल लेना ही होगा।"

मैंने विरोध किया तो वह सिर अपने हाथो से पकडकर बोला : "मेरा सिर दुख से फटा जाता है—क्या तुम नही जानते कि घृणा से घृणा और शत्रुता से शत्रुता ही उत्पन्न होती है और रक्त से रक्त ही बहता है? जाओ सिन्यूहे! फराओ तुम्हे आज्ञा देता है, तुम्हे जाना होगा।"

मै हैरत मे रह गया। पर वह अडा रहा। जब मै वहाँ से बाहर आया तो मेरा अनुचर बाहर मेरी प्रतीक्षा मे खड़ा मुझे मिला वह मुझे देखते ही बोला : "अच्छा हुआ मेरे स्वामी आप मुझे यही मिल गये क्योकि अभी-अभी थीबीज से एक जहाज आया है जिसमे मेहूनेफर नामक एक स्त्री उतरी है। वह अपने को श्रीमान् का मित्र बताती है और आपके घर पर ही ठहरी हुई है। वह दुल्हन की भाँति शृगार किये हुए है और उसके अग-लेपो से सारा घर महक रहा है।"

सुनते ही मै उल्टा भागा और फराओ के सम्मुख जाकर बोला, "मुझे फराओ की आज्ञा का उल्लघन भला कैसे जीवित रख सकता है—यदि मैं अवज्ञा करूँ तो हत्याओ का अपराधी मै ही कहाऊँगा—परन्तु यदि मुझे जाना ही है तो मुझे अभी भेज दिया जाये—अभी एकदम, मेरा दर्जा और अधिकार अभी प्रमाणपत्र के रूप मे तख्ती पर लिख दिया जाये—क्योंकि

मे है—और मैंने तरकीवो से क्रीट की समुद्री शक्ति को सीरिया के विरुद्ध कर दिया है। और फिर अजीरू के सामने भी कम मुश्किलें नही है—अव जवकि वहाँ से तमाम मिस्री भगा दिये गये है तो वह लोग आपस मे ही लड़ रहे हैं। सवसे मुख्य वात तो यह है कि हितैतियो ने मितन्नी पर भीपण आक्रमण कर दिया है—और अव मितन्नियो का कोई साम्राज्य है ही नही। उधर वेवीलोन आत्मरक्षा की तैयारी कर रहा है और हितैतियो के हृदयो मे अज़ीरू के प्रति कोई मित्रता वाकी नही रह गई है। अव अज़ीरू स्वय घवरा रहा है—इस समय फराओं की शाति को तुरत मान लेगा और धन लेकर आगे के लिए योजना वनायेगा—मुझे आधे साल का समय दो—इससे भी कम सही और देखो कि मैं किस तरह अज़ीरू को समाप्त कर देता हूँ।"

"परन्तु हौरेमहेव ! तुम युद्ध कर ही कैसे सकते हो क्योंकि फराओ तो युद्ध की आज्ञा नही देता ?"

और तव वह क्रुद्ध हो उठा और मुझसे वोला :

"सिन्यूहे ! यदि तुमने अज़ीरू के सम्मुख जाकर शाति की भीख मांगी और शाति मोल लेनी चाही तो समझ लो मै तुम्हारी खाल खिचवाकर सुखवा दूँगा—चाहे तुम मेरे मित्र ही हो पर मै इस तरह मिस्र को नीचा नही देखने दूँगा—तुम तो उससे जाकर केवल एटौन की वातें करना और कहना कि फ़राओ उस पर मेहरवान है। वह कभी विश्वास नही करेगा क्योकि वह अत्यन्त चतुर है। और फिर तुम झूठ वोलना और उसे दवाना··· परन्तु याद रखना—गाजा किसी भी हालत मे न छोड देना।"

मैंम्फिस मे मै कई दिनो तक रुका रहा और हौरेमहेव से सधि के वारे मे वहस करता रहा। यहाँ मैं क्रीट और वेवीलोन से आये हुए दूतो से भी मिला और मितन्नी से भागे हुए प्रमुख नागरिकों की जवानी मैंने वहाँ के सारे हाल जाने और तव पहली वार मैंने अनुभव किया कि उस सव मे मेरा कितना वड़ा हाथ था और मैं कितनी वड़ी जिम्मेदारियो से लदा हुआ जा रहा था।

मैंने स्थल मार्ग से अम्मूरू जाना पसन्द किया। अव तक मुझे अजीरू द्वारा किये गए भीपण अत्याचारो का पूरा हाल मालूम हो चुका था। हौरेमहेव ने मेरे साथ थोडे सैनिक रक्षार्थ भेज दिये। उसने कहा कि वह

टैनिस और गाजा के बीच अज़ीरू से युद्ध करने की सोच रहा था। विदा होते समय हौरेमहेब ने कहा :

"मैंने अन्य धनाढ्यो की भाँति कप्ताह से भी धन ऋण मे लिया है—तुम्हारा धन—तुम महान् हो—जाओ मेरा बाज तुम्हारी रक्षा करेगा मित्र ! तुम निश्चय ही बडा काम करने के लिए पैदा हुए हो—यदि तुम वहाँ बन्दी बना लिये गये तो मै तुम्हारी स्वतन्त्रता का मोल करूँगा और यदि तुम मारे गये तो मैं तुम्हारा बदला लूंगा—यदि कोई भाला तुम्हारा पेट फाडने लगे तो कम-से-कम यह बात याद रखना कि तुम्हारी चिन्ता भी करने वाला कोई जीवित है।"

"व्यर्थ बदला लेकर समय नष्ट न करना हौरेमहेब !" मैने कहा : "क्योकि यदि मैं मर गया तो उससे मेरा क्या भला हो सकेगा ? इससे बेहतर यह होगा कि तुम जाकर राजकुमारी बैंकेटैटौन की देखभाल करना—क्योकि वह अब भी अद्वितीय सुन्दरी है—राजमाता ताया की मृत्यु पर जब मैं सुवर्ण-गृह गया था तो वह तुम्हारे बारे मे पूछ भी रही थी।"

हौरेमहेब ने मुझे घूरकर देखा और तब मै वहाँ से चल दिया। मैने लेखकों को बुलाकर अपना वसीयतनामा लिखवा दिया। मेरे बाद अपने धन को मैने हौरेमहेब, कप्ताह और मैरिट के बीच बाँट देने को लिखा दिया।

मुझे वहाँ से रथ मे खडे होकर यात्रा करनी पडी क्योकि मार्ग निरापद नही था—मेरे साथ दस रथ रक्षार्थ भेजे गये थे। उफ ! रथ की वह भयानक यात्रा मै कैसे बयान करूँ ? मैं दर्द से कराह उठा—बारम्बार पटक मुझे लगी, मै खूब चिल्लाया पर मेरी चीख-पुकार सब रथ की गड़गडाहट मे डूब गयी।

पूरे दिन रथ भागता रहा और जब रात हुई तो वह रुका और मै निढाल होकर बोरियो पर गिर पड़ा। मै उस समय अपने जन्म की घड़ी को कोस रहा था। दूसरे दिन रथ एक पत्थर से टकराकर उलट गया और मै काँटो मे गिरकर बुरी तरह घायल हो गया। रथवान जूजू ने मेरी काफी सेवा की और मेरे मुँह पर जल छिडका हालाँकि उसके पास जल की इतनी कमी थी कि वह अपने आदमियो को प्यास बुझाने को भी पूरी मात्रा मे जल नही देता था।

सुबह फिर घोडे भाग चले और मैं जीवित-मृतावस्था में बोरो पर लुढ़कता हुआ ले जाया जाने लगा। रथ के भारी चक्को की टक्कर से पत्थरो से आग की चिनगारियां निकलती थी और धूल के बादलो से तो जैसे आकाश छा गया था।

मुझे जब होश आया तो मैंने देखा कि हमें सीरियन रथो ने घेर लिया है। उस समय हम लोग एक पहाड़ी के नीचे खड़े थे। मैंने उनकी ओर देखकर खजूर का एक पत्ता उठाकर हिलाया जो सधिसूचक चिह्न था परतु उन्होने मेरी तनिक भी परवाह नही की। मैंने उन्हे अपना ओहदा और जाने का कारण तथा मिट्टी की तख्ती, प्रमाणपत्र आदि दिखाये पर जैसे उन सबका उन पर कोई प्रभाव ही नही पडा। उन्होने मेरा सोना, मेरी औषधियां यहाँ तक कि मेरे वस्त्र भी उतरवा लिये और फिर मुझे अपने रथ के पीछे बांध कर घोड़े तेज़ी से भगा दिये। जूजू वही मार डाला गया।

अजीरू के खेमे के पास ही गडे थे अन्यथा मैं निश्चय ही घुटकर मर गया होता और मैंने देखा कि तम्बुओं का समुद्र सामने फैला हुआ था—अगणित घोड़े हिनहिना रहे थे और रथों की भीते खड़ी थी। मैं बेहोश हो गया।

मुझे जब होश आया तो मैंने देखा मुझे दास नहला रहे थे और सुवासित तैल मेरे शरीर पर मल रहे थे—एक उच्चाधिकारी ने मेरी तख्तियो को पढ़ लिया था और फिर मेरी इज्जत शुरू हो गई थी।

जब मुझे राजा अज़ीरू के सामने लाया गया तो मैंने देखा वह सिह की भांति गरजता हुआ मेरी तरफ बढा। उसके गले मे सोने की मोटी-मोटी ज़जीरें झिलमिला रही थी, उसने आगे बढकर मुझे गले से लगा लिया। मैंने देखा कि उसकी घुँघराली दाढी पर चाँदी का जाल चढा हुआ था। उसने कहा :

"मित्र सिन्यूहे! तुम्हे ऐसी अवस्था में देखकर मुझे वास्तविक दु ख हुआ है—निश्चय ही दुष्ट सैनिकों ने तुम्हारा सम्मान नही किया।—पर तुम्हे खजूर का पत्ता दूर से ही हिला देना चाहिए था—तुम तो जानते ही हो कि सैनिक अनपढ होते है'''मेरे सैनिक कहते है कि तुम उन्हे देखते ही

उन पर तलवार लेकर टूट पडे थे और तब आत्मरक्षार्थ उन्हें तुमसे लडना पडा था।"

सुनकर मैं क्रुद्ध हो उठा। मैंने कहा :

"अब भी देख लो कि कही तुम्हे या तुम्हारे सैनिको के लिए मेरे कारण खतरा न पैदा हो जाये—कम्बख्तो ने मेरा खजूर का पत्ता तोड फेका, मुझे मारा और फराओं की भेजी तख्तियो की भी उपेक्षा करते हुए उन्हे पैरो तले रौंद डाला, और अब यहाँ आकर झूठ बोलते है...उन्हे दड दो जिससे वह फराओ के दूतो का सम्मान करना सीखे।"

सुनते ही वह व्यग्यात्मक रूप से हंसा और बोला .

"तुम्हे तो सिन्यूहे! अवश्य ही कोई दु स्वप्न हुआ है—भला मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ यदि तुम पत्थरो से टकराकर अपने हाथ-पैर तोड लो? और फिर भला मै अपने सर्वोत्तम सैनिको को क्यो मरवाऊं? रह गई फराओ के दूत की धौंस की बात.." वह फिर हँसा और बोला : "वह तो मेरे कानो मे मक्खियो की भिनभिनाहट जैसी सुनाई देती है।"

"अजीरू! राजाओ के राजा!" मैं चिल्लाया "कम-से-कम उस दुष्ट सैनिक को तुम्हे दड देना ही होगा जिसने पीछे से मेरे शरीर मे भाले छेदे थे—उसके कोडे लगवाओ जिससे मै तसल्ली के साथ सीरिया और तुम्हारे लिए शाति की व्यवस्था कर सकूं।"

अजीरू हँसा और उसने अपनी छाती ठोकी और फिर कहा :

"यदि तुम्हारा फ़राओ धूल मे गिरकर सधि-सधि चिल्लाने लगे तो भला मुझे उसकी क्या चिन्ता? पर तुम सिन्यूहे! मेरे मित्र हो—तुमने मुझे ससार की सर्वश्रेष्ठ स्त्री दी है—तुम्हारी ख़ातिर उस दुष्ट को दड दिया जायेगा—तुम्हे प्रसन्न रखने के लिए—बस।"

और फिर वह सैनिक सबके बीच मगर की खाल से बने कोडो से पीटा गया—उसकी चीख-पुकार मे सभी का हास्य मानो डूब गया। रक्त बहने लगा। वह उसे निश्चय ही मार डालते पर उसका रक्त देखकर मेरा हृदय पसीज उठा। और मैंने हाथ उठा दिये और उसके प्राण एक बार फिर उसे दिला दिये। बाद मे मै कह नही सकता किस बात से प्रेरित होकर मैंने स्वय उसके घावो पर मरहम लगाया और उसकी सेवा सुश्रूषा करने लगा—

सैनिकों ने समझा कि इसमें भी मेरी कोई चाल थी जो मैं इसे बारम्बार अच्छा करके पिटवाना चाहता था। उन सैनिकों ने स्वयं भी मुझ पर विश्वास नहीं किया।

रात को अजीरू ने बकरे का मांस और चर्बी में पके हुए चावल मुझे खिलाये और उत्तम मदिरा पिलाई। वहां सब कुछ भयानक था, ढाल-तलवारों से शिविर सज रहा था। अजीरू का मुख्य शिविर खालों का बना हुआ था और उसमें अनेक उल्काएं जल रही थीं। चांदी के पात्रों में भोजन परोसा गया। वहां बहुत से लोग मौजूद थे जिनमें कई हित्ती हाकिम भी थे। वह सभी जोर-जोर से सीरिया की स्वतंत्रता के विषय में बातें कर रहे थे कि किस प्रकार उन्होंने अत्याचारी मागरों अर्थात् मिस्री लोगों को वहां से उखाड़ दिया था। बाद में जब सभी मदिरा अधिक मात्रा में पी गए तो वह आपस में झगड़ने लगे और तब जोप्पा के एक अधिकारी ने गुस्से से भर कर अम्मूरू के एक व्यक्ति की गर्दन पर चाकू से प्रहार किया। परन्तु वह शीघ्र संभाल लिया गया। मैंने देखा कि उसके गले की खून की नली नहीं कटी थी—और शीघ्र उसका उचित उपचार कर दिया। इस कारण से भी सब लोग मुझे कच्चे दिल का समझने लग गए थे।

खाने के बाद अजीरू ने सबको रुखसत किया फिर उसने मुझे अपना पुत्र दिखलाया जो उसके साथ युद्धों में जाया करता था हालांकि वह उस समय केवल सात ही साल का था। वह अत्यंत सुंदर और स्वस्थ था जिसके बाल घुंघराले और आंखें काली थीं। वह अपनी मां की भांति गोरा था। अजीरू ने उसके सिर पर प्रेम से हाथ फेरते हुए कहा :

"सिन्यूहे, क्या तुमने ऐसा सुंदर बालक कहीं और देखा है? मैंने इसके लिए अभी से कई राजमुकुट भी ठीक कर लिये हैं—निश्चय ही यह जबर्दस्त बादशाह बनेगा—इसने इस छोटी उम्र में ही एक बार चाकू से एक दास का पेट फाड़ डाला था क्योंकि उसने इसका अपमान करने का दुस्साहस किया था।"

इसके बाद अजीरू देर तक अपने परिवार और स्त्री कीफ्तु के बारे में बातें करता रहा। उसने कहा कि वह उसे अम्मूरू में ही छोड़ आया था। वह

आह भरकर कहने लगा :

"आह सिन्यूहे ! कीफ्तू के विना मेरा जी नही भरता—मैने अपनी वासना को वदिनी स्त्रियो और मदिर की क्वाँरी पुजारिनो के साथ समय-समय विताकर बुझाने का निष्फल प्रयत्न किया है—कीफ्तू के विना सभी कुछ बुरा लग रहा है—उस स्त्री से एक बार के सहवास से फिर उसी की याद आती रहती है।" उसने यह भी बतलाया कि दिनो के साथ-साथ वह और अधिक सुन्दरी हो गई थी।

और तभी पास कही से स्त्रियो की चीख-पुकार का स्वर सुनाई दिया। अजीरू उसे सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और वोला :

"हितैती अधिकारी फिर अपनी स्त्रियो को यत्रणा दे रहे है'''उन्हे रोक नही सकता क्योकि मुझे युद्ध-भूमि मे उनके पौरुष का पूरा भरोसा है, लेकिन फिर भी मै यह नही चाहता कि वह इन वुरी वातों को मेरे आदमियो को सिखाएं।"

मैने मौका देखकर कहा :

"राजाओं के राजा अजीरू ! हितैती मित्रता के योग्य नही है। इनसे सम्वन्ध इससे पहले ही तोड दो कि वह तुम्हे ही मार डालें या तुम्हारे राज्य को हडप कर तुम्हे भगा दे—यह किसी के नही हुए है। फराओ से मित्रता कर लो और वह भी अभी जवकि हितैती लोग मितन्नी के युद्ध में लग रहे है। तुम तो जानते ही हो कि वेवीलोन उनके विरुद्ध है और यदि हम इनके मित्र वने रहे तो वह तुम्हें भी अन्न नही भेजेगा—और तव जव जाडा आवेगा तो भुखमरी फैलेगी—अकाल ! भीषण अकाल जिसमे सव मर जायेगे—अव भी समय है कि फराओ से मित्रता करके तुम इस संकट को टाल सकते हो'''"

वह वोला :

"तुम मूर्खता की वातें करते हो। हितैती लोग अपने शत्रुओं के लिए भयानक है, न कि मित्रो के लिए। फिर भी मैं उनसे वँधा हुआ नही हूँ। जव वह मुझे मूल्यवान उपहार भेजते रहेगे मै भला उनसे क्यों विगाडूँगा ? फिर मैं तो युद्ध को सधि से अधिक प्यार करने वाला व्यक्ति हूँ। वैसे यदि फराओ मुझे गाजा लौटा दे जो उसने मुझसे धोखे से लिया था तो मैं सधि के लिए

तैयार हूं और इसके अतिरिक्त उसे सीरिया की सीमा के डाकुओं को भी रोकना होगा और हमारे लिए यथेष्ट मात्रा मे अनाज, तैल और सुवर्ण भी देना होगा—सीरिया मे अब तक दुख का कारण फराओ ही तो है।"

और वह मुंह पर हाथ लगाकर मुस्कराने लगा।

और मैं गुस्से से चिल्लाया: "अजीरू तू डाकू है, मवेशी-चोर है और निरपराधो का हत्यारा है। क्या मुझे इतना भी नही मालूम कि सपूर्ण निचले साम्राज्य मे इस समय हर लुहसारी पर अगणित भाले बनाये जा रहे है? हौरेमहेब का नाम तो तूने अवश्य सुना होगा—उसके पास इतने रथ है जितने पिप्सू और जूं तेरे गधो में भी न होगे—ओफ! हौरेमहेब निश्चय ही तुझे जीवित नही छोडेगा। क्योकि अपार है मिस्र की शक्ति। सधि तो फराओ ने केवल अपने उस देवता के कारण चाही थी क्योकि उसे रक्तपात नही भाता—मै तुझे एक मौका और देता हूँ—सोच ले।"

और फिर मैने 'तू' से 'तुम' की भाषा पकड़ ली और कहा: "गाज़ा नही दिया जा सकता—रह गए रेगिस्तान के लुटेरे। उन्हे तुम स्वयं खदेडो क्योकि उनसे और मिस्र से कोई वास्ता नही है। बल्कि यह तुम्हारे अत्याचारों का ही नतीजा हे कि सीरिया के यह लोग रेगिस्तान मे भाग गये है और अब तुम्हारे ही विरुद्ध शस्त्र उठा रहे है—इसके अतिरिक्त तुम्हे तमाम मिस्री बदियो को मुक्त करना होगा और सीरिया मे रहने वाले तमाम मिस्रियो को हर्जाखर्चा भी देना होगा।"

सुनकर उसने अपने कपडे फाड डाले, दाढी नोच डाली, और वह चिल्लाया:

"नही, गाजा मुझे चाहिए, मिस्रियो का भरोसा भला मै क्यो करूँ? और बदियो को निश्चय ही दास बनाकर बेचा जायेगा—उन्हे छुडाने के लिए फराओ को सोना देना होगा—सोना—"

और हम इसी भाँति कई दिनो तक हुज्जत करते रहे। अज़ीरू अपने कपडे फाड़ डालता, बालो पर राख डाल लेता, रोता-चिल्लाता और मुझे डाकू कहता, एक बार तो मै भन्नाकर बाहर चल भी दिया और मैंने अपनी पालकी मँगवाई पर तभी वह फिर मुझे अदर लिवा ले गया।

और मैने एक बार भी यह जाहिर नही होने दिया कि मुझे फ़राओ ने

किसी भी कीमत पर संधि करने के लिए भेजा था। अज़ीरू के पड़ाव मे नित्य झगडे बढते जाते थे। नित्य जितने लोग वाहर चले जाते उतने लौटते नही थे क्योंकि अभी उसका स्वामित्व जम नही पाया था। समय मेरी ओर था, यह प्रत्यक्ष था।

एक रात दो आदमियो ने अजीरू पर हमला किया और उस पर चाकू चलाये। वह जख्मी हो गया पर उसने एक को फिर भी मार डाला। दूसरे को उसके लडके, उस वच्चे ने मार डाला। दूसरी सुवह उसने मुझे अपने खेमे मे बुलाया और वह मुझ पर भयानक अभियोग लगाने लगा जिससे मैं डर गया पर वाद मे वह सधि करने पर उतर आया और फराओ के नाम पर उसने हमारी ही शर्तें मान ली। गाजा मिस्र का ही रहा, रेगिस्तानी लुटेरो से मिस्र का कोई सम्वन्ध नही माना गया और वदियो की स्वतन्त्रता का मूल्य फराओ को चुकाना पडा—मिट्टी की तख्तियो पर सधि लिखी गई और उस पर दोनो देशो के हजार-हजार देवताओ की शपथे लिखी गई कि यह सधि शाश्वत काल के लिए की जा रही थी। अजीरू ने मुझे अनेकानेक उपहार दिये और मैंने भी उसे अमूल्य रत्न उपहार मे भेजने का वचन दिया।

जव मै चला तो मैंने उसके लडके के गुलावी गालो को चूम लिया। अज़ीरू मुझसे गले मिला और उसने मुझसे मित्र कहा। फिर भी हम दोनो जानते थे कि वह संधि कितनी झूठी थी। उसने गाजा तक मेरे साथ सैनिक भेजे।

परन्तु गाजा मे, जो हमारा था, मुझे एक नई मुसीवत का सामना करना पडा। सारे शातिसूचक पत्ते हिलाये गए पर नगर-द्वार नही खुला। उल्टे एक तीर आया जिससे हमारे साथ का एक सैनिक गिर गया। मेरी आँखो के सामने मृत्यु नाचने लगी—भय से मेरा रक्त जम गया और तीर पर तीर आने लगे। मैं भय से ढालो के पीछे छिपकर चिल्लाने लगा। परन्तु मिस्री सैनिक जव मुझे भालो से व तीरो से न मार सके तो उन्होने ऊपर से गर्म तैल फेका [illegible] पत्थरो मे छिपकर रोने-चिल्लाने लगा जिसे सनकर

अन्त मे जब मुझे नगर के अन्दर लिया तो मेरी जान मे जान आई। वहाँ का सेनापति जरूरत से भी ज्यादा शक्की था। मेरे लिए उसने ऊपर से एक टोकरी लटकवा दी थी, द्वार नही खोला था।

अन्दर पहुँचकर मैने वहाँ के सेनापति को खूब डाँटा, फटकारा परन्तु वह भी शुष्क व्यक्ति था, बोला :

"सीरिया के लोगो ने मुझे इतना धोखा दिया है कि मुझे किसी का विश्वास नही हो पाता। यहाँ तक कि अब मैने तय कर लिया है कि जब तक कि हौरेमहेब के हाथ का आज्ञापत्र नही मिल जाता, मै किसी के लिए द्वार नही खुलवाऊँगा।"

गाजा से मै मिस्र के लिए जहाज़ में बैठकर चल दिया। मैने नाविको से कहा कि यदि मार्ग मे शत्रु मिले तो सफ़ेद पाल तान दे और मस्तूल पर भी सधि-सूचक झडा उडावे। सुनकर उन्होने घृणा से मुँह फेर लिए। पीछे से कोई एक बोला :

"इतना बडा रंगा-पुता और जबर्दस्त जहाज युद्धपोत न होकर वेश्या ही बना रहा, धिक्कार है इसे!"

पर जब हम नदी मे आ गये तो नदी-तटो के लोग खजूर के पत्ते हिला-हिलाकर मेरा स्वागत करने लगे। मै फ़राओ का दूत जो था और तब वह नाविकगण मेरी इज्ज़त करने लगे और भूल गये कि मै ही था वह व्यक्ति जो इतनी बेशर्मी के साथ गाज़ा मे डलिया मे रखकर ऊपर खीचा गया था।

मैम्फिस मे बेबीलौन के सम्राट बर्नेबुरियाश का दूत मुझे मिला जो मेरे लिए अनेकानेक उपहार लाया था। मै उससे फ़राओ के जहाज पर ही मिला। वह श्वेत दाढी वाला विद्वान व्यक्ति था और उसका साथ मुझे बहुत सुहाया। वह मेरे साथ-ही-साथ रहा। हमने नक्षत्रों, भेड के जिगर को देखकर भविष्य जानने और अनेकानेक विषयो पर बाते की। वह मेरे ज्ञान से प्रभावित हुआ और उसने पर्वतीय-प्रदेश की सर्वोत्तम मदिरा पीने को दी।

जब हम एखटैटौन लौटे तो मुझे लगा कि मै काफ़ी समझदार हो गया था।

मेरी अनुपस्थिति मे फराओं के सिर का दर्द बढ गया था। वह अत्यन्त चिंतित रहता था, क्योंकि वह जान गया था कि जिस चीज मे भी वह हाथ लगाता था वही उल्टी पड जाती थी। 'आई' ने उसे खुश करने के लिए तीस-वर्षीय पर्व मनाने का प्रवन्ध कराया था। हालाँकि उसे राज्य करते हुए तीस तो क्या, बहुत ही कम वर्ष बीते थे, पर मिस्र मे यह प्रथा प्रचलित हो गई थी कि इस वर्ष को शासक चाहे जब मना लेते थे।

एखनैटौन में उत्सव को दावते खाने के लिए बाहर से भीडे उमड पडी थी।

और तभी एक सुबह जब फराओं एखनैटौन पवित्र झील के किनारे घूम रहा था तो दो व्यक्तियो ने उस पर चाकू से प्रहार किया। टोथिमीज का एक शिष्य वही झील के किनारे बैठा हुआ वत्तखो के चित्र बना रहा था। उसने अपनी कूँची से उन दुष्टो के चाकुओ के प्रहार रोके और तब तक वह उनसे लडता रहा जब तक कि पहरेदार न आ गये और वह दोनो पकड न लिए गये। फराओ के कधे मे एक हल्का-सा घाव हो गया पर वह लडका मर गया। उसके रक्त से फराओं के हाथ भीग गये।

उस शिशिर ऋतु की बहार मे फराओ एखनैटौन ने इस प्रकार मृत्यु की दारुण-यन्त्रणा इतने पास से देखी। उनके नेत्रो के सामने ही उस लडके के जबडे ढीले पड गये और वह मर गया, उसी के लिए।

मै शीघ्रतापूर्वक मरहम-पट्टी के लिए बुलाया गया। घाव साधारण था। मैने देखा कि हत्यारे घुटे सिरों वाले थे जिनके सिरो पर तेल चमचमा रहा था। जब पहरेदारो ने उनको पकडकर कस लिया तब भी वह अम्मन का नाम ले लेकर सबको शाप देने लगे और गालियाँ देने लगे। आखिर तब वह चुप हुए जब उनके मुँह पर भाले मारे गये और रक्त बहने लगा। निश्चय ही अम्मन के पुजारियो ने उन पर कोई जादू कर दिया था।

परन्तु यह घटना भी भयानक थी। फराओ पर आज तक कभी किसी ने हाथ उठाने का दुस्साहस नही किया था। फराओ की रहस्यमय मृत्यु तो

हुई थी कि उन्हे विष दे दिया गया हो, पतले डोरे से घोट दिया गया हो, या उनकी मर्जी के खिलाफ़ उनके सिर खोल दिये गये हों, पर इस प्रकार खुला प्रहार आज तक कभी नही हुआ था। यह एक ऐसी घटना थी जो छिपाई नही जा सकती थी।

फराओ के सामने ही जब अपराधियो से पूछा गया तो उन्होंने बोलने से इन्कार कर दिया। तब पहरेदारो ने भालों से उनके मुँह पर वार किये और तब वह अम्मन का नाम ले-लेकर शाप देने लगे। अम्मन का नाम सुनकर स्वयं फराओ इतना क्रुध हो उठा कि उसने मारने वालों को नही रोका—वह मारते गये, मारते गये—अपराधियो के मुख क्षत-विक्षत हो गये, दाँत झड गये, रक्त बहने लगा और माँस के लोथडे लटकने लगे और तब फराओ का हाथ उठ गया। अपराधी अब और अधिक चिल्लाये :

"और झूठे फराओ—उन्हे मत रोक, हम मरना चाहते है—हमे पीड़ा नही होती—हमारे हाथ-पैरो को भी तुडवा दे—"

उनके मुख वीभत्स हो गये थे और रक्त बुरी तरह वह रहा था। और तब फराओ ने अपना मुँह हाथों मे छिपा लिया और उसे घृणा और पश्चाताप होने लगा कि क्यों उसने भी उन्हे इस तरह पिटने दिया फिर उसने हाथ उठाकर कहा : "इन्हे छोड दो—यह नही जानते कि यह क्या कर रहे है।"

परन्तु जब अपराधी खुल गये और उन्होंने देखा कि वह उन्हे छोड़ देना चाहता था तो वह बुरी तरह से चिल्लाने लगे और उनके मुँह से झाग बहने लगा : "ओ नकली फराओ! हमे मरवा डाल—अम्मन के नाम पर हमे मरवा डाल जिससे हम अमरत्व के जीवन को प्राप्त कर सके।"

फ़राओ ने सुना और वह दारुण दुःख से छटपटाने लगा। और तभी वह अपराधी भागे और उन्होने दीवाल से अपने सिर दे मारे—उनके सिर फट गये, हड्डी चूर-चूर हो गई, भेजा बाहर निकल आया और वह गिरकर मर गये। रक्त से सारा स्थान भीग गया।

और तब सुवर्ण-गृह मे सभी जान गए कि फ़राओं की ज़िन्दगी खतरे मे आ गई थी। पहरेदार दुगुने हो गए और अब फराओ कही अकेला नही छोड़ा जाता, एटोन के भक्तो को अपने धन और जायदाद का डर सताने

लगा और वह और भी अधिक फराओं की शुभकामना करने लगे। और इस प्रकार दोनो साम्राज्यो मे आपसी विरोध वढते गए, वढते गए—अव अम्मन और एटौन के दल वन गए थे।

तीस वर्षीय उत्सव थीवीज मे भी मनाया गया। सोने का चूरा, शुतुर्मुर्ग के पर, चीते, जिराफ, छोटे-छोटे वन्दर, तोते और रग-विरगी चिडियाएँ वहाँ भी भेजी गई कि लोग उन्हे देखकर फराओ की महान् शक्ति और वैभव को पहचान सके और फिर उसका गुणगान करे। परन्तु उस जुलूस को देखकर थीवीज मे कोई हलचल नही मची। सभी ने वह सब ठडी-पथराई दृष्टि से देखा। फिर सडको पर लडाई शुरू हो गई और एटौन के चक्र लोगो के वस्त्रो पर से फाड लिये गए। दो एटौन के पुजारी लोगो को जिन्होने विना रक्षको को साथ लिये भीड मे जाने का दुस्साहस किया था, लोगो ने मुगदरो से कूट-कूटकर मार डाला।

सब से भयानक और बुरी वात तो यह हुई कि इन सव चीजो को वाहरी देशो के दूतो ने भी देखा—क्योंकि उस समय वह वही थे। अजीरू के राजदूत ने भी वह सब अपनी आँखो से देखा। मैने उसी के हाथो अजीरू और उसके पुत्र के लिए अमूल्य उपहार भेजे।

और फराओ एखनैटौन की व्यथा वढती गई। वह जितना सोचता उतनी ही समस्या और उलझ जाती थी। पर अवकी वह भी कडा पड गया। अम्मन का नाम लेने वालो को पकडवाकर उसने खानो मे काम करने के लिए दास वनाकर भेजने की आज्ञा दे दी—उधर अम्मन के पुजारियो की शक्ति दुर्दम्य थी जिनसे स्वय फराओ के अगरक्षक डरते थे, और इस सब मे गरीव पिस गए—उनकी यन्त्रणा का पारावार न रहा, और घृणा वढती गई और सपूर्ण साम्राज्य मे अशाति फैल गई।

मैंने कप्ताह को लिखकर एक पत्र मँगवा लिया जिसमे उसने मेरा थीवीज मे व्यापार के सबंध मे रहना अत्यन्त आवश्यक लिख दिया था। उसे दिखाकर मैने फराओ से जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। जव मै जहाज मे वैठकर चला तो मुझे लगा मै उस अभिशप्त स्थान से मुक्त हो गया था।

मनुष्य अपने विचारों के सम्मुख कितना निरीह होता है कि वह वास्तविकता से इसीलिए मुँह चुराता है क्योंकि वह उसे नही भाती और केवल उन्ही वातों का विश्वास करने लगता है जिनकी आशा मे वह जिया करता है ! पिंजड़े से निकली हुई चिड़िया के समान उन्मुक्त होकर मैं थीवीज की ओर उड चला। मेरा मन कितना हल्का था उस समय ! मुझे लगा कि मैं, जो फराओ का वैद्य था, उसका गुलाम था—कितना नीच था, कितने अकाट्य वधनो मे वँधा हुआ था। मेरे लिए तो फराओ केवल एक मनुष्य ही था, भले ही उसके भक्त उसे देवता मानते हों। मैं जितना उससे दूर होता गया उतना ही प्रफुल्लित रहने लगा—और मैं थीवीज—अपने प्यारे थीबीज मे फिर आ रहा था।

और जैसे-जैसे जहाज नदी मे वढने लगा मैंने देखा कि एटौन का साम्राज्य कितना उजड चुका था। अव हालाकि फसल वोने का समय था पर खेत वजर पडे थे। झाड-झखाड सभी तरफ खडे थे। मैं स्पष्ट देख रहा था कि अकाल पड़ने वाला था—और फिर दारुण दु:ख मृत्यु और वही रक्तपात—अम्मन की शक्ति वढ़ रही थी—लोगों के दिलो मे एक बार फिर अम्मन का भय वैठ गया था—

और मैंने देखा अम्मन द्वारा अभिशप्त एटौन की भूमि ऊसर पड़ी थी—भुखमरी का तांडव नृत्य प्रारंभ होने वाला था। मैंने मार्ग मे जहाज रुकवाकर कई लोगो से पूछा :

"पागलो ! जव फ़राओ ने तुम्हे भूमि मुफ्त दी है तो क्यों नही उसे जोतते ? क्यों भूखे मरते हो ?"

तो उन्होंने मुझे ईर्षालु दृष्टि से देखा क्योकि मेरे वस्त्र उत्तम सूत के और महीन थे और फिर कहा

"हम क्यो जोते जव कि यह भूमि ही अभिशप्त है ? जव इसमे से उत्पन्न अन्न को खाकर हमारे परिवार के लोग मर जाते है तो फिर हम इसे क्यो जोते ?"

और मैने देखा कि वास्तविक जीवन से एखनैटौन कितनी दूर था।

फराओ का अपना कोई पुत्र न होने के कारण उसने उत्तराधिकारी प्राप्त करने के विचार से अपनी दो पुत्रियों, मैरीटैटौन और एखसैनैटौन के

विवाह की वात सोची। अपने ही दरवारियो के लडकों मे से उसने जमाता छाटे। मैरिटैंटौन का विवाह फ़राओ के प्यालेबरदार जिसका नाम सेकेकरे था, के साथ हुआ। यह पद्रह साल का लड़का था जो वात-बात मे उत्तेजित होकर घवरा जाता था। फ़राओ को यह वेहद पसद आया और उससे उसे ही अपना वारिस बना दिया।

एखसैनैटौन का विवाह एक दस वर्षीय लडके के साथ हुआ जिसका नाम टट था। इसे अश्वशाखा के मालिक और शाही इमारतों के अफसर के खिताव दिए गये, यह वीमार-सा, उदास और आज्ञाकारी वालक था जिसे मिठाइयाँ और खिलौने वहुत प्यारे थे।

एखनैटौन उन दोनों से खुश रहा करता था क्योंकि वह स्वय तो कुछ सोच ही नही सकते थे—उनके लिए जो कुछ भी सोचता वह स्वय फराओं सोचता था—

वाहर से ऐसा लगता था जैसे राज्य मे सभी कुछ ठीक-ठाक चल रहा था परन्तु फिराओं पर जो खुला हमला हुआ था तभी से सपूर्ण साम्राज्यों मे अपशकुन की सनसनी फैल गई थी।

सबसे भयंकर वात अब यह हो गई थी कि फराओ ने जनसंपर्क बिल्कुल छोड दिया था—अव यह किसी की आवाज नही सुनता था—केवल अपनी आत्मा की आवाज सुनता और उसी के अनुसार कार्य करता। एखटैंटौन की सडकें उदास रहने लगी—लोगो के दिलों मे भय ममा गया था। सव कुछ शात लगता पर जैसे भीतर-ही-भीतर आग सुलग रही थी। मै अक्सर जल-घडी के पास वैठा हुआ सोचा करता कि विस्फोट कव होगा। और तब एखटैंटौन का यह स्वर्गतुल्य नगर किस प्रकार बिखर कर गिर जाएगा—भयानक था वह विचार परन्तु वह दारुण सत्य जो था!

जहाज जा रहा था और मल्लाह भारी पतवारे चला रहे थे। जब वह जल को काटते तो उनके कधे फूल आते और पीठ सीधी होकर फैल जाती। मैंने एक दिन सुना, एक मल्लाह दूसरे से बड़बड़ाता हुआ कह रहा था.

"इस मोटे सूअर के लिए हम क्यो पतवार चलाएँ? एटौन के साम्राज्य मे जब सभी समान है तो फिर यह खुद ही क्यो नही चलाता पतवार ?"

और मेरा हाथ स्वत. डडे पर गया कि उनकी पीठो पर बरसे, परन्तु हृदय उमड़ आया। मैंने सोचा, फिर कहा :

"नाविक ! मुझे भी एक पतवार दो।"

और मै खडे होकर खेने लगा। मैंने खूब जोर लगाया, तब तक जब तक मुझसे लगाया गया। जब तक कि लकड़ी ने मेरी खाल न खींच ली और छाले न बना दिए।

और तब वह बोले :

"मालिक हमे क्षमा करो, हमे ही खेने दो।"

पर दूसरे दिन मैंने फिर पतवार को चलाया। छाले खुल गये और रक्त बहने लगा। फिर पीठ अकड गई फिर कधे फटते गये पर मैं न रुका और नाविक रोकर कहने लगे :

"आप हमारे मालिक है और हम आपके दास है। अब और मेहनत न करे, क्योकि हरएक का काम बंटा हुआ है। देवताओ का ऐसा ही न्याय है। भला आप नाव चलाते अच्छे लगते है ?"

पर मै न माना और थीबीज तक नित्य नाव चलाता रहा। मैंने उन्ही का सा भोजन किया और उन्ही की खट्टी और कड़वी मदिरा पी, परन्तु इतने सब पर भी एक बात मैंने सीखी, मै पहले से अधिक सुख का अनुभव करने लगा था। अब मै अधिक खे सकता, हर दिन और ज्यादा, और ज्यादा।

मेरे अनुचर मेरे कारण व्यथित थे, वह आपस मे कहते : "निश्चय ही हमारे मालिक को किसी विच्छू ने काट खाया है अथवा यह एखटैटौन मे रहकर पागल हो गया है, परन्तु खैर कोई भय की बात नही है, क्योकि हमारे पास भी वस्त्रो के नीचे अम्मन का शख छिपा है।"

और जब थीबीज आया तो मैंने अपने शरीर पर नाना सुगन्धित तैलो से मालिश कराई और स्नान किया और आम वस्त्र धारण करके मैं

उतरा। मैंने मल्लाहो को चाँदी बाँटी और उन्हे सुवर्ण भी दिया और मैंने उनसे कहा :

"जाओ और आनन्द मनाओ एटौन तुम्हे सुख प्रदान करेगा, क्योकि यह अमीरों से अधिक गरीबो को चाहता है। जाओ मीठी मदिरा पीओ और भर पेट भोजन खाओ।"

सुनकर उनके मुँह लटक गये, जो खुशी उन्हे इनाम पाकर हुई थी वह एकदम लोप हो गई और उन्होने डरते-डरते पूछा :

"श्रीमान् बुरा न माने पर यह बता दे कि क्या जो सोना और चाँदी आपने हमे दी है, अभिशप्त है, क्योकि आप एटौन का नाम ले रहे है? अगर ऐसा है तो हम इसे स्वीकार नही कर सकते, क्योकि यह तो हमारी उँगलियो को जला देगा और यह तो सभी को मालूम है कि एटौन का धन मिट्टी के समान है।"

मैंने उन्हे सात्वना देते हुए कहा : "व्यर्थ मे एटौन से मत डरो क्योकि वह तो तुम्हारे भले के लिए ही है और फिर यह तो पुरानी छाप के असली सोने के सिक्के है जिनमें नये एखटैटौन मे ठुके सिक्को की भाँति मिलावट भी नहीं है। जाओ और इन्हे मदिरा मे परिणित कर लो।"

उन्होने उत्तर दिया : "हम एटौन से बिल्कुल नही डरते, क्योकि वह निर्वीर्य देवता है। पर जिससे हम डरते है उसे श्रीमान् भी खूब जानते है हालाँकि फराओ के भय से हम उसका नाम लेने का साहस नही कर सकते।"

सुनकर मेरा मन जैसे घुटने लगा। पर वह शीघ्र चले गये और तब मै सीधा 'मगर की पूँछ' की ओर चल दिया। थीबीज की गन्ध मेरे रोम-रोम मे समा गई थी। मुझे वहाँ मैरिट मिली जो अब पहले से भी सुन्दर लग रही थी हालाँकि अब वह युवती नही रही थी और पूर्ण तरुणी बन चुकी थी। पर वह मेरी सबसे प्यारी मित्र थी।

मुझे देखकर वह झुक गई और उसने अपने दोनों हाथ फैला दिए। फिर मुझे चकित नेत्रों से देखती हुई छूकर बोली :

"सिन्यूहे, सिन्यूहे! तुम्हारे नेत्रो मे इतनी चमक कहाँ से आ गई और तुम्हारी तोद का क्या हुआ?"

मैंने उसे प्रेमपूर्ण दृष्टि भर कर देखा और कहा : "मेरी प्राणप्यारी ! मेरी आँखे तुम्हारे वियोग के ज्वर में तपकर चमकने लग गई है और मेरी वहिन ! मेरी नीद तुमसे मिलने की भागा-दौडी मे दुख के समान गायव हो गई।"

और तव उसने अपने नेत्रो से अश्रु पोंछकर कहा :

"ओह सिन्यूहे ! जव कोई अकेली रहती हो और उसके जीवन का वसन्त निष्फल ही वीत गया हो तो उसे सत्य से झूठ कितना प्यारा लगता है ! जव तुम वापस आ जाते हो तो वसन्त लौट आता है, और तव मैं फिर पुरानी वातो पर विश्वास करने लग जाती हूँ।"

मैंने उसे हृदय से लगा लिया। उसका स्पर्श कितना सुखद था और कितना सुख उस समय मैने अनुभव किया था, यह मै कैसे लिखूं ?

रात्रि को जव कप्ताह आया तो उसे देखकर मेरे नेत्र फटे के फटे रह गये। कलाइयो और पौचो मे, वह वहुत ही मोटा आदमी, भारी सोने के कड़े पहने हुए था—उसके गले मे सोने की जजीरे झनझना रही थी और अगूठियो से उँगलियाँ जगमगा रही थी। उसकी कानी आँख अव एक सोने की गोल पत्ती से ढँकी हुई थी। उसके शरीर के मुटापे का वर्णन करना सभव नही है—और वह मुझे देखकर हर्ष से चिल्लाया और उसने वडी कठिनाई से झुककर मुझे हाथ फैला कर अभिवादन किया। मुझे उसे देखकर हँसी आ गई।

उसकी जुवानी मुझे मालूम हुआ कि मैं अत्यन्त धनी हो गया था। व्यापार मे उसने मेरी वताई हुई योजना के अनुरूप दुगुना धन कमा लिया था। उसने मुझे यह भी वतलाया कि अव जवकि भूमि वजर पड़ी थी तो भविष्य मे अकाल निश्चय था और इसीलिए वह अधिक-से-अधिक अनाज अभी से खरीदकर रख लेने का विचार कर रहा था कि वाद मे गहरे मुनाफे उठा सके। उसी ने मुझे वतलाया कि सीरियन लोग पुराने मिट्टी के पात्र काफी तादाद मे खरीद रहे थे और मुफ्त मे उन्हें लोगो के यहाँ से एकत्रित करके उन लोगो के हाथो नये घड़ो के मोल वेच रहा था। और इसका भेद मुझे वहुत दिनो वाद पता चला जव हौरेमहेव मुझे हितैतियों के साथ हुए युद्ध मे ले गया। वहाँ मैने देखा कि रेगिस्तान के मध्य इन्ही मिट्टी

के अगणित पात्रों में उन्होने सेना के लिए जल भर रखा था।

थीबीज मे मेरा समय सुख से कटने लगा क्योकि मेरे पास मेरी मैरिट थी, धन था, और कप्ताह के समान मित्र था। भला मुझे कमी किस बात की थी। सबसे बडी बात यह थी कि थौथ—वह प्यारा-प्यारा बच्चा मेरी गोद मे बैठकर मुझसे पिता कहा करता था।

उपसंहार

नील की नीली लहरे थपेडे ले रही है। कितना चौडा है इसका पाट—सूर्यास्त हो रहा है। क्षितिज के उस पार जाते-जाते सूर्य की पीली धूप जल की छाती पर स्वर्णिम उजाला फैला रही है—और मैं-मै सिन्यूहे-सैन्मट का वेटा—अम्मन के मदिर का श्रेष्ठ पुजारी राजवैद्य, यहाँ अकेला वैठा हूँ। मेरे ऊपर पहरा रखने वाले ही मेरी सेवा करते है—सव कुछ है पर मेरी स्वतत्रता मुझसे छीन ली गई है। मुती रसोई घर मे आज भी वड़वड़ा रही है और खडखड की आवाजे उधर से आ रही है—मै सोच रहा हूँ, कि मैं क्या था और क्या हो गया हूँ—मै वदी हूँ फिर भी मेरे आराम मे कमी नही है—मैं अव भी सुवर्ण के प्याले मे सुवासित मदिरा पीता हूँ, अव भी मुती मेरे लिए चर्वी मे भुनी हुई वतख वनाती है—धन है, दास है—अव भी क्रोध मे मेरा डडा दासी की पीठ पर वरसता है—परन्तु आह! मैं यहाँ से कही जा नही सकता—क्योकि मेरा मित्र हौरेमहेव अव मिस्र के दोनो साम्राज्यो का फराओ है—कितना समय वदल गया है और मै कितना अभागा ही रहा आया हूँ!

मुझे याद है जव उन दिनो मैं थीवीज़ गया था तो कैसे अम्मन के पुजारियों के भीपण षड्यत्र से थीवीज मे भयानक विद्रोह फूट पड़ा था—और उसी आग मे थीवीज़ मे भयंकर लूटमार, हत्या और वलात्कार का नगा नाच हुआ था। एटौन और अम्मन की लडाई मे सहस्रो निरीह लोगो का रक्त फिर नालियो मे वहने लगा था—और जैसे मेरे पास इतना काम फट पडा था कि मुझे रात-दिन मरीजो से, घायलो से, फुर्सत ही नही मिलती थी। मेरी मैरिट मेरे साथ-साथ ऐसी लगी रहती जैसे मेरी छाया हो।

और एक दिन सैनिको ने 'मगर की पूँछ मे आग लगा दी थी और थौथ

को भाले मे छेदकर ऊपर उठा दिया था। मैरिट उसे जब बचाने भागी तो एक भाला उसकी पीठ मे लग कर आगे निकल गया था—और इससे पहले कि मै बोलूं या बचाव का प्रयत्न करूँ, मेरी आँखो के सामने ही मेरी दुनिया एक बार फिर उजड गई थी। और तभी कप्ताह ने मैरिट का वह रहस्य मुझे बताया था—उसने कहा था :

"मूर्ख! वह तेरा ही बच्चा था—तेरा और मैरिट का पुत्र!"

काश वह मुझे उस भयकर रहस्य को कभी न बतलाता। मेरा पुत्र—मेरी आँखो का तारा मेरा वशज, क्रूर सैनिको ने मार डाला—कितने घृणित होते है यह कल्पित देवता, जिनके नाम पर लाखो की हत्या कर दी जाती है। कितना उदास हो गया था मै उन दिनो। क्यो 'था' और 'हूँ' मे इतना भयकर और अभिशप्त कि मेरे सपर्क मे आने वाले सभी मारे जाते थे।

अजीरू ने आक्रमण कर दिया था और हौरेमहेव उसे दबाने गया था। अजीरू का बल अत्यधिक हो गया था। उसने फराओ के सधि-चक्र को कुचल कर नर-हत्या शुरू कर दी थी। हौरेमहेव सिह की भाँति गर्जन करता हुआ उससे टक्कर लेने आगे बढा था। कौन कह सकता है कि हौरेमहेव कम वीर है? निश्चय ही एक दिन उसका बाज उसे मार्ग दिखाता हुआ इसीलिए उसे थीबीज लाया था कि वह महान् योद्धा बन जाय—कि वह एक दिन दोनों साम्राज्यो पर शासन करे और शत्रु उसकी हुकार से थर्रा जाएँ।

मैने देखा था रेगिस्तान का वह नरसहार सीरियनो के अगणित पानी के घडो पर हौरेमहेब ने बाज की भाँति झपटकर कब्जा कर लिया था। और फिर रथ भागे, भाले फेंके, बाण टकारने लगे और सबके ऊपर मरने वालो की दारुण चीत्कारे आकाश मे उठकर गूँजने लगी और सारा आकाश धूल से छा गया था। स्त्रियो से बलात्कार किया जा रहा था—बच्चे भालों पर उठा लिये गए थे और नरसहार की जैसे कोई सीमा ही नही रही थी। रेत मे रक्त बहा नही था—जहाँ गिरा वही सोख लिया गया था। रक्त की कितनी प्यासी थी वह भूमि!

और मुझे याद है जब अजीरू पकड लिया गया था तो सैनिको ने किस प्रकार उसका सब कुछ लूटकर उसके मुँह के सोने के दाँत भी, जो मैने लगवाये थे, लूट लिये थे। उसका जबडा तोड़ दिया गया था—

भरे मैदान में उसने चिल्लाकर कहा था :

"मिस्री कुत्तो ! सिंहो का सिर कभी नीचा नही होता—मुझे तुम लोगो में से बदबू आ रही है—तुम्हारी गदी सूरत देखकर मै घृणा से मर गया हूँ—शीघ्र करो मेरा अत जो मुझे तुम्हारे सहवास का दुःख अधिक न झेलना पडे।"

मैं वही खड़ा था और मैने हौरेमहेब की ओर देखा था जो सुनते ही मेरी कल्पना के बिल्कुल विपरीत चिल्ला उठा था :

"शाबास अजीरू ! तुम निश्चय ही वीर हो।"

फिर पैनी धार वाला खड्ग लेकर जल्लाद आगे बढा। अजीरू ने अपनी प्राण-प्यारी स्त्री कीफ़्तू से कहा .

"मेरी कोमलांगी ! मेरी प्राण-प्यारी ! तुम मेरे कारण मारी जा रही हो इसी का मुझे दुःख है—अभी तुम जवान हो, निश्चय ही जीवन मे अभी तुम्हारे लिए बहुत कुछ भोगना बाकी है—।"

"नही-नही," कीफ्तू चिल्ला उठी थी, "मेरे राजा ! मेरे सिंह ! तुम्हारा सहवास प्राप्त करने के बाद अब संसार मे मुझे किसी भी वस्तु की चाह नही रह गयी—तुम वृषभ के समान बली हो, भला अब मुझे तुम जैसा पुरुष-सिंह कहाँ मिलेगा ? मै तुम्हारे साथ ही मरना चाहती हूँ। यदि यह घृणित मिस्री मुझे छोड़ भी दे तो भी मै फाँसी लगाकर मर जाऊँगी, मैं तो केवल एक तुच्छ दासी थी, जिसे तुमने रानी बना दिया।"

और जब अजीरू जल्लाद के सामने सिर झुकाकर बैठ गया तो उसने अंतिम इच्छा कीफ़्तू से कही .

"दिखा तो मुझे अपने यौवन के उभार अंतिम बार प्यारी ! जिससे मैं उनकी सुखद कल्पना मे ही अमर यात्रा पर जा सकूँ।"

कीफ़्तू ने अपने स्तन खोल दिये—कितने सुन्दर और यौवन से परिपूर्ण माँसल उन्नत थे वह ! और तभी खड्ग नीचे गिरा और राजा अजीरू का सिर कटकर उछला जिसे कीफ़्तू ने लपककर हृदय से लगाकर दबा लिया था—रक्त के फव्वारे छूट निकले थे जिनमे कीफ्तू नहा गई थी—उस रक्त को देखकर अजीरू के दोनों बच्चे सहम गये थे। और तब कीफ़्तू ने कहा :

"आगे बढो राजकुमार ! चलो पिता के पास चलें।"

दो बार 'खच्' 'खच्' की आवाज़ आई और अब बच्चों की कोमल गर्दने अलग होकर गिर पड़ी। क्या यही था अजीरू का स्वप्न ? वह तो कहा करता था कि उसका पुत्र एक बहुत ही विस्तृत साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा—कहाँ था वह राज्य तब ? और फिर जल्लाद का भारी खड्ग कीपतू की गोरी मांसल और मोटी गर्दन पर गिरा और वह दुहरे बदन की कामातुर सुन्दरी अपने पति की लाश पर गिर गई। मेरी आँखो के सामने वह पूरा परिवार धूल मे मिला दिया गया। हौरेमहेब की आज्ञा से उनके शरीर खाई मे फेक दिये गये जहाँ सुअरो, कुत्तो और कछुओ ने उन्हे नोच-नोच कर खा लिया।

मुझे याद आ रहा है कि थीबीज़ मे फिर अम्मन के पुजारियो ने बगावत करा दी थी और शार्दानाओ और हब्शी सैनिकों ने एक बार फिर थीबीज की भूमि को थीबीज़ में रहने वालो के ख़ून से रंग दिया था। और तब प्रत्येक शर्दाना और हब्शी उच्च नागरिकों की स्त्रियो के साथ उन्ही की शैया पर सोया था। हौरेमहेब स्वय भी उसे न रोक सका था।

उधर सीरिया मे फिर उपद्रव शुरू हो गये थे और फराओ था कि युद्ध की आज्ञा नही देता था। तब मै फिर से हौरेमहेब के साथ एखटैटौन आया था और साथ मे लाया था उस कुटिल 'आई' को जो शक्ति संचित करने के हेतु नीचे-से-नीचा कार्य करते हुए भी नही हिचकता था।

मैं, सिन्यूहे, कितना घृणित हूँ! मेरे सहवास मे आया हुआ भला अब तक कोई बचा है ? मैने अपने पिता सैन्मट और माता कीपा को बेमौत मारा और उस दुष्टा नैफर-नैफर-नैफर के मोह मे पडकर उनकी कब्रे तक बेच डाली। मीनिया मेरी प्यारी थी जिसे मै बहिन कहने लगा था और वह भी मेरी न हो सकी—उसे उसके देवता की श्रद्धा ले बैठी और जब मैने उसे पाया तब उसके माँस को केकडे कुरेदकर खा रहे थे। मैरिट मुझे कितना चाहती थी मै कैसे लिखूं ? आज दुःख से मेरा हृदय फटा जा रहा है। उसने मेरा गर्भ धारण किया और इसलिए कि वह मेरे मार्ग मे बाधा न बन जाय, उसने कभी मुझे नही पकड़ा और अपने भेद को रहस्य बना दिया—और वह भी मर गई और मेरा बच्चा—मेरी आँखो का तारा, वह भी मारा गया—और तब जब फराओ एखनैटौन नर-हत्या के लिए किसी भी प्रकार

आज्ञा नही देता था—मैने, हौरेमहेव और 'आई' ने उसे विप देकर समाप्त कर दिया। उसी फराओ ने तो मुझे राजवैद्य वनाया था, मुझे एटौन के नये साम्राज्य का सिद्धात सिखाया था कि मनुष्य से मनुष्य वडा नही होता। हत्या और घृणा से हत्या और घृणा ही पैदा होती है अतएव उनका अनुसरण नही करना चाहिए—उसे—उसके पागलपन को मै कितना ज्यादा चाहता था और जव उसके सामने होता, उसकी वातें सुनता तो उसे कितना अधिक चाहने लगता था।

अम्मन के पुजारियो की दी हुई ज़हर की पुडिया मैने उसे मदिरा में घोलकर पिला दी जिसे पीकर वह सदा के लिए सो गया। अव सोचता हूँ, क्यो मारा मैने उसे ? हौरेमहेव के चाकू के भय से ? नही। तो फिर ? मित्र की भलाई के लिए। कितना वडा झूठ है यह ! क्या भेद है मितन्नी, हितैती और मिस्री मे ? भेद है केवल एक, और वह है धनवान और गरीवो का, जो सभी जगह है। क्यो है लोगो मे देवताओ का इतना भय कि आपस मे ही इतनी वडी दीवाले खडी कर लेते है ? फिर क्यो मारा मैंने फ़राओं को ? निश्चय ही अपनी शक्ति और अपने पद का अनुचित लाभ मैंने उठाया था।

फराओ एखनैटौन की मृत्यु के तीसरे दिन ही उसका वडा जामाता पवित्र तालाव मे डूवा पाया गया। क्या मैं जानता नही कि उस वालक को वृद्ध 'आई' ने ही मरवा दिया था। क्यो ? क्योकि वह घृणित था—यदि पश्चिमी देश कही है तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि 'आई' वहाँ कभी सफल यात्रा नही कर सकेगा—और तव टट—फराओ एखनैटौन का दूसरा जामाता—राजकुमारी एखनैटौन का पति फराओ वना—जव उसकी पतली गर्दन दोनो साम्राज्य के दुहरे मुकुट के वोझ के नीचे झुक गई तो वृद्ध 'आई' ने कुटिल दृष्टि से हौरेमहेव की ओर देखकर दीर्घ श्वास छोडा था। उस फराओ का नाम तूतनखामन था जो नित्य अपनी कब्र के नये-नये नक्शे वनवाया करता था।

और एक दिन नैफरतीती, जो छह पुत्रियो को जन्म देने के वाद भी अद्वितीय मुन्दरी थी, हौरेमहेव के पास गई और उसने वातो ही वातो मे उसके सामने अपनी जंघा खोल दी और वक्ष खोलकर अपने रूप से उसे लुभाना चाहा। परन्तु वह कठोर सैनिक पहले से ही चाँद की ओर लपका

हुआ था—उसने उस पर आँख नही गडाई। नैफ़रतीती शक्ति बटोरना चाह रही थी परन्तु उसके काँटे मे शिकार जब नही फँसा तो वह क्रुद्ध सर्पिणी की भाँति फुँफकार उठी। उसने दूसरा तीर अत्यन्त भयकर छोडा जो यदि सफल हो गया होता तो शायद मिस्र का भाग्य कुछ और ही होता और मै इस निर्जन मे बैठा हुआ—अपनी व्यथा न लिखता। उसने राजकुमारी बैंकेटेटौन को सिखाकर हितैतियो के राजकुमार शवत्तू को एक पत्र लिखवाया कि वह आये और राज्य को हथिया ले और यह भी कि राजकुमारी उसके प्रणय के लिए लालायित थी।

उस दिन मुती ने मेरे लिए मोटी बत्तख भूनकर बनाई थी और मै उसे खाकर लेटा ही रहा था कि पुजारी 'आई' और सेनापति हौरेमहेब धडधडाते हुए अन्दर आये। 'आई' सदा की भाँति भयभीत कुटिल दृष्टि से देख रहा था। हौरेमहेब ने अपनी कटि मे से एक पैपाईरस पर लिखा हुआ पत्र मेरे सामने कर दिया उसमे लिखा था .

"हितैती राजकुमार शवत्तू को राजकुमारी बैंकेटेटौन की ओर से—मिस्र का सिंहासन रिक्त है। आओ मेरे प्राण प्यारे और इसे सभाल लो। हौरेमहेब मुझसे बलात्कार करना चाहता है। वह जो नीच है, गन्दा है, जिससे मैं घृणा करती हूँ। आओ, नैफरतीती मेरे साथ है।"

मैने देखा नारी की प्रतिहिंसा कितनी भयानक थी। उन्होने मुझसे कहा :

"सिन्यूहे! यह राजकुमार यहाँ न आने पावे, तुम जाओ और उसे मार्ग मे ही समाप्त कर दो।"

परन्तु मैंने इन्कार कर दिया। तब हौरेमहेब ने मेरे वक्ष पर अपना बडा चाकू रख दिया और मै ठठाकर हँस पड़ा। वह चकित रह गया जब मैने कहा :

"हौरेमहेब, चाकू से मै प्रेम करने लगा हूँ, क्योकि यह दुख और व्यथा को समाप्त कर देता है।"

फिर भी बाद मे, मैं फराओ के सबसे तेज जहाज मे बैठकर चला गया था और मैने धोखे से उस होनहार और बलिष्ठ राजकुमार को मार्ग मे ही विष देकर मार डाला था। इतनी सफाई के साथ मदिरा मे विष मिलाया

था। हितैतियों के वीच मुझ अकेले ने। किसी को तनिक भी शक नही हुआ और राजकुमार मर गया। मैं थीवीज़ लौट आया।

और तव एक दिन तूतनख़ामन मर गया। ठीक होगा यदि कहूँ कि मार डाला गया। 'आई' ने हौरेमहेव से कहा :

"तुम राज्य सभाल लो।"

"मैं नही तुम !" उसने उत्तर दिया।

'आई' की आत्मा तृप्त हो गई और उसने हौरेमहेव से कहा : "वैंकेटैं-टौन तुम्हारी होगी।"

'आई' फराओ वन गया। हौरेमहेव मैम्फ़िस मे चला गया। उसे अव हितैतियो से युद्ध करना था। परन्तु इसके पहले जव वह वैंकेटैंटौन के पास जाकर बोला :

"राजकुमारी ! मै तुम्हारा प्रेमी हूँ—मिस्र का सेनापति, आओ मुझसे मिलकर मेरे जीवन की साध पूरी कर दो।"

तो वह छिटककर अलग खड़ी हो गई। उसने उस पर थूक दिया। हौरेमहेव ने क्रुद्ध होकर खड्ग खीचा तो वह वक्ष खोलकर खड़ी हो गई और उसने कहा : "मारो" परन्तु तव भला वह उसे कैसे मार सकता था।

उसी शाम गरीवों की वस्ती मे वने मेरे घर आकर हौरेमहेव ने कहा : "सिन्यूहे ! मेरे मित्र ! कोई ऐसी औपधि मुझे दे दो कि जिसके प्रयोग से वैंकेटेटौन मूछित की जा सके—मैं अव और अधिक प्रतीक्षा नही कर सकता।"

परन्तु मैंने साफ़ मना कर दिया। परन्तु हौरेमहेव वलिष्ठ पुरुष था। राज्य मे उसका वोलवाला था। आखिर उसने ज़बर्दस्ती वैंकेटेटौन के साथ घड़ा फोड़ ही लिया। दो वर्ष व्यतीत हो गये और उसके गर्भ से उसके दो पुत्र भी हो गए परन्तु वैंकेटेटौन की घृणा दिनो-दिन वढती ही गई। उसने शुरू मे ही जिस दिन वह असहाय होकर गिर गई थी उससे कह दिया था, "मैं तुम्हारी ही शैया को यदि दूपित न कर दूं तो मेरा नाम वैंकेटेटौन नही"

हौरेमहेव हितैतियों के युद्ध मे चला गया था। जाते-जाते वह मुझसे बोला :

"मिस्र के महान् फराओ ने कैम देश मे अपने राज्य की सीमा के पत्थर गाड़े थे, और जब तक एक बार फिर मैं अपने रथ न दौड़ा लूँगा तब तक मेरा दिल न भर सकेगा सिन्यूहे।"

एक दिन मुती ने मुझसे कहा :

"कप्ताह को हब्शी सैनिको ने पीट-पीटकर मार डाला।"

कप्ताह मेरा मित्र था, परन्तु जाने क्यों मै उस भयानक सवाद को सुनकर भी विचलित नही हुआ। मुझे लगा कि वह सब झूठ था। कप्ताह भला कभी इस तरह मर सकता था ?

बहुत बाद में जब मैं गाजा गया तो मुझे वहाँ कप्ताह मिला। वह हौरेमहेब का मित्र बन गया था। उसी ने सीरिया की सेनाओ मे विषैली प्यास और विषैला अनाज फैलाया था—वही था जिसके कारण शत्रु की सेनाएँ तडप-तडपकर मर गई थी। मैंने जब उसे देखा तो वह हर्ष से चिल्ला उठा। उस समय उसे गाजा के उसी शक्की सेनापति ने कारागार मे बन्द करा रखा था जहाँ वह पहरेदार को रिश्वत देकर जीवित रह रहा था। जब मैंने उसे छुडवाया तो पता चला कि तब तक वह लाखो सुवर्ण मुद्राओ का ऋणी हो गया था। मैंने उससे कहा था : "क्या इस ऋण को तुम सचमुच ही उस पहरेदार को चुकाओगे ?"

"निश्चय," उसने उत्तर दिया, "अन्यथा व्यापार मे मेरी बात जाती रहेगी।"

परन्तु जब याद करता हूँ तो मुझे हँसी आती है कि वह मेरा काना दास कितना चालाक था। उसने उस पहरेदार से जुआ खेला और उसे बडे-बडे दाँव लगाकर तीन-चार दिनो मे ही चुका दिया। भला पहरेदार उसमे जुए मे जीतता—वह जो सम्पूर्ण मिस्र के व्यापार को जीते हुए था ? अन्त मे वह मिस्र का सबसे बडा धनी बन गया था और वह विशाल महल में रहता था जहाँ नाना वाद्यों पर सगीत छिडा करता और देश-देशान्तरो से खरीदी गई सुन्दरी दासियो के कोमल पदचापो से घुँघरू बजा करते और मधुर कठ अलाप मे लगे रहते। तब वह अपनी कानी आँख पर हीरे का ढक्कन लटकाता और उत्तम माँस और मदिरा का सेवन करता। उसके महल की भीतो पर रग-बिरगे चित्र बने थे। एक ओर उसका स्वयं का चित्र भी

अकित था। परन्तु तव अम्मन का साम्राज्य लौट आया था। और टोथीमीज की वास्तविक कला का प्रचार वर्जित कर दिया गया था, जहाँ चालीस खम्भो पर एखनैटौन अपने असली रूप मे खड़ा था, तो फिर भला टौथीमीज की कला का अस्तित्व ही क्या रह गया था? दीवाल पर कप्ताह की मूर्ति, उसके चित्र, सब कायदे के बने थे, उनमे उसकी दोनो ही आँखे दिख सकती थी और वह भद्दा-मोटा भी नहीं दिखाया गया था। सबसे वड़ी बात यह थी कि कप्ताह ने अपना उत्तराधिकारी हौरेमहेव को ही बनाया था। फराओं 'आई' का शक बाद में इतना बढ गया था कि वह महल मे हर किसी से भय करने लगा था। कोई विप न दे दे, कोई हत्या न कर दे! और वह नीच वृद्ध भूखा रह-रहकर, रात-रात जागकर तडप-तडप कर मर गया। उसके मरने के वाद ही हौरेमहेव फराओ बना था जिसे अपना उत्तराधिकारी बनाकर कप्ताह ने राज्य कर वसूल करने वालो का और अपना मार्ग अलग-अलग कर लिया था। निश्चय ही कप्ताह बड़ा चालाक था।

और मैने एक दिन सोचा कि मै क्यो इतना निरीह था कि मेरे पास अपनी व्यथा कहने के लिए भी कोई नही था? क्यो है समाज मे यह भेद कि जो गरीव है वह गरीब होते चले जाते हैं? क्यों नही हो पाया फराओं एखनैटौन अपनी योजनाओ मे सफल? तो क्या सचमुच ही मनुष्य का कर्म देवताओ द्वारा ही निर्धारित है? दिल इस बात की गवाही नही देता था। मुझे याद है कि जब हौरेमहेव हितैतियो के युद्ध मे जाने लगा था तो 'सैखमट' के मदिर मे उसका स्वागत किया गया था। वह रक्त से नहाई हुई देवी की मूर्ति कितनी भयानक लगती थी। पुजारियो ने हौरेमहेव का भव्य स्वागत किया था। जब बाहरी तोरण के भारी तावे के फाटक अर्राकर खोले गए थे तो भीड उसमें बाढ की भाँति धँस गई थी और हौरेमहेब की वीरगाथाओं से मदिर गूँज उठा था। तो क्या हौरेमहेव सैखमट की कृपा अथवा दया से ही विजयी होता था? नही-नही, मैं इसे कभी नही मान सकता—मेरी आत्मा इसे स्वीकार नही कर सकती।

जव मै यह सोचता हूँ तो मेरी आँखो के सामने वह पेशाब की दुर्गन्ध मे सने बर्बर सैनिक आ जाते है जो धन के लिए लड़ते थे—जो भूखे पेट को भरने के लिए लड़ते थे—और जिनकी लाशो के ढेर पर महान् साम्राज्यों

की दीवाले खडी की जाती थी। ऐसा ही तो था हौरेमहेव! और ऐसे ही थे मिस्र के प्रचड फराओ!

एक दिन मैंने दासो के वस्त्र पहने और मैं थीबीज़ मे निकल गया। मुझे नही मालूम था कि मै इतना प्रमुख व्यक्ति था क्योकि मैंने देखा सभी मुझे पहचानते थे—उस वेश मे भी पहचान गए थे। परन्तु मैंने कोई परवाह न की और महानगर मे जाकर मजदूरो का काम करने लगा और फिर दासों के पास जाकर वैठ गया और उन्ही का-सा रूखा-सूखा भोजन मैंने किया। मैंने उनसे कहा . "मनुष्य-मनुष्य मे कोई अन्तर नही है क्योकि सभी ससार मे नगे आते हैं। मनुष्य की त्वचा के रग से अथवा उसकी बोली से उसका दर्जा ऊँचा या नीचा नही हो सकता—न ही वस्त्रो और आभूषणो से उसकी परख की जा सकती है—मैं तो केवल इतना जानता हूँ, वुरे आदमी से अच्छा नेक आदमी होता है और न्याय अन्याय से अच्छा होता है।"

जव गरीव स्त्रियाँ अपनी कच्ची झोपडियो के सम्मुख वैठकर सड़क के किनारे आग जला रही थी, और उनके मर्द उदास थके-माँदे वैठे थे तव मैंने उनसे कहा, और उसे सुनकर वह उस उदासी मे भी हँस पडे। फिर एक ने उत्तर दिया :

"सिन्यूहे! तुम निश्चय ही पागल हो गए हो कि दासो का काम कर रहे हो जव कि तुम लिख-पढ सकते हो और वडे आदमी हो। कौन है जो तुम्हे थीवीज मे नही जानता? परन्तु हम जानते है कि तुम भले आदमी हो और दयालु भी हो। परन्तु फिर भी हम अव उस निर्वीर्य देवता एटौन के सिद्धान्त नही सुनाना चाहते। तुम शायद हमारा भेद लेने आये हो। सव मनुष्यो को वरावर कहकर कम-से-कम हमे उन गन्दे सीरियन और हब्शियो के समान तो न ठहराओ! गो हम कुली है, दास है फिर भी हैं तो हम मिस्री ही।"

मैंने कहा · "यह सव वेकार वाते है, मनुष्य इन सव वातो से वडा नही होता—वह है तो केवल शुद्ध हृदय के कारण वडा होता है।"

सुनकर वह फिर हँसे और अपने घुटने पीटने लगे पर मैंने जव अपनी वात फिर दुहराई तो वह बोले .

"अच्छा क्या है और बुरा क्या है सिन्यूहे ? यदि हम किसी बुरे मालिक की, जो हमे धोखा देता हो और हमारी स्त्री व बच्चो को मार डालता हो, हत्या कर दे, तो क्या हमारा काम कोई बुरा होगा ? परन्तु जब हमे फराओ के सैनिक पकड कर न्यायाधीश के सम्मुख ले जाएँगे, और हमारा जो कुछ होगा वह तुम नही जानते ?"

"जानता हूँ" मैंने कहा, "तब तुम्हारे नाक-कान काट दिये जाएँगे और तुम्हे नगरकोट से उल्टा लटका दिया जायेगा—परन्तु हत्या सबसे नीचा अभियोग है—इससे गिरा हुआ और कोई काम नही हो सकता—अतएव मनुष्य चाहे बुरा हो या भला उसकी हत्या कभी नही करनी चाहिए—मेरी तो राय है कि मनुष्य की बुराइयो के कारण उसकी हत्या कभी नही करनी चाहिए बल्कि उसे सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए।"

उन्होने उदासी से उत्तर दिया :

"न हम किसी की हत्या करना चाहते हैं न करते हैं। यदि तुम बुराई का फल भलाई से देना चाहते हो तो अमीरो के पास जाओ, फराओ के सरदारो और न्यायाधीशों के पास जाओ क्योकि हत्या, और तमाम बुराइयाँ तुम्हे हममे कही अधिक अमीरो मे ही मिलेंगी।"

कितना भयानक सत्य कहा था उन्होने। परन्तु जब मैं अमीरो के पास गया और उनसे मैने वही सब कहा तो वे सतर्क हो गए, धनी व्यापारी-गण और उच्चाधिकारी लोगो ने आँखो ही आँखो मे इशारे किए और फुसफुसाकर कहा :

"यह सिन्यूहे, राज्य का उच्चाधिकारी है—यह सर्वशक्तिवान है—यह निश्चय ही हमारी जाँच कर रहा है—कही भूल से भी इसके सामने एक-आध शब्द हमारी जुबान से ऐसा-वैसा निकल गया तो समझ लो मृत्यु अवश्यभावी है।"

जब मै घर लौटा तो थका-हारा हुआ था। परन्तु मेरा मन उल्लसित था क्योकि मैंने सत्य का प्रचार किया था—चाहे उसे कोई मानता चाहे नही मानता।

इधर मैं इन्ही विचारो मे खोया रहता था राजकुमारी बैकेटैटौन की प्रतिहिंसा जागृत हो रही थी, मुझे तो वह सब बहुत बाद मे मालूम हुआ

था। मज़दूरो ने तो ठीक ही कहा था कि प्रतिहिंसा और पाप अमीरो मे ही पाया जाता था।

एक दिन वह शृगार करके नाव मे बैठी और नील पार करके थीबीज के एक गधे वाले को इशारा करके काँस की झाडियो मे बुलाया। पहले तो गधे वाला घबराया परन्तु फिर जब उसने उसके रूप को देखा तो वह उसके पीछे चला गाया। कांस को झाडियो मे राजकुमारी बैंकेटेटौन ने अपने वस्त्र उतार दिए और गधे वाले से लिपट गई। उसके उस विचित्र अभिसार से गधे वाला चकित रह गया। जब वह चलने लगा तो बैंकेटेटौन ने अपने यौवन का मूल्य माँगा, वह बोली, "मुझे अपनी याद मे एक पत्थर ला दे।"

गधे वाले ने उसे मूर्ख समझा। झट से जाकर फ़राओं की पुरानी इमारत मे से एक पत्थर उठा लाया और उसे दे दिया। बैंकेटेटौन उसे ले आई।

दूसरे दिन वह कोयले वालो के बाजार मे गई। आज वह बडी नाव ले गई और लौटते समय कई पत्थर लाई क्योकि उसने आज कई लोगो से अभिसार किया था।

सारे नगर मे सनसनी फैल गई कि एक देवी आती है जो गरीबो को शरीर देकर प्रसन्न किया करती है परन्तु किसी को पता न चला कि वह राजकुमारी थी।

इसी भाँति वह नित्य निकलती और कभी मछली वालो के बाजार मे तो कभी मज़दूरो से सभोग करती और पत्थर इकट्ठे कर लाती। एक माह मे उसने बहुत से पत्थर इकट्ठे कर लिये। फिर उसने राज्य के शिल्पी को बुलाया और उससे बोली :

"तुम इन पत्थरो से मेरे लिए एक बडा कक्ष बना दो और तुम तो जानते ही हो कि मेरा पति मेरी उपेक्षा करता है—मेरे पास तुम्हे देने के लिए धन तो नही है परन्तु···"

शिल्पी ने आँखे उठाकर देखा। वह वृद्ध था। और तभी बैंकेटैटौन ने अपना वक्ष खोल दिया और कहा .

"यदि तुमने मेरे लिए उत्तम कक्ष बना दिया तो मै इसी कक्ष मे तुम्हे सुख दूंगी—वह शरीर तुम्हारा होगा।"

जब 'आई' के मरने पर हौरेमहेब युद्ध मे विजयी होकर लौटा तब तक वह कक्ष बन चुका था—और सारा महानगर जान गया था कि वह

बाज़ारों मे घूमने वाली देवी कौन थी।

वैकेटेटौन उसे उसी कक्ष मे बडे प्रेम से लिवा ले गई और वह भी उस परिवर्तन को देखकर चकित हो गया। वहाँ पहुंचकर उसने कहा : "देखो प्रियतम ! इन पत्थरो को देखो, मैंने एक-एक पत्थर अलग-अलग व्यक्ति से कमाया है—इस कक्ष मे जितने पत्थर लगे है उतने ही पुरुषो से मैंने सपर्क किया है—पता नही वह कौन थे परन्तु उनकी यादगार अवश्य मेरे पास है. काश तुम भी मुझे एक पत्थर दे सकते, तो मैं उसे इन सबके ऊपर लगवा देती।"

ऐसा था उसका प्रतिशोध, हौरेमहेब ने उस पर तलवार तानी तो वह बोली .

"मारो," और उसने अपना वक्ष फिर खोल दिया : परन्तु इस बार हौरेमहेव उसे देखकर न रुका, तब वह बोली :

"मारो हौरेमहेब मारो—क्योकि मै भी यही चाहती हूँ कि फ़राओ की और उसकी पुत्री की हत्या करने के उपरांत न्याय की दृष्टि से तुम फराओ न बन सको।"

मनुष्य की तृष्णा का कोई अत नही है। फ़राओ का सिंहासन ! भला हौरेमहेब उसे कैसे छोड सकता था—वह बाज़ का पुत्र, मिस्र का सेनापति, वह जिसके भय से दूर-दूर तक के संपूर्ण राज्य कांपते थे, चुप रह गया—उसका हाथ उठा हुआ ही रह गया। फिर वह कटे पेड की तरह झूल गया। कहाँ था उसका वह क्रोध व प्रतिहिंसा जो उसने भूखे खबीरियों पर निकाली थी। जब उसने लाखो थीबीज मार डाले थे, जब लाखो ही सीरियन, मितन्नी और हितैती उसके बाणो से गिर गए थे तब कहाँ थी उसकी यह दया ? दया ? तो क्या वह दया थी जो उसने राजकुमारी को नही मारा था ? नही, वह थी राज्य की लिप्सा—वैकेटेटौन की हत्या करके वह फ़राओ नही बन सकता था, यह वह जानता था। उसकी स्त्री ने उसकी नाक सारे थीबीज़ के बीच काट ली थी परन्तु फराओ का पद ? जहाँ बात-बात पर हौरेमहेब का चाबुक मांस उधेड लेता था, मै सोचता हूँ, इस अपमान को कैसे पी गया ? क्या वह कायर नही था ?

परतु उसका न्याय प्रसिद्ध था। उसके राज्य मे एक बार फिर व्यवस्था

स्थापित कर दी गई थी। वही जो पहले से शाश्वतकाल से स्थापित थी। अब उसके राज्य मे अम्मन पुजता, परन्तु शक्ति उसके हाथ मे थी।

और अन्त मे वह बुरा दिन भी आया था जब उसने मुझे बुलाकर कहा था :

"सिन्यूहे ! तुम निश्चय ही पागल हो और जो कुछ तुमने हाल ही मे किया है उसका दड मृत्यु होना चाहिए। तुम नही जानते कि राज्य मे तुम्हारा व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है, लोग तुम्हे कितना मानते है और इसीलिए मै सोचता हूँ कि जो दुष्ट प्रयास तुमने किया है वह ठीक नहीं है। क्या मै पूछ सकता हूँ कि तुमने दासो का-सा भेष बनाकर थीबीज मे समानता का प्रचार क्यो किया था ? क्या तुम नही जानते थे कि उससे प्रजा भडक सकती थी अन्यथा राज्य की व्यवस्था मे खलबली मच सकती थी ? बोलो सिन्यूहे ? तुमने ऐसा क्यो किया ?"

वह फराओ था और मै केवल एक वैद्य। वह देश-देशातरो मे प्रसिद्ध योद्धा था और मै भला उसके सामने क्या था ? मै चुप रहा परन्तु फिर मुझे न जाने क्या सूझा कि मै हँस दिया जबकि मुझे रीति के अनुसार घुटनो के बल झुककर हाथ फैलाकर उसके सामने क्षमा-याचना करनी चाहिए थी। और तब उसने मुझसे कहा :

"तुम मेरे मित्र रहे हो इसी कारण मैं तुम्हे प्राणदण्ड नही देता—तुम्हे मैं देशनिकाला देता हूँ। तुम ऊपरी साम्राज्य मे रहने योग्य नही हो। मै तुम्हे अन्य स्थानो मे भी नही भेज सकता। क्योकि वहाँ तुम वही अपनी मूर्खतापूर्ण बाते करके लोगो को पथभ्रष्ट करोगे—तुम कालो को गोरो के विरुद्ध भडकाओगे—अतएव जाओ तुम निचले साम्राज्य के जगल मे रहो—नदी के किनारे तुम्हारे लिए घर बना दिया जायेगा जहाँ तुम केवल हवा को मनुष्य की समानता का भाषण सुना सकोगे—नील के जल को एटौन के साम्राज्य की गाथाएँ सुना सकोगे—जाओ—वही रहो—तुम पर पहरा रहेगा इतना कि तुम वहाँ से कही जा न सको—वैसे तुम्हे मैं कोई कष्ट देना नही चाहता—तुम्हारे पास दास रहेगे, पहरेदार होगे। उत्तम भोजन होगा, मीठी मदिरा होगी और तुम्हारा असख्य धन। तुम सुवर्ण के प्याले मे मदिरा पी सकोगे।"

और जब मै चलने लगा तो वह बोला : "एकाकी।"

फ़राओ एखनैटौन ने मेरा नाम एकाकी रखा था—और अब मैं सच-मुच ही एकाकी बन गया हूं। मुती थीबीज़ छोड़कर मेरे पास आ गई क्योकि वह लौटकर कही जाना नही चाहती। मै हूँ, मुती और हैं यह दास जो मेरी सेवा करते है।

मै हमेशा अकेला रहा हूँ। कभी भी तो मुझे किसी का साथ नही मिला। दूर नील पर मैम्फ़िस जाते हुए जहाज़ दिख रहे है परन्तु मैं उन पर कही जा नही सकता। मेरे इशारा करने पर कोई जहाज़ लगर नही डालता।

मैं अपनी गाथा लिख रहा हूं। मेरे हृदय में कितनी व्यथा है इसे कौन जान सकेगा—मुझे पता नही कि यह पैपाईरस के पत्ते कहाँ उड़ जायेंगे यानी नील के प्रवाह मे वह जायेंगे, परन्तु मै लिख रहा हूँ अपनी व्यथा कम करने के लिए क्योकि कहते है कि किसी से कहने से व्यथा कम हो जाती है। अब जब सुनने वाला कोई नही है तो लिख ही लूँ। सहानुभूति से ही तो मनुष्य को सात्वना मिलती है। पता नही किस दिन मुझे पश्चिमी देश की यात्रा पर जाना पड जाय—तब मैं ठडी-ठडी रेत में पड़ा रहूँगा—ठडी क्या? यदि दिन हुआ तो गर्म रेत पर मेरा शरीर पडा रहेगा—क्या यही है मेरे जीवन का अन्त ?

मैंने अपना दुख सामने की लाल पहाडियो को सुनाया है। मैने बिच्छुओ, सर्पो तक से अपनी व्यथा कही है। परन्तु सब व्यर्थ। नील का जल गर्जन कर रहा था, परन्तु उससे भी भयानक तूफान मेरे हृदय मे मच रहा है। दूर रेगिस्तान मे ऊँटो का कारवाँ जा रहा है परन्तु उससे मुझे क्या? मैं तो कही नही जा सकता।

मैं, सिन्यूहे! मनुष्य हूँ। मुझे एक ही सन्तोष है और वह यह कि कुछ तो ऐसे है ही जिनके आँसुओ, जिनकी आहो मे मैं रहा हूँ और सदा रहूँगा···मुझे इच्छा नही है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी कब्र बनाई जाय और मेरा शरीर शाश्वत काल तक के लिए मसाले बना कर रखा जाय क्योकि मुझे देवताओं पर अब बिल्कुल विश्वास नही रहा है, क्योकि अब मैं उनसे ऊब चुका हूँ। मेरे लिए वे सब मर चुके है।